



मुबल्लिगात के लिये शीरते सख्यिदा फ़ातिमतुज्जहश رضی اللہ تعالیٰ عنہا के मुतअल्लिक बयानात का हसीन मदनी गुलदस्ता

शाने

खातूने जन्नत

رضی اللہ تعالیٰ عنہا

- खातूने जन्नत के लिये फिरिश्ते की बिशारत
- खातूने जन्नत के चलने और गुफ्तगू करने का अन्दाज़
- खातूने जन्नत का ज़ौके नमाज़
- खातूने जन्नत का निकाह व जहेज़
- काशानए फ़ातिमा में फ़ाका कशी का अ़ालम
- खातूने जन्नत की वसियतें
- खातूने जन्नत के कफ़न का भी पर्दा
- खातूने जन्नत को किस ने गुस्ल दिया ?



श्री अफ़्फ़ाते अहलबक़्क़ात

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ **اَللّٰهُمَّ** ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(मستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अब्बल आखिर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना

बकीअ

व मगफ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



क्रियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ** : सब से ज़ियादा हसरत क्रियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या 'नी उस इल्म पर अमल न किया) (तاريخ دمشق لابن عساکر ج ۱ ص ۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त्बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ यह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा 'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएँ तो मजलिसे को सफ़हा और सतुर नम्बर के साथ **Sms, E-mail, Whats App** या **Telegram** के ज़रीए इत्तिलाअ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मद्वनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं!!!

...राबिता :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = س	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ز	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख = خ	ह = ح
श = ش	स = س	ज़ = ز	ज़ = ز	ढ़ = ڈھ	ड़ = ڈ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ = ع	ज़ = ط	त = ط	ज़ = ض	ص = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئی	و = و	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

अस्यिदा फ़ातिमा ताहिदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की खीरते तस्यिबा
से मुतअल्लिक 12 बयानात पर मुश्तमिल हसीन गुलदस्ता

शाने ख़ातून जब्बात

—: मुरत्तिबीन :-

मदनी उ-लमा

शो' बए फ़ैज़ाने अहाबिय्यात, सरदारबाद
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा' वते इस्लामी)

—: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद -1, मो. +919327168200

وَجِئْنَا بِكَ يَا سَمِيعُ اللّٰهِ
الصَّلٰوةَ وَالسَّلَامَ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

नाम किताब : शाने ख़ातूने जन्नत

मुरत्तिबीन : मदनी उ-लमा (शो'बए फ़ैज़ाने सहबिख्यात)

सिने त़बाअत : शव्वालुल मुक्क़रम, सि.1434 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद - 1

तस्दीक़ नामा

तारीख़ :

हवाला :

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله واصحابه اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

“शाने ख़ातूने जन्नत” (उर्दू)

(मतबूआ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे षानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक्दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का जिम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)

E - mail : ilmia@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

याद द्वाश्त

दौराने मुतालआ जरूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी।

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा

याद दाश्त

दौराने मुतालाआ जरूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ। इल्म में तरक्की होगी।

उंवान	सफ़्हा	उंवान	सफ़्हा

أَلْحَبْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“शाने खातूने जन्नत”

के ग्यारह हुसफ़ की निश्चत से इस किताब को पढ़ने की “11 नियतें”

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :

“يَبِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهِ” يَا نَبِيَّ الْمُسْلِمَانِ كَيْ نِيَّيْتُكَ مِنْ عَمَلِهِ

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٢٣٩٥، ج ٦، ص ٥٨١)

दो मदनी फूल :-

- ﴿1﴾ बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अमले खैर का षवाब नहीं मिलता ।
- ﴿2﴾ जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा ।

﴿1﴾ हर बार हम्द व सलात और ﴿2﴾ तअव्वुज़ व तस्मिया से आगाज़ करूंगी (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अमल हो जाएगा) ﴿3﴾ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अक्वल ता आखिर मुतालाआ करूंगी ।

﴿4﴾ हत्तल वस्अ इस का बा वुजू और क़िब्ला रू मुतालाआ करूंगी ।

﴿5﴾ जहां जहां “**अब्बाह**” का नामे पाक आएगा वहां عَزَّ وَجَلَّ और

﴿6﴾ जहां जहां “**सरकार**” का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पढ़ूंगी ।

﴿7﴾ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरगीब दिलाऊंगी ।

﴿8﴾ इस हदीषे पाक “تَهَادَرُوا تَحَابُّوا” एक दूसरे को तोहफ़ा दो आपस में महबबत बढेगी । (مَوْطَأُ إِمَامِ مَالِكٍ، الْحَدِيثُ ١٣٤١، ج ٢، ص ٤٠٢)

पर अमल की नियत से (एक या हस्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगी ।

﴿9﴾ अपनी इस्लाह के लिये मदनी इन्आमात पर अमल की कोशिश करूंगी ।

﴿10﴾ सीरते फ़ातिमा पर अमल की कोशिश करूंगी

﴿11﴾ किताबत वगैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगी ।

(मुसनिफ़ या नाशिरीन वगैरा को किताबों की अगलात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

इजमाली फ़ेहरिस्त

नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा
1	पहले इसे पढ़िये !	9
2	अल मदीनतुल इल्मिय्या का तअरूफ़	7
3	खातूने जन्नत की शानो अज़मत	13
4	खातूने जन्नत की करामात	47
5	खातूने जन्नत का ज़ौके इबादत	75
6	खातूने जन्नत का इश्के रसूल	113
7	खातूने जन्नत का ईषार व सखावत	157
8	खातूने जन्नत का निकाह व जहेज़	217
9	खातूने जन्नत और उमूरे ख़ानादारी	271
10	खातूने जन्नत का पर्दे का एहतिमाम	313
11	खातूने जन्नत के फ़ाके	349
12	खातूने जन्नत का ज़ोहद	379
13	विसाले रसूल पर खातूने जन्नत की कैफ़िय्यात	401
14	खातूने जन्नत का विसाल	441
15	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	479

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इलिमिया

अज़: शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, आशिके आ'ला हज़रत, बानिये दा'वते इस्लामी
हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी ज़ियाई دانش بزرگوارانهم العالیه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी
तहरीक “दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, एहयाए सुन्नत
और इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्या भर में अम करने का
अज़मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो खूबी सर
अन्जाम देने के लिये मुतअद्दिद मजालिस का कियाम अमल में
लाया गया है जिन में से एक मजलिस “अल मदीनतुल
इलिमिया” भी है जो दा'वते इस्लामी के उ-लमा व मुफ़्तियाने
किराम كَثَرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी,
तहकीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के
मुन्दरिजए जैल छे शो'बे हैं :

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| ﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत | ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब |
| ﴿3﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब | ﴿4﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब |
| ﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब | ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज |

“अल मदीनतुल इलिमिया” की अव्वलीन तरजीह

सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइषे खैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अंसरे हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “दा'वते इस्लामी” की तमाम मजलिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इलिमिया” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अमले खैर को जेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें जेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



रमजानुल मुबारक 1425 हि.



पहले इशे पढिये !

इस्लामी बहनों में नेकी की दा'वत आम करने में सहाबिय्यात व सालिहात का किरदार मशअले राह है। तब्लीगे इस्लाम और खिदमते दीन के मुआमले में इन की खिदमात से चन्दां इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन बद किस्मती से आज के दौर में इस मौजूअ पर मुषबत व मुस्तनद मवाद बहुत कम मिलता है और इस्लामी बहनें इस हवाले से कमी महसूस करती नजर आती हैं। चुनान्चे इस्लामी बहनों की इस इन्तिहाई अहम जरूरत और इन के देरीना मुतालबे के पेशे नजर तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के चैनल "मदनी चैनल" पर एक सिलसिला ब नाम "फैजाने सहाबिय्यात" शुरूअ किया गया, जिस में रुक्ने शूरा, निगराने पाकिस्तान इन्तिजामी काबीना, हाजी अबूरजब मुहम्मद शाहिद अत्तारी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي अपने ईमान अफरोज अन्दाज में सहाबिय्यात رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ की सीरते तय्यिबा के दर-खशिन्दा पहलूओं को उजागर फरमाते हैं और मदनी चैनल के नाजिरीन के लिये मदनी फूल इरशाद फरमाते हैं। मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या (सरदाराबाद)" इस सिलसिले को इस्लामी बहनों के लिये मुफ़ीद जानते हुए जरूरी तरमीम, इजाफे और तखरीज के साथ तहरीरी सूत में पेश करने की सआदत हासिल कर रही है। इस की पहली कड़ी जेरे नजर किताब "शाने खातूने जन्त" है।

बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में दुआ है कि इस सअये सईद की तक्मील में मुअविन तमाम इस्लामी भाइयों की काविशें अपनी आली बारगाह में क़बूल व मन्ज़ूर फ़रमाए ।

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

किताब “**शाने ख़ातूने जन्नत**” को खुद भी मुकम्मल पढ़िये और दीगर मुसलमानों को भी इस के मुतालए की तरगीब दे कर नेकी की दा'वत को आम करने का षवाब कमाइये ।

अब्बाह तआला से दुआ है कि हमें “अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश” करने के लिये **मदनी इन्आमात** का आमिल और **मदनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए ।

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शो 'बए फ़ैज़ाने सहाबिय्यात (सरदाराबाद)

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

22 सफ़रुल मुजफ़्फ़र सि. 1434 हि. ब मुताबिक़ 5 जनवरी 2013 ई.



फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

! **ऐ लोगो** ! मैं ने तुम में दो चीज़ें छोड़ी हैं कि जब तक तुम इन को थामे रहोगे गुमराह न होगे, **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब और मेरी इतरत या'नी अहले बैत । (सनن الترمذی، ص ۸۵۸، حدیث ۳۷۹۲)

बयान नम्बर 1

खातूने जन्नत
की
शानो अजमत

11

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खातूने जन्नत की शानो अजमत

दुरूद शरीफ़ की फज़ीलत

शहनशाहे विलायत, मौलाए काएनात, मौला अली,
मुश्किल कुशा, अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ फ़रमाते हैं :
हर शख्स की दुआ पढ़े में होती है यहां तक कि सय्यिदुना मुहम्मद
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और आले मुहम्मद पर दुरूदे पाक पढ़े ।

(المعجم الاوسط، ج ١، ص ٢١١، الحديث: ٧٢١)

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّكَ اَنْتَ اَلْحَمْدُ اَللّٰهُ الْمَجِيْدُ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ

फ़रमाते हैं :

दुआ के साथ न होवे अगर दुरूद शरीफ़ न होवे हशर तक भी बर आवर हाजात
कबूलियत है दुआ को दुरूद के बाइष यह है दुरूद कि षाबिते करामत व बरकात
(عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الشَّافِي काफ़ी की ना'त अज अल्लामा किफ़ायत अली काफ़ी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़िरिशते की बिशाशत बशाए खातूने जन्नत

हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा बिन यमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
फ़रमाते हैं : “मैं ने अपनी वालिदए माजिदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से
अर्ज की : आप मुझे इजाज़त अता फ़रमाएं कि मैं नबिय्ये
रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाज़िर

हो कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इक़्तिदा में नमाज़े मग़रिब अदा करूं और अज़्र करूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे और तुम्हारे लिये दुआए मग़फ़िरत फ़रमाएं। हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुवा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इक़्तिदा में नमाज़े मग़रिब पढ़ी, जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ इशा की अदाएगी से भी फ़रिग़ हो गए और तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पीछे पीछे चल पड़ा। नबिय्ये ग़ैब दां, रसूले जीशां صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरी आवाज़ सुनी तो फ़रमाया : कौन ? क्या हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अज़्र की : जी, हां ! इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी क्या हाज़त है ? يا'नी **اَبُو** तआला तुम्हारी और तुम्हारी मां की मग़फ़िरत फ़रमाए ! फिर फ़रमाया : येह एक फ़िरिश्ता है जो इस रात से पहले कभी ज़मीन पर नहीं उतरा, इस ने अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से इजाज़त मांगी कि मुझे सलाम करे और मुझे बिशारत दे कि بَانَ فَاطِمَةَ سَيِّدَةَ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَأَنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ سَيِّدَا شَبَابِ أَهْلِ الْجَنَّةِ या'नी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا जन्ती औरतों की सरदार हैं और हसन व हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا जन्ती नौ जवानों के सरदार हैं।

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ، ابواب المناقب عن رسول الله، باب مناقب حسن بن علي بن ابي طالب، ص ٨٥٤، الحديث: ٣٤٨٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया

कि ताजदारे रिसालत, मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नूरे नुबुव्वत से हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को पहचान भी लिया और उन की दिली हाज़त भी मा'लूम कर ली कि येह क्यूं आ रहे हैं ? और बिगैर उन के कहे उन के लिये और उन की वालिदा के लिये दुआए मग़फ़िरत भी फ़रमा दी ।

हमारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कुछ पोशीदा नहीं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर तो पथ्थरों की हालत भी इयां (ज़ाहिर) है, चुनान्चे “बुख़ारी शरीफ़” में है, सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया :
أُحَدِّثُ جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ
और हम इस से महब्वत करते हैं ।”

(صَحِيحُ الْبُخَارِي، كتاب الزكاة، باب حرص التمر، ص ۱۳، الحديث: ۱۳۸۲)

सय्यिदी आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّتِ “हदाइके बख़्शाश शरीफ़” में क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला

जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(हदाइके बख़्शाश शरीफ़ अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّتِ)

शर्हे कलामे रजा :

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप की शाने अज़मत निशान के क्या कहने ! शबे मे'राज ऐन जागती हालत में आप ने अपने मुबारक सर की आंखों से अपने पाक परवर दगार का दीदार किया, तो यूँ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जो कि ग़ैबुल ग़ैब है वोह भी अपने फ़ज़लो करम से आप पर ज़ाहिर व आशकार हो गया तो अब कोई और ग़ैब आप से किस तरह निहां या'नी छुपा रह सकता है । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर करोड़ों बार दुरूदो सलाम का नुज़ूल हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा बिन यमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी ईमान अफ़रोज़ हदीषे पाक से आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शहज़ादी की शाने अज़मत निशान के साथ साथ आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के नवासे हसनैने करीमैन, तय्यिबैन, ताहिरैन, सय्यिदैने, जलीलैन, क़मरैन, शहीदैने की शानो शौकत भी ज़ाहिर हुई कि येह दोनों शहज़ादे हसन व हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا जन्मती जवानों के सरदार हैं ।

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और हसन फूल

(عليه رَحْمَةٌ رَبِّ الْعَوْنِ اَجْرُ اِمَامِهِ اَهْلِهِ سُنَنَاتُ)

शहं क्लामे रज़ा :

ऐ रज़ा! उस करम व रहमत के गुलशन की क्या बात व मिषाल है जिस की कली व गुन्चा हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा तय्यिबा त़ाहिरा और जिस के फूल जन्मती जवानों के सरदार हज़रते इमामे हसन व हुसैन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** हैं।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

सय्यिदा फ़ातिमा का मुख़्तशर तज़ारूफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूअ 872 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "सीरते मुस्तफ़ा" सफ़हा 697 पर शौखुल हदीष हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** शहनशाहे कौनैन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सब से छोटी मगर सब से ज़ियादा प्यारी और लाडली शहज़ादी हैं⁽¹⁾ आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** का नाम "फ़ातिमा" और

(1)...याद रहे कि हमारे प्यारे आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के 3 शहज़ादे और 4 शहज़ादियां थीं शहज़ादों के नाम हज़रते सय्यिदुना कासिम, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** और शहज़ादियों के नाम हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब, हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या, हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम, हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** शहज़ादियों में सब से बड़ी थीं। (الْمَوَاهِبُ السُّنِّيَّةُ مع شَرْحِ الرُّزْقَانِي، الفصل الثَّانِي فِي ذِكْرِ أَوْلَادِ الْكِرَامِ، ج ٤، ص ٣١٤، ٣١٣ ملقطاً)

लक़ब “ज़हरा” और “बतूल” है। इमाम अब्दुरहमान बिन अली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : ए’लाने नुबुव्वत से 5 साल क़ब्ल हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की पैदाइश हुई। وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ عَزَّ وَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (المَوَاهِبُ اللدُنِّيَّة مع شَرْحُ الرُّزْقَانِي الفصل الثّاني في ذِكر اولاد الكرام ج ٤، ص ٣٣١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अलक़ाबात

हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के बे शुमार अलक़ाबात हैं जैसे उम्मुस्सादात, मख़्दूमए काएनात, दुख़रे मुस्तफ़ा, बानूए मुर्तज़ा, सरदार ख़वातीने जहां व जिनां, हज़रते सय्यिदा, तय्यिबा, ताहिरा, फ़ातिमा ज़हरा और बतूल, ज़ाकिया, राज़िया, मरज़िया, अ़बिदा, ज़ाहिदा, मोहद्विषा, मुबारका, ज़किय्या, अज़रा, सय्यिदतुन्निसा, ख़ैरुन्निसा, खातूने जन्मत, मुअज़्ज़मा, उम्मुल हाद-उम्मुल हसनैन वगैरा⁽¹⁾ जैसी अज़ीम कुन्यतें और कषीर अलक़ाबात आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की शख़िस्सय्यत को ही मौजूं हो सकते हैं।

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की एक खास कुन्यत “उम्मे अबीहा” भी है। (أَلْفُجَمُ الكَبِير، ذِكر سن فاطمة رضى الله تعالى عنها، ج ٩، ص ٣٦١، حديث ١٨٤١)

(1).... उम्मुस्सादात या’नी सादात की अस्ल। मख़्दूमए काएनात या’नी तमाम काएनात के लिये काबिले ता’ज़ीम। दुख़रे मुस्तफ़ा या’नी

फ़ातिमा की वजहे तशमिया

ख़ातूने जन्नत के बाबाजान, रहमते आलमिय्यान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है :

إِنَّمَا سُمِّيَتْ فَاطِمَةُ لِأَنَّ اللَّهَ فَطَمَهَا وَمُحِبِّهَا عَنِ النَّارِ

तर्जमा : इस (या'नी मेरी बेटी) का नाम फ़ातिमा इस लिये रखा गया क्यूंकि **अब्बाह** तआला ने इस को और इस के मुहिब्बीन को दोज़ख़ से आज़ाद किया है ।

(كَتَبُ الرُّغَمَالِ، كِتَابُ الْفَضَائِلِ، الْفَصْلُ الثَّانِي فَضْلُ أَهْلِ الْبَيْتِ مَفْصَلًا، ج ١٢ ص ٥٠، حَدِيثُ (٣٤٢٢٢)

..... प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बेटी । बानूए मुर्तज़ा या'नी हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ की अहलिया । सरदार ख़वातीने जहां व जिनां या'नी तमाम दुन्या और जन्नत की औरतों की सरदार । सय्यिदा या'नी सरदार । तय्यिबा या'नी पाकीज़ा । त़ाहिरा या'नी त़हारत वाली । फ़ातिमा ज़हरा या'नी रोशन । बतूल या'नी मुन्कतेअ होना, कट जाना (चूंकि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا दुन्या में रहते हुए भी दुन्या से अलग-थलग थीं । लिहाज़ा आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का लक़ब बतूल हुवा) । ज़ाक़िया या'नी नेक । राज़िया या'नी राजी रहने वाली । मरज़िया या'नी पसन्दीदा । आबिदा या'नी इबादत गुज़ार । ज़ाहिदा या'नी दुन्या से बे रग़बत । मोह़दिषा या'नी अहादीष बयान करने वाली । मुबारका या'नी बा बरकत । ज़क़िया या'नी पाक । अज़रा या'नी पाक दामन दोशीज़ा । सय्यिदतुन्सिा या'नी तमाम औरतों की सरदार । ख़ैरुन्सिा या'नी औरतों में सब से बेहतर । ख़ातूने जन्नत या'नी जन्नती औरत । मुअज़ज़मा या'नी अज़मत वाली । उम्मुल हाद-उम्मुल हसनैन या'नी हिदायत याफ़्तगान सय्यिदैना हसनैने करीमैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की मां ।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया :

إِنَّ فَاطِمَةَ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَحَرَّمَ اللهُ ذُرِّيَّتَهَا عَلَى النَّارِ

तर्जमा : बेशक फ़ातिमा ने पाक दामनी इख़्तियार की

और **अब्लाह** तअ़ला ने इस की अवलाद को

दोज़ख़ पर ह़राम फ़रमा दिया है ।

(الْمُسْتَذْرَكُ لِلْحَاكِمِ، كتاب معرفة الصحابة، باب فاطمة احصنت فرجها... الخ، ج ٢، ص ١٣٥، الحديث ٢٤٤٩:)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

हैं कि मैं ने अपनी वालिदा से हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا

के मुतअल्लिक पूछा तो फ़रमाया : كَانَتْ كَالْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ :

या'नी सय्यिदा चौदहवीं रात के चांद की तरह हसीनो जमील थीं ।

(الْمُسْتَذْرَكُ لِلْحَاكِمِ، كتاب معرفة الصحابة، ذكر ما ثبت عندنا من اعقاب فاطمة... الخ، ج ٢، ص ١٢٩، الحديث ٢٨١٣:)

बतूल व फ़ातिमा ज़हरा लक़ब इस वासिते पाया

कि दुन्या में रहें और दें पता जन्मत की निगहत ⁽¹⁾ का

(दीवाने सालिक अज़ हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(1) खुशबू

2 अबकाबाव की वजह बसमिया

﴿1﴾ जहरा (या'नी जन्मत की कली)

शारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَیْبِ आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के नाम और लक़ब की वजह बयान करते हुए फ़रमाते हैं : “**अब्लाह** तआला ने जनाबे फ़तिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا , आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की अवलाद, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के मुहिब्बिन को दोज़ख़ की आग से दूर किया है इस लिये आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम “**फ़तिमा**” हुवा । चूँकि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا दुनिया में रहते हुए भी दुनिया से अलग थीं लिहाज़ा “**बतूल**” लक़ब हुवा, “**ज़हरा**” ब मा'ना कली, आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की कली थीं हत्ता कि आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की कभी ऐसी कैफ़ियत न हुई जिस से ख़वातीन दो चार होती हैं और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के जिस्म से जन्मत की खुशबू आती थी जिसे हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सूंघा करते थे । इस लिये आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का लक़ब “**ज़हरा**” हुवा ।”

(مِرَاةُ الْمُنَاجِيحِ، كِتَابُ الْمُنَاقِبِ، بَابُ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ، ج 8، ص 52؛ نَعِيمِي كِتَابُ خَانَةِ الْغُجَرَاتِ)

﴿2﴾..... ताहिश व जाकिया

इस का मतलब है : “**पाको साफ़**” । चूँकि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बचपन ही से अपने बाबाजान रहमते अज़लमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नज़रे रहमत और फ़ैज़ान से ज़ाहिरी और बातिनी तहारत व पाकी

हासिल कर चुकी थीं हत्ता कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हैज़ व निफ़ास से भी मुनज़्ज़ा व मुबर्रा (مُ-ز-رَه-مُ-ر-ر) या'नी पाक साफ़) थीं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अलाउद्दीन अली मुत्तकी हिन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَنِي खातूने जन्नत की शाने अज़मत निशान में हदीषे पाक नक़ल करते हैं कि शाहे हर दो सरा, मक्की मदनी आका, वालिदे माजिदे ज़हरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मेरी बेटी फ़ातिमा इन्सानी शक़ल मैं हूँ की तरह हैज़ व निफ़ास से पाक है । ”

(كُنُزُ الْعُقُلِ، كتاب الفضائل، الفصل الثاني فضل اهل البيت مفضلاً، ج ٦، جز ١٢، ص ٥٠، الحديث: ٣٢٢٢١)

सादिक़्ा सालिहा साइमा साबिरा साफ़ दिल नेक ख़ू पारसा शाकिरा
आबिदा ज़हिदा साजिदा ज़किरा सय्यिदा ज़हिदा तय्यिबा ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम (1)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

(1).... मज़क़ूरा अशआर में बयान कर्दा मुश्किल अलफ़ाज़ के मअानी : सादिक़्ा या'नी सच बोलने वाली । सालिहा या'नी नेक । साइमा या'नी रोज़े रखने वाली । साबिरा या'नी सब्र करने वाली । नेक ख़ू या'नी अच्छी ख़स्लत वाली । पारसा या'नी नेक । शाकिरा या'नी शुक्र करने वाली । आबिदा या'नी इबादत करने वाली । ज़हिदा या'नी दुन्या से बे रग़बत । साजिदा या'नी सजदे करने वाली । ज़किरा या'नी ज़िक्र करने वाली । तय्यिबा या'नी पाको साफ़ । ताहिरा या'नी तहारत वाली ।

शहज़ादिये कौनैन, उम्मुल हसनैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا जन्नती औरतों की सरदार, ख़ूब सूत कली की तरह पाकीज़ा तहारत वाली हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जात हुज़ूर के लिये राहते जान है ।

फ़जाइले बतूल ब ज़बाने रशूल

﴿1﴾... जो कुछ तेरी खुशी है खुदा को वोही अज़ीज़

खातमुल मुरसलीन, रहूमतुल्लिल आलमीन, जनाबे सादिक्को अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से फ़रमाया : “तुम्हारे ग़ज़ब से ग़ज़बे इलाही होता है और तुम्हारी रिज़ा से रिज़ाए इलाही ।”

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ، كِتَابُ مَعْرِفَةِ الصَّحَابَةِ، بَابُ نِدَاءِ يَوْمِ الْمَحْشَرِ..... الخ، ج ٤، ص ١٣٧، حديث ٤٧٨٣)

﴿2﴾... हम को है वोह पसन्द जिसे आउ तू पसन्द

दिलबरे आमिना, सरताजे आइशा, वालिदे फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने इरशाद फ़रमाया : “फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا मेरे जिस्म का हिस्सा (टुकड़ा) है जो इसे ना गवार वोह मुझे ना गवार, जो इसे पसन्द वोह मुझे पसन्द । रोजे कियामत सिवाए मेरे नसब, मेरे सबब और मेरे इज़्दवाजी रिश्तों के तमाम नसब मुन्क़तेअ (या'नी ख़त्म) हो जाएंगे ।”

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ، كِتَابُ مَعْرِفَةِ الصَّحَابَةِ، بَابُ دَعْوَةِ دَفْعِ الْفَقْرِ..... الخ، ج ٤، ص ١٤٤، حديث ٤٨٠١)

﴿3﴾... जिगर गोशए रशूल

اَبْلَاحُ كَرَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशाद है : “फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا तमाम जहानों की औरतों और सब जन्मती औरतों की सरदार है ।”

मज़ीद फ़रमाया : “فَاطِمَةُ بَضْعَةٌ مِنِّي فَمَنْ أَعْضَبَهَا أَعْضَبَنِي”

या'नी फ़ातिमा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) मेरा टुकड़ा है जिस ने इसे नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया ।” और एक रिवायत में है : يُرِيئُنِي مَا رَأَيْتُهَا وَيُؤْذِينِي مَا آذَاهَا : या'नी इन की परेशानी मेरी परेशानी और इन की तकलीफ़ मेरी तकलीफ़ है ।”

(مَشْكُوتُ الْمَصَابِيحِ، كِتَابُ الْمَنَاقِبِ، بَابُ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ... الخ، ج ٢، ص ٤٣٦، حديث ٦١٣٩)

सय्यिदा, ज़ाहिरा, तय्यिबा, ताहिरा

जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

(हदाइके बख़िश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَالَمِينَ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायात से पता चला कि **अब्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने सय्यिदतुन्निसा, वालिदए उम्मे कुलषूम व ज़ैनब व रुक़य्या हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा की जाते मुक़द्दसा को फ़ज़ाइले हमीदा व कमालाते कषीरा से सरफ़राज़ फ़रमाया हत्ता कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की खुशी को अपनी खुशी और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की नाराज़ी को अपनी नाराज़ी क़रार दिया यहां उन बद नसीबों के लिये मक़ामे ग़ौर है जो सय्यिदए काएनात رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا या आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की अवलादे पाक की गुस्ताख़ियां करते और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की नाराज़ी मौल ले कर उख़रवी तबाही का सामान करते हैं ।

बाग़े जन्नत के हैं बहरे मदह ख़ाने अहले बैत

तुम को मुज़दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत

(जौके ना'त अज़ : शहनशाहे सुख़न मौलाना हसन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)

या'नी अहले बैत की ता'रीफ़ व तौसीफ़ करने वालों के लिये जन्नत के बागा़त हैं और ऐ अहले बैत के दुश्मनो ! तुम्हारे लिये दोज़ख़ की बिशारत है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَوَبُّوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُ اللَّهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ख़ुश नसीब हैं वोह लोग जो अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

से महब्बत करते हैं और **अब्बाह** व रसूल से महब्बत करते हैं और **अब्बाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिज़ा पाते हैं क्यूंकि शाहे हर दो सरा, वालिदे फ़ातिमतुज़्ज़हरा (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) को खुश करने वाली चीज़ हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा व आले फ़ातिमा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से महब्बत व अक्दीदत है और जिसे खुश किस्मती से रसूले पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिज़ा हासिल हो गई उसे रब्ब तआला की रिज़ा मिल गई क्यूंकि

ख़ुदा की रिज़ा चाहते हैं दो आलम

ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुहम्मद

(हदाइके बख़िश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَوْت)

शहँ क्लामे रजा :

दोनों जहां दुन्या व आखिरत खुदा की खुशनुदी के ख़्वाहां हैं और रब्ब तआला हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को खुश रखना चाहता है जैसा कि इरशाद फ़रमाता है : **”وَأَسْوَءُ يُعْطِيكَ رَبُّكَ وَتَرْضَى ۗ”** (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब्ब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तश्वीरे मुश्तफ़ा

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अ़इशा सिद्दीका, तय्यिबा, ताहिरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने चाल ढाल, शक्लो शबाहत (रंग-रूप) और बात-चीत में फ़ातिमा अ़फ़ीफ़ा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) से बढ़ कर किसी को हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मुशाबेह नहीं देखा और जब हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में हाज़िर होती तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के इस्तिक़बाल के लिये खड़े हो जाते, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के हाथ थाम कर उन को बोसा देते और अपनी जगह पर बिठाते।

ज़हरा जदों वी आइयां खड़े हो गए रसूल

एन्हों कहवां शफ़क़त या प्यार फ़ातिमा

और जब हुजुरे पुरनूर, शाफ़ेय़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले जाते तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ता'ज़ीम के लिये क़ियाम फ़रमातीं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुबारक हाथों को थाम कर बोसा देतीं और अपनी जगह बिठातीं ।

(سُنَنِ أَبُو دَاوُدَ، كِتَابُ الْاَدَبِ، بَابُ مَا جَاءَ فِي الْقِيَامِ، ص ٨١٢، حَدِيثُ ٥٢١٧)

रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा

किया नज़ारा जिन आंखों ने तफ़सीरे नुबुवत (1) का

(दीवाने सालिक अज़ हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सख्यिदा फ़ातिमा रोई फिर हंस पडीं

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सख्यिदतुना अइशा सिद्दीका,

तख्यिबा, ताहिरा, अ़बिदा, ज़ाहिदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं :

आका की शहज़ादी, ख़ातूने जन्मत हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا

सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते बा बरकत में

हज़िर हुई । उन का चलना हूबहू (या'नी बिल्कुल) रसूलुल्लाह

के मुशाबेह था, जब महबूबे रब्ब, शहनशाहे

अ़रबो अज़म صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन को देखा तो फ़रमाया : ऐ

मेरी बेटी ! मरहूबा ! फिर उन को बिठाया, फिर उन से सरगोशी

(1)..... या'नी सख्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا

की (या'नी कान में कोई बात कही) जिस को सुन कर शहज़ादी बहुत रोई । जब महबूबे रब्ब, शहनशाहे अरबो अजम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन की बे करारी देखी तो दोबारा सरगोशी की जिस से आप हंस पड़ीं (हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं :) जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खड़े हो गए तो मैं ने खातूने जन्नत से पूछा : आप से रसूले खुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने क्या सरगोशी की थी ? खातूने जन्नत ने कहा : मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का राज़ इफ़शा (या'नी ज़ाहिर) नहीं करूंगी, (हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं :) जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ रफ़ीके आ'ला से जा मिले (या'नी महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का विसाल हो गया) तो मैं ने कहा : मेरा आप पर जो हक़ है मैं आप को उस हक़ की क़सम दे कर सुवाल करती हूँ, मुझे बताइये : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने आप से क्या फ़रमाया था ? खातूने जन्नत ने कहा : हां ! अब मैं बताती हूँ, पहली बार हबीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने सरगोशी की तो मुझे येह ख़बर दी कि हर साल जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) मुझ से एक बार कुरआने पाक का दौर किया करते थे इस मरतबा उन्होंने ने 2 बार दौर किया है, अब मेरा येही गुमान है कि मेरा वक़्त करीब आ गया है, तुम **अल्लाह** तअ़ाला से डरना और सब्र करना, बेशक मैं तुम्हारा अच्छा पेशवा हूँ, खातूने जन्नत ने कहा :

येह सुन कर मुझ पर गिर्या तारी हुवा (या'नी मैं रोने लगी) । जब बाबाजान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरी बे करारी देखी तो मुझ से दोबारा सरगोशी की और फ़रमाया :

يَا فَاطِمَةُ أَلَا تَرْضَيْنَ أَنْ تَكُونِي سَيِّدَةَ نِسَاءِ أَهْلِ الْمَجَنَّةِ أَوْ نِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ

तर्जमा : ऐ फ़ातिमा ! क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो कि तुम तमाम जन्नतियों की बीवियों या मोमिनों की बीवियों की सरदार हो !
खातूने जन्मत ने फ़रमाया : फिर मुझे हंसी आ गई ।

(مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب اهل بيت النبي، الفصل الاول، ج ٢، ص ٢٣٥، الحديث: ٦١٣٨)

10 फ़जाइले फ़ातिमा

﴿1﴾.... खातूने जन्मत हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا सर से पाउं तक हम शक्ले मुस्तफ़ा थीं ।

﴿2﴾.... आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की चाल-ढाल हर वज़अ-क़तअ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुशाबेह थी ।

﴿3﴾..... **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इन्हें रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जीती जागती तस्वीर बनाया था ।

﴿4﴾.... मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ उम्मुल हसनैन शहज़ादिये कौनैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की शान में अर्ज़ करते हैं :

رسूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा

किया नज़ारा जिन आंखों ने तफ़्सीरे नुबुव्वत का

(दीवाने सालिक अज़ हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ وَعَلَى مُحَمَّدٍ

﴿5﴾....हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ وَعَلَى اللَّهِ وَسَلَّمَ जब खातूने जन्नत फ़ातिमतुज़्ज़हरा को आता देखते तो खुशी से खड़े हो जाते और अपनी जगह बिठा लेते ।

﴿6﴾.... जब खातूने जन्नत फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुईं तो तमाम उम्माहातुल मुअमिनीन मौजूद थीं मगर शाहे बहरो बर, रसूले अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ وَعَلَى اللَّهِ وَسَلَّمَ ने राज़ की बात सिर्फ़ अपनी लाडली शहज़ादी से की ।

﴿7﴾..... माहे रमज़ान में कुरआन का दौर करना सुन्नते रसूली भी है और सुन्नते जिब्रीली भी । (कुरआने पाक का दौर करने का मतलब येह है कि एक पढ़े और दूसरा सुने, फिर दूसरा पढ़े और पहला सुने, मा'लूम हुवा हबीबे खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ وَعَلَى اللَّهِ وَسَلَّمَ को अपने विसाले मुबारक का पहले से ही इल्म था कि अगले रमज़ान से पहले ही हमारी वफ़ाते जाहिरी हो जाएगी)

﴿8﴾.... ऐ फ़ातिमा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) जैसे तुम हमारी हयात शरीफ़ में तय्यिबा, ताहिरा, मुत्तकिय्या, साबिरा रही हो ऐसे ही हमारी वफ़ात के बा'द भी रहना, तुम्हारे पाए इस्तिक़लाल (إِسْتِقْلَال) में जुम्बिश (عَمْرُوش) (या'नी हरकत)

न आने पाए, खातूने जन्नत ने इस पर अमल कर के दिखा दिया, रोना सब्र के खिलाफ नहीं, नौहा, पीटना वगैरा सब्र के खिलाफ है येह आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने कभी नहीं किया ।

﴿9﴾.... ताजदारे रिसालत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी शहजादी को जन्नती लोगों की बीवियों या मोमिनो की बीवियों की सरदार होने की बिशारत दी ।

﴿10﴾.... हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : तहारते नफ़्स और शरफ़े नसब में खातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के बराबर कोई नहीं हो सकता ।

(مرآة المناجيب شرح مشكاة المصابيح، كتاب الفضائل، باب مناقب اهل بيت النبي، ج ٨، ص ٢٥٣ تا ٢٥٥)

एक और रिवायत में है : उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका, तय्यिबा, ताहिरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : रसूले करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी शहजादी खातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा को बुलाया और कान में कोई बात फ़रमाई वोह बात सुन कर खातूने जन्नत रोने लगीं, आका صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फिर सरगोशी की (या'नी कान में कोई बात फ़रमाई) तो खातूने जन्नत हंसने लगीं, हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका, तय्यिबा, ताहिरा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने खातूने जन्नत से कहा : आप के बाबाजान, रहमते अलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप के कान में क्या फ़रमाया जो आप रोई और दोबारा सरगोशी में क्या

फ़रमाया जो आप हंसीं ? खातूने जन्नत ने कहा : मेरे बाबाजान रहमते अ़ालमिय्यान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पहली बार सरगोशी में अपनी वफ़ाते ज़ाहिरी की ख़बर दी तो मैं रोई और दूसरी बार सरगोशी में येह ख़बर दी कि आप के अहल में से सब से पहले मैं आप से मिलूंगी, तो मैं हंसने लगी ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، كِتَابُ الْمَنَاقِبِ، بَابُ عِلَامَاتِ النَّبُوَّةِ فِي الْإِسْلَامِ، ص ٩٢٠، حَدِيثُ ٣٦٢٦، ٣٦٢٥، مَلْتَقَطًا)

इस हदीष में कई ग़ैबी ख़बरें हैं :

- 1)..... खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का वक़ते वफ़ात ।
- 2)..... नोड़य्यते वफ़ात कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का ख़ातिमा ईमान, तक़वा और परहेज़गारी के आ'ला दर्जे पर होगा ।
- 3)..... आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का क़ब्रो हशर में अक्वल नम्बर काम्याब होना ।
- 4)..... आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का पुल सिरात से बख़ूबी गुज़र जाना ।
- 5)..... आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का जन्नत के आ'ला मक़ाम पर हत्ता कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ रहना ।

(مِرْآةُ الْمَنَاجِيحِ، كِتَابُ الْفَضَائِلِ، بَابُ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ، ج ٨، ص ٤٥٥)

जिन का नामे मुबारक है बी फ़ातिमा जो ख़वातीने अ़ालम में हैं अ़ालिया
आबिदा, ज़ाहिदा, साजिदा, सालिहा सय्यिदा, ज़ाहिदा, तय्यिबा, ताहिदा

जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ وَعَلَىٰ آلِي مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जि़क़ कर्दा रिवायत और

इस की शर्ह फ़ज़ाइले फ़ातिमा और कमालाते मुस्तफ़ा का हसीन इम्तिज़ाज (अम-त-ज़ाज) (या'नी आमेज़िश) है, एक तरफ़ हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की शाने अज़मत निशान के फूल खिलते हैं तो दूसरी तरफ़ उलूमो कमालाते मुस्तफ़ा के गुलशन महकते हैं, एक तरफ़ लाडली शहज़ादी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को मिलने वाला कुर्बे इलाही, इन की बकि़य्या दुन्यवी जिन्दगी और उख़रवी इन्आम व इकरामात की ख़बर दी जा रही है तो दूसरी तरफ़ फ़ज़लो कमाले मुस्तफ़ा के बाब भी रोशन तर होते जा रहे हैं जिन को हकीमुल उम्मत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّةٓ समेत हर साहिबे बसीरत (या'नी अक्ल मन्द) ने अपनी बिसात (या'नी हिम्मत) के मुताबिक़ समझा और इश्के रसूल व अकीदते बतूल को फुज़ूँ (ف-ز-و-ن) या'नी जि़यादा) करने वाले खुशनुमा फूलों का मदनी गुलदस्ता हमारी तरफ़ बढ़ाया ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तश्बीहे फ़ातिमा की फ़ज़ीलत

सय्यिदे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की प्यारी लाडली साहिबज़ादी, ख़ातूने जन्नत, बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا खुद तनूर में रोटियां लगाया करतीं, घर में झाडू देतीं और चक्की

पीसती थीं जिस से आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के हाथों में छाले पड़ गए थे, रंग मुबारक मुतगय्यर और कपड़े गर्द आलूद हो गए थे। एक दफ़ा ख़ादिम की त़लब में बारगाहे मुस्तफ़ा में हाज़िर हुई तो तस्बीहे फ़ातिमा का तोहफ़ा मिला चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا आकाए नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़ार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में हाज़िर हुई और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से ख़ादिम का सुवाल किया : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इश़ाद फ़रमाया : तुम्हें हमारे पास ख़ादिम तो नहीं मिलेगा, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं जो ख़ादिम से बेहतर है? तुम जब बिस्तर पर जाओ तो 33 बार سُبْحَانَ اللَّهِ 33 बार बार وَالْحَمْدُ لِلَّهِ और 34 बार اللَّهُ أَكْبَرُ पढ़ लिया करो।

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ، كِتَابُ النُّكْرِ وَالنُّعْوَةِ وَالِاسْتِغْفَارِ، بَابُ التَّسْبِيحِ أَوَّلُ النَّهَارِ وَعِنْدَ النَّوْمِ، ص 1028، الْحَدِيثُ: 2228)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्य़ास अज़तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने जो शरीअत व तरीक़त का जामेअ मज्मूआ इस्लामी बहनों के लिये बनाम 63 मदनी इन्आमात ब सूरते सुवालात अता फ़रमाए हैं, इस में मदनी

इन्आम नम्बर (3) है कि क्या आज आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम एक एक बार आयतुल कुरसी, सूरतुल इख़लास और तस्बीहे फ़ातिमा पढ़ी ?

तो आइये ! निय्यत कर लीजिये कि इस मदनी इन्आम पर ज़रूर अमल करेंगी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इस्लामी बहनों के लिये शीरते सालिहाते उम्मात

मख़दूमए काएनात हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** के ज़िक्र कर्दा वाक़िए से पता चलता है कि ताजदारे काएनात, शाहे मौजूदात **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपनी लाडली शहज़ादी के लिये येही पसन्द फ़रमाते हैं कि वोह घर के काम-काज खुद ही करें, इस से इस्लामी बहनों के लिये एक राहे अमल मुतअय्यन होती है, चुनान्चे

शीरते सालिहात

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 679 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "जन्ती ज़ेवर" सफ़हा 60 पर शैखुल हदीष अल्लामा मुफ़ती अब्दुल मुस्तफ़ आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُبْرَى** इस तरफ़ तवज्जोह दिलाते हुए फ़रमाते हैं :

औरत के फ़राइज़ में येह भी है कि अगर शोहर ग़रीब हो और

घरेलू काम-काज के लिये नोकरानी रखने की ताकत न हो तो अपने घर का काम-काज खुद कर लिया करे इस में हरगिज़ हरगिज़ न औरत की कोई ज़िल्लत है न शर्म। बुख़ारी शरीफ़ की बहुत सी रिवायतों से पता चलता है कि खुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मुक़द्दस साहिबज़ादी हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का भी येही मा'मूल था कि वोह अपने घर का सारा काम-काज खुद अपने हाथों से किया करती थीं, कुंवे से पानी भर कर और अपनी मुक़द्दस पीठ पर मशक लाद कर पानी लाया करती थीं, खुद ही चक्की चला कर आटा भी पीस लेती थीं इसी वजह से इन के मुबारक हाथों में कभी कभी छाले पड़ जाते थे इसी तरह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीकِ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की साहिबज़ादी हज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के मुतअल्लिक भी रिवायत है कि वोह अपने ग़रीब शोहर हज़रते सय्यिदुना जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के यहां अपने घर का सारा काम-काज अपने हाथों से कर लिया करती थीं यहां तक कि ऊंट को खिलाने के लिये बागों में से खजूरों की गुठलियां चुन चुन कर अपने सर पर लाती थीं और घोड़े के लिये घास-चारा भी लाती थीं और घोड़े की मालिश भी करती थीं।

मज़ीद फ़रमाते हैं : हर बीवी का येह भी फ़र्ज है कि वोह अपने शोहर की आमदनी और घर के अख़राजात को हमेशा नज़र के सामने रखे और घर का खर्च इस तरह चलाए कि इज़्ज़त

व आबरू से जिन्दगी बसर होती रहे। अगर शोहर की आमदनी कम हो तो हरगिज़ हरगिज़ शोहर पर बे जा फ़रमाइशों का बोझ न डाले इस लिये कि अगर औरत ने शोहर को मजबूर किया और शोहर ने बीवी की महबूबत में कर्ज़ का बोझ अपने सर पर उठा लिया और खुदा عَزَّوَجَلَّ न करे इस कर्ज़ का अदा करना दुश्वार हो गया तो घरेलू जिन्दगी में परेशानियों का सामना हो जाएगा और मियां-बीवी की जिन्दगी तंग हो जाएगी इस लिये हर औरत को लाज़िम है कि सब्रो क़नाअत के साथ जो कुछ भी मिले खुदा का शुक्र अदा करे और शोहर की जितनी आमदनी हो उसी के मुताबिक़ खर्च करे और घर के अख़राजात को हरगिज़ हरगिज़ आमदनी से बढ़ने न दे। (जन्ती ज़ेवर, स. 60)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

घरेलू काम-काज करने के 11 फ़वाइद

घरेलू काम-काज करने के बहुत फ़वाइद हैं, यहां इन में से चन्द बयान किये जाते हैं :

(1).... 26 शा'बानुल मुअज़्ज़म 1432 हि. को इजतिमाए रिदापोशी के सिलसिले में होने वाले मदनी मुज़ाकरे में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्ल्यास अत्तार कादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने इरशाद फ़रमाया : अपना काम अपने हाथ से करना सुन्नते मुस्तफ़ा है। इस्लामी बहनों को इस प्यारी प्यारी सुन्नत पर अमल करना चाहिये। घर के काम-काज वगैरा करने से हाथों की रगें मुतह्रिक़ रहेंगी और नसें सख़्त नहीं होंगी।

(2)..... अपने घर के काम-काज खुद करना और ब वक्ते नमाज़ दीगर तमाम मसरूफ़िय्यात ख़त्म कर देना सुन्नते मुस्तफ़ा है ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، كِتَابُ النِّفَقَاتِ، بَابُ خِدْمَةِ الرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ، ص ١٣٧٥، حَدِيثُ ٥٣٦٣)

(3).... घर में रहते हुए इस्लामी बहनों का दस्तकारी करना और कस्बे हलाल के ज़राएअ अपनाना सुन्नते उम्मुल मोअमिनीन व सुन्नते सहाबियात है ।

(سُنَنُ نَسَائِيٍّ، كِتَابُ الزِّيْنَةِ، لِبَسِ الْبِرُودِ، ص ٨٤٣، حَدِيثُ ٥٣٣١)

(4).... घर के काम-काज करना सुन्नते सय्यिदा फ़ातिमा है । इस की तफ़सील मक्तबतुल मदीना की जारी कर्दा ओडियो केसिट “शहज़ादिये कौनैन की सादगी” में मिल जाएगी ।

(5)..... घरेलू काम-काज करने वाली इस्लामी बहन की घर में अहम्मियत होती है यूं उसे घर में मदनी माहोल बनाने में आसानी होती है ।

(6).... घर के काम-काज पर तवज्जोह देने से सुसराली झगड़े खुसूसन सास बहू की चपकलिशें ख़त्म होने की उम्मीदे वाषिक है । फिर भी अगर येह झगड़े ख़त्म न हों तो मक्तबतुल मदीना का मतबूआ 32 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाला ब नाम “सास बहू में सुल्ह का राज़” हासिल कीजिये और इस में दिये हुए नुस्खे पर अमल कीजिये ।

(7)..... बेकार शख़्स शैतान का आलए कार बनता और तफ़क्कुरात के हुजूम में घिर जाता है जब कि घर के काम-काज करना बे कारी, सुस्ती और काहिली को दूर करता और शैतानी ख़यालात व हुजूमे तफ़क्कुरात से महफूज़ रखता है ।

- (8)..... खुद को जिस्मानी तौर पर स्मार्ट और ज़ेहनी तौर पर चाक़ व चोबन्द रखने की ख़्वाहिश होती है और येह चीज़ घरेलू काम-काज करने से हासिल होती है ।
- (9)..... घरेलू काम-काज में वरज़िश है और वरज़िश बीमारियों से बचाती और सिद्दहत की बहारें लाती है ।
- (10)..... अगर घरेलू काम-काज थका दें तो सीरते फ़ातिमा के मुतालए और तस्बीहे फ़ातिमा के विर्द से इस का इलाज कीजिये ।
- (11)..... आज कल डिप्रेसन और टेन्शन की शिकायत आम है, इस से बचने का बेहतरीन नुस्खा मसरूफ़ियत है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

इबादत हो तो ऐसी

नूरे नज़रे मुस्तफ़ा, दिलबरे अलिय्युल मुर्तज़ा, राहते फ़ातिमतुज्ज़हरा हज़रते सय्यिदुना इमामे हसने मुज्तबा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी वालिदए माजिदा हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को देखा कि रात को मस्जिदे बैत की मेहराब (या'नी घर में नमाज़ पढ़ने की मख़सूस जगह) में नमाज़ पढ़ती रहतीं यहां तक कि नमाज़े फ़ज़्र का वक़्त हो जाता, मैं ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को मुसलमान मर्दों और औरतों के लिये बहुत ज़ियादा दुआएं करते सुना, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا अपनी ज़ात के लिये कोई दुआ न करतीं, मैं ने अर्ज़ की : प्यारी

अम्मी जान (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) क्या वजह है कि आप अपने लिये कोई दुआ नहीं करतीं, फ़रमाया : “पहले पड़ोस है फिर घर ।”

(مَسَارِجُ النُّبُوتِ (مترجم)، ج ۲، قسم پنجم باب اول در ذکر اولاد کرام ص ۶۲۲)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाकिए में उन इस्लामी बहनों के लिये कई नसीहत आमोज़ मदनी फूल हैं जो नवाफ़िल तो दर कनार फ़राइज़ से भी ग़फ़लत बरतती हैं, दो जहां के ताजदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की साहिबज़ादी, खातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने तो रातें इबादते इलाही में गुज़ारीं मगर इन की रातें ग़फ़लत में गुज़रती हैं, कभी “गुनाहों भरे चेनलज़” के सामने “फ़िल्में डिरामे” देखते, कभी मेहंदी की तक़रीब में बे हयाई करते और कभी शादी के मौक़अ पर ख़ूब ढोल पीटते, बाजे बजाते और डान्स करते गुज़रती हैं । बे हयाई को अ़र समझती हैं न बे पर्दगी से ख़ार खाती हैं, हालांकि नूरे निगाहे रसूल हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बतूल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का पर्दे का इस क़दर मदनी ज़ेह्न कि जीते जी ही नहीं बल्कि सफ़रे आख़िरत पर गामज़न होते वक़्त भी इस के बारे में मुतफ़क्किर थीं और इस की पाबन्दी की ताकीद फ़रमाई, चुनान्चे

बीबी फ़ातिमा के जनाजे का भी पर्दा

मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “हज़रते फ़ातिमतुज्जहरा ने मौत के वक़्त वसिय्यत फ़रमाई थी कि जब मैं दुन्या से रुख़सत हो जाऊं तो रात में दफ़न करना ताकि किसी ग़ैर मर्द की नज़र मेरे जनाजे पर न पड़े।”

(مَسَارِجُ النَّبُوتِ (مترجم)، ج ۲، قسم پنجم باب اول در ذکر اولاد کرام ص ۶۲۴)

तमाम इस्लामी बहनें दुन्या व आख़िरत में काम्याबी पाने, बा पर्दा व बा इज़्ज़त जिन्दगी गुज़ारने और शर्मो हया के साथ जीने का ढंग सीखने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहें, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआत में शिर्कत का मा'मूल बनाएं إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ अपनी जिन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस करेंगी, आइये ! अपना ईमान ताज़ा करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत की अज़ीमुश्शान मदनी बहार मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “फ़ैज़ाने सुन्नत” (जिल्द अव्वल) सफ़हा 561 पर है :

70 दिन पुरानी लाश

3 रमज़ानुल मुबारक 1426 हि. बरोज़ हफ़ता पाकिस्तान के मशरिकी हिस्से में ख़ौफ़नाक ज़लज़ला आया जिस में लाखों

अफ़राद फ़ौत हुए इन्हीं में मुज़फ़राबाद (कश्मीर) के अलाके “मीरा तसोलियां” की मुक़ीम 19 सालह नसरीन अत्तारिया बिनते गुलाम मुर्सलीन जो कि दा’वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत फ़रमाती थीं, शहीद हो गईं । मर्हूमा के वालिद और दीगर घर वालों ने 8 जुल का’दतुल हराम 1426 हि. शबे पीर रात तक़रीबन 10 बजे किसी वजह से क़ब्र को खोल दिया, यकबारगी आने वाली खुशबूओं की लपटों से मशामे दिमाग़ मुअत्तर हो गए ! शहादत को 70 अय्याम गुज़र जाने के बा वुजूद नसरीन अत्तारिया का कफ़न सलामत और बदन बिल्कुल तरो ताज़ा था !

اللّٰهُ رब्बुल इज़ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो ।

أصميين بجاؤا النّبئ الأّمين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अताए हबीबे खुदा मदनी माहोल⁽¹⁾ है फ़ैज़ाने गोषो रज़ा मदनी माहोल सलामत रहे या खुदा मदनी माहोल बचे बद नज़र से सदा मदनी माहोल ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिये भी सुनो है बहुत काम का मदनी माहोल तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अहकाम येह ता’लीम फ़रमाएगा मदनी माहोल क़ियामत तलक या इलाही सलामत रहे तेरे अत्तार का मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शाश अज अमीरे अहले सुन्नत دامك بركاتهم العالیه स. 602 ता 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(1) दा’वते इस्लामी के सुन्नतों भरे और नेकियों से लबरेज़ माहोल को “मदनी माहोल” कहा जाता है ।

ख़ातूने जन्नत का विशाले बा कम्माल

विसाले नबवी के 6 माह बा'द 3 रमज़ानुल मुबारक सिने 11 हिजरी मंगल की रात सय्यिदा, तय्यिबा, ताहिरा हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने दाइए अजल को लब्बैक कहा। हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा या हज़रते सय्यिदुना अब्बास (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ने नमाजे जनाज़ा पढ़ाई और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا जन्नतुल बकीअ में मदफून हुई।

(مَدَارُجُ النَّبِيِّاتِ (مترجم) قسم پنجم باب اول در ذکر اولاد کرام، ج ۲، ص ۶۲۴)

मन्क़बते ख़ातूने जन्नत

है रूत्बा इस लिये कौनैन (1) में इस्मत (2) का इफ़्त का शरफ़ हासिल है उन को दामने ज़हरा से निस्बत का जो जाना खुल्द (3) में हो पाए ज़हरा से लिपट जाओ जिसे कहते हैं जन्नत मुल्क है ख़ातूने जन्नत का नबी के दिल की राहत और अली के घर की जीनत हैं बयां किस से हो इन की पाक तीनत पाक तलअत (4) का इन्ही के माह पारे दो जहां के लाज वाले हैं ये ही हैं मजमए बहरैन (5) सर चश्मा हिदायत का रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा किया नज़ारा जिन आंखों ने तफ़्सीरे नुबुव्वत का बतूल व फ़ातिमा ज़हरा लक़ब इस वासिते पाया कि दुन्या में रहें और दें पता जन्नत की निगहत (6) का

(1)..... दो जहां (2)..... पारसाई (3)..... जन्नत (4)..... रुखे पाक (5)..... दो समुन्दर, इशारा है हज़रते हसनैने करीमैन या'नी हसन व हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की तरफ़ (6)..... खुशबू।

नबी की लाडली, बीवी वली की, मां शहीदों की
 यहां जल्वा नुबुव्वत का विलायत का शहादत का
तअ़ालल्लाह इस सअ़दैने (1) के जोड़े का क्या कहना
 कि रहमत की दुल्हन ज़हरा, अली दुल्हा विलायत का
 वोह इतरत (2) जो कि उम्मत के लिये कुरआने पानी है
 नबी का है चमन या'नी शजर इस पाक मम्बत (3) का
 वोह चादर जिस का आंचल चांद सूरज ने नहीं देखा
 बनेगी हश्र में पर्दा गुनहगाराने उम्मत का
 अगर **सालिक** भी या रब्ब दा'वए जन्नत करे, हक़ है
 जो वोह ज़हरा की है येह भी तो है खातूने जन्नत का
 (दीवाने सालिक अज़ हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَقَّانِ)
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आवाज़ बैठ जाए तो तीन इलाज

- ﴿1﴾ नमक का छोटा सा टुकड़ा आग में ख़ूब गर्म कर के किसी चीज़ से पकड़ कर फ़ौरन ठन्डे पानी के गिलास में बुझा दीजिये, फिर वोह नमक की डली पानी से निकाल कर इस पानी को पी जाइये। दो तीन बार येह इलाज करने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाइदा हो जाएगा।
- ﴿2﴾ एक चमच जव शरीफ़ के दाने चबाइये और चूसिये फिर आख़िर में निगल जाइये।
- ﴿3﴾ ख़शख़ाश के छिलके और अजवाइन हम वज़न लीजिये और पानी में उबाल कर बरदाश्त के क़ाबिल हो जाने के बा'द इस पानी से ग़रारे कीजिये। (नेकी की दा'वत, स. 601)

(1)... दो मुबारक सय्यारे, यहां मुराद मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हैं

(2).... नस्ले पाक (3).... जाए पैदाइश।

बयान नम्बर 2

ख़ातूने जन्नत
की
क़शमात

45

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खातूने जन्त की कशामात

दुरूद शरीफ की फज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 419 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "मदनी पन्ज सूरह" सफ़हा 164 पर है : शहनशाहे कौनो मकां, ग़मख़्वारे बे कसां, शफ़ीए मुजरिमां صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अफ़ियत निशां है : ऐ लोगो ! बेशक तुम में से बरोजे क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर कषरत से दुरूद पढा होगा ।

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الیاء، ج ۹، ص ۱۲۹، الحديث ۲۷۶۸۶)

दुन्या व आख़िरत में जब मैं रहूँ सलामत

प्यारे पढूँ न क्यूँ कर तुम पर सलाम हर दम

क्या ख़ौफ़ मुझ को प्यारे ! नारे जहीम से हो

तुम हो शफ़ीए मेहशर तुम पर सलाम हर दम

(عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّحْمَنِ هَسَن رَجَا خَانَ مَوْلَانَا سُخْرِن شَهَن شَاهِي اَجْتِ نَا'تِ كَيْكِي)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

शाही दा'वत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 346 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "करामाते सहाबा" सफ़हा 330 ता 333 पर शैख़ुल हदीष हज़रते अल्लामा

अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नक्ल फ़रमाते हैं : रिवायत है कि एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दा'वत की। जब दोनों अ़ालम के मेज़बान हज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मकान पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो हज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ आप के पीछे चलते हुए आप के क़दमों को गिनने लगे और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे मां बाप आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कुरबान ! मेरी तमन्ना है कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के एक एक क़दम के इवज़ मैं आप की ता'ज़ीम व तकरीम के लिये एक एक गुलाम आज़ाद करूं। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मकान तक जिस क़दर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के क़दम पड़े थे हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इतनी ही ता'दाद में गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।

हज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने इस दा'वत से मुतअष्विर हो कर हज़रते सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से कहा : ऐ फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا आज मेरे दीनी भाई हज़रते सय्यिदुना उ़षमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बड़ी ही शानदार दा'वत की है और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हर हर क़दम के बदले एक गुलाम आज़ाद किया है, मेरी भी तमन्ना है कि काश ! हम भी हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

की इसी तरह शानदार दा'वत कर सकते। हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपने शोहरे नामदार हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ के इस जोशे तअष्पूर से मुतअष्पिर हो कर कहा : बहुत अच्छा। जाइये, आप भी हुज़ूर اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ को इसी किस्म की दा'वत देते आइये عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام हमारे घर में भी इसी किस्म का सारा इन्तिज़ाम हो जाएगा।

चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर दा'वत दे दी और शहनशाहे दो अलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने सहाबए किराम الرِّضْوَانِ की एक कषीर जमाअत को साथ ले कर अपनी प्यारी बेटी के घर में तशरीफ़ फ़रमा हो गए। हज़रते सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) में तशरीफ़ ले जा कर खुदावन्दे कुहूस عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सर ब सुजूद हो गई और येह दुआ मांगी : “या صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **اَبَايَا** तेरी बन्दी फ़ातिमा ने तेरे महबूब और अस्हाबे महबूब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانِ की दा'वत की है, तेरी बन्दी का सिर्फ़ तुझ ही पर भरोसा है लिहाज़ा ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ तू आज मेरी लाज रख ले और इस दा'वत के खानों का तू अलम ग़ैब (या'नी दूसरा जहां जो छुपा हुआ है) से इन्तिज़ाम फ़रमा।”

येह दुआ मांग कर हज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने हांडियों को चुल्हों पर चढ़ा दिया। खुदावन्दे तअलाला का दरियाए करम एक दम जोश में आ गया और उस

रज़्ज़ाके मुतलक़ (बिगैर किसी क़ैद के रिज़्क अ़ता फ़रमाने वाले) ने दम ज़दन में (या'नी फ़ौरन) उन हांडियों को जन्नत के खानों से भर दिया ।

हज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने इन हांडियों में से खाना निकालना शुरू कर दिया और हुज़ूर अपने सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के साथ खाना खाने से फ़ारिग़ हो गए लेकिन खुदा عَزَّ وَجَلَّ की शान कि हांडियों में से खाना कुछ भी कम नहीं हुवा और सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ इन खानों की खुशबू और लज़ज़त से हैरान रह गए । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को मुतहय्यर (مُتَحَيِّرِينَ) या'नी हैरान) देख कर फ़रमाया : क्या तुम लोग जानते हो कि येह खाना कहां से आया है? सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ ने अज़ि किया : नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : येह खाना **अल्लाह** तअ़ाला ने हम लोगों के लिये जन्नत से भेज दिया है ।

फ़िर हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا गोशाए तन्हाई में जा कर सजदा रेज़ हो गई और येह दुआ मांगने लगी : या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हज़रते उ़षमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने तेरे महबूब के एक एक क़दम के इवज़ एक एक गुलाम आज़ाद किया है लेकिन तेरी बन्दी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को इतनी इस्तिअ़त नहीं है । लिहाज़ा ऐ खुदावन्दे अ़लम عَزَّ وَجَلَّ जहां तू ने मेरी ख़ातिर जन्नत से खाना भेज कर मेरी लाज रख ली है वहां तू मेरी ख़ातिर

अपने महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के उन क़दमों के बराबर जितने क़दम चल कर मेरे घर तशरीफ़ लाए हैं, अपने महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत के गुनाहगार बन्दों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे ।

हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا जूँही इस दुआ से फ़ारिग़ हुई एक दम ना गहां (या'नी अचानक) हज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام यह बिशारत ले कर बारगाहे रिसालत में उतर पड़े कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की दुआ बारगाहे इलाही में मक़बूल हो गई, **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया है कि हम ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हर क़दम के बदले में एक एक हज़ार गुनाहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया । (جامعُ الْمُعْجِزَاتِ (مصرى)، ص ٦٥، بحواله سچّی حکایات)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! ज़िक्र कर्दा रिवायत महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शाने इल्मियत, हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़ब्बए सखावत और मल्कए जन्मत की अज़मत व करामत की बय्यिन (या'नी वाजेह) दलील है । नबिय्ये ग़ैब दां صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पहचान लिया कि यह आज की दा'वत का खाना कहां से आया, हज़रते सय्यिदुना उ़षमान जुन्नुरैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने दौलत कदा (या'नी मकाने

आलीशान) की तरफ बढ़ने वाले हर कदमे नबी पर गुलाम आज़ाद किये, और **अब्बाह** मोअती **عَزَّ وَجَلَّ** ने बन्ते रसूल (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) को अपने मेहमानों की मेज़बानी के लिये जन्नत का खाना भेज कर और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की दुआ को शरफ़े कबूलियत अता फ़रमा कर इस दा'वत की तरफ़ उठने वाले हर कदमे नबी के सद्के हज़ार हज़ार गुनाहगारों की शफ़ाअत का वा'दा फ़रमा कर खातूने जन्नत को ताजे करामत से नवाज़ दिया ।

अब्बाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की उन पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी मग़फ़िरत हो ।

اٰمِيْنَ بِجَا لَا النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

करामत हक़ है

अहले सुन्नत का मुत्तफ़िका अक़ीदा है कि सहाबए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** और औलियाए उज़ाम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** की करामतें हक़ हैं और हर ज़माने में **अब्बाह** वालों की करामत का सुदूर व जुहूर होता रहा और **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** क़ियामत तक कभी भी इस का सिलसिला मुन्क़तेअ (مُنْقَطِعٌ) या'नी ख़त्म) नहीं होगा, बल्कि हमेशा औलियाउल्लाह **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** से करामत सादिर व ज़ाहिर होती रहेंगी ।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

करामत की ता'रीफ

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअत” जिल्द अब्वल सफ़हा 58 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका, हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي करामत की ता'रीफ़ कुछ इस तरह बयान फ़रमाते हैं : “वली से जो बात ख़िलाफ़े आदत सादिर हो उस को करामत कहते हैं।”

कुरआन से करामत का षुबूत

कुरआनो सुन्नत में कई मक़ामात पर औलियाए किराम की करामात का षुबूत मिलता है इस सिलसिले में दो कुरआनी वाक़िआत पेश किये जाते हैं :

﴿1﴾..... وَجُنَّتْ مِنْ سَيِّئَاتِنَا يَاقِينِ ۝ اِنِّي وَجَدْتُ اَمْرًا لَا تَبْلُكُهُمْ وَاَوْتَيْتُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۝ وَجَدْتَهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَذَرَبْنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝ اَلَا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْتَبٰنُ ۝ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝ قَالَ سَنَنْظُرُ اَصْدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ اِذْ هَبَّ بِنَشِيْطِيْ هٰذَا فَاَقْبَهُ الْبَيْتُ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَاَنْظُرْ مَا ذٰى جَعُوْنَ ۝ قَالَتْ يَا وَيْهَا اَسْأَلُوْا اِنِّيْ اُنْقِىَ اِلَى الْكِتٰبِ كَرِيْمٍ ۝ اِنَّهُ مِنْ سُلَيْمٰنٍ وَاِنَّهُ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَلَا

تَعْلَوَاعِلَىٰ وَآتُونِي مُسْلِمِينَ ۝ قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُو الْأَفْئُوتُ فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً
 أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ۝ قَالُوا نَحْنُ أَوْلُو الْقُوَّةِ وَأَوْلُو آبَائِ سُدَيْدٍ ۝ وَالْأَمْرُ الْبَيْنِكَ
 فَانظُرِي مَاذَا أَنَا مُرِينِ ۝ قَالَتْ إِنَّ الْمَلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعْرَافَ
 أَهْلِهَا آذِنَةً ۝ وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ وَإِنِّي مُرْسَلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدْيَةٍ فَنظِرَةٌ لِّمَن يَرْجِعُ
 الْمُرْسَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمٌ قَالَ أَتَيْدُونَنِي بِإِلَافِنَا إِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ مِّمَّا تُشْكُمُ ۝
 بَلْ أَنتُمْ بِهَدْيَتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۝ ارجع إِلَيْهِمْ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ بِجُنُودِ لَا قَبْلَ لَهُمْ بِهَا
 وَلنُخْرِجَهُمْ مِنْهَا آذِنَةً وَهُمْ صَغِيرُونَ ۝ قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُو الْأَيْمُ يَا تَبِيئِي بَعْرَشَهَا
 قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ۝ قَالَ عَفْرَيْتُ مِنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِنْ
 مَقَامِكَ ۝ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ۝ قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ
 قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَنَّكَ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۝ فَلَمَّا رَأَاهُ مُسْتَقَرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي ۝
 لِيَبْلُغُنِي أَشْرُؤُ أَمْرًا كَفَرٌ ۝ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۝ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ
 كَرِيمٌ ۝ (پ ۱۹، النمل: ۲۲ تا ۴۰)

तर्जमए कन्जुल इमान : (हुद हुद ने कहा) और मैं शहरे सबा से
 हजूर के पास एक यकीनी खबर लाया हूं मैं ने एक औरत देखी कि
 उन पर बादशाही कर रही है और उसे हर चीज में से मिला है और
 उस का बड़ा तख्त है मैं ने उसे और उस की कौम को पाया कि
अब्बाह को छोड़ कर सूरज को सजदा करते हैं और शैतान ने उन
 के आ'माल उन की निगाह में संवार कर उन को सीधी राह से रोक

दिया तो वोह राह नहीं पाते । क्यूं नहीं सजदा करते **अल्लाह** को जो निकालता है आस्मानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें और जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और ज़ाहिर करते हो, **अल्लाह** है कि उस के सिवा कोई सच्चा मा'बूद नहीं, वोह बड़े अर्श का मालिक है सुलैमान ने फ़रमाया : अब हम देखेंगे कि तू ने सच कहा या तू झूटों में है, मेरा येह फ़रमान ले जा कर उन पर डाल फिर उन से अलग हट कर देख कि वोह क्या जवाब देते हैं । वोह औरत बोली ऐ सरदारो ! बेशक मेरी तरफ़ एक इज़्ज़त वाला ख़त डाला गया, बेशक वोह सुलैमान की तरफ़ से है और बेशक वोह **अल्लाह** के नाम से है जो निहायत मेहरबान रहूम वाला येह कि मुझ पर बुलन्दी न चाहो और गर्दन रखते मेरे हुज़ूर हाज़िर हो । बोली : ऐ सरदारो ! मेरे इस मुआमले में मुझे राय दो मैं किसी मुआमले में कोई क़तई फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास हाज़िर न हो । वोह बोले हम जोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई वाले हैं और इख़्तियार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक्म देती है । बोली : बेशक जब बादशाह किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं उसे तबाह कर देते हैं और उस के इज़्ज़त वालों को ज़लील और ऐसा ही करते हैं और मैं इन की तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूं फिर देखूंगी कि एलची क्या जवाब ले कर पलटे फिर जब वोह सुलैमान के पास आया । सुलैमान ने फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे **अल्लाह** ने दिया वोह बेहतर है इस से जो तुम्हें दिया बल्कि तुम अपने तोहफ़े पर खुश होते हो पलट जा उन की तरफ़ तो ज़रूर हम उन पर वोह लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उन को इस शहर से ज़लील कर के निकाल देंगे यूं कि वोह पस्त होंगे । सुलैमान ने फ़रमाया : ऐ दरबारियो ! तुम में

कौन है कि वोह उस का तख़्त मेरे पास ले आए क़ब्ल इस के कि वोह मेरे हुज़ूर मुतीअ हो कर हाज़िर हों। एक बड़ा ख़बीष जिन्न बोला : मैं वोह तख़्त हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा क़ब्ल इस के कि हुज़ूर इजलास बरखास्त करें और मैं बेशक इस पर कुव्वत वाला, अमानतदार हूँ। उस ने अर्ज़ की जिस के पास किताब का इल्म था कि मैं उसे हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले फिर जब सुलैमान ने उस तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा येह मेरे रब्ब के फ़ज़ल से है ता कि मुझे आजमाए कि मैं शुक्र करता हूँ या ना शुक्री और जो शुक्र करे वोह अपने भले को शुक्र करता है और जो ना शुक्री करे तो मेरा रब्ब बे परवाह है सब ख़ूबियों वाला।

﴿2﴾..... اِذْ قَالَتْ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ اِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ

مِوِيَّ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وُضِعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّي وُضِعْتُهَا اُنْثَىٰ

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وُضِعَتْ ۗ وَكَيْسَ الذَّكْرِ كَالْاُنْثَىٰ ۗ وَاِنِّي سَمِيْتُهَا مَرْيَمَ ۗ وَاِنِّي

اَعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهُمَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَاَنْبَتَهَا

نَبَاتًا حَسَنًا وَاكْفَلَهَا زَكَرِيَّا ۗ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا

قَالَ لِيَمْرِئِمْ اَنْىٰ لَكَ هٰذَا ۗ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَرِزُقُ مَنْ يَّشَاءُ بِغَيْرِ

حِسَابٍ ﴿٣٧﴾ (پ ۳، ال عمران: ۳۵ تا ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब इमरान की बीबी ने अर्ज़ की : ऐ रब्ब मेरे ! मैं तेरे लिये मन्त मानती हूँ जो मेरे पेट में है कि ख़ालिस तेरी ही ख़िदमत में रहे तो तू मुझ से क़बूल कर ले बेशक तू ही है सुनता जानता फिर जब उसे जना बोली : ऐ रब्ब मेरे ! येह तो मैं ने लड़की

जनी और **अल्लाह** को खूब मा'लूम है जो कुछ वोह जनी और वोह लड़का जो उस ने मांगा इस लड़की सा नहीं और मैं ने उस का नाम मरयम रखा और मैं उसे और उस की अवलाद को तेरी पनाह में देती हूं रांदे हुए शैतान से तो उसे उस के रब्ब ने अच्छी तरह क़बूल किया और उसे अच्छा परवान चढ़ाया और उसे ज़करिय्या की निगहबानी में दिया जब ज़करिय्या उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़क़ पाते कहा : ऐ मरयम ! येह तेरे पास कहां से आया ? बोली : वोह **अल्लाह** के पास से है, बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे बे गिनती दे ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अफ़ज़लुल औलिया

उ-लमाए किराम व अकाबिरीने इस्लाम **رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام** का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि तमाम सहाबए किराम **رَضَوْنَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ** "अफ़ज़लुल औलिया" हैं क़ियामत तक के तमाम औलियाउल्लाह **رَحْمَهُمُ اللهُ** अगर्चे दर्जए विलायत की बुलन्द तरीन मंज़िल पर फ़इज़ हो जाएं मगर हरगिज़ हरगिज़ वोह किसी सहाबी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के कमालाते विलायत तक नहीं पहुंच सकते । **अल्लाह** रब्बुल इज़ज़त **عَزَّ وَجَلَّ** ने मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़मे रिसालत, नौशए बज़मे जन्त **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के गुलामों को विलायत का वोह बुलन्दो बाला मक़ाम अता फ़रमाया और इन मुक़द्दस हस्तियों **رَضَوْنَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ** को ऐसी ऐसी अज़ीमुश्शान करामतों या'नी बुजुर्गियों से सरफ़राज़ फ़रमाया कि दूसरे तमाम औलियाए किराम

رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَامُ के लिये इस मे'राजे कमाल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता, इस में शक नहीं कि हज़रते सहाबए किराम رَضْوَانُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ से इस क़दर ज़ियादा करामतों का तजक़िरा नहीं मिलता जिस क़दर कि दूसरे औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام से करामतें मन्कूल हैं। यह वाज़ेह रहे कि यह कषरते करामत, अफ़ज़लिय्यते विलायत की दलील नहीं क्यूंकि विलायत दर हक़ीक़त कुर्बे बारगाहे अहदिय्यत का नाम है और यह कुर्बे इलाही जिस को जिस क़दर ज़ियादा हासिल होगा उसी क़दर उस का दर्जए विलायत बुलन्द से बुलन्द तर होगा। सहाबए किराम رَضْوَانُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ चूंकि निगाहे नुबुव्वत के अन्वार और फ़ैज़ाने रिसालत के फुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ हुए, इस लिये बारगाहे रब्बे लम यज़ल में इन बुजुर्गों को जो कुर्बो तकरुब हासिल है वोह दूसरे औलियाउल्लाह رَحْمَهُمُ اللهُ को हासिल नहीं। इस लिये अगर्चे सहाबए किराम رَضْوَانُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ से बहुत कम करामतें मन्कूल हुईं लेकिन फिर भी इन का दर्जए विलायत दीगर औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام से हद दर्जा अफ़ज़ल व आ'ला और बुलन्दो बाला है।

सरकारे दो आलम से मुलाक़ात का आलम आलम में है मे'राजे कमालात का आलम
येह राजी खुदा से हैं खुदा इन से है राजी क्या कहिये सहाबा की करामात का आलम

(बयानाते अत्तारिय्या, हिस्सा. 3, स. 342)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! खातूने जन्नत

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की करामत पर मुश्तमिल जि़क्र कर्दा रिवायत मेज़बानी व मेहमानी की तरफ़ भी तवज्जोह दिलाती है कि हमारे अस्लाफ़े किराम मेहमान नवाज़ थे वोह अपनी बिसात भर मेज़बानी करते और मेहमान को इज़्ज़त देते, इन नुफ़ूसे कुदसिय्या के नक़्शे क़दम को राहे मंज़िल बनाते हुए मेहमान नवाज़ी का ज़ेहन रखना चाहिये और इस के लिये हत्तल वस्अ़ कोशिश करनी चाहिये । अह़ादीषे मुबारका में खाना खिलाने के बहुत से फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं, जैसा कि

“फ़ादिमा” के 5 हुसूफ़ की निश्बत से खाना खिलाने के फ़ज़ाइल पर मब्नी 5 फ़रामीने मुस्तफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “फ़ैज़ाने सुन्नत” जिल्द अव्वल सफ़हा 519 पर है :

﴿1﴾.....तुम में से बेहतर वोह है जो खाना खिलाता है और जो सलाम का जवाब देता है ।

(مُسْنَدُ أَحْمَد، مسند الانصار، حديث صهيب رضى الله عنه، ج ٩، ص ٧٠٢، حديث ٢٤٦٥٢)

﴿2﴾..... मग़फ़िरत को वाजिब करने वाले उमूर में से खाना खिलाना और सलाम को आम करना है ।

(مَكَارِمُ الْأَخْلَاقِ لابن ابى الدنيا، باب فضل اطعام الطعام، ص ٣٧٠، حديث ١٥٨)

﴿3﴾..... जब तक बन्दे का दस्तरख्वान बिछा रहता है, फिरिश्ते उस पर रहमतें नाजिल करते रहते हैं ।

(شُعَبُ الْإِيمَانِ، باب في اكرام الضيف، فصل في التكاف للضيف، ج ٧، ص ٩٩، حديث ٩٦٢٦)

﴿4﴾..... जो अपने मुसलमान भाई की भूक मिटाने का एहतिमाम करे और उसे खाना खिलाए यहां तक कि वोह शिकम सैर हो जाए और उसे (पानी) पिलाए हत्ता कि वोह (पानी पी कर) सैराब हो जाए तो **अल्लाह** तअला उस की मग़फ़िरत फ़रमा देगा ।

(مسند ابى يعلى، ثابت البناني عن انس، ج ٣، ص ١٣٨، الحديث ٣٤٢٠)

﴿5﴾.....जिस ने भूके को खाना खिलाया **अल्लाह** तअला उसे सायए अर्श तले जगह अता फ़रमाएगा ।

(مَكَارِمُ الْأَخْلَاقِ لابن ابى الدنيا، باب فضل اطعام الطعام، ص ٣٧٣، حديث ١٦٤)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिक्र कर्दा अहादीषे मुबारका से पता चलता है कि मग़फ़िरत, दुआए मलाएका और सायए अर्श पाने और बारगाहे इलाही में बेहतर आदमी क़रार पाने का एक ज़रीआ दूसरों को खाना खिलाना भी है । इन अज़ीमुशान इन्आमत के हुसूल के लिये इस अमल पर ज़रूर कारबन्द रहिये ।

अल्लाह तअला हमें इस्तिक़ामत के साथ नेकियां करने और नेकी की दा'वत आम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए ।

اٰمِيْنَ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सायए अर्श

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अज रूए हदीष खाना खिलाने वाले को अर्श का साया नसीब होगा, इस के इलावा भी कई ऐसे आ'माल हैं जिस के सिले में रोजे कियामत सायए अर्श नसीब होगा इस को बित्तफ़सील जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 88 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "सायए अर्श किस किस को मिलेगा?" का मुतालाआ फ़रमाए **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** नेक आ'माल कषरत से बजा लाने का मदनी ज़ेहन नसीब होगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

शिकमे मादर से निदा

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 649 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "हिकायतें और नसीहतें" सफ़हा 532 पर हज़रते सय्यिदुना शैख़ शोएब हरीफ़ीश **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِيرِ** फ़रमाते हैं : जब कुफ़ारे बद अतवार ने आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से कहा : हमें चांद के दो टुकड़े कर के दिखाएं । उन दिनों हज़रते सय्यिदतुना खदीजतुल कुब्रा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** के बतने अह्र में हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** का हमले मुबारक ठहर चुका था । हज़रते सय्यिदतुना

खदीजतुल कुब्रा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया : “वोह कितना ज़लीलो रुस्वा है जिस ने हमारे आका मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को झुटलाया ।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बेहतर नबी और रसूल हैं। तो हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने उन के शिकमे मुबारक से निदा दी : “ऐ अम्मी जान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا आप ग़मज़दा न हों और न ही डरें, बेशक **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ मेरे वालिदे मोहतरम (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) का मददगार है ।”

(الرَّوْضُ الْفَائِقُ، المجلس الثامن والعشرون في أزواج علي بن ابي طالب... الخ ص 174)

अब्बाह रबूल इज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो ।

اامين بجايا النبي الامين صلى الله تعالى عليه وآله وسلم

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

तू है ऐने नूर, तेरा सब घराना नूर का

(हदाइके बख़िश अज इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةٌ وَرَبُّ الْعِزَّة)

शर्हे क्लामे रजा :

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पाकीज़ा अवलाद में बच्चा बच्चा नूर है, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ात भी सरापा नूर है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का सारा घराना नूरानी है ।

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

ख़ातूने जन्मत की करामत

घ्यारी घ्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाकिए में सरवरे जीशान, साहिबे कौनो मकान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की अज़मतो शान के साथ साथ हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की फ़जीलत व अज़मत का भी पता चलता है, बेशक येह उस पैकरे इफ़त व रिफ़त की अज़ीमुश्शान करामत है कि मां के पेट में ही गुफ़्तगू को सुन कर समझ लिया और आने वाले हालत के मुताबिक़ उस का जवाब भी दे दिया । **अल्लाह** कादिरे मुतलक عَزَّ وَجَلَّ की कुदरत से कुछ बईद नहीं कि वोह मां के पेट में पलने वाले को फ़हम व गोयाई की कुव्वत दे कर बा करामत बना दे । हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा तय्यिबा ताहिरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की अवलादे अतहार में से एक अज़ीमुश्शान शख़्सियत हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي को भी **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ ने मादर जाद बा करामत वली बना कर शिकमे मादर में बोलने समझने की कुव्वत अता फ़रमा दी, चुनान्चे

गौषे जली मादरजाद बा करामत वली

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 415 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "रसाइले अत्तारिया" हिस्साए दुवुम सफ़हा 273-274 पर है : हमारे

गौषुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ مادر ज़ाद वली थे । (1) आप
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى अभी अपनी मां के पेट में थे और मां को जब छींक
 आती और उस पर वोह اَلْحَمْدُ لِلَّهِ कहतीं तो आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى पेट
 ही में जवाबन يَرْحَمُكَ اللَّهُ कहते । (2) पांच बरस की उम्र में जब
 पहली बार بِسْمِ اللَّهِ पढ़ने की रस्म के लिये किसी बुजुर्ग के पास
 बैठे तो اَعُوذُ और بِسْمِ اللَّهِ पढ़ कर सूरए फ़ातिहा और اَللّٰهُمَّ से ले
 कर अठारह पारे पढ़ कर सुना दिये । उस बुजुर्ग ने कहा, बेटे और
 पढ़िये ! फ़रमाया : बस मुझे इतना ही याद है क्यूंकि मेरी मां को
 भी इतना ही याद था । जब मैं अपनी मां के पेट में था उस वक़्त
 वोह पढ़ा करती थीं । मैं ने सुन कर याद कर लिया था ।

अब्बाहु रब्बुल इज़्ज़तِ عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी मग़फ़िरत हो ।

أَصْبَحْنَا بِحِجَابِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वाह क्या मर्तबा ऐ गौष है बाला तेरा
 ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा

इब्ने ज़हरा को मुबारक हो उरूसे कुदरत

क़ादिरि पाएं तसद्दुक़ मेरे दुल्हा तेरा

(हदाइके बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَوْتِ)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ब वक़्ते विलादत फ़ज़ा मुनव्वर

हज़रते सय्यिदुना शैख़ शोएब हरीफ़ीश عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى नक़ल

फ़रमाते हैं : जब हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا

की विलादते बा सअ़ादत हुई तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के रुखे
अन्वर के नूर से सारी फ़ज़ा मुनव्वर हो गई ।

(الرُّؤُوسُ الْفَائِقُ، المجلس الثامن والعشرون في أزواج علي بن أبي طالب... الخ ص ٢٧٤ مخلصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

निश्वानी अ़वारिज़ से मुबर्श (1)

नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद
फ़रमाया : “मेरी बेटी फ़ातिमा इन्सानी शक्ल में हूरों की तरह
हैज़ व निफ़ास से पाक है ।”

(كَتَبُ الْغَمَلِ، كتاب الفضائل، فضل اهل البيت، ج ١٢، ص ٥٠، حديث ٢٤٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! **अब्बाहू** रब्बुल इज़्ज़त
ने हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को पुरनूर
बनाया, हैज़ व निफ़ास जैसे निश्वानी अ़वारिज़ से दूर रखा और
इस के इलावा आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की ज़ाते सितूदा सिफ़ात को
मम्बए बरकात (या'नी बरकतों का सर चश्मा) बनाया जैसा कि

(1) या'नी औरतों को पेश आने वाले मुअ़ामलात से पाक ।

बरकत वाली सीनी (1)

जमानए कहत में रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भूक महसूस की तो बिनते रसूल हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बतूल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने (सीनी में) एक बोटी और दो रोटियां ईषार करते हुए बारगाहे रिसालत में भेज दीं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस तोहफ़े के साथ हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की तरफ़ तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : ऐ मेरी बेटी ! इधर आओ। हज़रते सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जब इस सीनी को खोला तो आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا यह देख कर हैरान रह गई कि वोह सीनी रोटियों और बोटियों से भरी हुई थी और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जान लिया कि येह खाना **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से नाज़िल हुवा है। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से इस्तिफ़सार फ़रमाया : ”أَتَى لِكَ هَذَا؟“ या’नी येह सब तुम्हारे लिये कहां से आया ? तो हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज किया : ”هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ“ या’नी वोह **अल्लाह** के पास से है, बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे बे गिनती दे। सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तमाम ता’रीफें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये जिस ने तुझे बनी इस्राईल की सरदार (या’नी हज़रते मरयम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) के मुशाबेह बनाया।

(1) या’नी धात का बना हुवा रोटी सालन रखने वाला ख़्वान।

फिर हजुरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते अली, हज़रते हसन व हुसैन और दूसरे अहले बैत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को जम्अ फ़रमा कर सब के साथ (सीनी में से) खाना तनावुल फ़रमाया और सब सैर हो गए फिर भी खाना इसी क़दर बाक़ी था और उस को हज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपने पड़ोसियों को खिलाया ।

(تَفْسِيرِ رُوحِ الْبَيَانِ، پ ۳، الِ عِمْرُنْ، تحت الآية ۳۷، ج ۲، ص ۳۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की प्यारी बन्दी, आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शहज़ादी हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जह़रा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की अज़ीमुशशान करामतें कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की दिलजूई के लिये कभी जन्नती खाने हाज़िर हों और कभी आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की बरकत से थोड़ा सा खाना अहले बैत और पड़ोस के कई अफ़राद को किफ़ायत करे और जब पूछा जाए कि येह सब कैसे हो गया तो सय्यिदा आबिदा ज़ाहिदा का जवाब कि येह सब कुछ **अल्लाह** رَجْज़ाक़ عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से है, इस में हमारे लिये ता'लीम है कि जब भी कोई फ़ज़लो कमाल हासिल हो, दीनी व दुन्यवी इज़्ज़त व अज़मत नसीब हो तो इस को मिन जानिबिल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से) ही तसव्वुर करना चाहिये, अपनी ज़ात की तरफ़ इस की निस्बत नहीं करनी चाहिये और हकीक़त भी येही है कि बन्दे को जो भी दीनो दुन्या की ने'मत व करामत मिलती है मशिय्यते

ईजदी (يا'नी **अल्लाह** की मरज़ी, तकदीरे इलाही) और जनाबे इलाही से मिलती है, अब बन्दे की मरज़ी कि वोह इस हकीकत का मुकिर रहे या नफ़स की चालों और शैतान के जालों में उलझ कर अपनी मेहनत व कोशिश का नतीजा तसव्वुर करे। बहर कैफ़ कौलो फ़े'ल और ज़बान व दिल हर लिहाज़ से अपने आप को अज़िज़ तसव्वुर करना और हर कमाल की निस्बत ज़ाते इलाही की तरफ़ करना **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के बर्गुज़ीदा बन्दों और बन्दियों का शिआर है। वोह बुलन्द से बुलन्द तर मक़ाम तक रसाई पा कर भी खुद को अज़िज़ व मुतवाज़ेअ (مُتَوَاضِعٌ) या'नी इन्किसारी करने वाले) रखते हैं और ब तकाज़ए बशरियत (या'नी इन्सान होने के नाते) अगर दिल में अपने बुलन्द मक़ाम का तसव्वुर भी आ जाए तो इस तसव्वुर को भी तकब्बुर जानते और इस से पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं, जैसा कि

अपने दिल की निगरानी करते रहो !

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 97 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "तकब्बुर" सफ़हा 50 पर है : हज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बुस्तामी قَدَسَ سِرُّهُ السَّمَاوِي को एक मरतबा येह तसव्वुर हो गया कि मैं बहुत बड़ा बुजुर्ग और शैख़े वक़्त हो गया हूं, लेकिन इस के साथ येह ख़याल भी आया कि मेरा येह सोचना फ़ख़्र व तकब्बुर का आईनादार है। चुनान्चे फ़ौरन खुरासान का रुख़ किया और एक मंज़िल पर पहुंच कर दुआ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जब तक ऐसे कामिल बन्दे को

नहीं भेजेगा जो मुझ को मेरी हकीकत से रू शनास (या'नी आगाह) करा सके उस वक्त तक यहीं पड़ा रहूंगा।" तीन दिन इसी तरह गुजर गए तो चौथे दिन एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ऊंट पर आए और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को करीब आने का इशारा किया लेकिन इस इशारे के साथ ऊंट के पाऊं ज़मीन में धंसते चले गए। उन्होंने ने चुभते हुए लहजे में कहा : "क्या तुम येह चाहते हो कि मैं अपनी खुली हुई आंखों को बन्द कर लूं और बन्द आंख खोल दूं और बायज़ीद समेत पूरे बिसताम को गर्क कर दूं?" यह सुन कर आप घबरा गए और पूछा : "आप कौन हैं और कहां से आए हैं?" जवाब दिया कि "जिस वक्त तुम ने **अब्लाह** तआला से अहद किया था उस वक्त मैं यहां से 3000 मील (तकरीबन 4828 किलो मीटर) दूर था और इस वक्त मैं सीधा वहीं से आ रहा हूं, मैं तुम्हें बा ख़बर करता हूं कि अपने क़ल्ब की निगरानी करते रहो।" यह कह कर वोह बुजुर्ग गाइब हो गए।

(تَذَكِرَةُ الْأَوْلِيَاءِ (مترجم)، حضرت بايزيد کے حالات و مناقب، ص 103)

अब्लाह रबुल इज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मगफ़िरत हो।

اوبين بجاء النبي الامين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जब दरियाए दिजला इस्तिकबाल के लिये बढ़ा

हज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी قَدَسَ سِرُّهُ السَّمَاوِي فَرَمَاتे

हैं कि एक मरतबा मैं दरियाए दिजला पर पहुंचा तो पानी जोश

मारता हुवा मेरे इस्तिक्बाल को बढ़ा लेकिन मैं ने कहा : “मुझे तेरे इस्तिक्बाल से (إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ) शम्मा बराबर (या'नी थोड़ा सा) भी गुरुर न होगा क्यूंकि मैं अपनी 30 सालह रियाजत को तकब्बुर कर केहरगिज जाएअ नहीं कर सकता । (ایضاً ص ۱۱۲)

अब्बाह रब्बुल इज्जत عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मगफिरत हो ।

أَصْمِينَ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फख्रो गुरुर से तू मौला मुझे बचाना

या रब्ब ! मुझे बना दे पैकर तू आजिजी का

(वसाइले बख्शाश अज अमीरे अहले सुन्नत 195 स. دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिक्र कर्दा दो हिकायतों

से येह दर्स मिलता है कि बन्दा ख्वाह कैसा ही बुलन्द मक़ाम पा ले और कितने ही इन्आमात हासिल कर ले अपने नफ़्स को काबू से बाहर न होने दे । अगर दिल में कोई ऐसा ख़याल उभरता महसूस हो तो फ़ौरन बारगाहे इलाही में आजिजी व इन्किसारी के साथ हाज़िर हो कर ताइब हो ताकि वसाविसे शैतानी से दिल पाक हो और अमल शफ़फ़ाफ़ हो और इसी तरह शैतानी व नफ़सानी शुरूर से महफूज रहते हुए बा ईमान मौत से हम किनार हों कि बा ईमान मौत दुन्यवी ज़िन्दगी की इन्तिहाई काम्याबी है और इस काम्याबी तक रसाई नेकी और नेक माहोल से मुमकिन है, इस पुर

आशोब दौर में तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी बेहतरीन माहोल फ़राहम कर रही है। दुन्या व आख़िरत की बेहतरी पाने के लिये इस मदनी माहोल से वाबस्तगी बहुत मुफ़ीद है। दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल में अनोखी अनोखी मदनी बहारों का जुहूर भी होता रहता है। तरगीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 35 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "सींगों वाली दुल्हन" सफ़हा 10 पर है :

दिल का सूराख़

सूबए पंजाब के एक इस्लामी भाई की दादी अम्मां दिल की मरीज़ा थीं जिस की वजह से सीने में शदीद दर्द उठता था, टेस्ट करवाने पर पता चला कि दिल में सूराख़ है लिहाज़ा ओपरेशन के बा'द भी बचने के Chances (या'नी इम्कानात) कम हैं, ब जाहिर येह चन्द दिन की मेहमान हैं, दुआ करें और बेहतर येह है कि घर जा कर इन की ख़िदमत करें। बहर हाल वोह इस्लामी भाई दादी अम्मां को घर ले आए तो किसी ने मश्वरा दिया कि शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के ता'वीज़ात इस्ति'माल करवाएं। येह इस्लामी भाई जामिअतुल मदीना (सरदाराबाद) में जेरे ता'लीम थे लिहाज़ा इन्हों ने वहीँ से

ता'वीजाते अत्तारिया हासिल कर लिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ चन्द दिन के अन्दर अन्दर दर्द बिल्कुल खत्म हो गया, जब दोबारा टेस्ट वगैरा करवाया तो डॉक्टर हैरत ज़दा रह गए कि दिल का सूराख बन्द हो चुका था, उन्होंने ने पूछा कि पिछले दिनों कौन सी दवा इस्ति'माल की है? जवाब दिया कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के ता'वीजात इस्ति'माल करवाए हैं। येह सुन कर डॉक्टरों का कहना था कि येह हमारी ज़िन्दगी का पहला वाकिआ है कि इस किस्म की मरीजा को इस तरह शिफा मिली हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हमारी दादीजान (येह बयान देने तक) हयात हैं और उन्हें दिल की कोई तकलीफ नहीं। (सींगों वाली दुल्हन, स. 10)

खिला मेरे दिल की कली गौषे आ'जम

मिटा कल्ब की बे कली गौषे आ'जम

(सामाने बख़िश अज मुफ़्तये आ'जमे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

मौत की याद में भूकी रहने वाली औरत

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهَا
हज़रते सय्यिदतुना मुआज़ा अदविय्या
रोज़ाना सुब्ह के वक़्त फ़रमाती : (शायद) येह वोह दिन है
जिस में मुझे मरना है। फिर शाम तक कुछ न खाती फिर जब
रात होती तो कहती : (शायद) येह वोह रात है जिस में मुझे
मरना है। फिर सुब्ह तक नमाज़ पढ़ती रहती।

(احياء العلوم، ج ٥، ص ١٥١)

बयान नम्बर 3

ख़ातूने जन्नत
का
जौके इबादत

73

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खातूने जन्नत का जौके इबादत

दुसरे शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 616 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द दुवुम के एक बाब "नेकी की दा'वत हिस्सए अब्वल" सफ़हा 147 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ नक़ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू मुज़फ़्फ़र मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़य्याम समरकन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मैं एक रोज़ रास्ता भूल गया, अचानक एक साहिब नज़र आए और उन्होंने ने कहा : "मेरे साथ आओ।" मैं उन के साथ हो लिया। मुझे गुमान हुआ कि येह हज़रते सय्यिदुना ख़िज़र हैं। मेरे इस्तिफ़सार (या'नी पूछने) पर उन्होंने ने अपना नाम ख़िज़र बताया : उन के साथ एक और बुजुर्ग भी थे, मैं ने उन का नाम दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : येह इल्यास (عَلَيْهِ السَّلَام) हैं। मैं ने अर्ज़ की : **अब्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप पर रहमत फ़रमाए, क्या आप दोनों हज़रात ने सरवरे काएनात, शहनशाहे मौजूदात, महबूबे रब्बुल अर्दे वस्समावात, अहमदे मुज्ताबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत की है? उन्होंने ने

फ़रमाया : हां। मैं ने अज़र्ज़ की : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुना हुवा इरशादे पाक बताइये ताकि मैं आप से रिवायत कर सकूं। उन्होंने ने फ़रमाया कि हम ने रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह फ़रमाते सुना : “जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े उस का दिल निफ़ाक़ से इस तरह पाक किया जाता है जिस तरह पानी से कपड़ा पाक किया जाता है। नीज़ जो शख़्स “صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” पढ़ता है तो वोह अपने ऊपर रहमत के 70 दरवाज़े खोल लेता है।”

(الْقَوْلُ الْبَدِيعُ، الباب الثّاني في ثواب الصلاة على رسول الله، ص 137)

साकिये कौषर पे लाखों सलाम दोनों आलम के सरवर पे लाखों सलाम जिस का अब्रे करम सब पे साया फ़िगन ऐसे प्यारे पयम्बर पे लाखों सलाम

जिस की खुशबू से तयबा की गलियां बसें

ऐसे जिस्मे मुअत्तर पे लाखों सलाम

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप भी “صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” पढ़ने की आदत बनाइये और अपने ऊपर रहमतों के ख़ूब ख़ूब दरवाज़े खुलवाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सय्यिदा फ़ातिमा का जौके नमाज़

हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिषे देहलवी “मदारिजुनुबुव्वह” में नक़ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी वालिदए माजिदा हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को

देखा कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا (बसा अवकात) घर की मस्जिद के मेहराब में रात भर नमाज़ में मशगूल रहतीं यहां तक कि सुब्ह तुलूअ हो जाती ।

(مدارج النبوة (مترجم)، قسم پنجم، در ذکر اولادِ کرام، سیده فاطمة الزهراء، ج ۲، ص ۶۲۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जन्नत

को किस क़दर इबादत का जौक़ था कि पूरी पूरी रात **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ की इबादत में गुज़ार देती थीं लिहाज़ा आप से हक़ीकी उल्फ़त व महबूबत का तकाज़ा है कि हम न सिर्फ़ फ़राइज़ बल्कि सुननो नवाफ़िल की अदाएगी को भी अपना मा'मूल बनाएं । नमाज़ की उल्फ़त व महबूबत को उजागर करने की निय्यत से फ़ज़ाइलो बरकाते नमाज़ पर मुश्तमिल **3 अहादीषे मुबारका मुलाहज़ा फ़रमाइये :**

नमाज़ की बरकतें

﴿1﴾..... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि एक मरतबा सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मौसिमे सर्मा में बाहर तशरीफ़ लाए जब कि दरख़्तों के पत्ते झड़ रहे थे, आप ने एक दरख़्त की दो टहनियों को पकड़ा तो उन के पत्ते झड़ने लगे, आप ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! मैं ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं हाज़िर हूं । तो इरशाद फ़रमाया : बेशक जब कोई मुसलमान बन्दा **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये नमाज़ पढ़ता है तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे इस दरख़्त के येह पत्ते झड़ रहे हैं ।

(مسند احمد، مسند الانصار، حديث ابى ذر الغفارى، ج ۸، ص ۵۷۳، حديث ۲۲۱۷۷)

﴿2﴾.... हज़रते सय्यदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है

कि नूर के पैकर तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : नमाज़ एक बेहतरीन अमल

है जो इस में इज़ाफ़ा कर सके तो वोह ज़रूर करे ।

(التسرغيب والترهيب، كتاب الصلاة، الترغيب في الصلاة مطلقاً، ص ۱۳۰، الحديث ۹)

﴿3﴾..... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने

इरशाद फ़रमाया : सफ़ाई निस्फ़ ईमान है और "الْحَمْدُ لِلَّهِ" मीज़ान

को भर देती है और "سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ" ज़मीनो आस्मान के

दरमियान को भर देते हैं और नमाज़ नूर है और सदक़ा दलील

या'नी रहनुमा है, सब्र रोशनी है और कुरआन तेरे हक़ में या तेरे

ख़िलाफ़ हुज्जत है ।

(صحيح مُسْلِم، كتاب الطهارة، باب فضل الوضوء، ص ۱۰۶، حديث ۲۲۳)

शैख़ुल हदीष हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा

आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने इस्लामी बहनों के लिये नमाज़ की

तरगीब पर मुश्तमिल मन्ज़ूम कलाम लिखा है, फ़रमाते हैं :

दीदारे हक़ दिखाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़ जन्मत तुम्हें दिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 दरबारे मुस्तफ़ा में तुम्हें ले के जाएगी ख़ालिक़ से बख़्शवाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 इज़्जत के साथ नूरी लिबास अच्छे ज़ेवरात सब कुछ तुम्हें पहनाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 जन्मत में नर्म नर्म बिछौनों के तख़्त पर आराम से सुलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 ख़िदमत तुम्हारी करेंगी हूरें अदब के साथ रुतबा बहुत बढ़ाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 कौषर के सल्सबील के शरबत पिलाएगी मेवे तुम्हें खिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 सब इत्रो फूल होंगे निछावर पसीने पर खुशबू में जब बसाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 रहमत के शामियानों में खुशबू के साथ साथ ठन्डी हवा चलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 बागे बिहिश्त रौज़ए रिज़वां बहारे खुल्द सब कुछ तुम्हें दिखाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 हूरें तराने गाएंगी और झूम झूम कर नग़मे तुम्हें सुनाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 पढ़ती रहो नमाज़ कि दोनों जहान में सब कुछ तुम्हें दिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 फ़रके से मुफ़्लिसी से जहन्नम की आग से सब से तुम्हें बचाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 पढ़ कर नमाज़ साथ लो सामाने आख़िरत मेहशर में काम आएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
 बात **आंजमी** की मानो न छोड़ो कभी नमाज़ **अब्बाह** से मिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

(जन्मती ज़ेवर, स. 658-659)

बे नमाज़ी का दर्दनाक अन्जाम

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अहादीषे मुबारका में जहां नमाज़ पढ़ने के इस क़दर फ़ज़ाइल वारिद हैं वहीं नमाज़ न पढ़ने के बे शुमार दुन्यवी व उख़रवी नुक़सानात व अज़ाबात भी बयान किये गए हैं चुनान्चे इस जिम्न में 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा ज़िक्र किये जाते हैं :

“मुखफ़ा” के पांच हुशफ़ की निश्बत से

तर्के नमाज़ की वईदों पर मुश्तमिल

5 फ़ामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾..... जिस ने नमाज़ छोड़ी तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि वोह उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा ।

(المعجم الكبير، عكرمه عن ابن عباس، ج ٥، ص ٣٨١، الحديث ١١٦١٧)

﴿2﴾..... जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख देगा जिस से वोह उस में दाख़िल होगा ।

(كُنُزُ الْعَمَلِ، كتاب الصلاة، الترغيب عن ترك الصلاة، ج ٤، الجزء السابع، ص ١٣٢، حديث ١٩٠٨٦)

﴿3﴾..... जिस ने नमाज़ छोड़ी गोया उस के अहलो इयाल और मालो दौलत छिन गए ।

(ايضاً، حديث ١٩٠٨٥)

﴿4﴾..... जान बूझ कर नमाज़ न छोड़ो क्यूंकि जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का जिम्मा उस से उठ जाएगा ।

(مسند احمد، مسند القبائل، حديث ام ايمن، ج ١، ص ٢٧١، الحديث ٢٨١٢٦)

﴿5﴾..... जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के अमल बरबाद कर देगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जिम्मा उस से उठ जाएगा जब तक कि वोह तौबा के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ न करे ।

(الترغيب والترهيب، كتاب الصلاة، الترهب من ترك الصلاة تعمداً... الخ، ص ١٨٥، الحديث ١٨)

हो गया तुझ से खुदा नाराज़ गर क़ब्र सुन ले आग से जाएगी भर
 बे नमाज़ी तेरी शामत आएगी क़ब्र की दीवार बस मिल जाएगी
 तोड़ देगी क़ब्र तेरी पस्लियां दोनों हाथों की मिलें जूं उंगलियां
 उम्र में छूटी है गर कोई नमाज़ जल्द अदा कर ले तू आ ग़फ़लत से बाज़
 कर ले तौबा रब्ब की रहमत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शाश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ स. 667 - 668)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْتُوا إِلَى اللَّهِ! اسْتَغْفِرُ الرَّبَّ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अब्बाह तअला इरशाद फ़रमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَهْكُمُوا
 أَمْوَالَكُمْ وَلَا أَوْلَادَكُمْ عَنْ ذِكْرِ
 اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ
 هُمُ الْخَسِرُونَ ①

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ इमान
 वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी
 अवलाद कोई चीज़ तुम्हें **अब्बाह**
 के ज़िक्र से गाफ़िल न करे और जो
 ऐसा करे तो वोही लोग नुक़सान में हैं।

(प २८, المنافقون: ९)

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना
 की मतबूआ 499 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "नमाज़ के
 अहक़ाम" सफ़हा 173 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत,

बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरى دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ नक़ल फ़रमाते हैं : मुफ़स्सरीने किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि इस आयते मुबारका में **अल्लाह** तअ़ाला के ज़िक्र से पांच नमाज़ें मुराद हैं, पस जो शख़्स अपने माल या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त, मईषत व रोज़गार, साज़ो सामान और अवलाद में मसरूफ़ रहे और वक़्त पर नमाज़ न पढ़े वोह नुक़सान उठाने वालों में से है ।

(الزواج عن اقتراف الكبائر، الكبيرة السابعة والسبعون تعمد تاخير الصلاة... الخ، ج ١، ص ٢٣٩)

शदीद ज़ख़्मी हालत में नमाज़

जब हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर कातिलाना हम्ला हुवा तो अर्ज़ की गई : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! नमाज़ (का वक़्त है) । फ़रमाया : जी हां, सुनिये ! जो शख़्स नमाज़ को जाएअ करता है, उस का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं । और हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने शदीद ज़ख़्मी होने के बा वुजूद नमाज़ अदा फ़रमाई ।

(المرجع السابق، ج ١، ص ٢٥٥)

बीमारी व कुल्फ़त के बा वुजूद मशग़ूले इबादत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जन्मत, सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की तबीअते आलिया हमा वक़्त इबादते इलाही की तरफ़ मुतवज्जेह रहती थी, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا अपने

घरेलू काम-काज की अन्जाम देही के साथ साथ अपने आप को इबादते इलाही में भी मशगूल रखा करती थीं ख्वाह आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا किसी भी काम में हों आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हर वक़्त यादे इलाही में मगन रहतीं और एक लम्हे के लिये भी यादे इलाही से ग़ाफ़िल न होतीं और बीमारी और तकलीफ़ की हालत में भी **अल्लाह** तआला की इबादत तर्क न करतीं। आप ने खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के जज़्बए इबादत के मुतअल्लिक़ मुलाहज़ा फ़रमाया अब जौके तिलावत मुलाहज़ा कीजिये।

मसरूफ़ियत में श्री जिक़रे अबूबियत

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं एक मरतबा हज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हुक़म से सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की ख़िदमत में हाज़िर हुवा। मैं ने देखा कि हज़रते हसनैने करीमैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا सो रहे थे और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا इन को पंखा झल रही थीं और ज़बान से कलामे इलाही की तिलावत जारी थी येह देख कर मुझ पर एक ख़ास हालते रिक्कत तारी हुई।

(سفينة نوح، حصّة نوح، ص ३५)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि खातूने जन्नत सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को तिलावत करने का किस क़दर जौक़ था कि अपनी घरेलू मसरूफ़ियत के दौरान ज़बान से तिलावते कुरआन का विर्द भी जारी रखतीं जब कि हमारी मसरूफ़ियत के दौरान गानों बाजों और मूसीकी का

शोरो गुल जारी रहता है जिस की नुहूसत से गुनाहों का मीटर चलता रहता है। ऐ काश ! सब इस्लामी बहनों का येह मदनी जेहन बन जाए कि घरेलू काम-काज में मशगूलियत के साथ साथ अपनी ज़बान को ज़िक्रो अज़कार से तर रखें इस से न सिर्फ़ अपनी नेकियों में इज़ाफ़ा होगा बल्कि अवलाद भी इस से मुस्तफ़ीज़ होगी, जैसा कि

शिक्रमे मादर में ही 18 पारे याद कर लिये

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 26 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "मुन्ने की लाश" सफ़हा 5 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ तहरीर फ़रमाते हैं : (हुज़ूर गौषे पाक (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) पांच बरस की उम्र में जब पहली बार पढ़ने की रस्म के लिये किसी बुजुर्ग के पास बैठे तो اَعُوذُ بِسْمِ اللّٰهِ और بِسْمِ اللّٰهِ पढ़ कर सूरे फ़ातिहा और اَلْحَمْدُ से ले कर 18 पारे पढ़ कर सुना दिये। उस बुजुर्ग ने कहा, बेटे और पढ़िये ! फ़रमाया : बस मुझे इतना ही याद है क्यूंकि मेरी मां को भी इतना ही याद था। जब मैं अपनी मां के पेट में था उस वक्त वोह पढ़ा करती थीं। मैं ने सुन कर याद कर लिया था।

कुरआने पाक पढ़ने का षवाब

कुरआने मजीद, फुरक़ाने हमीद **अल्लाह** रब्बुल अनाम عَزَّ وَجَلَّ का मुबारक कलाम है, इस का पढ़ना-पढ़ाना और

सुनना-सुनाना सब षवाब का काम है। कुरआने पाक का एक हर्फ पढ़ने पर 10 नेकियां मिलती हैं, चुनान्चे खातमुल मुरसलीन, शफीज़ल मुज़निबीन, रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है: “जो शख्स किताबुल्लाह का एक हर्फ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस (10) के बराबर होगी। मैं येह नहीं कहता اَلْم एक हर्फ है, बल्कि اَلْف एक हर्फ, لام एक हर्फ और ميم एक हर्फ है।” (سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، كتاب فضائل القرآن، باب ماجاء في من قرأ حرفاً من القرآن، ص ٦٤٦، الحديث: ٢٩١٠)

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 868 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “इस्लाहे आ'माल” जिल्द अक्वल सफ़हा 277 पर अरिफ़ बिल्लाह, नासिहुल उम्मा हज़रते अल्लामा अब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी हनफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَنِي इस हदीषे पाक को नक्ल कर के फ़रमाते हैं: अगर हम इस اَلْم के हर हर्फ़या'नी “اَلْف, لام और ميم” को मज़ीद फैलाने का ए'तिबार करें तो इन तीनों के अपने हुरूफ़ 9 बनेंगे तो यूं तमाम के मज्मूए के बराबर 90 नेकियां होंगी।”

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही !

गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

बेहतरीन शख्स

नबिये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी
आदम **خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ** : का फ़रमाने मुअज़्ज़म है :
या'नी तुम में बेहतरीन शख्स वोह है जिस ने कुरआन सीखा
और दूसरों को सिखाया ।

(صحيح البخارى، كتاب فضائل القرآن، باب خيركم من تعلم القرآن وعلمه، ص ۲۹۹، الحديث: ۵۰۲۷)

हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुर्रहमान सुलमी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**
कुरआने पाक पढाया करते और फ़रमाते : इसी हदीषे मुबारक
ने मुझे यहां बिठा रखा है । (فَيْضُ التَّغْدِيرِ، حرف الحاء، ج ۳، ص ۶۱۸ تحت الحديث: ۳۹۸۳)

اَللّٰهُ मुझे हाफिज़े कुरआन बना दे

कुरआन के अहकाम पे भी मुझ को चला दे

(101 स. दात ब्रकान्हुम الغاليه सुन्नत अहले अमीरे अज् अमीरे अहले सुन्नत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुरआन शफ़ाअत कर के जन्नत में ले जायगा

हज़रते सय्यिदुना अनस **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि
रहमते अलम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोहूतशम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : जिस शख्स ने कुरआने पाक सीखा
और सिखाया और जो कुछ कुरआने पाक में है उस पर अमल
किया, कुरआन शरीफ़ उस की शफ़ाअत करेगा और जन्नत में ले
जाएगा ।

(تاريخ دمشق، باب العين، عقيل بن احمد، ج ۴، ص ۳، المکتبة الشاملة)

इलाही ! खूब दे दे शौक़ कुरआं की तिलावत का
 शरफ़ दे गुम्बदे खज़रा के साए में शहादत का
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

अल्लाह तश्वाला क़ियामत तक अज़्र बढ़ाता रहेगा

एक हदीष शरीफ़ में है : जिस शख्स ने किताबुल्लाह की
 एक आयत या इल्म का एक बाब सिखाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ
 क़ियामत तक उस का अज़्र बढ़ाता रहेगा ।

(الجامع الصغير مع فيض القدير، حرف الميم، ج ٦، ص ٢٣٦، الحديث: ٨٨٦٣)

अता हो शौक़ मौला मद्रसे में आने जाने का

खुदाया जौक़ दे कुरआन पढ़ने का पढ़ाने का

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना
 की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअत
 जिल्द अव्वल" सफ़हा 545 ता 546 पर सदरुशशरीआ बदरुत्तरीका
 मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي نक़ल
 फ़रमाते हैं : एक आयत का हिफ़ज़ करना हर मुसलमान मुकल्लफ़
 (या'नी आक़िल व बालिग़) पर फ़र्जे ऐन है और पूरे कुरआने
 मजीद का हिफ़ज़ करना फ़र्जे किफ़ाया और सूए फ़ातिहा और
 एक दूसरी छोटी सूरत या इस के मिष्ल मषलन तीन छोटी आयतें
 या एक बड़ी आयत का हिफ़ज़, वाजिबे ऐन है ।

(الدَّرُّ الْمَحْتَارُ، كتاب الصلاة، باب في صفة الصلاة، ويجهر الامام، ج ٢، ص ٣١٥)

दा'वते इस्लामी के जामिअत व मदारिश की ता'दाद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने कुरआने पाक की ता'लीम व तअल्लुम के मुतअल्लिक मुलाहज़ा फ़रमाया ।
 التَّحْمَدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी से वाबस्तगान इस सआदत से किस क़दर फ़ैज़याब हो रहे हैं, येह भी मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 616 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द दुवुम के एक बाब "नेकी की दा'वत हिस्सए अव्वल" सफ़हा 564 पर है : 14 रमज़ानुल मुबारक सि. 1432 हि. 15 ओग़ष्ट सि. 2011 ई. तक सिर्फ़ पाकिस्तान में बराए हिफ़ज़ो नाज़िरा मदनी मुन्नो के तक़ीबन 766 और मदनी मुन्नियों के तक़ीबन 316 मदारिसुल मदीना चलाए जा रहे हैं जिन में मदनी मुन्नो और मदनी मुन्नियों की मिला कर कुल ता'दाद तक़ीबन बहत्तर हज़ार (72,000) है । नीज़ इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना बालिग़ान (उमूमन वक़्त : बा'दे इशा, दौरानिया : तक़ीबन 40 मिनट) की ता'दाद तक़ीबन तीन हज़ार तीन सो सोलह (3,316) है और इस्लामी बहनों के मद्रसतुल मदीना बालिग़ात (उमूमन वक़्त सुब्ह 8:00 से ले कर अ़स् तक़ मुख़्तलिफ़ अवक़ात में, दौरानिया : 1 घन्टा 12 मिनट) की ता'दाद तक़ीबन उन्तालीस

हज़ार नव सो अड़तीस (39, 938) है। नीज़ (10 रजबुल मुर्ज्जब सि. 1432 हि. 12-6-2011 तक) इस्लामी भाइयों के दर्से निज़ामी के जामिआतुल मदीना की ता'दाद तक़रीबन नव्वे (90) और इस्लामी बहनों के जामिआतुल मदीना की ता'दाद तक़रीबन बहत्तर (72) है, तलबा की ता'दाद तक़रीबन छे हज़ार छे सो इकहत्तर (6671) और तालिबात की ता'दाद तक़रीबन दो हज़ार आठ सो इकतालीस (2841) है। इन तमाम जामिआतुल मदीना (लिल बनीन व लिल बनात) और मदारिसुल मदीना (लिल बनीन व लिल बनात) में मुफ्त ता'लीम दी जाती है और इन के अख़राजात मुख़य्यिर (مُخَيَّرَات) इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के अतिथ्यात से पूरे किये जाते हैं। बराहे करम ! आप भी अपनी ज़कात व उ़श्र और सदक़ात व ख़ैरात दा'वते इस्लामी को देने के साथ साथ अपने रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दोस्तों पर भी इनफ़िरादी कोशिश फ़रमा कर दा'वते इस्लामी को देने का ज़ेहन बनाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नई दुल्हन इबादत में मग़न

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 649 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “हिक्कायतें और नसीहतें” सफ़हा 541 पर मुबल्लिग़े इस्लाम हज़रते सय्यिदुना शैख़ शोएब हरीफ़ीश عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيرِ नक्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की जब रुख़सती हुई और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा

كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ के घर तशरीफ़ ले गई तो हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से महब्बत भरी गुफ्तगू करने लगे यहां तक कि जब रात का अन्धेरा छा गया तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا रौने लर्गीं । हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने पूछा : “ऐ तमाम औरतों की सरदार ! क्या आप खुश नहीं कि मैं आप का शोहर हूं और आप मेरी बीवी हैं ?” कहने लर्गीं : “मैं क्यूंकर राजी न होऊंगी, आप तो मेरी रिज़ा बल्कि इस से भी बढ कर हैं, मैं तो अपनी उस हालत व मुआमले के मुतअल्लिक़ सोच रही हूं कि जब मेरी उम्र पूरी हो जाएगी और मुझे क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाएगा । आज मेरा इज़्जत व फ़ख़र के बिस्तर में दाख़िल होना कल क़ब्र में दाख़िल होने की मानिन्द है । आज रात हम अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खडे हो कर इबादत करेंगे कि वोही इबादत का ज़ियादा हक़ रखता है ।” इस के बा'द वोह दोनों इबादत की जगह खडे हो कर रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ की इबादत करने लगे ।

(الرَّوْضُ الْفَائِقُ، المجلس الثامن والاربعون في ازواج على بفاطمة... الخ، ص ٢٤٨، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मज़कूरा बाला अल्फ़ज़
 “आप तो मेरी रिज़ा बल्कि इस से भी बढ कर हैं” बहुत अहम्मियत के हामिल हैं । इस पर इस्लामी बहनों को गौर करना चाहिये कि उन के दिल में अपने “बच्चों के अब्बू” का कितना एहतराम है और वोह अपने “बच्चों के अब्बू” के कितने हुकूक

अदा करती और उन की रिज़ा के लिये क्या क्या कोशिशें करती हैं। “फ़तावा रज़विय्या” में सय्यिदी आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ के बयान कर्दा हुकूक का मफ़हूम पेशे खिदमत है : शोहर व बीबी के मुतअल्लिका उमूर में मुतलक़न शोहर की इताअत यहां तक कि इन उमूर में शोहर की इताअत वालिदैन की इताअत पर भी मुक़द्दम है, शोहर की इज़्जत और माल की हिफ़ाज़त, हर बात में उस की ख़ैरख़्वाही, हर वक़्त जाइज़ कामों में उस की रिज़ा का तालिब रहना, उसे अपना मौला जानना और नाम ले कर न पुकारना, किसी से उस की बे जा शिकायत न करना और खुदा तौफ़ीक़ दे तो दुरुस्त शिकायत से भी बचना, उस की इजाज़त के बिग़ैर आठवें दिन से पहले वालिदैन या साल भर से पहले और महारिम के यहां न जाना (या'नी शोहर की इजाज़त के बिग़ैर जाना पड़ जाए तो सिर्फ़ महारिम या'नी मां बाप के यहां हर आठवें दिन और वोह भी सुब्ह से शाम तक के लिये और बहन, भाई, चचा, मामूं, ख़ाला, फूफी के यहां साल भर बा'द जा सकती है और बिला इजाज़ते शोहर रात को कहीं भी नहीं जा सकती। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 380 मुलख़ब़सन)

और अगर वोह नाराज़ हो तो उस की इन्तिहाई खुशामद कर के उसे मनाना, अपना हाथ उस के हाथ में रख कर कहना कि येह मेरा हाथ तुम्हारे हाथ में है यहां तक कि तुम राज़ी हो, या'नी मैं तुम्हारी ममलूका हूं जो चाहो करो मगर राज़ी हो जाओ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 371 मुलख़ब़सन)

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 86 सफ़हात पर मुशतमिल रिसाले "सुन्ते निकाह" में से भी एक हदीषे मुबारक मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये ! चुनान्चे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर क़दम से सर तक शोहर के तमाम जिस्म में ज़ख़्म हों जिन से पीप और कच लहू बहता हो फिर औरत उसे चाटे तब भी हक्के शोहर अदा न किया ।"

(مسند أحمد، مسند أس بن مالك، ج 5، ص 45، الحديث: 14949)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

खाणा पक्वते वक्त श्री तिलावत

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाते हैं कि सय्यिदा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की हालत में भी कुरआने पाक की तिलावत जारी रखती, नबिय्ये करीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ जब नमाज़ के लिये तशरीफ़ लाते और रास्ते में सय्यिदा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के मकान पर से गुज़रते और घर से चक्की के चलने की आवाज़ सुनते तो निहायत दर्दो महब्वत के साथ बारगाहे रब्बुल इज़ज़त में दुआ करते : या अर-हमर्राहिमीन ! फ़ातिमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) को रियाज़त व क़नाअत की जज़ाए ख़ैर अता फ़रमा और इसे हालते फ़क्र में षाबित क़दम रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।

(سفيدنوح، حصه دوم، ص 35)

खातूने जन्नत की दुआएं

हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :
 मैं ने बा'ज मरतबा अपनी वालिदए माजिदा हज़रते सय्यिदतुना
 फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को शाम से सुबह तक इबादत व
 रियाज़त और **अब्बाह** तअला के आगे गिर्या व ज़ारी और
 निहायत अजिजी से इल्तिजा व दुआ करते देखा है मगर मैं ने कभी
 येह नहीं देखा कि दुआ में अपने वासिते कोई दरख्वास्त की हो
 बल्कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की तमाम दुआएं हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 की उम्मत की बख़िश और भलाई के लिये होतीं । (المرجع السابق)

शैख़ मुहक्किह हज़रते अल्लामा अब्दुल हक़ मुहद्विषे
 देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي "मदारिजुनुबुव्वह" में फ़रमाते हैं :
 इमामे हसने मुज्तबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी
 वालिदए माजिदा सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को मुसलमान
 मर्दों और औरतों के हक़ में बहुत ज़ियादा दुआएं करते देखा, उन्हों
 ने अपनी ज़ात के लिये कोई दुआ न मांगी । मैं ने अर्ज़ किया :
 "ऐ मादरे मेहरबान ! क्या सबब है कि आप अपने लिये कोई
 दुआ नहीं मांगतीं ? फ़रमाया : ऐ फ़रज़न्द ! الْجَوَارِئُ مِمَّ الدَّارُ يَا'नी
 पहले हमसाया हैं फिर घर ।

(مَدَارِجُ النَّبُوَّةِ (مترجم)، قسم پنجم، باب اول در ذکر اولاد کرام، ج ۲، ص ۶۲۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सीरते फ़ातिमा पर हमारे

दिलो जान कुरबान ! आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को उम्मत मुस्लिमा का किस क़दर दर्द था कि हम नातुवानों के लिये बा'ज़ अवकात सारी सारी रात दुआएं मांगती रहतीं और अपनी सहूलत व आसाइश के लिये रब्बे काएनात की बारगाह में कभी मुल्लतजी न होतीं हालांकि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर में अकषर व बेशतर फ़ाका रहता, मुकम्मल तन ढांपने के लिये कपड़ा तक न होता लेकिन खुदा तअ़ाला की बारगाह में तवक्कुल इस दर्जे का था कि कभी भी दुन्या की फ़ानी ने'मतों के मुतअल्लिक सुवाल तक न किया ।”

हमें भी अपने रब्बे करीम की बारगाह में मुसलमान भाइयों और बहनों के लिये ज़ियादा से ज़ियादा दुआ करनी चाहिये कि मुसलमान की दुआ मुसलमान के लिये उस की ग़ैर मौजूदगी में बहुत जल्द क़बूल होती है नीज़ दुआ की क़बूलियत के सिलसिले में किसी के हक़ में दूसरों का दुआ करना खुद उस के अपने हक़ में दुआ करने से बेहतर है चुनान्वे मन्कूल है कि “हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को ख़िताब हुवा : ऐ मूसा ! मुझ से उस मुंह के साथ दुआ मांग जिस से तू ने गुनाह न किया । अर्ज़ की : इलाही ! वोह मुंह कहां से लाऊं ? (येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तवाज़ोअ है वरना वोह यकीनन हर गुनाह से मा'सूम हैं) फ़रमाया : औरों से दुआ करवा, कि उन के मुंह से तू ने गुनाह न किया ।”

(مشہدی مولانا روم، مترجم)، دفتر سوم، ص ۲۴۵

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मदीनए मुनव्वरा के बच्चों से अपने लिये दुआ़ा कराते कि दुआ़ा करो उमर बख़शा जाए । (فَسَائِلُ دُعَاةِ ۱۱۲)

दुआ़ा के 3 फ़वाइद

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल इयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : बन्दे की दुआ़ा तीन बातों से ख़ाली नहीं होती :

- ﴿1﴾..... उसे दुन्या में फ़ाइदा हासिल होता है ।
- ﴿2﴾..... या उस के लिये आख़िरत में जम्अ की जाती है ।
- ﴿3﴾..... या ब क़दरे दुआ़ा उस के गुनाह मिटाए जाते हैं ।

(सनन त्रमज़ी, احاديث شتى, باب فى الاستعاذة, ص ۸۲۳, الحديث: ۳۶۰۷)

एक रिवायत में है मोमिन (कि जब आख़िरत में अपनी दुआ़ाओं का षवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब [या'नी मक़बूल] न हुई थीं) तमन्ना करेगा, काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ़ा क़बूल न होती (और सब यहीं [या'नी आख़िरत] के वासिते जम्अ हो जातीं)

(المستدرک على الصحيحين للحاكم, كتاب الدعاء والتكبير والتهليل... الخ,

باب يدعو الله بالؤمن يوم القيامة, ج ۲, ص ۱۶۳, الحديث: ۱۸۶۲)

दुआ़ा में 4 सज़ादतें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! दुआ़ा राइगां तो जाती ही नहीं । इस का दुन्या में अगर अषर ज़ाहिर न भी हो तो आख़िरत में अज़्रो षवाब मिल ही जाएगा । लिहाज़ा दुआ़ा में सुस्ती करना मुनासिब नहीं ।

“या हब्य”

के चार हस्फ़ की निश्चत से 4 मदनी फूल

मदीना 1 : पहला फ़ाइदा येह है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के हुक्म की पैरवी होती है कि उस का हुक्म है मुझ से दुआ मांगा करो जैसा कि कुरआने पाक में इरशादे खुदाए पाक है :

أَدْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ط **तर्जमए कन्जुल ईमान :** मुझ से
(२२, مؤمن: १०) **दुआ करो मैं कबूल करूंगा ।**

मदीना 2 : दुआ मांगना सुन्नत है कि हमारे प्यारे प्यारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अकषर अवकात दुआ मांगते । लिहाजा दुआ मांगने में इत्तिबाए सुन्नत का भी शरफ़ हासिल होगा ।

मदीना 3 : दुआ मांगने में इताअते रसूल भी है कि आप अपने गुलामों को दुआ की ताकीद फ़रमाते रहते ।

मदीना 4 : दुआ मांगने से या तो बन्दे के गुनाह मुआफ़ किये जाते हैं या दुन्या ही में उस के मसाइल हल होते हैं या फिर वोह दुआ उस के लिये आख़िरत का ज़ख़ीरा बन जाती है ।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّد

न जाने कौन सा गुनाह हो गया है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! दुआ मांगने में **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब, महेरे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इताअत भी है, दुआ मांगना सुन्नत भी है, दुआ मांगने से इबादत का षवाब भी मिलता है, नीज़ दुन्या व आखिरत के मुतअद्दद फ़वाइद हासिल होते हैं । बा'ज इस्लामी बहनों को देखा गया है कि वोह दुआ की क़बूलियत के लिये बहुत जल्दी मचाती बल्कि **مَعَاذَ اللهِ** बातें बनाती हैं कि मैं तो इतने अर्से से दुआएं मांग रही हूं, बुजुर्गों से भी दुआएं करवाती रही हूं, कोई पीर फ़कीर नहीं छोड़ा, येह वज़ाइफ़ पढ़ती हूं, वोह अवरद पढ़ती हूं मगर **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ मेरी हाजत पूरी करता ही नहीं बल्कि बा'ज येह भी कहती सुनी जाती हैं :

“न जाने ऐसा कौन सा गुनाह हो गया है जिस की मुझे सज़ा मिल रही है।”

**नमाज़ न पढ़ना तो ग़ोया
कोई ख़ता ही नहीं !!!**

इस तरह की “भड़ास” निकालने वालियों से अगर दरयाफ़्त किया जाए कि बहन ! आप नमाज़ तो पढ़ती ही होंगी ? तो शायद जवाब मिले, जी नहीं । देखा आप ने ! ज़बान पर तो

बे साख़ता जारी हो रहा है, न जाने क्या ख़त़ा हम से ऐसी हुई है? जिस की हम को सज़ा मिल रही है! और नमाज़ के मुआमले में इन की ग़फ़लत तो इन्हें नज़र ही नहीं आ रही! गोया नमाज़ न पढ़ना तो (مَعَاذَ اللَّهِ) कोई गुनाह ही नहीं!

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!
أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ	تُوبُوا إِلَى اللَّهِ!
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

क़बूलिय्यते दुआ में जल्दी न करे!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! दुआ की क़बूलिय्यत में जल्दी नहीं मचानी चाहिये चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 318 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "फ़ज़ाइले दुआ" सफ़हा 97 पर रईसुल मुतकल्लिमीन हज़रते अल्लामा मुफ़्ती नकी अली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَمَّان दुआ के आदाब और क़बूलिय्यत के अस्बाब ज़िक्र करते हुए 48 वां अदब येह बयान फ़रमाते हैं: "दुआ की क़बूलिय्यत में जल्दी न करे" इस अदब के तहत सय्यिदी आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं: सगाने दुन्या के उम्मीदवारों को देखा जाता है कि तीन तीन बरस तक उम्मीदवारी में गुज़ारते हैं, सुब्हो शाम उन के दरवाज़ों पर दौड़ते हैं और वोह हैं कि रुख़ नहीं मिलाले, दिल तंग होते हैं, नाक भौं चढ़ाते हैं, मगर येह न उम्मीद

तोड़ें न पीछ छोड़ें और अहकमुल हाकिमीन, अकरमुल अक-रमीन
 عَزَّ جَلَّاه के दरवाजे पर अव्वल तो आता ही कौन है और आए भी
 तो उकताते, घबरते, कल का होता आज हो जाए, एक हफ़ता कुछ
 पढ़ते गुज़रा और शिकायत होने लगी : साहिब ! पढ़ा तो था कुछ
 अषर न हुवा, येह अहमक अपने लिये इजाबत (क़बूलियत) का
 दरवाज़ा खुद बन्द कर लेते हैं । रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 फ़रमाते हैं : “तुम्हारी दुआ क़बूल होती है जब तक जल्दी न करो
 कि मैं ने दुआ की थी, क़बूल न हुई ।”

(سنن الترمذی، احادیث شتى، باب فی الاستعاذة، ص ۸۲۳، الحدیث: ۳۶۰۸)

और फिर बा'ज़ तो इस पर ऐसे जामे से बाहर हो जाते हैं
 कि आ'माल व अदइय्या (या'नी वजाइफ़ व दुआओं) के अषर से
 बे ए'तिकाद बल्कि **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ के वा'दा व करम से बे
 ए'तिमाद । والعیاذ باللّٰه الکریم الجواد

ऐसों से कहा जाए कि ऐ बे हया ! बे शर्मो ! ज़रा अपने
 गिरेबान में मुंह डालो, अगर कोई तुम्हारा बराबर वाला दोस्त तुम
 से हजार बार कुछ काम अपने कहे और तुम उस का एक काम न
 करो, तो अपना काम उस से कहते हुए अव्वल तो आप लजाओ
 (या'नी शर्माओ)गे कि हम ने तो उस का कहना किया ही नहीं अब
 किस मुंह से उस से काम को कहें और अगर “गर्ज दीवानी होती
 है” कह भी दिया और उस ने न किया तो अस्लन (या'नी
 बिल्कुल भी) महल्ले शिकायत न जानोगे कि हम ने कब किया था
 जो वोह करता ।

अब जांचो कि तुम मालिके अलल इतलाक़ عَزَّوَجَلَّ के कितने अहकाम बजा लाते हो। उस का हुक्म बजा न लाना और अपनी दरख्वास्त का ख्वाही न ख्वाही (या'नी ज़बरदस्ती-नाचार) क़बूल चाहना कैसी बे हयाई है, ओ अहमक़ ! फिर फ़र्क़ देख अपने सर से पाउं तक, नज़रे ग़ौर कर, एक एक रूएं में हर वक़्त हर आन कितनी कितनी हज़ार दर हज़ार सद हज़ार बे शुमार ने'मतें हैं, तू सोता है और उस के मा'सूम बन्दे (या'नी फ़िरिशते) तेरी हिफ़ाज़त को पहरा दे रहे हैं, तू गुनाह कर रहा है और सर से पाउं तक सिह्हत व अफ़िय्यत, बलाओं से हिफ़ाज़त, खाने का हज़्म, फुज़लात का दफ़अ, खून की रवानी, आ'ज़ा में ताक़त, आंखों में रोशनी, बे हिसाब करम बे मांगे बे चाहे तुझ पर उतर रहे हैं, फिर अगर तेरी बा'ज ख्वाहिशें अता न हों किस मुंह से शिकायत करता है, तू क्या जाने कि तेरे लिये भलाई काहे में है, तू क्या जाने कि कैसी सख़्त बला आने वाली थी कि इस दुआ ने दफ़अ की, तू क्या जाने कि इस दुआ के इवज़ कैसा षवाब तेरे लिये ज़ख़ीरा हो रहा है, उस का वा'दा सच्चा है, और क़बूल की येह तीनों सूरतें हैं (जो पीछे गुज़र चुकीं) जिन में हर पहली पिछली से आ'ला है। हां ! बे ए'तिक़ादी आई तो यक़ीन जान कि मारा गया और इब्लीसे लईन ने तुझे अपना सा कर लिया।

والعیاذ باللّٰه سیخنه وتعالیٰ

(फ़ज़ाइले दुआ, स. 100)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِیْبِ !

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

تَوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ !

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِیْبِ !

पड़ोसियों की खैर ख़्वाही

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की सीरत से हमें येह मदनी फूल भी चुनने को मिला कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हमसायों के लिये ज़ियादा दुआ फ़रमाया करतीं और फ़रमातीं : पहले हमसाया है फिर घर । एक हम नादान हैं कि हमसायों का हमें ख़याल तक नहीं । हम अपने घर में तरह तरह के खाने खाते हैं, उम्दा उम्दा मलबूसात पहनते हैं और हम में से बा'जों के हमसायों को येह चीजें मुयस्सर नहीं होतीं और हमें इन का ख़याल तक नहीं आता और अगर वोह किसी चीज का सुवाल करें तो हम फिर भी नहीं देते ।

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَیْنِ पारह 30 सूरतुल माऊन आयत नम्बर 7 "وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ" तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बरतने की चीज मांगे नहीं देते ।" के तहत "तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" में जो कुछ फ़रमाते हैं उस का खुलासा पेशे खिदमत है । मा'मूली बरतने की चीजों को माऊन कहा जाता है, जैसे सूई, नमक, आग, पानी वगैरा या'नी मुनाफ़िक्कीन की इबादतें भी ख़राब हैं और मुआमलात भी गन्दे कि अपने पड़ोसियों को मा'मूली बरतने की चीजें अरिख्यतन भी नहीं देते, आग, पानी, नमक पर इन की जान निकलती है, या येह लोग अपनी ज़रूरत से बची चीजें जो

इन के लिये बेकार हैं, किसी को नहीं देते, अगर्चे खराब ही हो जावें, इस आयत से वोह ज़मीनदार इब्रत पकड़ें जो अपना फ़ालतू ग़ल्ला बाज़ार में नहीं लाते ।

पड़ोसियों के हुक्क

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि आरिख्यतन किसी को कोई चीज़ न देना मुनाफ़िक्नीन के काम हैं । मुसलमानों को तो अपने पड़ोसियों का ख़याल रखना चाहिये, पड़ोसियों के हुक्क बहुत ज़ियादा हैं । चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा करीना है : हज़रते जिब्रील मुझे पड़ोसी के बारे में वसिय्यत करते रहे यहां तक कि मुझे गुमान होने लगा कि वोह पड़ोसी को विराषत का हक़दार बना देंगे । (صحيح البخارى، كتاب الادب، باب الوصاة بالجار، ص ۵۰۰، الحديث: ۱۰۱۵) ।

हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फुलां औरत नमाज़ व रोज़ा, सदका कषरत से करती है मगर अपने पड़ोसियों को ज़बान से तक्लीफ़ भी पहुंचाती है । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : वोह जहन्म में है ।

(مسند أحمد، ج ۴، مسند أبي هريره، ص ۲۳۵، الحديث: ۹۹۲۶)

10 चीजें जुल्म से हैं

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान शौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते

हैं : 10 चीजें जुल्म में से हैं ।

- (1).... कोई मर्द या औरत अपने लिये तो दुआ मांगे मगर अपने वालिदैन और आम मोअमिनीन के लिये न मांगे ।
- (2).... जो रोज़ाना कुरआने पाक पढ़े और 100 आयात की तिलावत न करे ।
- (3)....जो शख़्स मस्जिद में दाख़िल हो और दो रक्अत (तहिय्यतुल मस्जिद) पढ़े बिग़ैर ही बाहर निकल आए (जब कि वोह वक़्त मकरूह न हो) ।
- (4).... जो आदमी क़ब्रिस्तान से गुज़रे मगर उन पर सलाम न करे और न ही उन के लिये दुआ मांगे ।
- (5)..... जो शख़्स जुमुआ के दिन शहर आए फिर जुमुआ पढ़े बिग़ैर ही चला जाए ।
- (6)..... जिन लोगों के महल्ले में कोई अ़लिम आए और उस के पास इल्म सीखने कोई भी न पहुंचे ।
- (7)..... ऐसे दो आदमी जो एक दूसरे के रफ़ीक़ बने मगर कोई भी अपने दोस्त का नाम न पूछे ।
- (8)..... ऐसा आदमी जिसे कोई दा'वत पर बुलाए मगर वोह न पहुंचे (कोई मजबूरी हो तो मुज़ायका नहीं) ।

(9).... वोह नौजवान जिस ने अपनी जवानी बेकार ज़ाएअ कर दी, इल्मो अदब कुछ न सीखा ।

(10).... ऐसा आदमी जो खुद शिकम सैर है और इस का हमसाया भूका है और येह उसे खाने को कुछ भी नहीं देता ।

(تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ، باب حق الجار، ص ٤٨)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

पड़ोसी का हक क्या है ?

नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जिस ने अपने माल और अहल पर ख़ौफ़ करते हुए पड़ोसी पर दरवाज़े को बन्द किया तो वोह मोमिन नहीं और वोह शख्स भी मोमिन नहीं जिस के फ़ितने से उस का पड़ोसी अम्न में न हो, जानते हो हमसाये का क्या हक़ है ? अगर वोह तुझ से मदद त़लब करे तो उस की मदद करो, अगर वोह तुझ से क़र्ज़ मांगे तो उसे क़र्ज़ दो, अगर वोह मुफ़िलस हो जाए तो उस की हाज़त रवाई करो, अगर वोह बीमार हो जाए तो उस की इयादत करो, अगर कोई खुशी हासिल हो तो उसे मुबारक बाद दो, अगर मुसीबत पहुंचे तो ता'जिय्यत करो, अगर मर जाए तो जनाज़े के साथ जाओ, उस के मकान से अपना मकान ऊंचा न बनाओ कि उस की हवा रोक दो मगर येह कि वोह इजाज़त दे दे तो कोई हरज नहीं, हांडी की खुशबू से अपने हमसाये को ईज़ा न दो मगर येह कि एक चुल्लू उसे भी भेज दो, जब फल ख़रीद कर लाओ तो उस के घर तोहफ़ा भेजो वरना खुफ़िया ले कर आओ और तुम्हारी

अवलाद फल ले कर बाहर न निकले ताकि उन के बच्चे नाराज न हों। फिर फ़रमाया : क्या तुम जानते हो हमसाये का क्या हक़ है? उस ज़ात की क़सम, जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है! हमसाये के हक़ को बहुत थोड़े लोग पूरा करते हैं जिन पर **اَبْلَاهُ** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ रहमत फ़रमाता है।

रावी फ़रमाते हैं : रहमते अ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सहाबए किराम को हमसाये के हक़ की वसियत फ़रमाते रहे हत्ता कि उन्होंने ने ख़याल किया कि अ़न क़रीब हमसाये को वारिष बना दिया जाएगा।

(شُعَبُ الْإِيمَانِ لِلْبَيْهَقِيِّ، باب في أكرام الجارح، ج ٥، ص ٨٣، الحديث: ٩٥٦٠)

कितने घर पड़ोश में दाखिल हैं?

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي से मरवी है कि एक शख्स ने हुज़ूर सरापा रहमत व शफ़क़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हमसाये की शिकायत की तो नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हुक्म फ़रमाया कि मस्जिद के दरवाजे पर खड़े हो कर ए'लान कर दो कि साथ के 40 घर हमसायगी में दाखिल हैं। इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि 40 इधर, 40 उधर, 40 इधर, 40 उधर और चारों तरफ़ इशारा फ़रमाया।

(احياء العلوم، كتاب آداب الالفة والاخوة، حقوق الجوارح، ج ٢، ص ٢٦٥)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيب!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सय्यिदतुन्सिा,

बतूले ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का जौके इबादत, नमाज़ में खुशूअ व खुजूअ, खाना पकाते भी तिलावते कुरआन और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की दुआओं के मुतअल्लिक पढ़ा । आइये ! आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की जिन्दगी से एक दर्स हासिल करें और अपने ऊपर गौर करें कि क्या हमारे अन्दर भी इबादत व रियाज़त का ज़ब्बा पाया जाता है या नहीं ? क्या हमारे दिल में भी कभी खौफ़े खुदा से रिक्कत पैदा हुई या नहीं ? अगर आप इबादत व रियाज़त और खौफ़े खुदा का ज़ब्बा पाना चाहती हैं तो तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप को खौफ़े खुदा की दौलत मिलेगी, जब दिल में खौफ़े खुदा पैदा हो जाएगा तो नमाज़ों की पाबन्दी करने, सुन्नतों का पैकर बनने और बा पर्दा रहने का ज़ब्बा मिलेगा ।

और **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दोनों जहां में बेड़ा पार हो जाएगा । दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतों के क्या कहने ! यकीनन अच्छी सोहबत रंग ला कर रहती है । जिन्दगी अपनी जगह पर मगर बा'ज़ अम्वात भी काबिले रश्क हुवा करती हैं, ऐसी ही एक काबिले रश्क मौत का तज़क़िरा मुलाहज़ा फ़रमाइये और रश्क कीजिये, चुनान्वे अत्ताराबाद (जेकोबाबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि मेरी

अम्मी जान ग़ालिबन सि. 2004 ई. में क़दिरिया रज़विय्या अत्तारिया सिलसिले में बैअत हो कर अत्तारिया बनीं। दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ पंज वक्ता नमाज़ की पाबन्दी के साथ साथ नवाफ़िल की अदाएगी का भी मा'मूल बन गया। 17 सफ़रुल मुजफ़्फ़र सि. 1430 हि. 13 फ़रवरी सि. 2009 ई. की सुब्ह अम्मी जान ने मुझे नमाज़े फ़ज़्र के लिये बेदार किया और खुद नमाज़े फ़ज़्र पढ़ने में मशगूल हो गईं। मैं नमाज़ पढ़ कर लौटा तो वोह अभी मुसल्ले ही पर थीं। कुछ देर बा'द उन्होंने ने दोबारा वुजू किया और नमाज़े इशराक़ की निय्यत बांध ली। जब पहली रकअत में सजदा किया तो सर न उठाया। घर वाले समझे कि शायद अम्मी जान को दौराने नमाज़ नींद आ गई है, जब बेदार करने की गरज़ से उन्हें हिलाया-जुलाया तो वोह एक तरफ़ लुढ़क गईं, घबरा कर देखा तो उन की रूह कफ़से उन्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُونَ यूं लगता है कि मेरी अम्मी जान को शहनशाहे बग़दाद हुज़ूरे गौषे आ 'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की निस्बत और दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्तगी काम आ गई। खुश किस्मती कि ऐन सजदे की हालत में उन्होंने ने दाइये अजल को "लब्बैक" कहा। मज़ीद करम बालाए करम येह हुवा कि इन्तिक़ाल के बा'द उन का चेहरा भी बहुत नूरानी हो गया था। इन्तिक़ाल के तक़रीबन 15 रोज़ के बा'द या'नी 2 रबीउन्नूर शरीफ़ सि. 1430

हि. (28 फ़रवरी सि. 2009 ई.) बरोज़ हफ़ता उन की क़ब्र की सिल गिर गई और क़ब्र में मिट्टी भर गई। दुरुस्ती के लिये जूँ ही क़ब्र खोली गई तो हर तरफ़ गुलाब के फूलों की खुशबू फैल गई ! नीज़ येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देख कर हम खुशी के मारे झूम उठे कि **अम्मी जान का कफ़न व बदन सलामत था**। जब क़ब्र से मिट्टी निकाल ली गई तो मेरे भाई ने अम्मी जान के क़दमों को छुवा तो الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ उन का जिस्म जिन्दा इन्सानों की तरह नर्म था, मेरे अब्बू जान का बयान है कि जब मैं ने चेहरे की तरफ़ से कपड़ा हटा कर देखा तो चेहरा मज़ीद नूरानी हो चुका था।

इस्लामी भाई का मज़ीद बयान है : हैरत अंगेज़ बात येह थी कि जो सिलें क़ब्र में गिरी थीं, अम्मी जान का जिस्म उन की चोट से महफूज़ रहा था वोह यूँ कि उन का मुबारक व तरो ताज़ा लाशा क़ब्र की दीवार की सम्त खिसका हुवा था जैसे वोह खुद उस तरफ़ हुई हों या किसी ने कर दिया हो हालांकि तदफ़ीन के वक़्त उन को क़ब्र के बीच में लिटाया गया था !

दहन मेला नहीं होता, बदन मेला नहीं होता

खुदा के पाक बन्दों का कफ़न मेला नहीं होता

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़रबूजे को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दीजिये तो उस की सोहबत में रह कर गुलाबी हो जाएगा। इसी तरह **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मेहरबानी से तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अ़लमगीर गैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने वाला बे वक़अत पथर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जगमगाता

और बसा अवकात ऐसी शान से पैके अजल को लब्बैक कहता है कि देखने सुनने वाला इस पर रश्क करता और जीने के बजाए ऐसी मौत की आरजू करने लगता है। इस आशिकए रसूल की दुन्या से ईमान अफ़रोज़ रुख़सती और बा'दे दफ़न जब मजबूरन कब्र खोली गई तो कब्र से गुलाब के फूलों की खुशबू का आना, कफ़न व बदन का सलामत मिलना मस्लके हक़ अहले सुन्नत की सदाक़त की ग़ैबी ताईद है। **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ उस खुश नसीब इस्लामी बहन को पुल सिरात, हशर और मीज़ान हर जगह **سُخْرُورُ** फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में सथियदा फ़ातिमतुज्ज़हरा **اَوْبَيْنَ بِجَاوِلِ النَّبِيِّ الْاَمْرَيْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का पड़ोस अता फ़रमाए।

ज़ात आप की तो रहमत व शफ़क़त है सर बसर

मैं गर्चे हूं तुम्हारा ख़तवार या रसूल !

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 107)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह पढ़ कर आप का भी ज़ेहन बन रहा होगा कि बे पर्दगी, नमाज़ों में सुस्ती, फ़िल्मों डिरामों, गाने बाजों वगैरा वगैरा तमाम गुनाहों से तौबा कर लेनी चाहिये और राहे सुन्नत पर आ कर नमाज़ों की पाबन्दी, तहज्जुद, तिलावत और ज़िक्रो दुरूद में अपने शबो रोज़ सर्फ़ करने चाहियें। लेकिन जैसे ही येह किताब रखेंगी तो शैतान आप को येह सब कुछ भुलाने की कोशिश करेगा और (مَعَاذَ اللَّهِ) बा'ज नादान इस्लामी बहनें फिर गुनाहों में मुब्तला हो जाएंगी। अगर आप वाकेई नेक

बनना चाहती हैं तो दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये। हफ़्तावार इजतिमाअ में हर हफ़्ते शिर्कत का ज़ेहन बनाइये और मक्तबतुल मदीना से मदनी इन्आमात का रिसाला हासिल फ़रमाइये और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए अपनी यहां की ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी बहन अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि **“मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।”** अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये मदनी इन्आमात पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये अपने महारिम को मदनी काफ़िलों में सफ़र करवाना है। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

अब्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत **ص. 193** **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةَ**)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ**

अच्छी : **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** **फ़रमाने मुस्तफ़ा**

नियत इन्सान को जन्नत में दाख़िल करेगी।

(الجامع الصغير، ص ٥٥٤، الحديث ٩٣٢٦:)

فَرَمَاتے ہیں : **رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** **उ-लमाए किराम**

वोह है जो अपनी नेकियां ऐसे छुपाए जैसे अपनी बुराइयां छुपाता है।

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، ج ١، ص ١٠٢)

बयान नम्बर 4

खातूने जन्नत
का
इश्के रसूल

111

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खातूने जन्नत का इश्के रशूल

दुसरे शरीफ़ की फज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 308 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "इस्लामी बहनों की नमाज़" सफ़हा 11 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़ल फ़रमाते हैं : **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे मुश्कबार है : "जिस ने मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढा **अब्बाह** तआला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोजे क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा ।" (مَجْمَعُ الزَّوَائِدِ ج ١٠ ، ص ٢٥٣ ، الحديث : ١٤٢٩٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

घ्यारी घ्यारी इस्लामी बहनो ! ख़वातीने जन्नत की सरदार, जिगर गोशए सरकार हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से और हुज़ूर नबिय्ये रहमत رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बहुत महब्वत

थी और महबूबत की अलामात में से एक यह है कि जिस से महबूबत हो उस की हर अदा अपनाने की कोशिश की जाती है चुनान्चे हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने खुद को हर ए'तिबार से सुन्नते रसूल के सांचे में ढाल रखा था। अ़दात व अतवार, सीरत व किरदार, निशस्त व बरखास्त, चलने के अन्दाज़, गुफ़्तगू और सदाक़ते कलाम में आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا सीरते मुस्तफ़ा का अ़क्स और नमूना थीं।

हम शक्ले मुस्तफ़ा

हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا सर से पाउं तक हम शक्ले मुस्तफ़ा थीं। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की चाल ढाल, वज़अ क़तअ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुशाबेह थी। **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जीती जागती तस्वीर बनाया था। उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अ़इशा सिद्दीक़ा तय्यिबा ताहिरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की साहिबज़ादी हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से बढ कर किसी को अ़दात व अतवार, सीरत व किरदार और निशस्त व बरखास्त में आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से मुशाबहत रखने वाला नहीं देखा।

रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा !

किया नज़ारा जिन आंखों ने तफ़सीरे नुबुव्वत⁽¹⁾ का

(1).... या'नी सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ
 सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की अ़ादात अपने बाबा जान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अ़ादात जैसी थीं । ख़ातूने जन्नत رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की सीरत, आक़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सीरत जैसी थी । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का किरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों का आईनादार था । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की गुफ़्तार रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की गुफ़्तार जैसी थी । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की निशस्त व बरखास्त या'नी उठना-बैठना रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जैसा था ।

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَانِ “मिरआत” में फ़रमाते हैं : आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के जिस्म से जन्नत की खुशबू आती थी जिसे हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सूंघा करते थे । इस लिये आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का लक़ब ज़हरा हुवा ।

(مِرَاةُ الْمَنَاجِيحِ، ج ٨، ص ٥٣)

बतूल व फ़ातिमा ज़हरा लक़ब इस वासिते पाया
 कि दुन्या में रहें और दें पता जन्नत की निगहत का

(عليه رَحْمَةُ الْمَنَانِ अज़ मुफ़्ती अहमद यार ख़ान)

ख़याल रहे कि हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा अज़ सर ता क़दम बिल्कुल हम शक्ले मुस्तफ़ा थीं और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के साहिबज़ादगान में येह मुशाबहत तक्सीम कर दी गई थी । हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सीने और सर के दरमियान रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बहुत मुशाबेह

थे और हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इस से नीचे के हिस्से में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बहुत मुशाबेह थे । हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की पिन्डली, क़दम शरीफ़ और एड़ी बिल्कुल हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुशाबेह थी ।

(مِرَاةُ الْمَنَانِجِ، ج ۸، ص ۳۸۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

कुदरती मुशाबहत

हुज़ूर सय्यिदे अ़ालम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से कुदरती मुशाबहत भी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ने'मत है जो अपने किसी अ़मल को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुशाबेह कर दे तो उस की बख़्शिश हो जाती है जैसा कि हदीषे पाक में इरशाद हुवा : مَنْ تَشَبَهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ जो किसी क़ौम से मुशाबहत करेगा तो वोह उन ही में से होगा । तो जिसे खुदा तअ़ाला अपने महबूब के मुशाबेह करे उस की महबूबियत का क्या हाल होगा । (المرجع السابق)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा हदीषे पाक के तहत शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : या'नी जो शख़्स दुन्या में कुफ़ार, फ़ासिक़ व बदकार के से लिबास पहने, उन की सी शक़ल बनाए कल क़ियामत में उन के साथ उठेगा । और जो मुत्तक़ी मुसलमानों की सी शक़ल बनाए, उन का लिबास पहने वोह कल क़ियामत में **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ** मुत्तक़ियों के जुमरे में

उठेगा। खयाल रहे कि किसी की सी सूरत बनाना तशब्बोह है और किसी की सी सीरत इख़्तियार करना तख़ल्लुक है यहां तशब्बोह फ़रमाया गया है। (المرجع السابق، ج ६، ص १०९)

बहरूपिया बच गया !

गर्के फ़िरऔन के दिन सारे फ़िरऔनी डूब गए। मगर फ़िरऔनियों का एक बहरूपिया (يا-رؤ-پ-يا) नक्काल) बच गया। हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ की : मौला عَزَّ وَجَلَّ येह क्यूं बच गया ? फ़रमाया : इस ने तुम्हारा रूप भरा हुवा था। हम महबूब की सूरत वाले को भी अज़ाब नहीं देते। मुसलमान को चाहिये कि नमाज़ व रोज़ा वगैरा इबादात में भी अच्छों खुसूसन अच्छों से अच्छे या'नी महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नक्ल करने की निय्यत करे। दिल लगे या न लगे शकल तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सी बन जाती है। اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ अस्ल की बरकत से खुदा हम नक्कालों को भी बख़्श देगा। (المرجع السابق، ج ६، ص ११०)

औरतों को मर्दानी वज़अ बनाना ह़राम है

याद रखिये ! औरतों को मर्दानी वज़अ बनाना या'नी मर्दों जैसा लिबास व जूते वगैरा पहनना इसी तरह बाल कटवा कर मर्दों की तरह छोटे छोटे कर देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" सफ़हा 65 पर शैखे

तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि
 دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ नक़ल फ़रमाते हैं : रहमते आलमिय्यान, सुल्ताने
 दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : तीन
 शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे दय्यूष और मर्दानी वज़अ
 बनाने वाली औरत और शराब नोशी का आदी ।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِدِ، ج ٢، ص ٥٩٩، الحديث: ٤٤٢٢)

मज़ीद फ़रमाते हैं : मर्दों की तरह बाल कटवाने और
 मर्दाना लिबास पहनने वालियां इस हदीषे पाक से इब्रत हासिल
 करें, छोटी बच्चियों के लड़कों जैसे बाल बनवाने और इन्हें
 लड़कों जैसे कपड़े और हेट वगैरा पहनाने वाले भी एहतियात
 करें ताकि बच्ची इसी उम्र से अपने आप को मर्दों से मुम्ताज़
 समझे और होश संभालने और बालिगा होने के बा'द इस को
 अपनी आदात व अतवार शरीअत के मुताबिक़ बनाने में मुशक़लात
 दरपेश न आएँ। हदीषे पाक में येह जो फ़रमाया गया कि “कभी
 जन्नत में दाख़िल न होंगे।” यहां इस से तवील अर्से तक जन्नत
 में दाख़िले से महरूमि मुराद है। क्यूंकि जो भी मुसलमान अपने
 गुनाहों की पादाश में مَعَاذَ اللَّهِ दोज़ख़ में जाएंगे वोह बिल आख़िर
 जन्नत में ज़रूर दाख़िल होंगे। मगर येह याद रहे कि एक लम्हे
 का करोड़वां हिस्सा भी जहन्नम का अज़ाब कोई बर्दाश्त नहीं कर
 सकता लिहाज़ा हमें हर गुनाह से बचने की हर दम कोशिश और
 जन्नतुल फ़िरदौस में बे हि़साब दाख़िले की दुआ करते रहना
 चाहिये ।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 65-66)

कफ़न फ़ाड़ कर उठ बैठी !

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ एक बे पर्दा औरत का इब्रतनाक वाकिआ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ग़ालिबन शा'बानुल मुअज़्ज़म सि. 1414 हि. का आख़िरी जुमुआ था। रात को कोरंगी (बाबुल मदीना कराची) में मुनअकिद होने वाले एक अज़ीमुश्शान सुन्नतों भरे इजतिमाअ में एक नौजवान से सगे मदीना عَنْهُ की मुलाकात हुई, उस ने कुछ इस तरह हलफ़िया (या'नी क़सम खा कर) बयान दिया कि मेरे एक अज़ीज़ की जवान बेटी अचानक फ़ौत हो गई। जब हम तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो कर पलटे तो मर्हूमा के वालिद को याद आया कि उस का एक हेन्ड बेग जिस में अहम कागज़ात थे वोह ग़लती से मय्यित के साथ क़ब्र में दफ़न हो गया है। चुनान्चे ब अम्रे मजबूरी दोबारा क़ब्र खोदनी पड़ी, जूँ हि क़ब्र से सिल हटाई ख़ौफ़ के मारे हमारी चीखें निकल गईं क्यूंकि जिस जवान लड़की की कफ़न पोश लाश को अभी अभी हम ने ज़मीन पर लिटाया था वोह कफ़न फ़ाड़ कर उठ बैठी थी और वोह भी कमान की तरह टेढ़ी ! आह ! उस के सर के बालों से उस की टांगें बंधी हुई थीं और कई ना मा'लूम छोटे छोटे ख़ौफ़नाक जानवर उस से चिमटे हुए थे। येह दहशत नाक मन्ज़र देख कर ख़ौफ़ के मारे हमारी घिग्गी बन्ध गई। और हेन्ड बेग निकाले बिगैर जूँ तूँ मिट्टी फैंक कर हम भाग खड़े हुए। घर आ कर मैं ने अज़ीज़ों से उस लड़की का जुर्म दरयाफ़्त

किया तो बताया गया कि इस में फ़ी ज़माना मा'यूब समझा जाने वाला कोई जुर्म तो नहीं था, अलबत्ता आज कल की आम लड़कियों की तरह येह भी फ़ैशनेबल थी और पर्दा नहीं करती थी, अभी इन्तिक़ाल से चन्द रोज़ पहले रिश्तेदारों में शादी थी तो इस ने फ़ेन्सी बाल कटवा कर बन संवर कर आम औरतों की तरह शादी की तक़रीब में बे पर्दा शिक़त की थी ।

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
वरना सुन लो क़न्न में जब जाओगी सांप बिच्छू देख कर चिल्लाओगी

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 280)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ	تُوبُوا إِلَى اللَّهِ!
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि फ़िरऔनी बहरूपिया (به-رُو-پ-یا) या'नी नक्क़ाल) को **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इस वजह से ग़र्क़ नहीं किया कि उस का ज़ाहिर **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे रसूल हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيَّهِ السَّلَام जैसा था । हम भी अपने ऊपर ग़ौर कर लें कि हमारा ज़ाहिर किस तरह का है ? खुश किस्मत हैं वोह इस्लामी बहनें जिन को दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल मुयस्सर आ गया कि दा'वते इस्लामी ने उन्हें नमाज़ें पढ़ने का ज़ेहन दिया, हया का दर्स दिया, मदनी बुर्क़अ पहनाया, इसी माहोल की

बरकत से उन्हें तिलावते कुरआन का ज़ेहन मिला, दुरूदो सलाम की तरगीब मिली, घर दर्स की सआदत नसीब हुई, मिट्टी के बरतन में खाना खाने का ज़ेहन मिला और इस के इलावा अच्छी अच्छी निय्यतें करने, अज़ान का जवाब देने, तौबा के नवाफ़िल अदा करने, सुन्नत के मुताबिक़ सोने, फुज़ूल सुवालात से बचने, गुस्से का इलाज करने, आंख, कान, ज़बान की हिफ़ाज़त करने, बा वुज़ू रहने, झूट, गीबत, चुगली, हसद, तकब्बुर, वा'दा ख़िलाफ़ी, मज़ाक़ मस्ख़री, तन्ज़, दिल आज़ारी, निफ़ाक़ से बचने का ज़ेहन इसी मदनी माहोल से मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इसी मदनी माहोल की बरकत से ज़ाहिरो बातिन दुरुस्त हुवा।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

सय्यिदा फ़ातिमा के चलने का अन्दाज़

हज़रते सय्यिदुना मस्रूक़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिदीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया : हम **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अज़वाजे मुतहहरात رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास जम्अ थीं और हम में से कोई एक भी ग़ैर हाज़िर न थी, इतने में हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا वहां तशरीफ़ लाई, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का चलना हुज़ूर नबिय्ये अकरम के चलने से ज़रा भर मुख़लिफ़ न था।

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ، مَارَوْتُ عَائِشَةَ أُمَ الْمُؤْمِنِينَ عَنْ فَاطِمَةَ، ج ٩، ص ٤٣، الحديث: ١٨٣٦)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! हज़रते

सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को हुजूर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से कैसी महबूबत थी कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की हर हर अदा सुन्नते मुस्तफ़ा के सांचे में ढली हुई थी। अभी आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के चलने का अन्दाज़ हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चलने के अन्दाज़ की तरह था। हम भी अपने ऊपर गौर कर लेती हैं कि हम जब घर से निकलती हैं तो हमारा क्या अन्दाज़ होता है ? जाज़िबे नज़र बनने के लिये हम किस किस तरह के फ़ैशन अपनाती हैं ? हमारे चलने का अन्दाज़ क्या होता है और चलने में हम किस की नक़ल करती हैं ? इस्लामी बहनों को घर से निकलते वक़्त किन किन एहतियातों की ज़रूरत है मुलाहज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" सफ़हा 268 ता 270 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि फ़रमाते हैं :

औरत का मेक-अप करना कैसा ?

सुवाल : औरत का बनाव सिंघार करना, चुस्त या बारीक लिबास पहनना कैसा ?

जवाब : घर की चार दीवारी में सिर्फ़ अपने शोहर की खातिर जाइज़ तरीक़े पर मेक-अप कर सकती है। बे इजाज़ते शरई मषलन महारिम रिश्तेदारों के यहां जाने के मौक़अ पर घर से

बाहर निकलने के लिये लाली पावडर और खुशबू वगैरा लगाना और फैशन के कपड़े पहन कर **مَعَاذَ اللَّهِ** गैर मर्दों के लिये जाज़िबे नज़र बनना जैसा कि आज कल आम रवाज है येह सख़्त ना जाइज़ व गुनाह है। बारीक दूपट्टा जिस से बालों की रंगत झलके या बारीक कपड़े की जुराबें जिस से पाऊं की पिन्डलियां चमकें या ऐसे चुस्त लिबास में मल्बूस जिस में जिस्म के किसी उज़्व मषलन सीने वगैरा का उभार नुमायां हो गैर महरमों के सामने आना जाना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

लिबास के बा वुजूद नंगी

हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि **أَبُو بَكْرٍ** **عَزَّ وَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उयूब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने एक हदीषे पाक में येह भी फ़रमाया : दोज़ख़ियों में दो किस्में ऐसी होंगी जिन्हें मैं ने (अपने इस अ़हदे मुबारक में) नहीं देखा (या'नी आयन्दा पैदा होने वाली हैं) इन में एक किस्म उन औरतों की है जो पहन कर नंगी होंगी, दूसरों को (अपनी हरकतों के ज़रीए) बहकाने वालियां और खुद भी बहकी हुई, उन के सर बुख़्ती ऊंटों की एक तरफ़ झुकी हुई कोहानों की तरह होंगे, वोह जन्नत में दाख़िल न होंगी और न उस की खुशबू पाएंगी और उस की खुशबू इतनी इतनी दूरी से पाई जाती है।

(صحيح مسلم، كتاب اللباس والزينة، باب النساء الكاسيات..... الخ، ص ۸۴۶، الحديث: ۲۸، ۲۹، مُخَصَّصًا)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान

عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن جِزْكَرْ كَرْدَا हदीषे पाक के इन अल्फ़ज़ “जो पहन कर नंगी होंगी” के तहत फ़रमाते हैं : या’नी जिस्म का कुछ हिस्सा लिबास से ढकेंगी और कुछ हिस्सा नंगा रखेंगी या इतना बारीक कपड़ा पहनेंगी जिस से जिस्म वैसे ही नज़र आएगा येह दोनों उयूब आज देखे जा रहे हैं। या, **अब्बाह** की ने’मतों से ढकी होंगी शुक्र से नंगी या’नी ख़ाली होंगी या ज़ेवरों से आरास्ता, तक़वा से नंगी होंगी। और “कोहानों की तरह होंगे” के तहत फ़रमाते हैं : इस जुम्लए मुबारका की बहुत तफ़्सीरें हैं, बेहतर तफ़्सीर येह है कि वोह औरतें राह चलते शर्म से सर नीचा न करेंगी बल्कि बे हयाई से ऊंची गर्दन किये सर उठाए हर तरफ़ देखती, लोगों को घूरती चलेगी जैसे ऊंट के तमाम जिस्म में कोहान ऊंची होती है ऐसे ही उन के सर ऊंचे रहा करेंगे।

(مِرَاةُ الْمَنَانِجِ، ج ٥، ص ٢٥٥)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ!

सख्यिदा फ़ातिमा का अन्दाजे गुफ़्तगू

हज़रते सख्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अन्दाजे गुफ़्तगू और बैठने में हज़रते फ़ातिमतुज्ज़हरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बढ़ कर किसी और को हुजूरे अकरम से इस क़दर मुशाबहत रखने वाला नहीं देखा।

(الْأَدَبُ الْمُنْفَرَدُ، بَابُ قِيَامِ الرَّجُلِ لِأَخِيهِ، ص ٢٧٨، الْحَدِيثُ: ٩٣٤)

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैजे गन्जीना
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का अन्दाजे गुफ़्तगू बयान करते हुए उम्मुल
 मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا
 बयान फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साहिबे मे'राज, सय्याहे अफ़्लाक
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (निहायत ही वकार के साथ) इस तरह (ठहर
 ठहर कर) गुफ़्तगू फ़रमाते थे कि अगर कोई शख़्स आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जुम्लों को गिनना चाहता तो वोह गिन सकता
 था । (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، كتاب المناقب، بابُ صِفَةِ النَّبِيِّ، ص ٠٨ ٠٩، الحديث: ٣٥٦٤)

आवाज़ का पर्दा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया
 कि सय्यिदा खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का अन्दाजे गुफ़्तगू भी
 सय्यिदे अ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मुशाबहत रखने वाला था
 इस्लामी बहनों में से बा'ज तो चिल्ला चिल्ला कर बातें करती
 होंगी । बा'जों की आवाज़ से तो घर वाले क्या हमसाये भी
 परेशान होते होंगे । आइये ! इस बारे में भी मा'लूमात हासिल
 कीजिये कि इस्लामी बहनों की गुफ़्तगू का अन्दाजे क्या हो ।
 चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना
 की मतबूआ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "पर्दे के बारे
 में सुवाल जवाब" सफ़हा 90 ता 92 और 254 ता 260 पर
 शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी
 हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार
 फ़रमाते हैं :

औरत पीर से बात चीत करे या न ?

सुवाल : क्या इस्लामी बहन ना महरम पीर या दीगर लोगों से बात कर सकती है ?

जवाब : सिर्फ़ जरूरत के वक़्त कर सकती है । इस की सूरतें बयान करते हुए मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : तमाम महारिम (से गुफ़्तगू कर सकती है) और (अगर) हाज़त हो और अन्देशए फ़ितना न हो, न ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) हो तो पर्दे के अन्दर से बा'ज ना महरम से भी (बात कर सकती है) ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 243)

पीर साहिब से उन की इजाज़त के बिग़ैर बात चीत न की जाए नीज़ उन को गुफ़्तगू के लिये मजबूर भी न किया जाए, हो सकता है कि उन के नज़दीक गुफ़्तगू न करने ही में बेहतरी हो ।

पीर और मुरीदनी की फ़ोन पर बात चीत

सुवाल : क्या इस्लामी बहन पीर से ब ज़रीअए फ़ोन अपनी परेशानी के हल के लिये दुआ की दरख़्वास्त कर सकती है ?

जवाब : कर तो सकती है । मगर ना महरम पीर साहिब (या किसी भी ग़ैर मर्द से जरूरतन भी बात करनी पड़ जाए तो उस) से लबो लहजा क़दरे रूखा सा हो । आवाज़ लोचदार व नर्म और अन्दाज़ बे तकल्लुफ़ाना न हो ।

(رَدُّ الْمُحْتَارِ، كتاب الصلوة، مطلب فى ستر العورة، ج ٢، ص ٩٤، مُلَخَّصًا)

चूँकि इस की रिआयत बहुत मुश्किल है लिहाजा बेहतर

येह है कि इन मसाइल को अपने महारिम के ज़रीए पीर साहिब तक पहुंचाए। नीज़ बिला हाजत ना महरम पीर साहिब से भी गुफ्तगू नहीं कर सकती। मषलन महज़ सलाम दुआ और मिजाज पुरसी वगैरा के लिये फ़ोन पर भी बात न करे कि येह हाजत में दाख़िल नहीं।

इस्लामी बहनें ना'तें पढ़ें या नहीं?

सुवाल : इस्लामी बहनें इस्लामी बहनों में ना'तें पढ़ सकती हैं या नहीं ?

जवाब : इस्लामी बहनें इस्लामी बहनों में बिगैर माईक के इस तरह ना'त शरीफ़ पढ़ें कि उन की आवाज़ किसी ग़ैर मर्द तक न पहुंचे। माईक का इस लिये मन्अ किया कि इस पर पढ़ने या बयान करने से ग़ैर मर्दों से आवाज़ को बचाना क़रीब क़रीब ना मुमकिन है। कोई लाख दिल को मना ले कि आवाज़ सामियाने या मकान से बाहर नहीं जाती मगर तजरिबा येही है कि लाउड स्पीकर के ज़रीए औरत की आवाज़ उमूमन ग़ैर मर्दों तक पहुंच जाती है बल्कि बड़ी महाफ़िल में माईक का निज़ाम भी तो अकषर मर्द ही चलाते हैं ! सगे मदीना **عَفَى عَنْهُ** को एक बार किसी

ने बताया कि फुलां जगह महफ़िल में एक साहिबा माईक पर

बयान फ़रमा रही थीं, बा'ज मर्दों के कानों में जब उस निस्वानी आवाज़ ने रस घोला तो उन में से एक बे हया बोला : आहा ! कितनी प्यारी आवाज़ है ! जब आवाज़ इतनी पुर कशिश है तो खुद कैसी होगी !!! وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

इस्लामी बहनें माईक इस्ति'माल न करें

याद रहे ! दा'वते इस्लामी की तरफ़ से होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअत और इजतिमाए ज़िक्रो ना'त में इस्लामी बहनों के लिये लाउड स्पीकर के इस्ति'माल पर पाबन्दी है । लिहाज़ा इस्लामी बहनें ज़ेहन बना लें कि कुछ भी हो जाए न लाउड स्पीकर में बयान करना है और न ही इस में ना'त शरीफ़ पढ़नी है । याद रखिये ! ग़ैर मर्दों तक आवाज़ पहुंचती हो इस के बा वुजूद बे बाकी के साथ बयान फ़रमाने और ना'ते सुनाने वाली गुनाहगार और षवाब के बजाए अज़ाबे नार की हक़दार है ।

मेरे आका आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَوْتِ की ख़िदमत में अर्ज़ की गई : चन्द औरतें एक साथ मिल कर घर में मीलाद शरीफ़ पढ़ती हैं और आवाज़ बाहर तक सुनाई देती है, यूंही मुहर्रम के महीने में किताबे शहादत वगैरा भी एक साथ आवाज़ मिला कर (या'नी कोरस में) पढ़ती हैं, येह जाइज़ है या नहीं ? मेरे आका आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَوْتِ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : ना जाइज़ है कि औरत की आवाज़ भी औरत (या'नी छुपाने की चीज़) है और औरत की खुश इल्हानी कि अजनबी सुने महल्ले फ़ितना है ।

(फ़तावा रज़विख्या, जि. 22, स. 240)

औरत के राग की आवाज

मेरे आका आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةٌ وَرَبُّ الْعَرْتِ एक और सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : औरत का (ना'त वगैरा) खुश इल्हानी से बा आवाज़ ऐसा पढ़ना कि ना महरमों को उस के नग़मे (या'नी राग व तरन्नुम) की आवाज़ जाए हुराम है। फ़तावा नवाज़िल अज़ फ़कीह अबुल्लैष समर क़न्दी (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) में है, औरत का खुश आवाज़ कर के कुछ पढ़ना "औरत" या'नी महल्ले सित्र (छुपाने की चीज़) है। "काफ़ी" (अज़ इमाम अबुल बरकात नसफ़ी) में है, औरत बुलन्द आवाज़ से तलबिया (या'नी **اللَّهُمَّ لِيكَ** न पढ़े इस लिये कि उस की आवाज़ क़ाबिले सित्र (छुपाने के क़ाबिल चीज़) है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 242)

अल्लामा शामी قُدَسَ سِرُّهُ السَّامِيّ फ़रमाते हैं : औरतों को अपनी आवाज़ बुलन्द करना, इन्हें लम्बा और दराज़ (या'नी इन में उतार चढ़ाव) करना, इन में नर्म लहजे इख़्तियार करना और इन में तक्तीअ करना (काट काट कर तहलीली अरूज़ या'नी नज़्म के क़वाइद के मुताबिक़) अशअर की तरह आवाज़ें निकालना, हम इन सब कामों की औरतों को इजाज़त नहीं देते, इस लिये कि इन सब बातों में मर्दों का इन की तरफ़ माइल होना पाया जाएगा और उन मर्दों में जज़बाते शहवानी की तहरीक पैदा होगी इसी वजह से औरत को येह इजाज़त नहीं कि वोह अज़ान दे। وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ

(رَدُّ الْمُحْتَار، كتاب الصلوة، مطلب في ستر العورة، ج ٢، ص ٩٤، مُلَخَّصًا)

बरामदे से एक दूसरी को पुकारना कैसा ?

सुवाल : बरामदे में से इस्लामी बहन का पड़ोसनों के साथ बुलन्द आवाज़ से बातें करना, कैसा है ? इसी तरह इमारत में ऊपर नीचे रहने वालियां एक दूसरे को पुकारें, आपस में जोर जोर से गुफ्तगू करें तो क्या येह मुनासिब है ?

जवाब : येह इन्तिहाई गैर मुनासिब है क्यूंकि इस तरह गुफ्तगू करने से गैर मर्दों तक आवाज़ पहुंचने का क़वी इमकान है । अगर आस पास की इस्लामी बहनों से कोई ज़रूरी काम है तो इस के लिये एक दूसरे के घर टेलीफ़ोन या इन्टरकोम के ज़रीए बात चीत कर ले ।

बच्चों को डांटने की आवाज़

सुवाल : अच्छा येह बताइये कि बच्चों को डांटते वक़्त इस्लामी बहन का आवाज़ बुलन्द करना कैसा ?

जवाब : इस्लामी बहन का इस तरह डांटना कि आवाज़ घर से बाहर निकले, इन्तिहाई ना मुनासिब और मुज़हिका ख़ैज़ है । बच्चों पर बात बात पर चिल्लाते रहना हमाक़त भी है कि इस तरह बच्चे मज़ीद “आज़ाद” हो जाते हैं । लिहाज़ा बार बार डांटने के बजाए ज़ियादा तर प्यार से काम लिया जाए । सब के सामने बच्चों को रुसवा करते रहने से रफ़ता रफ़ता उस का नन्हा सा दिल “बागी” हो जाता है । बच्चे की मौजूदगी में किसी

मुअज़्ज़ज़ शख़्स से उसी बच्चे के बारे में इस तरह की शिकायात करना मषलन “इस को समझाओ, यह तंग बहुत करता है, बहुत शरारती है, मां बाप का कहना नहीं मानता वगैरा” अक्लमन्दी नहीं, क्यूंकि इस से बच्चे की इस्लाह होना दर कनार उलटा जेहन यह बनता होगा कि मुझे मां बाप ने फुलां के सामने ज़लील कर दिया ! आज कल अवलाद की ना फ़रमानियों की शिकायात आम हैं। इस की वुजूहात में बचपन में मां-बाप का बात बात पर बेजा चीख़ो पुकार करना और बच्चे को दूसरों के सामने वक़तन फ़ वक़तन ज़लीलो ख़्बार करना भी शामिल हो तो बईद अज़ कियास नहीं।

है फ़लाहो कामरानी नर्मी व आसानी में

हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

सदाक़ते सय्यिदा ज़हश

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदा आइशा सिदीका

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا فَرَمَاتِي هُنَّ كِي مَيَّ نِي हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से सच्चा उन के वालिद के इलावा किसी और को नहीं देखा।

(مُسْنَدُ أَبِي يَعْلَى، مَسْنَدُ عَائِشَةَ ج ٢، ص ٦٥، الحديث: ٦٩٨)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! खातूने जन्त رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا

खुद सच्ची और सच्चे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शहजादी हैं । सच की बहुत ज़ियादा बरकात हैं, आइये ! आप की खिदमत में इस की चन्द बरकात पेश की जाती हैं चुनान्चे

सच की बरकतें

हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन हारिष बिन अबू कुराद सुलामी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहुरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बे कस पनाह में हाज़िर थे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वुजू के लिये पानी मंगवाया । फिर उस में अपना हाथ डाला और वुजू फ़रमाया । हम ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के गुसाला मुबारका की जुस्तजू की और उसे थोड़ा थोड़ा पी लिया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि तुम्हें इस काम पर किस चीज़ ने आमादा किया ? हम ने अर्ज़ किया : **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्बत ने । इरशाद फ़रमाया : अगर तुम चाहते हो कि **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ भी तुम से महब्बत करें तो जब अमानतें तुम्हारे सिपुर्द की जाएं तो उन्हें अदा कर दिया करो और जब तुम बोलने लगो तो सच बोला करो और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक किया करो । (مُجْمَعُ أَرْكَانِ وَاهِدٍ، ج ٨، ص ٣٨٣، الحدیث : ١٢٠١٤)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “चार ख़स्ततें ऐसी हैं कि अगर वोह तुम में हों तो तुम्हें दुन्या की किसी महरूमि का एहसास नहीं होगा :

- (1).... अमानत की हिफ़ाज़त करना (2).... सच बोलना
(3)..... हुस्ने अख़्लाक़ और (4)..... हलाल कमाई खाना ।”

(مُسْنَدُ أَحْمَدَ، مُسْنَدُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، ج ٣، ص ٥٨٣، الحديث: ٦٨١٢)

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है

कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जो हक़ पर होते हुए झगड़ा ख़त्म करे मैं उस के लिये जन्नत के कनारे पर एक घर की ज़मानत देता (या’नी जिम्मेदारी लेता) हूं, झूट अगर्चे मिज़ाह के तौर पर ही हो, तर्क करने वाले को जन्नत के वस्त (या’नी दरमियान) में एक घर की ज़मानत देता हूं और अच्छे अख़्लाक़ वाले को जन्नत के आ’ला दर्जे में एक घर की ज़मानत देता हूं ।”

(سُنَنُ أَبِي دَاوُدَ، كِتَابُ الْآدَبِ، بَابُ فِي حُسْنِ الْخُلُقِ، ص ٤٥٥ الحديث: ٣٨٠٠)

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : सच बोला करो अगर्चे तुम्हें इस में हलाकत नज़र आए क्यूंकि इसी में नजात है ।
(مكارم الاخلاق لابن ابي الدنيا، ص ۱۱۱)

खुदा हम को सच बोलने की दे तौफ़ीक़

तू मुंह सोच कर खोलने की दे तौफ़ीक़

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

تَوْبُوا إِلَى اللّٰهِ !

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

झूट की नुहूसतें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! झूट ऐसी बुरी चीज़ है जो तमाम अदयान में ह़राम है और हर मज़हब वाले इस की बुराई करते हैं, इस्लाम ने इस से बचने की बहुत ताकीद फ़रमाई, कुरआने मजीद में कई मक़ामात पर इस की मज़म्मत फ़रमाई और झूट बोलने वालों पर खुदा की ला'नत आई । हदीषों में भी इस की बुराई ज़िक़्र की गई, चुनान्वे अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : “सिद्क़ को लाज़िम कर लो, क्यूंकि सच्चाई नेकी की तरफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है । आदमी

बराबर सच बोलता रहता और सच बोलने की कोशिश करता रहता है, यहां तक कि वोह **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के नज़दीक सिद्दीक़ लिख दिया जाता है और झूट से बचो, क्यूंकि झूट फुजूर की तरफ़ ले जाता है और फुजूर जहन्नम का रास्ता दिखाता है और आदमी बराबर झूट बोलता रहता और झूट बोलने की कोशिश करता रहता है, यहां तक कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के नज़दीक कज़़ाब लिख दिया जाता है।”

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ، كِتَابُ الْبِرِّ وَالصَّلَةِ، بَابُ قُبْحِ الْكُذِبِ..... الخ، ص १००८، الحديث: २५०८)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे अज़ीम है : जो शख्स झूट बोलना छोड़ दे और वोह बातिल है (या'नी झूट छोड़ने की ही चीज़ है) उस के लिये जन्नत के कनारे में मकान बनाया जाएगा और जिस ने झगड़ा करना छोड़ा और वोह हक़ पर है (या'नी हक़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता) उस के लिये वस्ते जन्नत में मकान बनाया जाएगा और जिस ने अपने अख़लाक़ अच्छे किये, उस के लिये जन्नत के आ'ला दर्जे में मकान बनाया जाएगा ।

(جَامِعُ التِّرْمِذِيِّ، كِتَابُ الْبِرِّ وَالصَّلَةِ، بَابُ مَا جَاءَ فِي الْمِرَاءِ، ص ४८३، الحديث: १९९३)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जब बन्दा झूट बोलता है, इस की बदबू से फ़िरिश्ता एक मील दूर हो जाता है।” (جَامِعُ التِّرْمِذِيِّ، مَا جَاءَ فِي الصِّدْقِ وَالْكَذِبِ، ص ६८१، الحديث: १९७२)

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उसैद हज़रमी
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को
 येह फ़रमाते सुना कि बड़ी ख़ियानत की बात येह है कि तू अपने
 भाई से कोई बात कहे और वोह तुझे इस बात में सच्चा जान रहा
 है और तू उस से झूट बोल रहा हो ।

(سُنَنُ أَبِي دَاوُدَ، كِتَابُ الْآدَابِ، بَابُ فِي الْمَعَارِضِ، ص ٤٤٨، الْحَدِيثُ: ٢٩٤١)

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है
 कि नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे पाक
 है : “मोमिन की तब्‌अ में ख़ियानत और झूट के इलावा तमाम
 ख़स्लतें हो सकती हैं ।” (مُسْنَدُ أَحْمَدَ، ج ٩، ص ٤٢١، الْحَدِيثُ: ٢٢٨٠٦)

या'नी येह दोनों चीजें ईमान के ख़िलाफ़ हैं, मोमिन को
 इन से दूर रहने की बहुत ज़ियादा ज़रूरत है ।

अल्लाह ! हमें झूट से, ग़ीबत से बचाना मौला ! हमें कैदी न जहन्नम का बनाना
 ऐ प्यारे खुदा ! अज़ पए सुल्ताने ज़माना जन्नत के महल्लात में तू हम को बसाना

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ	تَوَبُّوا إِلَى اللَّهِ !
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हज़रते सय्यिदतुना
 ف़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बहुत
 ज़ियादा लगाव था, सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को किसी मशक्कत में देख कर बर्दाशत न कर
 सकती थीं, चुनान्चे

बाबाजान की मशक्कत को देख कर रोना

हज़रते सय्यिदुना अबू षा'लबा खुशानी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है : हुजूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब कभी सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाते । इस के बा'द पहले हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर और फिर अजवाजे मुतहहरात رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के घर तशरीफ़ ले जाते, रावी फ़रमाते हैं : एक मरतबा आप हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हां तशरीफ़ लाए तो उन्होंने ने अपना हाथ सरकार के रुख़सारे पुर अन्वार पर रख दिया और अर्ज़ गुज़ार हुई : मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कपड़े फटे पुराने हो चुके हैं । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا तेरे बाप को **اَبْلًا** तअ़ाला ने एक ऐसे काम के लिये भेजा है कि रूए ज़मीं पर कोई शहरी और देहाती घर न बचेगा मगर **اَبْلًا** عَزَّ وَجَلَّ तेरे बाप के ज़रीए येह काम (या'नी दीने इस्लाम) इज़्ज़त के साथ पहुंचा देगा, येह दीन वहां तक पहुंच कर रहेगा जहां तक रात की पहुंच है ।

(المعجم الكبير، عزّوه بن زويمر، ج ٩، ص ٢٦٣، الحديث: ١٨٠٣٢)

घ्यारी घ्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! जिम्नन कुछ

सफ़र की सुन्नतें और आदाब मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 696 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "नेक बनने और बनाने के तरीके" सफ़हा 568 ता 576 पर है : मुमकिन हो तो जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा की जाए कि जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा करना सुन्नत है । (أَشْعَةُ اللَّيْلِ، ج 5، ص 111) ।

चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये करीम ग़ज़वए तबूक के लिये जुमा'रात के दिन रवाना हुए और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जुमा'रात को रवाना होना पसन्द फ़रमाते थे । (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، كِتَابُ الْجِهَادِ وَالسَّيْرِ، بَابُ مَنْ أَرَادَ غَزْوَةً..... الخ، ص 260، الحديث: 2950) ।

चलते वक्त अज़ीजों, दोस्तों से मिले और अपने कुसूर मुआफ़ करवाए और जिन से मुआफ़ी त़लब की जाए उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआफ़ कर दें ।

(बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा 6, स. 1052, मफ़हूमन)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से मरवी है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा करीना है : जिस के पास उस का भाई मा'ज़िरत ले कर आए

तो वोह उस का उज़्र क़बूल करे, ख़्वाह हक़ पर हो या बातिल पर,
जो ऐसा न करे वोह मेरे हौज़ पर नहीं आएगा ।

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ كِتَابُ الْبِرِّ وَالصَّلَاةِ، بِرَوَايَاتِهِمْ كَمَا تَبَيَّنَ، ج ٥، ص ٢١٣، الْحَدِيثُ: ٤٣٠٠، مُتَقَطًّا)

लिबासे सफ़र पहन कर अगर वक़्ते मकरूह न हो तो घर में
चार रकअत नफ़ल “الْحَمْدُ” और “قُلْ” से पढ़ कर बाहर निकलें,
वोह रकअतें वापसी तक अहलो माल की निगहबानी करेगी ।
सफ़र पर जाने वाले को चाहिये कि येह 5 सूरतें पढ़ लिया करे ।

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ.... (2) قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ.... (1)
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ.... (4) قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ.... (3)
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ.... (5) आखिर तक

सरवरे अ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते
सय्यिदुना जुबैर बिन मुतइम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया : “ऐ
जुबैर (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! क्या तुम चाहते हो कि जब तुम सफ़र में
जाओ तो अपने साथियों में बेहतर और तोशाए सफ़र में बढ़ कर
रहो (या'नी सफ़र में खुशहाली और फ़ारिगुल बाली नसीब हो) ?”
इरशाद फ़रमाया : येह 5 सूरतें पढ़ लिया करो :

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ.... (2) قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ.... (1)
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ.... (4) قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ.... (3)
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ.... (5) आखिर तक

हर सूरत को بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ से शुरूअ़ करो और उसी पर
ख़त्म करो (इस तरह़ इन पांच सूरतों में بِسْمِ اللهِ 6 बार पढ़ी जाएगी)

हज़रते सय्यिदुना जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने इन को पढ़ना शुरू किया तो मैं पूरे सफ़र में वापसी तक अपने रुफ़का में सब से ज़ियादा खुशहाल और तौशए सफ़र में फ़ारिगुल बाल रहने लगा ।

(كَنْزُ الْعَمَلِ، كتاب السفر، من قسم الافعال، ج ۳ الجزء السادس، ص ۳۱۴، الحديث: ۵: ۱۷۶)

नोट!!!

इस्लामी बहनें नापाकी के अय्याम में सूए नसर व सूए काफ़िरून नहीं पढ़ सकतीं बाकी तीनों सूरतें लफ़जे कुल के बिगैर कुरआन की निय्यत के बिगैर ब निय्यते दुआ व षना पढ़ सकती हैं ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप को अपने महारिम को मदनी काफ़िलों में सफ़र करवाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । राहे खुदा में सफ़र करने का षवाब सुनिये, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है किरसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस शख़्स का चेहरा राहे खुदा में गर्द आलूद हो जाए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन जहन्नम के धूएं से अमान अता फ़रमाएगा और जिस शख़्स के क़दम राहे खुदा में गर्द आलूद हो जाएं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के क़दमों को क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से महफूज़ फ़रमा देगा ।” (التحفة الكبری، ج ۳، ص ۲۵۰، الحدیث: ۲۳۵۵)

मुसाफ़िर को चाहिये कि वोह दुआ से ग़फ़लत न करे कि येह जब तक सफ़र में है इस की दुआ क़बूल होती है बल्कि जब तक घर नहीं पहुंचता उस वक़्त तक दुआ मक़बूल है इसी तरह मज़लूम की दुआ और मां बाप की अपनी अवलाद के हक़ में दुआ भी क़बूल होती है ।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुरुरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : तीन किस्म की दुआएं मुस्तजाब (या'नी मक़बूल) हैं इन की क़बूलियत में कोई शक़ नहीं : (1)... मज़लूम की दुआ (2)... मुसाफ़िर की दुआ (3)..... बाप की अपने बेटे के लिये दुआ । (جَامِعُ التَّرْمِذِيِّ، كِتَابُ الدَّعَوَاتِ، بَابُ مَا نَكَرَ فِي دَعْوَةِ الْمَسَافِرِ، ص ٤٩٣، الْحَدِيثُ: ٣٢٢٨)

जब किसी मुशिकल में मदद की ज़रूरत पड़े तो हदीषे पाक में है इस तरह तीन बार पुकारें : **“أَعِينُونِي يَا عِبَادَ اللَّهِ”** या'नी ऐ **अब्बाह** के बन्दो ! मेरी मदद करो ।

(الْمُحْضَنُ الْحُسَيْنِ، كِتَابُ ادْعِيَةِ السَّفَرِ، ص ٨٢، مُلَخَّصًا)

सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये कोई तोहफ़ा ले आएं कि येह सुन्नते मुबारका है । रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : **“जब सफ़र से कोई वापस आए तो (घर वालों के लिये) कुछ न कुछ हदिय्या लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए ।”**

(كَتَبُ الْعَمَالِ، كِتَابُ السَّفَرِ، قِسْمُ الْأَقْوَالِ، ج ٣، الْجُزْءُ السَّادِسُ، ص ٣٠١، الْحَدِيثُ: ٤٥٠٢)

औरत का तन्हा सफ़र करना कैसा ?

घ्यारी घ्यारी इस्लामी बहनो ! औरत का शोहर या महरम के बिगैर तन्हा तीन दिन की मसाफ़त पर वाकेअ किसी जगह जाना हराम है, यहां तक के अगर औरत के पास सफ़रे हज़ के अस्बाब हैं मगर शोहर या कोई काबिले इत्मीनान महरम साथ नहीं तो हज़ के लिये भी नहीं जा सकती अगर गई तो गुनाहगार होगी अगर्चे फ़र्ज़ हज़ अदा हो जाएगा । अलबत्ता फुकहाए मुतअख़ि़रिन (مُتَأَخِّرِينَ) ने एक दिन की मसाफ़त पर औरत के बे महरम जाने को भी ममनूअ करार दिया है ।

(مأخوذ از رَدِّ الْمُخْتَارِ، کتاب الحج، مطلب فی قولهم يُقَدِّمُ حَقَّ الْعَبْدِ..... الخ ج ۳، ص ۵۳۳)

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअत” जिल्द अब्वल सफ़हा 752 पर है : औरत को बिगैर महरम के तीन दिन या ज़ियादा की राह जाना, ना जाइज़ है बल्कि एक दिन की राह जाना भी । ना बालिग़ बच्चा या मअतूह के साथ भी सफ़र नहीं कर सकती, हमराही में बालिग़ महरम या शोहर का होना ज़रूरी है ।

(فَتَاوَى عَالِمِ الْكِبَرِيِّ، کتاب الصَّلَاةِ، الباب الخامس عشر فی صَلَاةِ الْمَسَافِرِ، ج ۱، ص ۱۵۶، ۱۵۷)

बयान कर्दा मस्अले में “तीन दिन की मसाफ़त” का ज़िक्र है, खुश्की के सफ़र में तीन दिन की मसाफ़त से मुराद सादे

57 मील का फ़ासिला है। (माखूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, (मुखर्रजा) जि. 8, स. 270) किलो मीटर के हिसाब से येह मिक्दार तक़रीबन 92 किलो मीटर बनती है। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 163-164 बित्तसर्स्फ़िन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

खातूने जन्नत की नबिय्ये रहमत से महब्बत

सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बचपन ही से बेहद साबिरो शाकिर, मुतवक्किल, मतीन, सन्जीदा और इताअत शिआर थीं। हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्बत व उल्फ़त और ख़िदमत व रफ़ाक़त का आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने ख़ूब ख़ूब हक़ अदा किया और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़रा सी तक्लीफ़ से बेचैन हो जाया करती थीं। एक रोज़ एक ना बकार ने राह में आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सरे मुबारक पर खाक डाल दी। आप इसी हालत में घर तशरीफ़ ले गए। आप की साहिबज़ादी ने देखा तो पानी ले कर सरे मुबारक को धोने लगीं और रोती जाती थीं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जाने पिदर ! **अब्बाह** तआला तेरे बाप को बचा लेगा।”

(سيرت رسول عربي، ص ٦٣)

ऊंटनी का बच्चादान

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 32 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “बुद्धा पुजारी”

सफ़ह 28 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक्ल फ़रमाते हैं : एक दिन हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का'बए मुअज़्ज़मा زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के करीब नमाज़ पढ़ रहे थे और कुफ़ारे कुरैश एक जगह बैठे हुए थे। इन में से एक ने कहा कि तुम इन को देख रहे हो ? फिर बोला : तुम में कौन ऐसा है जो फुलां कबीले से ज़ब्द कर्दा ऊंटनी का बच्चादान उठा लाए और जब यह सजदे में जाएं तो इन के कन्धों पर रख दे ? इस पर बद् बख़्त उक़बा बिन अबी मुईत्त उठ कर चल दिया और बच्चादान (या'नी वोह खाल जिस में ऊंटनी का बच्चा लिपटा हुवा होता है) ला कर रहमते अलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दोनों मुबारक शानों के दरमियान रख दी। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इसी हाल में रहे और सरे मुबारक सजदे से न उठाय़ा और वोह सब के सब क़हक़हे मार कर हंसते रहे, यहां तक कि खातूने जन्नत सय्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا (जिन की उम्र उस वक़्त ब मुश्किल आठ साल थी) आई और उन्होंने ने हबीबे अक्बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पुश्ते अतहर से उस गन्दगी को उठा कर फैंका। तब सरकारे नामदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने अपना सरे अक्दस उठाय़ा और अपने परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ के दरबार में अर्ज़ गुज़ार हुए : या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इन कुरैशियों को

पकड़। या **अब्ल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तू अबू जहल बिन हिश्शाम, उतबा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन उतबा, उमय्या बिन खलफ़ और उक़बा बिन अबी मुईत को पकड़। इस हदीषे पाक के रावी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने इन को बद्र के रोज़ मक़तूल (या'नी क़त्ल शुदा) देखा। वोह बद्र के कुंवें में औंधे मुंह गिरे हुए थे।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، كِتَابُ الصَّلَاةِ، بَابُ الْمَرْأَةِ تَطْرُقُ عَنِ الْمُصَلِّيِّ شَيْئًا مِنَ الْأَذَى، ص ١٩٨، الْحَدِيثُ: ٥٢٠)

न उठ सकेगा क़ियामत तलक खुदा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम

जिस को तुम ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बाश्गाहे मुस्तफ़ा में महबूबियत

एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते अलिय्युल मुर्तजा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को एक फ़र्श पर बिठा कर उन की दिलजोई फ़रमाई। हज़रते अलिय्युल मुर्तजा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप को वोह मुझ से ज़ियादा प्यारी हैं या मैं ? हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : वोह मुझे तुम से ज़ियादा और तुम उस से ज़ियादा प्यारे हो।

एक और ईमान अफ़रोज़ रिवायत सुनिये ! हज़रते सय्यिदुना जमीअ बिन उमैर तमीमी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं, मैं अपनी फूफी के साथ उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की ख़िदमत में हज़िर हुवा तो उन से अर्ज़ की गई : हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को कौन ज़ियादा महबूब था ? फ़रमाया : फ़ातिमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا), फिर अर्ज़ की गई : मर्दों में से ? फ़रमाया : उन के शोहर, जहां तक मुझे मा'लूम है वोह बहुत रोज़े रखने वाले और कषरत से क़ियाम करने वाले हैं ।

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، أَبْوَابُ الْمَنَاقِبِ..... الخ، باب فضل فاطمة، ص ٨٤٢، الحديث: ٣٨٤٤)

शारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَنِي इस हदीषे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : येह है हज़रते आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की हक़ गोई कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने येह न फ़रमाया कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सब से ज़ियादा प्यारी “मैं” थी और मेरे बा'द मेरे वालिद बल्कि जो आप के इल्म में हक़ था वोह साफ़ साफ़ कह दिया अगर येह ही सुवाल हज़रते फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से होता तो आप फ़रमातीं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को ज़ियादा प्यारी जनाबे आइशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا थीं फिर इन के वालिद । मा'लूम हुवा कि इन के दिल बिल्कुल पाक व साफ़ थे । अफ़सोस उन पर जो इन हज़रात को एक दूसरे का दुश्मन कहते हैं । ख़याल रहे कि महबूबत बहुत क़िस्म की है और महबूबियत की नोइय्यतें मुख़लिफ़ हैं

अवलाद में सब से ज़ियादा प्यारी जनाबे फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हैं, भाइयों में सब से ज़ियादा प्यारे अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हैं। अज़वाजे पाक में बहुत प्यारी जनाबे आइशा सिद्दीका हैं, ग़रज़ कि एक महबूबत के सिलसिले में जनाबे फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बहुत प्यारी, दूसरे सिलसिले में हज़रते आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बहुत प्यारी। मुक़ाबला एक सिलसिले के अफ़राद में होता है।

(مِرَاةُ الْمَنَاجِيحِ، اهل بيت کے فضائل ج ۸، ص ۶۹)

जिगर गोशफ़ु रथूल

अब्बाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का इरशाद है : “फ़ातिमा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا तमाम अहले जन्नत या मोअमिनीन की औरतों की सरदार है।” मज़ीद फ़रमाया : “फ़ातिमा मेरे बदन का एक टुकड़ा है जिस ने फ़ातिमा को नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया।”

(مَشْكُوةُ الْمَصَاحِبِ، كتاب المناقب، باب مناقب اهل بيت النبي ﷺ، ج ۲، ص ۳۳۵، ۳۳۶، الحديث: ۶۱۳۸، ۶۱۳۹)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

सफ़रे मुस्तफ़ा की इब्तिदा व इन्तिहा

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : नबिय्ये अकरम صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब सफ़र का इरादा फ़रमाते तो सब से आख़िर में हज़रते सय्यिदतुना

फ़ातिमत्तुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मुलाक़ात फ़रमाते और जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो सब से पहले आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मुलाक़ात फ़रमाते ।

(الْمُسْتَذْرَكُ لِلْحَاكِمِ، كتاب معرفة الصحابة، اذا سافر النبي..... الخ، ج ٢، ص ١٢١، الحديث: ٣٤٩٢)

आमदे मुस्तफ़ा पर अन्दाजे इश्तिक्बाल

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका, तय्यिबा, ताहिरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमत्तुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले जाते तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ता'ज़ीम के लिये क़ियाम फ़रमातीं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुबारक हाथों को थाम कर बोसा देतीं और अपनी जगह बिठातीं ।

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، ص ٨٤١، الحديث: ٣٨٤١ ملقطاً)

अमीरे अहले सुन्नत और इत्तिबाए सुन्नत

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का अन्दाजे सफ़र भी कुछ इस तरह से है कि जब आप सफ़र के लिये बैरूने मुल्क तशरीफ़ ले जाते हैं तो अपनी शहज़ादी से मुलाक़ात कर के जाते हैं और जब वापस तशरीफ़ लाते हैं तो अक़षर सब से पहले अपनी शहज़ादी के घर तशरीफ़ ले जाते हैं । अह़ादीषे मुबारका में बेटी के बहुत ज़ियादा फ़ज़ाइल वारिद हैं, चुनान्चे

“बेटी”

के चार हुरुफ़ की निश्बत से 4 फ़रामीने मुश्तफ़

(1).... जब लड़की पैदा होती है तो रब्बे जुल जलाल लड़की की तरफ़ एक फ़िरिशते को भेजता है जो इसे ख़ूब बरकत पहुंचाता है और कहता है : कमज़ोर सी मख़्लूक कमज़ोर से पैदा हुई, इस की निगहदाश्त करने वाले की क़ियामत तक मदद की जाएगी ।

(أ) تَحْمُ الْأَوْسَطُ، بَابُ الْهَاءِ، مِنْ أَسْمَاءِ رَجُلٍ، ج ٢، ص ٢٢٩، الْحَدِيثُ: (٣١٠١)

(2)..... जिस ने अपनी तीन बेटियों की परवरिश की वोह जन्नत में जाएगा और उसे राहे खुदा में उस जिहाद करने वाले की मिष्ल अज़्र मिलेगा जिस ने दौराने जिहाद रोज़े रखे और नमाज़ क़ाइम की । (التَّزْجِيْبُ وَالتَّزْهِيْبُ، كِتَابُ الْبِرِّ وَالصَّلَاةِ، التَّرْغِيْبُ فِي كِفَالَةِ الْبَيْتِمْ..... الخ ص ٨١٤، الْحَدِيثُ: (٣)

(3).... जिस की तीन बेटियां या तीन बहनें हों और उन के साथ अच्छा सुलूक करे तो दाख़िले जन्नत होगा ।

(جَامِعُ التَّزْوِيْدِي، كِتَابُ الْبِرِّ وَالصَّلَاةِ، بَابُ مَا جَاءَ فِي النَّفَقَةِ..... الخ، ص ٢٤٠، الْحَدِيثُ: (١٩١٣)

(4)..... जो शख़्स तीन बेटियों या बहनों की इस तरह परवरिश करे कि उन को अदब सिखाए और उन पर मेहरबानी का बरताव करे यहां तक कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उन्हें बे नियाज़ कर दे (या'नी वोह बालिग़ हो जाएं या उन का निकाह हो जाए या वोह साहिबे माल हो जाएं । (أَشْعَةُ اللَّمَعَاتِ، ج ٣، ص ١٣٢) तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत वाजिब फ़रमा देता है । येह इरशादे नबवी सुन कर सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** ने अर्ज़ की : अगर कोई शख़्स दो

लडकियों की परवरिश करे ? तो इरशाद फ़रमाया कि उस के लिये भी येही अज्जो षवाब है यहां तक कि अगर लोग एक का जि़क़र करते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस के बारे में भी येही फ़रमाते ।

(شَرْحُ السُّنَّةِ لِلْبَغَوِيِّ، ج ٦، ص ٢٥٢، الحديث: ٣٣٥١ مَلْخَصًا)

आक़ शहजादी के नमाज़ के लिये बेदार करते

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : छे महीने तक नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का येह मा'मूल रहा कि नमाजे फ़ज़्र के लिये जाते हुए हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर के पास से गुज़रते तो फ़रमाते : “ऐ अहले बैत ! नमाज़ !!! **अब्लाह** غُرُوجِلَّ तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो ! कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे ।”

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، كتاب تفسير القرآن، باب ومن سورة الاحزاب، ص ٤٢١، الحديث: ٣٢٠٦)

पारह 16, सूरे ताहा, आयत नम्बर 132 में इरशादे रब्बुल उला है :

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا
तर्जमए कन्जुल ईमान : और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दे और खुद इस पर षाबित रह ।

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي “तफ़सीरे नूरुल इरफ़ान” में इस

आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : इस से तीन मस्अले मा'लूम हुए : एक येह कि घर में रहने वाले तमाम लोग इन्सान के अहल कहलाते हैं । बीवियां, अवलाद, भाई, बरादर वगैरा । दूसरे येह कि नमाज़ी कामिल वोह नहीं जो सिर्फ़ खुद नमाज़ पढ़ लिया करे बल्कि वोह है जो खुद भी नमाज़ी हो और अपने सारे घर वालों को नमाज़ी बना दे । तीसरे येह कि हुक्मे नमाज़ की नोइय्यतें जुदागाना हैं । छोटे बच्चों और बीवी को मार कर नमाज़ पढ़ाए । भाई-बरादर को ज़बानी हुक्म दे ।

(تفسير نور العرفان، ج ٦، طه، تحت الآية: ١٣٢، ص ٣٨٦)

शदाउ मदीना

घ्यारी घ्यारी इस्लामी बहनो ! नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا رोज़ाना ख़ातूने जन्नत के घर जाते और उन्हें नमाज़ के लिये उठाते । अस्लाफ़े उम्मत का भी येही मा'मूल था । आप भी कोशिश कीजिये कि नमाज़े फ़ज़्र में खुद बेदार हो कर अपने महारिम को भी बेदार फ़रमाया करें, अगर आप से छोटे नमाज़ में सुस्ती करते मा'लूम हों तो उन्हें हस्बे मौक़अ डांट कर नमाज़ पढ़ाएं और बड़ों को अदब के दाइरे में रह कर अर्ज़ करें ।

में नमाज़ नहीं पढ़ती थी

घ्यारी घ्यारी इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी की बरकतों के क्या कहने ! इस सुन्नतों भरे मदनी माहोल ने लाखों बे नमाज़ियों को नमाज़ी बना दिया, फ़ैशन के मतवालों को

सुन्नतों पर अमल का ज़ेहन दिया, लन्दन-पेरिस के सपने देखने वालों को मदीने का दीवाना बनाया और न जाने कैसे कैसे बिगड़ों को राहे रास्त पर लाया, ऐसी ही एक मदनी बहार मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) में मुक़ीम इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि मेरे घर का माहोल यूं तो मज़हबी था कि मेरे अब्बूजान मस्जिद में मुअज़्ज़िन और बड़ी बहन और भाईजान दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता थे, मगर मेरा ज़ेहन दुन्यावी लज़्ज़तों में बदमस्त और नफ़्स गुनाहों पर दिलेर था। नमाज़ें क़ज़ा कर डालना मेरी आदत थी। एक दिन चन्द इस्लामी बहनें हमारे घर दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ की दा'वत देने के लिये तशरीफ़ लाईं। उन के महबूबत भरे अन्दाज़ से मेरा दिल पसीज गया और मैं ने इजतिमाअ में शिक़त की निय्यत कर ली। जब वहां गई तो एक मुबल्लिगए दा'वते इस्लामी ने “बे नमाज़ी की सज़ाएं” के मौज़ूअ पर दिल हिला देने वाला बयान किया जिसे सुन कर मैं थर्रा उठी और मैं ने पक्की निय्यत की, कि **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आज के बा'द मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी। फिर माहे रबीउन्नूर शरीफ़ का मौसिमे बहार आया तो मैं इस्लामी बहनों के इजतिमाए मीलाद में शरीक हुई जहां एक इस्लामी बहन ने “**TV की तबाह कारियां**” बयान कीं। इस बयान को सुन कर मेरे रौंगटे खड़े हो गए और मेरी आंखों से आंसूओं की झड़ी लग गई। वोह दिन और आज का

दिन मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर अपनी इस्लाह की कोशिशों में मसरूफ़ हूँ।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 17)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! फ़ैशन की मतवाली का हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में दिल चोट खा गया और वोह कुरआनो सुन्नत की राह पर आ गई और उन इस्लामी बहनों के लिये षवाबे जारिया का ज़रीआ बन गई जिन्होंने उसे इजतिमाअ की दा'वत दी थी कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम **“إِنَّ الدَّالَّ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلِهِ”** का फ़रमाने अलीशान है : **“صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** या'नी नेकी पर रहनुमाई करने वाला नेकी करने वाले ही की तरह है। **(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، ابواب العلم، ما جاء الدال على الخير كفاعله، ص ٢٢٨، الحديث: ٢٦٤٠)**

आप भी इस फ़रमाने अली पर अमल की निय्यत फ़रमा लीजिये कि अगर आप के दा'वत देने से किसी इस्लामी बहन का दिल चोट खा गया और वोह कुरआनो सुन्नत की राह पर आ गई तो आप का भी सीना मदीना होगा और इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी बहन अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि **“मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।”** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **“मदनी इन्ज़ामात”** पर अमल और सारी दुन्या

के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये अपने महारिम को, जिन की उम्र 22 साल या इस से ज़ियादा है, “मदनी क़ाफ़िलों” में सफ़र करवाना है। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** स. 107)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आप भी मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

घ्यारी घ्यारी इस्लामी बहनो ! तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने की बरकत से **अल्लाह** और उस के रसूल **عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की मेहरबानी से बे वक़अत पथर भी अनमोल हीरा बन जाता, ख़ूब जग-मगाता और ऐसी शान से पैके अजल को लब्बैक कहता है कि देखने सुनने वाला इस पर रश्क करता और जीने के बजाए ऐसी मौत की आरजू करने लगता है। आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत कीजिये और शैखे त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के अ़ता कर्दा मदनी इन्आमात पर अ़मल कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मक़बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी

सदका तुझे ऐ रब्बे ग़ुफ़ार मदीने का

बयान नम्बर 5

खातूने जन्नत
का
ईषार व सखावत

155

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِبِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खातूने जन्नत का इषार व सखावत

दुरूद शरीफ़ की फज़ीलत

साहिबे मरवियाते कषीरा हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा से मरवी है कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना **عَزَّ وَجَلَّ** से मरवी है कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना **عَزَّ وَجَلَّ** का इरशादे बा करीना है : **اَللّٰهُمَّ** के कुछ सय्याह (या'नी सैर करने वाले) फ़िरिश्ते हैं, जो ज़िक्र की महाफ़िल तलाश करते हैं जब वोह महाफ़िले ज़िक्र के पास से गुज़रते हैं तो एक दूसरे से कहते हैं : (यहां) बैठो। जब ज़ाकिरीन (या'नी ज़िक्र करने वाले) दुआ मांगते हैं तो फ़िरिश्ते उन की दुआ पर आमीन (या'नी "ऐसा ही हो") कहते हैं। जब वोह नबी पर दुरूद भेजते हैं तो वोह फ़िरिश्ते भी उन के साथ मिल कर दुरूद भेजते हैं हत्ता कि वोह फ़ारिग़ हो जाते हैं, फिर फ़िरिश्ते एक दूसरे को कहते हैं कि इन खुश नसीबों के लिये खुश ख़बरी है कि येह मग़फ़िरत के साथ वापस जा रहे हैं।

(جَمْعُ الْجَوَامِعِ لِلْسِّيُوطِيِّ، قِسْمُ الْاِقْوَالِ، تَمْتَةُ حَرْفِ الْهَمْزِ مَعَ النُّونِ ج ٣، ص ١٢٥، الْحَدِيثُ: ٤٤٥٠)

वोह सलामत रहा क़ियामत में पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम

मेरे प्यारे पे मेरे आका पर मेरी जानिब से लाख बार सलाम

मेरी बिगड़ी बनाने वाले पर

भेज ऐ मेरे किरदगार सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कौन नहीं जानता कि सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا उस फ़कीदुल मिषाल (बे मिषाल) अज़मत के मालिक बाप की लख्ते जिगर हैं जिन के कदमों में दुन्या भर के ख़जाने बिछे रहते थे और इस्लाम के उस माया नाज़ फ़रज़न्द की अहलिया थीं जिन की शमशीरे जोहर दार ने सफ़हए हस्ती पर अनमिट (न मिटने वाले) नुकूश षब्त कर के दुन्या को वर्तए हैरत (وَطَّرَحِي رَت) या'नी इन्तिहाई हैरानी) में डाल दिया था, दुन्या उस घराने के तक़दुस की क़सम खाती थी, लेकिन इस के बा वुजूद दुख़्तरे ख़ैरुल अनाम की ज़िन्दगी इस हालत में गुज़री कि कभी पेट भर कर दो वक़्त का खाना न खाया, जो मिलता उस को दूसरों पर निछावर कर देतीं और खुद फ़क्रो फ़ाका से ज़िन्दगी बसर करतीं और जिस मकान में रहतीं वहां आराइश व ज़ैबाइश का नामो निशान तक न था कीमती और ख़ूब सूरत बिस्तर वगैरा का ज़िक्र ही क्या वहां तो बा'ज़ अवक़ात मा'मूली सा बिस्तर भी ब मुश्किल मुयस्सर आता । एक दफ़अ़ा रसूले अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपनी महबूब नूरे नज़र से मिलने तशरीफ़ लाए तो देखा कि इस क़दर छोटी चादर ओढ़ रखी है कि सर ढांपती है तो पाऊं खुल जाते हैं और पाऊं छुपाती है तो सर खुल जाता है ।

(ماخوذ از مَكاشَفَةُ الْقُلُوبِ، باب في فضل الفقراء ص ۱۸۰)

इस नादारी और अफ़लास की वजह येह न थी कि दुन्या की दौलत इन्हें मिल न सकती थी बल्कि येह ख़ानदाने नुबुव्वत का वोह इम्तियाज है जिस ने फ़क्रो इस्तिग़ना का आख़िरी तसव्वुर काइम कर के येह षाबित कर दिया कि जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये जीते और मरते हैं दुन्या की ज़ैबाइश व आराम और अषाषा व दौलत इन के लिये ख़ाके पा से भी कमतर हैषियत रखती है वोह दुन्या को देने के अदी होते हैं, लेने के नहीं और नामवरी इस वक्त मज़ीद उरुज व दवाम पा लेती है जब बन्दा अफ़अले महमूद पर कारबन्द और अख़्लाके हसना से मुत्तसिफ़ हो जाता है। बिन्ते रसूल फ़ातिमा बतूल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की नामवरी और नेक नामी से कौन मुसलमान ना वाकिफ़ है ? हसबो नसब की बरतरी और मज़हबो मिल्लत की तरफ़ से मिलने वाली बड़ाई तो है ही मज़ीद नेक अफ़अल व हुस्ने अख़्लाक़ ने सोने पर सुहागे का काम किया और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम हमेशा के लिये अवराके तारीख़ में सुन्हरी हुरूफ़ से मक्तूब और अज़हाने मोअमिनीन में मन्कूश हो गया।

शाइलीन की हाजत रवाई

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द अव्वल सफ़हा 1442 पर "तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" के हवाले से नक्ल फ़रमाते हैं : हज़राते हसनैने करीमैने

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا बचपन में एक बार बीमार हो गए तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तजा, शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ व हज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा और खादिमा हज़रते सय्यिदतुना फ़िज़्ज़ा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ने इन शहजादों रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की सिह्हत याबी के लिये तीन रोज़ों की मन्नत मानी। **अब्लाह** तअाला ने सिह्हत दी, नज़्र की वफ़ा का वक़्त आया। सब साहिबों ने रोज़े रखे, हज़रते सय्यिदुना मौला अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ एक यहूदी से तीन साअ़ जव लाए, हज़रते खातूने जन्नत ने एक एक साअ़ (या'नी चार किलो में 160 ग्राम कम) तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक दिन मिस्कीन, एक दिन यतीम और एक दिन क़ैदी दरवाज़े पर हाज़िर हो गए और रोटियों का सुवाल किया तो तीनों दिन सब रोटियां उन साइलों को दे दीं और सिर्फ़ पानी से इफ़्तार कर के अगला रोज़ा रख लिया।

(خَزَائِنُ الْعُرْفَانِ، پ ۲۹، الدّهر تحت الاية: ۸ ص ۱۰۷۳، ملخصاً)

भूके रह के खुद औरों को खिला देते थे

कैसे साबिर थे मुहम्मद के घराने वाले !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“हूशैब” के चार हुरूफ़ की निश्बत से

ज़िक्र कर्दा हिक्वायत के 4 मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यिदतुन्निसा,

फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की ज़िक्र कर्दा हिक्वायत से हमें

नज़्र, सखावत, ईषार और खाना खिलाने के मुतअल्लिक चन्द मदनी फूल चुनने को मिले। आइये ! कुछ इन मदनी फूलों के बारे में मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये :

पहला मदनी फूल..... नज़्र :

नज़्र किसे कहते हैं ?

शैख़ुल हदीष हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी फ़रमाते हैं : नज़्र व मन्नत शरीअत में उस इबादत के काम को कहते हैं जो बन्दा खुद अपने ऊपर लाज़िम कर ले मषलन येह कहा कि अगर मेरा फुलां मक्सद पूरा हो गया तो मैं इतनी रकअतें नफ़ल पढूंगा या इतने रोज़े रखूंगा या इतने मिस्कीनों को खुदा की रिज़ा के लिये खाना खिलाऊंगा या कोई भी नेक काम करूंगा। (मसाइलुल कुरआन, मन्नत मानने का बयान, स. 197)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नज़्र के बारे में अहम मा'लुमात

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَلِيِّ "मिरआतुल मनाजीह" जिल्द 5 सफ़हा 202 पर फ़रमाते हैं : ग़ैरे वाजिब इबादत को अपने पर वाजिब कर लेना नज़्र है, नज़्रे शरई में येह शर्त है कि ऐसी चीज़ की नज़्र मानी जाए जो कहीं न कहीं वाजिब हो, जो चीज़ कहीं वाजिब न हो उस की नज़्रे शरई दुरुस्त न होगी, दूसरे येह कि वोह काम इबादत हो, तीसरे येह कि ख़ालिस **अल्लाह** तआला के

लिये हो किसी बन्दे के लिये न हो क्यूंकि नज़े शरई इबादत है और इबादत सिर्फ़ रब्ब तआला की ही हो सकती है, हां ! नज़े लुग़वी ब मा'ने नज़राना बन्दों की हो सकती है मगर इस का पूरा करना शरअन वाजिब नहीं फ़ातिहए बुजुर्गान, ग्यारहवीं शरीफ़ की नज़ मानना शरई नज़ नहीं । लुग़वी नज़ है ।

(مراة المناجیح، باب فی النذور الفصل الاول، ج ۵، ص ۲۰۲)

सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका, हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इस की मज़ीद वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं : मस्जिद में चराग़ जलाने या ताक़ भरने⁽¹⁾ या फुलां बुजुर्ग के मज़ार पर चादर चढ़ाने या ग्यारहवीं की नियाज़ दिलाने या गौषे आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का तौशा⁽²⁾ या शाह अब्दुल हक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का तौशा करने या हज़रते जलाल बुख़ारी का कूंडा करने या मुहर्रम की नियाज़ या शरबत या सबील लगाने या मीलाद शरीफ़ करने की मन्त मानी तो येह शरई मन्त नहीं मगर येह काम मन्अ नहीं हैं, करे तो अच्छा है । हां ! अलबत्ता इस का ख़याल रहे कि कोई बात ख़िलाफ़े शरअ इस के साथ न मिलाए । मषलन ताक़ भरने में रत-जगा होता है (या'नी रात भर जागते हैं) जिस में कुम्बा (या'नी ख़ानदान) और रिश्ते की औरतें इकठ्ठा हो कर गाती बजाती हैं कि येह हराम

(1) मस्जिद या मज़ार के ताक़ में चराग़ जला कर फूल वगैरा चढ़ाना ।

(2) या'नी किसी वली या बुजुर्ग की फ़ातिहा का खाना जो उर्स वगैरा के दिन तक्सीम किया जाता है ।

है या चादर चढ़ाने के लिये बा'जू लोग ताशे⁽¹⁾ बाजे के साथ जाते हैं येह ना जाइज़ है या मस्जिद में चराग़ जलाने में बा'जू लोग आटे का चराग़ जलाते हैं येह ख़्वाह मख़्वाह माल ज़ाएअ़ करना है और ना जाइज़ है। मिट्टी का चराग़ काफ़ी है और घी की भी ज़रूरत नहीं मक्सूद रोशनी है वोह तेल से हासिल है। रहा येह कि मीलाद शरीफ़ में फ़र्श व रोशनी का अच्छा इन्तिज़ाम करना और मिठाई तक्सीम करना या लोगों को बुलावा देना और इस के लिये तारीख़ मुक़र्रर करना और पढ़ने वालों का खुश इल्हानी से पढ़ना येह सब बातें जाइज़ हैं अलबत्ता ग़लत और झूटी रिवायतों का पढ़ना मन्अ़ है। पढ़ने वाले और सुनने वाले दोनों गुनहगार होंगे।

(बहारे शरीअ़त, मन्नत का बयान जि. 2, हिस्सा नहुम, स. 317)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मन्नत के बारे में फ़रमाने रब्बुल इज़ज़त

पारह 3 सूरतुल बकरह की आयत नम्बर 270 में मन्नत के बारे में इरशादे रब्बुल इज़ज़त है :

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ
تَذَرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهَا وَمَا لَظَالِمِينَ
مِنْ أَنْصَارٍ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम जो खर्च करो या मन्नत मानो **अल्लाह** को इस की ख़बर है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

(1)..... एक किसिम के दफ़ का नाम जिसे गले में डाल कर बजाते हैं।

ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद

हाफ़िज़ मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي
 “तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” में इस आयते मुबारका के
 तहत तहरीर फ़रमाते हैं : शरअ में नज़्र इबादत और कुर्बते मक़सूदा
 है इसी लिये अगर किसी ने गुनाह करने की नज़्र की तो वोह
 सहीह नहीं हुई। नज़्र खास **अल्लाह** तआला के लिये होती है
 और येह जाइज़ है कि **अल्लाह** के लिये नज़्र करे और किसी
 वली के आस्ताने के फुक़रा को नज़्र के सर्फ़ का महल मुक़रर करे
 मषलन किसी ने येह कहा : या रब्ब ! मैं ने नज़्र मानी कि अगर तू
 मेरा फुलां मक़सद पूरा कर दे कि फुलां बीमार को तंदुरुस्त कर दे तो
 मैं फुलां वली के आस्ताने के फुक़रा को खाना ख़िलाऊं या वहां के
 खुदाम को रूपिया पैसा दूं या उन की मस्जिद के लिये तेल या
 बोरिया हाज़िर करूं तो येह नज़्र जाइज़ है।

(تفسير خزائن العرفان، پ ۳، البقرة، تحت الآية: ۲۷۰، ص ۹۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मन्नत पूरी करने वालों की मदद शरई

अपनी मन्नत को पूरा करना क़ाबिले ता'रीफ़ और षवाब
 का काम है जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए
 काएनात, अलिय्युल मुर्तज़ा, शेरे खुदा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ,
 हज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा और ख़ादिमा हज़रते

सय्यिदतुना फ़िज़्ज़ा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ने हज़रते हसनैने करीमैने की शिफ़ाय़ाबी पर रोज़ों की मन्त को पूरा किया तो इन की मदह में **अब्बाहु** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ ने पारह 29 सूरतुद्दहर की आयत नम्बर 7 में इरशाद फ़रमाया :

يُؤْفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا
كَانَ شَرًّا مِّنْ سَبْعِينَ ①
(प २९, الدهर: ५)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपनी
मन्तें पूरी करते हैं और उस दिन से
उरते हैं जिस की बुराई फैली हुई है।
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

शहाबउ किराम क मन्त मानना

ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद हाफ़िज़ मुफ़ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي "तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में फ़रमाते हैं: हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी और हज़रते सय्यिदुना तलहा और हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जैद और हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा और हज़रते सय्यिदुना मुसअब (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) वगैरहुम ने नज़्र मानी थी कि वोह जब रसूले करीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ के साथ जिहाद का मौक़अ पाएंगे तो षाबित रहेंगे यहां तक कि शहीद हो जाएं, इन की निस्बत इस आयत में इरशाद हुवा कि इन्हों ने अपना वा'दा सच्चा कर दिया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 21, तह्तुल आयत : 23 स. 777)

और हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा व मुसअब (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا)

शहीद हो गए, चुनान्चे

पारह 21, सूरतुल अहज़ाब, आयत नम्बर 23 में इरशाद होता है :

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا
عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضَىٰ
نَحْسَهُ وَهُمْ مَّنْ يَنْتَظِرُونَ وَمَا يَدَّبُّوا
تَبَدُّلًا ﴿٢٣﴾
(पारह २१, الأحزاب: २३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : मुसलमानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अहद **अल्लाह** से किया था तो इन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका और कोई राह देख रहा है और वोह ज़रा न बदले।

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَىٰ الْحَبِيبِ!

कौन सी मन्नत मानी जाए ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा कि मन्नत मानना जाइज़ है और जाइज़ मन्नत पूरी करने पर मदहू से भी नवाज़ा गया है जैसा कि आप ने ज़िक्र कर्दा आयते मुबारका में मुलाहज़ा फ़रमाया। येह भी याद रहे कि अगर किसी गुनाह की मन्नत मानी हो तो उसे हरगिज़ हरगिज़ पूरा न किया जाए, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूअा 1182 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअत" जिल्द दुवुम सफ़हा 318 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي मन्नत के मुतअल्लिक बहुत ही अहम मस्अला बयान करते हुए फ़रमाते हैं : बा'ज़ जाहिल औरतें लड़कों के कान नाक छिदवाने और बच्चों की चोटिया रखने की मन्नत मानती हैं या और तरह तरह की ऐसी मन्नतें मानती हैं जिन का जवाज़ किसी तरह

षाबित नहीं अव्वलन ऐसी वाहियात मन्तों से बचें और मानी हो तो पूरी न करें और शरीअत के मुआमले में अपने लगव (या'नी फुजूल) खयालात को दख्ल न दें न येह की हमारे बड़े बूढ़े यूहीं करते चले आए हैं और येह कि पूरी न करेंगे तो बच्चा मर जाएगा, बच्चा मरने वाला होगा तो येह ना जाइज मन्तें बचा न लेंगी। मन्त माना करो तो नेक काम नमाज, रोज़ा, खैरात, दुरूद शरीफ़, कलिमा शरीफ़, कुरआने मजीद पढ़ने, फ़कीरों को खाना देने, कपड़ा पहनाने वगैरा की मन्त मानो और अपने यहां के किसी सुन्नी आलिम से दरयाफ़्त भी कर लो कि येह मन्त ठीक है या नहीं।

मजीद फ़रमाते हैं : “अलम और ता'ज़िया बनाने और पैक बनने और मुहर्रम में बच्चों को फ़कीर बनाने और (मन्त की) बध्धी (या'नी पटका या फूलों का हार या गले में पहनने का एक ज़ेवर) पहनाने और मरषिया की मजलिस⁽¹⁾ करने और ता'ज़ियों पर नियाज दिलवाने वगैरा खुराफ़ात (या'नी बेहूदा रस्मों) की मन्त सख़्त जहालत है ऐसी मन्त माननी न चाहिये और मानी हो तो पूरी न करे।”

(बहारे शरीअत, मन्त का बयान, जि. 2, हिस्सा. 9, स. 318)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते जैनब बिनते जहश की नज़

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 59 सफ़हात पर मुशतमिल उम्महातुल मोअमिनीन

(1).... वोह मजलिस जिस में शुहदाए करबला के मसाइब व शहादत का नोहा ख़्वानी के साथ ज़िक्र होता है।

के फ़ज़ाइल व मनाक़िब पर मुश्तमिल ईमान अफ़रोज़ किताब “उम्महातुल मोअमिनीन” सफ़हा 43-44 में ज़िक्र कर्दा कलाम का खुलासा है : जब उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के सरकारे अबदे क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से निकाह के मुतअल्लिक़ कुरआने पाक की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا تَرْجِمَةٌ كَنْزُ الْإِيمَانِ : फिर जब ज़ैद की ग़रज़ इस से निकल गई तो رَوَّجْنَاهَا (प २२, الأحزاب: ३५) हम ने वोह तुम्हारे निकाह में दे दी ।

तो हज़ूरे पुरनूर शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि कौन है जो ज़ैनब के पास जाए और उस को येह खुश ख़बरी सुनाए कि **अल्लाह** तअ़ाला ने मेरा निकाह उस के साथ फ़रमा दिया है । येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खादिमा हज़रते सय्यिदतुना सलमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا दौड़ती हुई हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास पहुंचीं और येह आयत सुना कर खुश ख़बरी दी । हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا इस बिशारत से इस क़दर खुश हुई कि अपना ज़ेवर उतार कर उस खादिमा को इन्आम में दे दिया, सज्दए शुक्र बजा लाई और नज़्र मानी कि 2 माह रोज़ादार रहूंगी ।

(مَدَارِجُ النَّبُوتِ (مترجم)، باب دوم ذکر امهات المؤمنین... الخ، ج २، ص ५२)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

“नज़्र” के तीन हुरूप की निश्बत से नज़्र के मुतअल्लिक 3 अहादीषे मुबारक

﴿1﴾.... उम्मल मोअमिनीन जौजए सय्यिदुल मुरसलीन, सय्यिदा अ़लिमा हज़रते अ़इशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि नूर के पैकर, अम्बिया के सरवर, दो अ़लम के दिलबर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे रूह परवर है : **”مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيعَ اللَّهَ فَلْيُطِعهُ وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيَهُ فَلَا يَعْصِهِ”** या’नी जो शख्स **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की इताअत की नज़्र माने वोह उस की इताअत करे और जो उस की ना फ़रमानी की नज़्र माने, वोह ना फ़रमानी न करे ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِي، كتاب الايمان والندور، باب النذرى الطاعة، ص 1235، الحديث: 2696)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَنِي “मिरआतुल मनाजीह” जिल्द 5, सफ़हा 203 पर इस हदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : क्यूंकि **اَللّٰهُ** तअ़ला की इबादत तो वैसे भी करनी चाहिये और जब नज़्र मान ली तो ब दरजए औला करनी चाहिये । ख़याल रहे कि जो काम ब ज़ाते खुद गुनाह हो, उस की नज़्र दुरुस्त ही नहीं जैसे शराब पीने, जूआ खेलने, किसी मुसलमान को नाहक़ क़त्ल करने की नज़्र कि ऐसी नज़्रें बातिल हैं इन का पूरा करना ह़राम,

मगर इन पर कफ़ारा वाजिब है कि येह काम हरगिज़ न करे और कफ़ारा अदा करे⁽¹⁾ इस का कफ़ारा क़सम का कफ़ारा है⁽²⁾ कि उस ने रब्ब तआला के नाम की बे हुरमती की, मगर जो काम किसी आरिजे की वजह से मन्नुअ हों उन की नज़्र दुरुस्त है, या उन की क़ज़ा करे या कफ़ारा दे जैसे ईद के दिन के रोज़े या तुलूए आफ़ताब के वक़्त नफ़ल पढ़ने की मन्त कि येह मन्त दुरुस्त है।

(مرآة المناجیح، کتاب الایمان والنذور، باب فی النذور، الفصل الاول، ج ۵، ص ۲۰۳)

﴿2﴾.... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا खुत्बा पढ़ रहे थे कि से मरवी है कि नबिय्ये करीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ से मरवी है कि नबिय्ये करीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ ने उस के एक शख्स खड़ा हुवा देखा, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस के मुतअल्लिक पूछा। लोगों ने बताया कि येह अबू इसराईल है इस ने नज़्र मानी है कि खड़ा रहेगा, न बैठेगा, न साया लेगा, न

(1).... चुनान्हे “दुरैमुख़ार” में है “जिस ने कोई गुनाह करने की क़सम खाई मषलन वालिदैन से कलाम नहीं करेगा या आज फुलां को क़त्ल करेगा तो इस पर वाजिब है कि क़सम तोड़ दे और इस का कफ़ारा अदा करे।”

(الدُّرُّ الْمُخْتَار، کتاب الایمان، ص ۲۸۳)

(2).... जैसा कि हदीषे पाक में है، كَفَّارَةُ النَّذْرِ كَفَّارَةُ الْبَيْمِنِ या 'नी नज़्र का कफ़ारा क़सम का ही कफ़ारा है। (صحيح مسلم، کتاب النذر، باب كفارة النذر، ۱۶۳، الحديث: ۱۶۳۵)

और क़सम का कफ़ारा तीन तरह का है। गुलाम आज़ाद करना..... या 10 मिसकीनों को खाना खिलाना या फिर 10 मिसकीनों को कपड़े पहनाना। या'नी येह इख़्तियार है कि इन तीन बातों में से जो चाहे करे। और अगर गुलाम आज़ाद करने या दस मिसकीन को खाना या कपड़े देने पर कादिर न हो तो पै दर पै तीन रोज़े रखे।

(الفتاوى الهندية، کتاب الایمان، الباب الثانی..... الخ، الفصل الثانی فی الکفارة، ج ۲، ص ۸۶)

कलाम करेगा और रोज़े रखेगा, तो हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : इसे हुक्म दो कि कलाम करे, साया ले ले और बैठ जाए और अपना रोज़ा पूरा करे ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، كتاب الايمان والنذور، باب النذر فيما لا يملك وفي معصية، ص ١٦٣٦، الحديث: ٦٤٠٢)

शारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार खान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَنِي “मिरआतुल मनाजीह” जिल्द 5 सफ़्हा 204 पर इस हदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : सब लोग बैठ कर खुत्बा सुन रहे थे मगर येह साहिब हुजूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सामने खड़े हो कर सुन रहे थे, इस से मा'लूम हुवा कि खुत्बा पढ़ना खड़े हो कर सुन्नत है और सुनना बैठ कर सुन्नत, इसी लिये तो हुजूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन के खड़े होने पर तअज्जुब फ़रमाया ।

मुफ़ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मज़ीद फ़रमाते हैं : ख़ामोश रहना, साये में न बैठना कोई इबादत नहीं बल्कि हराम है क्यूंकि नमाज़ में क़िराअत फ़र्ज़ है और अत्तहिय्यात में बैठना वाजिब भी है फ़र्ज़ भी, इस तरह हमेशा खड़ा रहना ताक़ते इन्सानि से बाहर है येह नज़्र तोड़ दे मगर रोज़ा चूंक इबादत है इस लिये इसे पूरा करे । ख़याल रहे कि अबू इसराईल ने हमेशा खड़े रहने, हमेशा ख़ामोश रहने, साये में न बैठने हमेशा रोज़ा रखने की नज़्र मानी थी, हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पहली नज़्रें तोड़ने का हुक्म दिया

मगर रोजे की नज़्र पूरी करने की ताकीद फ़रमाई जो कोई हमेशा रोज़ा रखने की नज़्र माने वोह साल में पांच (5) हराम रोज़ों या'नी ईदुल फ़ित्र और 4 ईदुल अज़हा (या'नी 10, 11, 12, 13 ज़िल ह़िज्जा) के सिवा तमाम दिन रोजे रखे और इन पांच दिन रोजे न रखने की वजह से कफ़ारा दे।

(مراة المناجیح، کتاب الایمان والنذور، باب فی النذور، الفصل الاول، ج 5، ص 203)

﴿3﴾.... हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि एक शख्स ने (फ़तेह मक्का के दिन) हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अज़्र की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं ने मन्त मानी थी कि अगर **अबुल्लाह** तअ़ाला आप के लिये मक्का फ़तेह करेगा तो मैं बैतुल मुक़द्दस में दो रकअत नमाज़ पढ़ूंगा। मदीने के सुल्तान, रहमते अ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “यहीं पढ़ लो।” दोबारा फिर उस ने वोही सुवाल किया, फ़रमाया : यहीं पढ़ लो। फिर सुवाल का इआदा किया तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जवाब दिया : “अब तुम जो चाहो करो।”

(مشکوة المصابیح، کتاب الایمان والنذور، باب فی النذور، الفصل الثاني، ج 1، ص 230، الحديث: 323)

शारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि मक्काए मुअज़्ज़मा की मस्जिद का षवाब बैतुल मुक़द्दस से दो गुना है कि वहां एक का षवाब पचास हज़ार है और हरम शरीफ़ में एक लाख

और मस्जिदे नबवी का षवाब बैतुल मुक़द्दस के बराबर, मगर मस्जिदे नबवी में नमाज़ का दर्जा ज़ियादा है कि यहां हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से कुर्ब है और चूंकि नज़्र थी बैतुल मुक़द्दस की और येह साहिब अदा करते मस्जिदे हराम या मस्जिदे नबवी में जो वहां से आ'ला है लिहाज़ा बहर हाल नज़्र पूरी हो जाती । मसाजिद में आ'ला मस्जिदे हराम है फिर मस्जिदे नबवी फिर मस्जिदे कुदसी फिर अपने शहर की जामेअ मस्जिद फिर महल्ले की मस्जिद फिर घर की मस्जिद (जाए नमाज़) ।

(مرآة المناجیح، کتاب الایمان والندور، باب فی الندور، الفصل الثانی، ج ۵، ص ۲۱۰، ملقطاً)
 صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

बहारे शरीअत क मुतालआ कीजिये !

नज़्र के बारे में फ़िक़ही मसाइल जानने के लिये दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब "बहारे शरीअत" जिल्द 2 सफ़हा 311 ता 318 का मुतालआ कीजिये ।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

दूसरा मदनी फूल : सखावत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! माल कम हो या ज़ियादा हर सूरत में सखावत करनी चाहिये और बुख़ल नहीं करना चाहिये कि सच्चे मुसलमान सखी और पैकरे ईषार होते हैं और मुसलमानों की तकालीफ़ दूर करने की खातिर अपनी मुश्किलात

की ज़रा बराबर परवाह नहीं करते जैसा कि आप ने हदीषे फ़ातिमा में मुलाहज़ा फ़रमाया कि वक़ते इफ़तार के लिये जो तीन साअ जव लाए वोह बजाए इस में कुछ रखने के सब के सब साइलीन पर यके बा'द दीगरे ख़ैरात कर दिये और अपने लिये कुछ भी न रखा येह आ'ला क़िस्म की सखावत थी और फिर इन को जिस इन्आम से नवाज़ा गया वोह भी कम नहीं कि ता क़ियामत पढ़ी जाने वाली किताब में **अल्लाह** रब्बुल इला **عَزَّ وَجَلَّ** ने इन का तज़क़िरा फ़रमा दिया जो कि आप इब्तिदाई सफ़हात में मुलाहज़ा फ़रमा चुकी हैं। अब यहां सखावत के मुतअल्लिक कुछ मदनी फूल और अस्लाफ़े किराम **رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** के इरशादात व वाक़िआत नक़ल किये जाएंगे ताकि इन की सखावत से हमें भी कुछ हिस्सा मिल जाए। येह बात हमेशा पेशे नज़र रखनी चाहिये कि सखावत करने से हमेशा फ़ाइदा ही होता है और माल भी घटता नहीं बल्कि बढ़ता है। दीने इस्लाम की तब्लीग़ भी सखावत व हुस्ने अख़्लाक़ पर मुन्हसिर है, जैसा कि

दीने इस्लाम की इस्लाह किस पर मुन्हसिर है

रसूलों के सालार, नबियों के ताजदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने खुशबूदार है : “येह वोह दीन है जिसे **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** ने अपने लिये चुन लिया और तुम्हारे दीन की इस्लाह सखावत और हुस्ने अख़्लाक़ ही पर मुन्हसिर है, पस इन दोनों के साथ अपने दीन को आरास्ता करो।”

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، ج ٢، ص ٢٣٢، الحديث: ٥٢٥٣)

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 417 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब इह्याउल इलूम का खुलासा सफ़हा 265 पर हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي فَأَكْرَمُوهُ بِهِمَا مَا صَحِبْتُمُوهُ : हदीषे पाक नक्ल फ़रमाते हैं : तर्जमा : जब तक इस दीन पर रहो इन दोनों चीज़ों के ज़रीए इस का एहतिराम करो ।

(المجم الاوسط من اسمعقد ام، ج ٦، ص ٣٢٣، الحديث: ٨٩٢٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सखावत किसे कहते हैं ?

हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي से पूछा गया कि सखावत क्या है? आप ने फ़रमाया : सखावत येह है कि तू अपना माल **अब्लाह** तअाला के रास्ते में खर्च कर दे ।

(أخية غلوم الذين، كتاب ذم البخل وذم حب المال، بيان فضيلة السخاء، ج ٣، ص ٣٠٤)

थेलियां भर भर कर तक्सीम फ़रमा दीं

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से पूछा गया कि सखावत किसे कहते हैं? आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : (मुसलमान) भाइयों से नेकी का सुलूक करना और माल अता करना सखावत है । फ़रमाया : मेरे वालिदे माजिद को विराषत में 50,000 दिरहम मिले तो उन्होंने ने थेलियां भर भर कर अपने भाइयों को तक्सीम कर दीं और फ़रमाया कि मैं नमाज़ में

अब्बाह तआला से अपने भाइयों के लिये जन्त का सुवाल किया करता था तो माल में इन से बुखल क्यूं करूं ?

(المرجع السابق، ص ३०५)

सखावत की खस्लत इनायत हो या रब्ब !

दे जच्चा भी ईषार का या इलाही !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बेहतरीन सखावत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 324 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "152 रहमत भरी हिकायात" सफ़हा 163 पर है : हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान अब्दुर्रहमान बिन अहमद बिन अतिय्या رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : बेहतरीन सखावत वोह है जो हाजत के मुताबिक़ व मुवाफ़िक़ हो (कि सामने वाले को जिस चीज़ की हाजत हो वोह दी जाए) ।

(شعب الإيمان، الرابع والسبعون من شعب الإيمان، باب في الجود والسخاء، ج ٤، ص ٢٢٤، الحديث: ١٠٩٣٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जूहो करम ईमान का हिस्सा

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 415 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "ज़ियाए सदक़ात" सफ़हा 219 पर है : हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र

सादिक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : अक़ल से ज़ियादा मददगार कोई माल नहीं, जहालत से बढ़ कर कोई गुनाह नहीं, मश्वरे से बढ़ कर कोई पुश्त पनाह नहीं । सुनो ! **अब्बाह** तआला ने फ़रमाया : मैं जव्वादो करीम हूं किसी बख़ील के लिये मुझ से राहे फ़रार नहीं और बुख़ल कुफ़्र (ना शुक्री) से है और कुफ़फ़ार (ना फ़रमान) जहन्म में जाएंगे जब कि जूदो करम ईमान का हिस्सा है और अहले ईमान जन्नत में जाएंगे ।

(أَحْيَاءُ عُلُومِ الدِّينِ، كتاب ذم البخل وذم حبّ المال، بيان فضيلة السخاء، ج ٣، ص ٣٠٣)

ईमान पे दे मौत मदीने की गली में मदफ़न मेरा महबूब के क़दमों में बना दे हो बहरे ज़िया नज़रे करम सूए गुनहगार जन्नत में पड़ोसी मेरे आका का बना दे

(100) س. دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةَ اَهْلَةَ سُنَّتِ اَمِيرِ اَهْلِهِ اَبُو اَسْحَابِ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अनोखा अन्दाजे सखावत

हज़रते सय्यिदुना उरवा बिन जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के जूदो सखावत का येह आलम था कि जब बाग़ में फल पक कर तय्यार हो जाते तो इहाते की दीवार में शिगाफ़ फ़रमा देते फिर लोगों को इजाज़त देते कि वोह आ कर खाएं और उठा कर भी ले जाएं । देहाती लोग बाग़ के गिर्द आते, पस वोह इस में दाख़िल हो कर

फल खाते और उठा कर भी ले जाते । आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जब अपने बाग में तशरीफ ले जाते तो पारह 15 सूरातुल कहफ की आयत नम्बर 39 की तकरार करते हत्ता कि बाग से बाहर तशरीफ ले जाते ।

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتِكَ قُلْتِ مَا تَرْجَمُ كَنْزُ لَإِيمَانٍ : और क्यूं न हुवा कि जब तू अपने बाग में गया तो कहा होता जो चाहे **अल्लाह** हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर **अल्लाह** की मदद का ।

سَأَأَلُّهُ لِقَوتَهُ إِلاَّ بِاللَّهِ ج
(प ५, १, الكهف: ३९)

(حلیة الاولیاء، عروہ بن زبیر، ج ۲، ص ۲۰۵، الرقم ۱۹۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْبِ !
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

सखावत इमान के लिये बाइषे तकविख्यत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 680 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "मुकाशफ़तुल कुलूब" सफ़हा 571 पर हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي हदीषे पाक नक्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मरवी है कि मैं ने रसूलुल्लाह को येह फ़रमाते सुना कि सब से पहले मीज़ाने अमल में हुस्ने खुल्क़ और सखावत रखी जाएगी, जब **अल्लाह** तअ़ाला ने ईमान को पैदा फ़रमाया तो उस ने अर्ज की : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मुझे कुव्वत अता फ़रमा तो **अल्लाह** तअ़ाला ने उसे हुस्ने खुल्क़

और सखावत से तकविय्यत बख़्शी और जब **अल्लाह** तअ़ाला ने कुफ़्र को पैदा फ़रमाया तो उस ने अर्ज़ किया : ऐ **अल्लाह** ! मुझे कुव्वत बख़्श, तो **अल्लाह** तअ़ाला ने उसे बुख़्ल और बद खुल्की से तकविय्यत बख़्शी । (مكاشفة القلوب، باب فى فضل حسن الخلق، ص ٨٠٤، كوئته)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इब्राहीम बिन अदहम की सखावत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूअ 412 सफ़हात पर मुशतमिल किताब “उयूनुल हिक्कायात” हिस्सए अव्वल सफ़हा 110 पर ज़िक्र कर्दा हिक्कायत का खुलासा है : हज़रते सय्यिदुना यहया बिन असवद किलाबी फ़रमाते हैं : “मैं ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم को अपने बाग़ की देख-भाल के लिये अजीर (या'नी गुलाम) रखा, तक़रीबन एक साल बा'द मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ बाग़ में गया । एक शख़्स उम्दा ऊंट पर सुवार हो कर हमारे पास आया और उस ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم के बारे में पूछा । मैं ने उसे बताया कि “आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फुलां जगह मौजूद हैं ।” वोह शख़्स आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى के पास आया, दस्तबोसी की और निहायत मोअदिबाना अन्दाज़ में खड़ा हो गया । हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم ने आने की वजह पूछी तो कहने लगा : “मैं बल्ख़ शहर से आया हूँ, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के चन्द गुलामों का इन्तिक़ाल हो गया है, मैं इन का माल ले कर आप की

ख़िदमत में हाज़िर हुवा हूं। येह तीस हज़ार (30,000) दिरहम आप के हैं इन्हें क़बूल फ़रमा लें।”

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने उस माल के तीन हिस्से करते हुए फ़रमाया : एक तुम्हारे लिये क्यूंकि तुम सफ़र की सज़बतें और मुश्किलात बर्दाश्त कर के यहां पहुंचे हो, दूसरा हिस्सा ले जाओ और इसे बल्ख़ के गुरबा व मसाकीन में तक्सीम कर देना।

फिर आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى हज़रते सय्यिदुना यहूया عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की तरफ़ मुतवज्जेह हुए जिन के बाग़ में आप बतौर अजीर (मुलाज़िम) काम करते थे, उन से फ़रमाया : “येह एक हिस्सा तुम ले लो और इसे “अस्क़लान” के गुरबा व फुक़रा में तक्सीम कर देना।” इतना कहने के बा’द आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى वहां से तशरीफ़ ले गए और उन तीस हज़ार (30,000) दराहिम में से एक दिरहम भी ख़ुद न लिया

(उयूनुल हिकायात, स. 71 मुलख़बसन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सखी का खाना दवा है !

शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

“सखी का खाना दवा और बख़ील का खाना बीमारी है।”

(جمع الجوامع، حرف الطاء، الطاء مع العين، ج 5، ص 118، الحديث: 13891)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

मेरे आका की सखावत

एक मुसलमान बीबी के सामने एक यहूदिया ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की सखावत का बयान किया और इस में इस हद तक मुबालगा किया कि हुज़ूर सय्यिदे अ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर तरजीह दे दी और कहा कि हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की सखावत तो इस इन्तिहा पर पहुंची हुई थी कि अपनी ज़रूरियात के इलावा जो कुछ भी उन के पास होता साइल को दे देने से दरेग़ न फ़रमाते, येह बात मुसलमान बीबी को ना गवार गुज़री और उन्होंने ने कहा कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام सब साहिबे फ़ज़्लो कमाल हैं, हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के जूदो नवाल में कुछ शुबा नहीं लेकिन सय्यिदे अ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मर्तबा सब से आ'ला है और येह कह कर उन्होंने ने चाहा कि यहूदिया को हज़रते सय्यिदे अ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जूदो करम की आजमाइश करा दी जाए, चुनान्चे उन्होंने ने अपनी छोटी बच्ची को हुज़ूर عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ की खिदमत में भेजा कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से क़मीस मांग लाए, उस वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास एक ही क़मीस थी जो ज़ैबेतन थी वोही उतार कर अ़ता फ़रमा दी ।

(تَفْسِيرِ خَزَائِنِ الْعُرْفَانِ، پ ۵، بنی اسرائیل، تحت الایه: ۲۹، ص ۵۳)

सखावत तेरे घर की है इनायत तेरे घर की है
तेरे दर का सुवाली झोलियां भर भर के लाता है

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العالیه स. 312)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सखावत के बारे

में अहादीषे मुबारका और अस्लाफ़े किराम رَجَمَهُمُ اللهُ السَّلَام के वाक़िआत और आख़िर में प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सखावत के मुतअल्लिक भी मुलाहज़ा फ़रमाया। सखावत करते वक़्त येह बात ज़ेहन नशीन रहे कि इतना माल ख़र्च न करे कि अपनी ज़रूरियात के लिये भी कुछ बाक़ी न रहे और लोगों से सुवाल करना पड़े। लिहाज़ा ख़र्च करने और माल रोकने दोनों में ए'तिदाल और मियाना-रवी से काम लेना चाहिये।

पारा 15 सूरे बनी इसराईल आयत नम्बर 29 में इरशादे रब्बे जलील है :

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعَدَ مَلُومًا
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और
अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा
हुवा न रख और न पूरा खोल दे
कि तू बैठ रहे मलामत किया
हुवा थका हुवा।

ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद
हाफ़िज़ मुफ़ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي
“तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” में इस आयते मुबारका के

तहत तहरीर फ़रमाते हैं : येह तमषील है जिस से इनफ़ाक़ या'नी खर्च करने में ए'तिदाल मलहूज़ रखने की हिदायत मन्ज़ूर है और येह बताया जाता है कि न तो इस तरह हाथ रोको कि बिल्कुल खर्च ही न करो और येह मा'लूम हो गोया कि हाथ गले से बांध दिया गया है, देने के लिये हिल ही नहीं सकता। ऐसा करना तो सबबे मलामत होता है कि बखील कन्जूस को सब बुरा कहते हैं और न ऐसा हाथ खोलो कि अपनी ज़रूरियात के लिये भी कुछ बाकी न रहे।

(تفسير خزائن العرفان، پ ۱۵۱، بنى اسرائيل، تحت الايه: ۲۹)

एक और जगह इरशादे बारी तआला है :

تَرْجَمَ عَ كَنْزُجُلِ إِيمَانٍ : और वोह
 وَالزَّيِّنِ إِذَا آتَفَقُوا لَمْ يُسِرُّوا وَلَمْ
 يَقْتَرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ۝
 और न तंगी करें और इन दोनों के
 बीच ए'तिदाल पर रहें।

हदीषे पाक में भी ए'तिदाल में रहने की तरगीब इरशाद फ़रमाई गई, चुनान्चे फ़कीहे उम्मत महबूब हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि रसूले करीम, साहिबे खुल्फ़े अज़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
 يَا نَبِيَّ جَاهِلِيَّاتٍ مِّنْ أَهْلِ بَيْتِي يَأْتِيَنَّكَ عِبَادٌ أَفْسَادٌ يَأْتِيَنَّكَ عِبَادٌ أَفْسَادٌ يَأْتِيَنَّكَ عِبَادٌ أَفْسَادٌ
 नहीं होगा।

(عُصْبُ الْيَمَانِ، باب الاقصاد والفقير - - - الح، ج ۵، ص ۲۵۵، الحديث: ۶۵۶۹)

एक और रिवायत में रसूलों के सालार, नबियों के ताजदार

مَنْ اقْتَصَدَ اَعْنَاهُ اللّٰهُ، وَمَنْ بَدَّرَ اَقْفَرَهُ اللّٰهُ : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ
या'नी जो शख्स (अखराजात में) ए'तिदाल काइम रखता है,
अब्बाह तअलाला उसे मालदार बना देता है और जो आदमी
जरूरत से जाइद खर्च करता है **अब्बाह** तअलाला उसे फकीर
कर देता है ।

(كُنْزُ الْغُلَّالِ، كِتَابُ الْاِخْلَاقِ، الْاِقْتِصَادِ وَالرَّفْقِ فِي الْمَعِيشَةِ، ج ٢ الجزء الثالث، ص ٢٢، الحديث ٥٢٣٣)

जरूरत से ज़ियादा मालो दौलत का नहीं तालिब
रहे बस आप की नज़रे इनायत या रसूलल्लाह !

(186 स. دامت برکاتہم العالیہ سننत सुन्नत अहले अमीरे अज् अमीरे अहले सुन्नत

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

हां ! जो शख्स तवक्कुल के आ'ला दर्जे पर फाइज हो
वोह राहे खुदा में सारा माल खर्च कर सकता है, जैसा कि

यारे गार क्व माली ईषार

(गजवए तबूक के मौकअ पर) नबिय्ये करीम, रऊफुरहीम
عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْمِ ने राहे खुदा में माल खर्च करने की तरगीब
इरशाद फरमाई । (महबूबे रहमान, शाहे कौनो मकान
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ के इस फरमाने रग़बत निशान की ता'मील
करते हुए) सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अपना कषीर माल राहे
खुदा में लाए । सब से पहले सहाबी इब्ने सहाबी, आशिके
अक्बर हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ अपना

सारा माल (चार हज़ार दिरहम) ले कर हाज़िरे बारगाह हो गए, नबिय्ये मुख्तार, दो आलम के ताजदार, शहनशाहे अबरार
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (इस ईषार को देख कर) इस्तिफ़सार फ़रमाया :
 क्या अपने घरबार के लिये भी कुछ छोड़ा ? अर्ज़ गुज़ार हुए :
 “उन के लिये मैं **अल्लाह** और उस के रसूल को छोड़
 आया हूँ ।” (मतलब यह कि मेरे और मेरे अहलो इयाल के
 लिये **अल्लाह** व रसूल काफी हैं) ।

(سُبُلُ الْهُدَى وَالرَّشَادِ فِي سَيْرَةِ خَيْرِ الْعِبَادَةِ، الباب الثالثون في غزوة التبوك...، ج ٥، ص ٢٣٥)

शाइर ने इस जज़्बए जां निषारी को यूं नज़्म किया है :

इतने में वोह रफ़ीके नुबुव्वत भी आ गया जिस से बिनाए इश्को महब्वत है उस्तुवार
 ले आया अपने साथ वोह मर्दे वफ़ सरिशत हर चीज़ जिस से चश्मे जहां में हो ए'तिबार
 बोले हुज़ूर, चाहिये फ़िक्रे इयाल भी कहने लगा वोह इश्को महब्वत का राज़दार
 है तुझ से दीदए मह व अन्जुम फ़ोग़ गीर⁽¹⁾ है तेरी ज़ात बाइषे तकवीने रोज़गार

परवाने को चराग़ है बुलबुल को फूल बस

सिद्दीक़ के लिये है खुदा का रसूल बस

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

(1) ऐ वोह ज़ात कि जिस से चांद और तारों की आंखें रोशनी हासिल करती हैं ।

कन्जूसी बातिन का रोग

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह बात पेशे नज़र रहे कि दुन्यवी मालो मताअ़ उस वक़्त तक आख़िरत का सामान नहीं बनता जब तक इसे आख़िरत के इरादे से ख़र्च न किया जाए और कन्जूस आदमी न बन्दों में नेक नाम और न ही **अल्लाह** तआला के हां मक़बूल व अज़ीज़ होता है, **कन्जूसी बातिन का रोग है जो लग जाने के बा 'द कभी नहीं जाता और कन्जूस माल को किसी नेक काम के लिये भी ख़र्च नहीं करता हालांकि अल्लाह** तआला की दी हुई ने'मतों से खुद भी फ़ाइदा उठाना चाहिये और दूसरों को भी फ़ाइदा देना चाहिये या'नी खुद भी खाना चाहिये और फ़ुकरा व गुरबा पर ख़र्च कर के आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करना चाहिये ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने ज़न्नत **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** की सखावत पर मुश्तमिल रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि अल्लाह वालों को मालो दौलत की लालच नहीं होती जब कि दुन्या वालों को मालो दौलत की हिर्स होती है । जो ज़ाहिद मालो दौलत को पसन्द करे वोह हक़ीक़त में ज़ाहिद नहीं । **अल्लाह** तआला के नेक बन्दे खाने पीने और मालो मताअ़ के शैदाई नहीं होते, सखावत की अ़दत बुलन्द अख़्लाक़ की सनद है, सखावत करने से दुश्मन भी सर झुका कर गुलाम बन जाते हैं ।

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

तीसरा और चौथा मदनी फूल :

ईषार और खाना खिलाना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने इब्तिदा में खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के ईषार व सखावत को मुलाहज़ा किया और इस ज़िम्न में इख़लास व रियाकारी, नज़्रो मन्नत और सखावत के बारे में अहादीषे तथ्यिबा और अक़वाल व अफ़आले सहाबा व ताबेईन से मदनी फूल चुनने की ख़ूब कोशिश भी की। आइये ! अब ईषार और खाना खिलाने के मुतअल्लिक़ कुछ मदनी फूल पेश किये जाते हैं, चुनान्चे

ईषार की ता'रीफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूअ 44 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "मदीने की मछली" सफ़हा 3 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ईषार की ता'रीफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ईषार का मा'ना है : दूसरों की ख़्वाहिश और हाज़त को अपनी ख़्वाहिश व हाज़त पर तरजीह देना ।

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

ईषार का षवाब बे हि़शाब जन्नत

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सथ्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي "इहयाउल उलूम" में नक़ल

फरमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह

से फरमाया : ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ! कोई शख्स
ऐसा नहीं कि वोह उम्र भर में चाहे एक ही मरतबा ईषार करे और
मैं बरोजे कियामत उस से हिसाब तलब करते हुए हया न फरमाऊं,
मैं उस को अपनी जन्त में ठिकाना अता फरमाऊंगा जहां वोह
चाहेगा। (أحياء العلوم وكتاب ذم البخل و ذم حب المال، بيان الايثار وفضله، ج ٣، ص ٣١٨)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिगर गोशए रसूल हज़रते
सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा बतूल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की हयाते मुबारका
और सीरते तय्यिबा का हर पहलू बेश बहा कमालात और अनमित
खुसूसियात का मज़हर है। दीने इस्लाम की बेलौष खिदमत,
नसबी व इज़्दवाजी व दीनी रिशतों से बे पनाह महब्बत और
अवलाद की बेहतरीन तरबियत आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के बेहतरीन
अख़्लाक का एक हिस्सा है। आ'ला अक़दारे इन्सानी का तहफ़ुज,
ख़ल्के खुदा की ख़ैर ख़्वाही, बे कसों और बेचारों की चारागरी
आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के नुमायां अवसाफ़ में से है। इस ख़ैर ख़्वाही,
चारा-गरी और फ़रियाद-रसी की एक झलक बयान के इब्तिदाई
वाक़िए में आप मुलाहज़ा फ़रमा चुकी हैं।

ईषार व सखावत दो वस्फ़ हैं : **अपनी ज़रूरत के सिवा
को ख़ैरात करना “सखावत” और ज़रूरत का भी ख़ैरात
कर देना “ईषार”** कहलाता है। दीगर अवसाफ़े हमीदा के साथ

साथ इषार व सखावत जैसी खूबियों में भी हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने एक इम्तियाज़ी शानो मक़ाम पाया और जब भी इन दो खूबियों के इज़हार का मौक़अ आया आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने बसात भर इस में हिस्सा लिया हत्ता कि अपनी ज़रूरत का सामान साइलों को अता किया, मंगतों का दामन भरा और भूकों को खाना खिलाया, जैसा कि

ईषार व सखावते फ़ातिमा

खतीबे पाकिस्तान, वाइज़े शिरी बयान हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद शफ़ीअ ओकाड़वी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ “सफ़ीनए नूह” हिस्सए दुवुम, सफ़हा 33 पर नक्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : बनी सुलैम में से एक शख्स ने बारगाहे रिसालत मआब में आ कर यूं गुस्ताखी की : ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) क्या तू वोही जादूगर है जिस के मुतअल्लिक़ मशहूर है कि उस का साया ज़मीन पर नहीं पड़ता, खुदा की क़सम ! अगर येह खयाल न होता कि मेरी क़ौम मुझ से नाराज़ हो जाएगी तो मैं इस तलवार से तेरा सर उड़ा देता । येह गुस्ताख़ाना कलाम सुन कर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने आगे बढ़ कर उस गुस्ताख़ को सबक़ सिखाना चाहा मगर हुज़ूर रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने रोक दिया और उस शख्स से फ़रमाया : तू आख़िरत के अज़ाब से डर और दोज़ख़

से ख़ौफ़ खा, बुतों की पूजा छोड़ दे और खुदाए वह-दहू ला-शरी-क की इबादत कर, मैं जादूगर नहीं हूँ बल्कि **अल्लाह** का बन्दा और उस का रसूल हूँ। आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हुस्ने अख़लाक़ और मोअषर कलाम से मुतअषर हो कर वोह बुत परस्त उसी वक़्त मुसलमान हो गया, अब सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : तेरे पास कितना माल है ? उस ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** खुदा की क़सम ! बनू सुलैम में **4000** आदमी हैं लेकिन इस क़बीले में मुझ से ज़ियादा ग़रीबो मिस्कीन कोई नहीं। आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** की तरफ़ देख कर फ़रमाया : तुम में से कोई ऐसा है जो इसे एक ऊंट ख़रीद कर दे दे ? हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अर्ज़ की : मेरे पास एक ऊंटनी है वोह मैं इसे दे देता हूँ। फिर फ़रमाया : कौन है जो इस का सर ढांप दे ? अमीरुल मोअमिनीन मौला मुशिकल कुशा, हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم** ने अपना मुबारक इमामा उतार कर उस के सर पर रख दिया। हज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : कौन है जो इस के खाने का इस वक़्त इन्तिज़ाम कर दे ? हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ** उठे और चन्द मकानों पर गए लेकिन इत्तिफ़ाक़ से कुछ न मिला। फिर नूरे मुस्तफ़ा हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا** के मकान पर हाज़िर हो कर दरवाज़ा खट-खटाया। आप **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا**

ने पूछा : कौन है ? अर्ज की : सलमान (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) हूं ।
 फ़रमाया : कैसे आए हो ? आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सारा माजिरा
 सुना दिया । यह सुन कर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا आबदीदा हो गईं
 और फ़रमाया : ऐ सलमान (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! उस खुदा की
 क़सम जिस ने मेरे बाप को रसूल बना कर भेजा ! आज तीसरा
 दिन है, घर में सब फ़ाके से हैं मगर तुम दरवाज़े पर आ गए हो,
 ख़ाली कैसे वापस करूं ? यह चादर ले जाओ और शमऊन
 यहूदी के पास जा कर कहो : फ़ातिमा बिनते मुहम्मद (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا)
 की चादर रख लो और थोड़े से जव कर्ज दे दो ।

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इस चादर
 को ले कर उस के पास गए और सारा माजिरा बयान किया ।
 शमऊन कुछ देर इस रिदाए मुबारका को देखता रहा उसी वक़्त
 उस पर एक कैफ़ियत तारी हो गई और कहने लगा :

ऐ सलमान (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! वल्लाह यह वोही मुक़द्दस
 लोग हैं जिन की ख़बर **अबूबाह** तआला ने अपने पैग़म्बर मूसा
 عَلَيْهِ السَّلَام को तौरत में दी है, मैं सिद्के दिल से हज़रते सय्यिदतुना
 फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के बाप मुहम्मदुरसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 पर ईमान लाता हूं ।

यह कह कर उस ने कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो
 गया । इस के बा'द उस ने हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
 को जव दिये और निहायत अदबो एहतिराम से रिदाए मुबारका
 वापस कर दी । खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने शमऊन को दुआए
 ख़ैर दी और जव पीस कर खाना तय्यार कर के हज़रते सय्यिदुना

सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को दे दिया । आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : इस में से कुछ घर के लिये रख लीजिये । फ़रमाया : बस राहे खुदा में देने की निश्चयत से मंगवाया और पकाया है अब इस में से लेना दुरुस्त नहीं । हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ खाना ले कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो गए और तमाम क़िस्सा भी अर्ज़ कर दिया । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वोह रोटी नौ मुस्लिम को अता फ़रमाई और अपनी नूरे नज़र हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले गए तो देखा कि भूक से इन का चेहरा ज़र्द हो रहा है और जो 'फ़ के आषार नुमायां हैं । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी बेटी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को बिठा कर तसल्ली दी और दुआ फ़रमाई : ऐ **اَللّٰهُمَّ** (عَزَّ وَجَلَّ) फ़ातिमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) तेरी बन्दी है, तू इस से राज़ी रहना ।

हमें भूका रहने का औरों की खातिर

अता कर दे ज़ब्बा अता या इलाही !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

साइल की अर्ज़ और सय्यिदतुना

फ़ातिमा क सखावत भरा जवाब

घ्यारी घ्यारी इस्लामी बहनो ! खातूने जन्नत हज़रते

सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का ईषार व सखावत आप ने

मुलाहज़ा फ़रमाया कि खुद फ़ाके से हैं, घर में भी खाने को कुछ नहीं मगर सखावत व ईषार का ऐसा ज़बरदस्त जज़्बा कि ग़रीब नौ मुस्लिम की हाजत रवाई की खातिर क़र्ज लेने के लिये अपनी मुबारक चादर गिरवी रखवा रही हैं और जब हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने खाने में से कुछ घर के लिये रखने की अर्ज़ की तो फ़रमाने लगीं : मैं ने येह खाना राहे खुदा में ख़ैरात करने की निय्यत से पकाया है। एक तरफ़ खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का पाकीज़ा अमल और दूसरी तरफ़ हमारी हालत। **अल्लाह** अक्बर ! वोह खुद फ़क्रो फ़ाके में रह कर ग़रीबों की हाजतों को पूरा करतीं और हम अपने ही पेट भरने और जो बाकी बच जाए उसे बजाए ग़रीबों फ़कीरों पर खर्च करने के आने वाले वक़्त के लिये रख लेती हैं। ऐ काश ! हमें भी ग़रीबों फ़कीरों की हाजत रवाई करने का जज़्बा नसीब हो जाए। सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا अगर्चे खुद फ़ाके से रहती थीं, लेकिन इस तंगी व उ़सरत के आ़लम में भी अपने पड़ोसियों से गा़फ़िल न रहती थीं, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का मा'मूल था कि हमसायों की ख़बर गीरी करतीं कि कोई भूका तो नहीं।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपनी ज़रूरत को भी ख़ल्के खुदा पर खर्च कर देना बल्कि खुद फ़ाके से रह कर भी

भूकों को सैर करना बतूली ईषार की वोह शानदार मिषाल है जिस की हम-सरी तो दर कनार पैरवी करना भी हम जैसों के लिये मुश्किल है, मख़्लूक में ईषार व सख़ावत के हवाले से बुलन्द तरीन नाम सय्यिदुल असफ़िया, महबूबे खुदा, अहमदे मुज्ताबा (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ), इन के बा'द नबी की सोहबत में रहने वालों और नबी के घर वालों का है।

भूके रह के खुद औरों को खिला देते थे

कैसे साबिर थे मुहम्मद के घराने वाले !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

उमर बिन ख़त्ताब का ईषार

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصُّلُوٰةِ وَالتَّسْلِيمِ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रसूले अज़ीम मुझे अतिथ्या देना चाहते तो मैं अर्ज करता कि येह मुझ से ज़ियादा हाज़त मन्द को अता फ़रमाइये। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते : येह खुद ले कर ग़नी हो जाओ और फिर सदका कर दो, तुम्हें जो माल बिगैर तम्अ और बिगैर मांगे मिले उसे ले लिया करो और जो न मिले उस के पीछे खुद को न लगाओ।

(مَشْكُوءَةُ الْمَصَا بِنَيْح، كِتَابُ الزَّكَاةِ، بَابُ مَنْ لَا تَحِلُّ لَهُ الْمَسْأَلَةُ... الخ، ج 1، ص 351، الحديث: 1845)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَنِي “मिरआतुल मनाजीह” जिल्द 3 सफ़हा

60 पर इस हृदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : सोहबते पाके

मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की येह ताषीर थी कि हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सिर्फ़ ग़नी नहीं बल्कि ग़नी तर, ग़नी गर हो गए। मांगना तो क्या बिगैर मांगे आती हुई चीज़ में भी ईषार ही करते हैं और दूसरों को अपने पर तरजीह देते हैं। अपने दौरे ख़िलाफ़त में जब फ़ारस और रूम के ख़ज़ाने मदीना में लाते हैं, तो उस वक़्त भी खुद एक क़मीस ही धो धो कर पहनते हैं।

मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मज़ीद फ़रमाते हैं :

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ क्या बे मिषाल ता'लीम है। मक्सद येह है कि जो बिगैर मांगे और बिगैर तम्अ के मिले वोह रब्ब तअ़ाला का अतिर्य्या है इसे न लेना गोया इस अतिर्य्ये की बे क़दरी है। दुन्या वालों से इस्तिग़ना अच्छा और **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का हमेशा मोहताज रहना अच्छा। मशाइख़े किराम (رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام) मा'मूली नज़राने भी क़बूल कर लेते हैं, इन का माख़ज़ येह हृदीष है फिर क्या ख़ूब फ़रमाया कि तुम खुद ले कर सदका कर दो ताकि तुम्हें लेने का भी षवाब मिले और देने का भी।

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

सलमान फ़ारसी क्व ईषार

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का (मदाइन की गवर्नरी में) वज़ीफ़ा 5000 दिरहम था और आप

तक़रीबन 30,000 मुसलमानों के अमीर (गर्वनर) थे। आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ लोगों को खुत्बा देते वक़्त एक चोगा पहनते (जो कपड़ों पर पहना जाता है) इस का कुछ हिस्सा नीचे बिछाते और कुछ ऊपर ओढ़ लेते थे। जब आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को वज़ीफ़ा मिलता उसे सदक़ा कर देते और खुद ज़म्बील (या'नी टोकरियां) बना कर गुज़ारा करते। (جِلْبَةُ الْأَوْلِيَاءِ، ذِكْرُ الصَّحَابَةِ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ، سُلْمَانَ الْفَارْسِيِّ، ج ١، ص ٢٥٥، رقم: ٢٣)

हमें अपने फ़ज़लो करम से तू कर दे

सखावत की ने'मत अता या इलाही !

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अबू अली दक्काक़ क्व जज़्बए ईषार

हज़रते सय्यिदुना अबू अली दक्काक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق को किसी ने “मर्व” में दा'वत पर बुलाया, रास्ते में जाते हुए एक बुढ़िया की आवाज़ को सुना जो अपने मकान में कह रही थी कि ऐ **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ तू ने मुझे कषीर अवलाद होने के बा वुजूद फ़क्रो फ़ाक़ा में मुब्तला रखा है आख़िर इस में तेरी क्या मस्लिहत है ? आप उस के येह जुम्ले सुनने के बा'द ख़ामोशी से चले गए और जब “मर्व” में अपने मेज़बान के हां पहुंचे, तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया कि एक त़बाक़ में बहुत सा ख़ाना भर के ले आओ, येह सुन कर वोह शख़्स बहुत खुश हुवा और येह ख़याल किया कि शायद आप घर पर ले जा कर ख़ाना चाहते हैं क्यूंकि आप के घर पर कुछ भी न था और जब वोह मेज़बान त़बाक़ भर कर

ले आया तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उस को सर पर रखे हुए बुढिया के मकान की तरफ़ चल दिये और तमाम खाना उस को दे आए ।

(تَذَكُّرَةُ الْأَوْلِيَاءِ (مترجم)، ابو علی دقاق کے حالات، ص ۳۹۱)

हो मेहमान नवाजी का जज़्बा इनायत

हो पासे शरीअत अता या इलाही !

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

ईषार की आ'ला मिषाल

सह़ाबिये सरकार हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द फ़रमाते हैं : एक खातून हुज़ूरे अन्वर, शफ़ीए रोज़े महशर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे अक्दस में एक बुर्दा ले कर हाज़िर हुई । हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द ने (अबू हाज़िम से) कहा : क्या तुम जानते हो, येह बुर्दा क्या है? उन्हीं ने कहा : जी हां ! येह एक चादर है जिस में हाशिये बने हुए हैं । उस औरत ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं ने इस को अपने हाथ से बुना है ताकि मैं आप को पहनाऊं । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उसे क़बूल फ़रमाया कि आप को उस की हाज़त थी । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो वोह चादर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का तहबन्द थी एक शख़्स ने उस को टटोला और अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ येह चादर मुझे

पहना दीजिये । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : हां ! (तुझे पहनाऊंगा) आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जितनी देर **अब्बाह** ने चाहा मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा रहे फिर वापस तशरीफ़ लाए, उस चादर को लपेटा और उस (तलब करने वाले) की तरफ़ भेज दी । लोगों ने उस को कहा : जब तुम जानते हो कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ किसी साइल को वापस नहीं लौटाते तो तुम ने चादर का सुवाल कर के अच्छा नहीं किया । उस ने जवाब दिया :
 وَاللّٰهُ مَا سَأَلْتُهُ اِلَّا لِيَتَّكُونَ كَفَنِي يَوْمَ اَمُوْتُ
 या'नी **अब्बाह** रब्बुल इज़्ज़त की क़सम ! मैं ने येह मुबारक चादर फ़क़त इस लिये मांगी है ताकि येह मेरा कफ़न बने । हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द फ़रमाते हैं : येही मुबारक चादर बा'द में उस शख़्स का कफ़न बनी ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِي، كتاب اللباس، باب البرود والحبرة والشملة، ص ٢٦٥، الحديث: ٥٨١٠)

मुझ पर करम हो दावर, इतना बरोजे महशर

साया फ़िगन हो सर पर, मीठे नबी की चादर

क्या ख़ौफ़ आसियों को, महशर की अब तपश का

साया करेगी सर पर, मीठे नबी की चादर

मुज़्दा हो आसियों को, बुशरा हो आसियों को

आई शफ़ीअ बन कर, मीठे नबी की चादर

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अताए मुस्तफ़ा पर भी कुरबान कि खुद को ज़रूरत होने के बा वुजूद ईषार की आ'ला मिषाल काइम करते हुए सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को चादर अता फ़रमा दी और येह भी मा'लूम हुवा की सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का कितना प्यारा अकीदा था कि वोह नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से निस्बत रखने वाली चीज़ को अपने साथ क़ब्र में ले जाने को ऐन सआदत समझते थे। यकीनन **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में ईषार का षवाब बे शुमार है, ईषार की फ़ज़ीलत के मुतअल्लिक सरवरे ज़ीशान, रहमते अलमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : “जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (किसी और को) तरजीह दे, तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे बख़्श देता है।”

(کنز العمال، کتاب المواظ والرفاق والخطب والحکم، الباب الاول فی المواظ والرغیبات، ج ۹، ص ۳۳۲، الحدیث: ۳۱۰۵)

वाह क्या जूदो करम है शहे बतहा तेरा

“नहीं” सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

(हदाइके बख़्शिश अज इमामे अहले सुन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ईषार की मदनी बहार

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हर नेकी की तरह ईषार का षवाब भी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ चाहे तो आख़िरत में अता फ़रमाएगा मगर बा'ज अवकात दुन्या के अन्दर भी इन्आम मिल जाता है,

मषलन कोई मुशिकल आसान हो गई, अच्छा ख़्वाब नज़र आ गया, मदीने शरीफ़ का वीज़ा मिल गया। एक इस्लामी बहन के साथ पेश आने वाली इसी तरह की एक मदनी बहार मुख़्तसरन पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 28 सफ़हात पर मुशतमिल रिसाले “पुर अस्सार भिकारी” सफ़हा 28 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ नक़ल फ़रमाते हैं : बम्बई के एक अलाके में तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी की तरफ़ से इस्लामी बहनों के होने वाले हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ (पीर शरीफ़ 22 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1428 हि. ब मुताबिक़ 12-3-2007) के इख़िताम पर एक जिम्मेदार इस्लामी बहन के पास किसी नई इस्लामी बहन ने अपनी चप्पल की गुमशुदगी की शिकायत की। जिम्मेदार इस्लामी बहन ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुए उसे अपनी चप्पल की पेशकश की। वहां मौजूद एक दूसरी इस्लामी बहन जिन को मदनी माहोल से वाबस्ता हुए अभी तक़रीबन सात ही माह हुए थे, उस ने आगे बढ़ कर येह कहते हुए कि “क्या दा'वते इस्लामी की ख़ातिर मैं इतनी कुरबानी भी नहीं दे सकती !” ब इस्सार अपनी चप्पलें पेश कर के उस नई इस्लामी बहन को क़बूल करने पर मजबूर कर दिया और खुद पा बरहना (या'नी नंगे पाऊं) घर चली गई। रात जब सोई तो उस की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी !

क्या देखती है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपना चांद सा चेहरा चमकाते हुए जलवा फ़रमा हैं, नीज़ एक मुअम्मर मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी सर पर सब्ज सब्ज इमामा शरीफ़ सजाए क़दमों में हाज़िर हैं। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई रहमत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ज़ कुछ यूं तरतीब पाए : चप्पल ईषार करते वक़्त तुम्हारी ज़बान से निकले हुए अल्फ़ज़ "क्या दा'वते इस्लामी की ख़ातिर मैं इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकती!" हमें बहुत पसन्द आए। (इलावा अर्जी भी हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह भी याद रहे ऐसी चीज़ ईषार करना ज़ियादा अफ़ज़ल है कि जो हमें खुद पसन्द हो। जैसा कि पारह 4 सूराए आले इमरान की आयत नम्बर 92 में इरशादे खुदाए रहमान है :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تَرْتَمِعُ كَنْزُ الْجَلْدِ إِمَان : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे खुदा में अपनी प्यारी चीज़ न खर्च करो।

आयते मुबारका की तफ़सीर

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद हाफ़िज़ मुफ़ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत नक्ल फ़रमाते हैं : (हज़रते सय्यिदुना) हसन (बसरी) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي का कौल

है : जो माल मुसलमानों को महबूब हो और उसे रिज़ाए इलाही के लिये खर्च करे वोह इस आयत में दाखिल है ख़्वाह एक खजूर ही हो ।

(تَفْسِيرِ كَبِيرِ، پ ۲۴، ال عمران، تحت الآية: ۹۲، ج ۳، ص ۲۸۹)

दे जज़्बा तू ऐसा तेरे नाम पर दूँ

पसन्दीदा चीज़ें लुटा या इलाही !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अस्लाफ़े उम्मत आईनए कुरआनो सुन्नत थे

हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام कुरआनो सुन्नत पर किस क़दर अमल पैरा थे कि एक चीज़ की खुद को तलब होने और तलाशे बिस्वार (या'नी काफ़ी ढूँडने) के बा'द मिलने के बा वुजूद दूसरे को ईषार कर देने की आ'ला मिषाल क़ाइम फ़रमाते । अपने अन्दर ईषार का जज़्बा बेदार करने के लिये शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी का 44 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाला "मदीने की मछली" का मुतालअ कीजिये । तरगीब के लिये इसी रिसाले से एक रिवायत पेशे ख़िदमत है : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا बीमार थे, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को भुनी हुई मछली खाने की ख़्वाहिश हुई । आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के ख़ादिम हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : तलाशे बिस्वार (या'नी बहुत ज़ियादा तलाश करने) के बा'द मुझे

डेढ़ दिरहम की एक मछली मदीनए मुनव्वरा رَاَدَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا में मिल गई, मैं ने उसे भून कर खिदमते सरापा सखावत में पेश कर दी, इतने में एक साइल आ गया, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फरमाया : नाफ़ेअ ! यह मछली साइल को दे दो । मैं ने अर्ज़ की : आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को इस की बड़ी ख़्वाहिश थी इस लिये कोशिश कर के यह मदीने की मछली मैं ने ख़रीदी है, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इसे तनावुल फ़रमा लीजिये, मैं इस मछली की क़ीमत साइल को दे देता हूं । फ़रमाया : नहीं, तुम यह मछली ही उस को दे दो । चुनान्वे मैं ने वोह मदीने की मछली साइल को दे दी और फिर पीछे जा कर उस से ख़रीद ली और आ कर हाज़िर कर दी, इरशाद फ़रमाया : यह मछली उसी साइल को दे दो और जो क़ीमत उस को अदा की है वोह भी उसी के पास रहने दो । मैं ने सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुना है : जो शख़्म किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (किसी और को) तरजीह दे, तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे बख़्श देता है ।

(أَحْيَاءُ الْعُلُومِ، كِتَابُ كَسْرِ الشَّهَوَاتِ بِإِيَانِ طَرِيقِ الرِّيَاضَةِ فِي كَسْرِ شَهَوَاتِ الْبَطْنِ، ج ٣، ص ١٥١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

शबिआ अदविआ का ईषार

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 649 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "हिकायतें और नसीहतें" सफ़हा 119 पर मुबल्लिगे इस्लाम हज़रते

सय्यिदुना शैख शोऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ف़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदतुना राबिआ अदविyyा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا ने नंगे पाउं पैदल बैतुल्लाह शरीफ़ का हज़ किया । **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ उन को जो भी खाना अता फ़रमाता उस को इषार कर देती । का'बए मुशर्रफ़ा पहुंचते ही बेहोश हो कर गिर पड़ीं । होश में आने के बा'द अपने रुख़सार को बैतुल्लाह शरीफ़ पर रख कर अर्ज़ की : “येह तेरे बन्दों की पनाह गाह है और तू इन से महब्बत करता है अब तो आंखों में आंसू ख़त्म हो गए हैं ।”

(الروض الفائق، المجلس الثامن في ذكر حجاج بيت الله الحرام، ص ٦٠)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

इषार करने वाली मां

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 188 सफ़हात पर मुशतमिल किताब “तरबियते अवलाद सफ़हा 61 पर है : उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मेरे पास एक मिस्कीन औरत आई जिस के साथ उस की दो बेटियां भी थीं । मैं ने उसे तीन खजूरें दीं । उस ने हर एक को एक खजूर दी और एक खजूर खुद खाने के लिये अपने मुंह की तरफ़ उठाई तो उस की दोनों बेटियां उस की भी ख़्वाहिश करने लगीं तो उस ने वोह खजूर भी दो टुकड़े कर के अपनी दोनों बेटियों के दरमियान तक्सीम कर दी ।

मुझे इस वाकिए से बहुत तअज्जुब हुवा, मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में उस औरत के ईषार का बयान किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया :
“अब्दुल्लाह तअला ने इस (ईषार) की वजह से उस औरत के लिये जन्त को वाजिब कर दिया ।”

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ، كِتَابُ الْبِرِّ وَالصَّلَاةِ، بَابُ فَضْلِ الْإِحْسَانِ إِلَى الْبَنَاتِ، ص ١٠١٣، الْحَدِيثُ: ٢٦٣٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अपना खाना कुत्ते पर ईषार कर दिया !

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू क़ासिम अब्दुल करीम बिन हवाज़ुन कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْبَر अपनी किसी ज़मीन को देखने निकले और अषनाए राह (या'नी रास्ते में) किसी बाग़ में उतरे, वहां एक गुलाम को काम करते देखा, जब उस के पास खाना आया तो कहीं से एक कुत्ता भी आ पहुंचा, गुलाम ने एक एक कर के 3 रोटियां उस के आगे डालीं, वोह खा गया । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْبَر ने गुलाम से पूछा : आप को दिन में कितना खाना मिलता है ? अर्ज़ की : वोही जो आप ने देखा : पूछा : तो आप ने कुत्ते पर क्यूं ईषार कर दिया ? अर्ज़ की : इस अलाके में कुत्ते नहीं होते, येह कहीं दूर से आ निकला है, ग़रीब भूका था, मुझे येह गवारा न हुवा कि मैं सैर हो कर खाऊं और येह बेचारा बे ज़बान जानवर भूका रहे । फ़रमाया : आप आज क्या खाएंगे ? अर्ज़ की : फ़ाका करूंगा ।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْبَرِ उस गुलाम के ईषार से बे हद मुतअष्षिर हुए, चुनान्चे बाग़ के मालिक से वोह बाग़, गुलाम और बक़िय्या सामान वग़ैरा ख़रीद लिया, गुलाम को आज़ाद कर के वोह बाग़ वग़ैरा सब कुछ उसी को बख़्श दिया ।

(الرِّسَالَةُ الْقَشِيرِيَّةُ، باب الجود والسخاء، ص ۲۸۳، مُلَخَّصًا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ईषार का षवाब मुफ़्त लूटने के नुश्ख़े

काश ! हमें भी ईषार का जज़्बा नसीब हो जाए, अगर खर्च करने को जी नहीं चाहता तो बिग़ैर खर्च के भी ईषार के कई मवाक़ेअ मिल सकते हैं । मषलन कहीं दा'वत पर जाना हुवा, सब के लिये खाना लगाया गया तो हम उम्दा बोटियां वग़ैरा इस निय्यत से न उठाएं कि हमारी दूसरी इस्लामी बहनें उन को खा लें । गर्मी में कमरे के अन्दर कई इस्लामी बहनें सोना चाहती हैं, खुद पंखे के नीचे क़ब्ज़ा जमाने के बजाए दूसरी इस्लामी बहनों को मौक़अ दे कर ईषार का षवाब कमा सकती हैं । इसी तरह बस या रेल गाड़ी के अन्दर भीड़ की सूरत में दूसरी इस्लामी बहन को ब इस्सार अपनी निशस्त पर बिठा कर और खुद खड़े रह कर, कार में सफ़र का मौक़अ मुयस्सर होने के बा वुजूद दूसरी इस्लामी बहन के लिये कुरबानी दे कर उसे कार में बिठा कर और खुद पैदल या बस वग़ैरा में सफ़र कर के, सुन्नतों भरे इजतिमाअ वग़ैरा में आराम देह जगह मिल जाए तो दूसरी इस्लामी बहन के लिये जगह कुशादा कर के या उसे वोह जगह पेश कर के, खाना

कम हो और खाने वाले ज़ियादा हों तो खुद कम खा कर या बिल्कुल न खा कर नीज़ इसी तरह के बे शुमार मवाकेअ पर अपने नफ़्स को थोड़ी सी तक्लीफ़ दे कर मुफ़्त में ईषार का षवाब कमाया जा सकता है ।

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ !

खिलाने पिलाने का अज़ीमुश्शान षवाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सथ्यिदा खातूने जन्नत फ़ाकों के बा वुजूद अपना खाना ईषार फ़रमा देती थीं ! मगर अफ़सोस ! अहले बैते नुबुव्वत की महब्बत का दम भरने के बा वुजूद हम अपनी ज़रूरत का कुजा, बचा खुचा खाना भी किसी को पेश करने के बजाए आयन्दा के लिये फ़्रीज में रख छोड़ते हैं । यकीन मानिये ! भूकों को खाना खिलाना और प्यासों को पानी पिलाना बड़े षवाब का काम है । इस जिम्न में दो फ़रामैने मुस्तफ़ा (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मुलाहज़ा हों :

﴿1﴾.... जो मुसलमान किसी मुसलमान को भूक में खाना खिलाए, तो **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ उसे बरोज़े क़ियामत जन्नत के फल खिलाएगा और जो किसी मुसलमान को प्यास में पानी पिलाए, तो **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ उसे बरोज़े क़ियामत मोहर वाली पाक व साफ़ शराब पिलाएगा और जो मुसलमान किसी बे लिबास मुसलमान को कपड़ा पहनाए, तो **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ उसे जन्नत के सब्ज़ कपड़े पहनाएगा ।

(جَامِعُ التِّرْمِذِيِّ، كِتَابُ صِفَةِ الْقِيَامَةِ وَالرَّقَائِقِ وَالْوَرَعِ، ص ٥٨١، الْحَدِيثُ: ٢٢٣٩)

﴿2﴾.... जो किसी मुसलमान को भूक में खाना खिला कर सैर कर दे तो **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे जन्नत में उस दरवाजे से दाखिल फरमाएगा जिस में से उस जैसे लोग ही दाखिल होंगे ।

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ، باب الميم، معاذ بن جبل الانصاري..... الخ، ج ٨، ص ٢١٨، الحديث: ١٦٥٨٩،)

खिलाने पिलाने की तौफीक दे दे

पए शाहे कर्बो बला या इलाही !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

रहमते इलाही को वाजिब करने वाला अमल

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे मुअज़्ज़म है : **مِنْ مُوجِبَاتِ الرَّحْمَةِ إِطْعَامُ الْمُسْلِمِ الْمِسْكِينِ** : या'नी रहमते इलाही को वाजिब कर देने वाली चीजों में से मिस्कीन मुसलमान को खाना खिलाना है ।

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ، كتاب الصدقات، الترغيب في اطعام الطعام وسقى الماء... الخ، ص ٣٢٠، الحديث: ٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जरा गौर कीजिये !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाकिआत के तनाजुर में अगर हम अपनी हालत पर गौर करें तो अगर्चे अश्याए ज़रूरत को भी खैरात कर देना और बारे कर्ज तले दब कर हाजत मन्दों

की हाजत रवाई करना हम पर लाज़िम नहीं लेकिन क्या हम ज़रूरत से जाइद अश्या को सदका व ख़ैरात करने का ज़ेहन रखते हैं या मज़ीद के ही चक्कर में रहते हैं, बच जाने वाला खाना फ़्रीज़ करते हैं या ख़ैरात ? मुस्तहिक़ को माल से नवाज़ते हैं या झिड़कियों से ?

सहाबा व अहले बैते अतहार बिल खुसूस हज़रते सय्यदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के ईषार व सखावत की तरफ़ नज़र कीजिये और अपनी हालते ज़ार को भी देखिये । खुद ही वाज़ेह हो जाएगा कि अस्लाफ़े उम्मत से महबूबत के हमारे दा'वे में कितनी जान है ? सिर्फ़ ख़ैरात न करने की ही बात नहीं, **अफ़सोस बालाए अफ़सोस** तो येह है कि हमारे मुआशरे में अफ़राद की एक ऐसी ता'दाद मौजूद है जो दूसरों के सामने दस्ते सुवाल दराज़ करने में थकते हैं न शरमाते हैं । बे मुरुव्वती इस हद तक बढ़ी हुई है कि मा'मूली सी चीज़ भी मांग मांग कर इस्ति'माल करते और सुवाल कर कर के गुज़ारा करते हैं ।

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीक़ों पर मुश्तमिल शरीअत व तरीक़त का जामेअ मजमूआ (इस्लामी बहनों के लिये) ब नाम

“63 मदनी इन्आमात” ब सूरते सुवालात अता फ़रमाया है,

चुनान्चे मदनी इन्आम नम्बर 22 में है : क्या आज आप ने घर के अफ़राद के इलावा (कपड़े, फ़ोन, ज़ेवरात वगैरा) चीजें दूसरों से मांग कर तो इस्ति'माल नहीं कीं ?" यकीनन दूसरों से सुवाल करने से बचने वाले लोग हर एक की निगाह में काबिले क़द्र ठहरते हैं जैसा कि शैख़ मुसलिहूदीन सा'दी शीराज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي ने एक हिक़ायत नक़ल की है कि अरब के मशहूर और बहुत बड़े सख़ी हातिम ताई से किसी ने पूछा : क्या तूने अपने से ज़ियादा किसी को हिम्मत व हौसले वाला देखा है ? जवाब दिया : हां ! एक दिन मैं ने 40 ऊंट ज़ब्ह कर के अरब के मालदारों को मदऊ किया । इस दौरान मेरा गुज़र एक जंगल की तरफ़ से हुवा तो देखा कि एक ग़रीब व मुफ़्लिस शख़्स जो मुझे नहीं जानता था लकड़ियां जम्अ करने में मशगूल था, मैं ने उसे मुखातब करते हुए कहा : ऐ भले इन्सान ! हातिम ताई के घर शहर भर के लोग जम्अ हैं और दा'वत खा रहे हैं, तुम अपनी रोटी के लिये यहां मेहनत व मजदूरी कर रहे हो ? उस ग़रीब लेकिन क़ानेअ व मुअज़्ज़ज़ शख़्स ने जवाब दिया : जो अपनी मेहनत से रोटी कमाता है उसे हातिम ताई जैसे उमरा की मिन्नत नहीं करनी पड़ती । हातिम ताई ने कहा : "हक़ येह है कि मैं ने इसे अपने से ज़ियादा बा हिम्मत व जवां मर्द देखा ।"

(حكاياتِ سَعْدِي (مُتَرَجِّم)، ص ۱۵۶)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ!

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल हमारे सामने खुली किताब की तरह है कि इस मदनी माहोल के पैग़ाम को लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी क़बूल किया, फ़ेशन परस्ती से सरशार मुआशरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों की दल दल से निकल कर उम्महातुल मोअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ) की दीवानियां बन गईं और अपनी साबिका गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर न सिर्फ़ खुद नेकियां करने वाली बल्कि दूसरों को भी नेकियों की तरगीब देने में मशगूल हो गईं। तरगीब के लिये एक ऐसी ही मदनी बहार मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे

बेटी की इस्लाह क़ राज़

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 308 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "इस्लामी बहनों की नमाज़" सफ़हा 281 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ एक मदनी बहार तहरीरि फ़रमाते हैं : पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब (खुलासा) है कि मेरी बेटी फ़िल्मों-डिरामों और बे पर्दगियों वग़ैरा गुनाहों की आलूदगियों

में अपनी जिन्दगी के कीमती लम्हों को बरबाद कर रही थी, मैं उस की हरकतों से बेहद परेशान थी, बारहा समझाती मगर वोह एक कान से सुन कर दूसरे से निकाल देती। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत करती थी और इजतिमाअ में मांगी जाने वाली दुआओं की क़बूलिय्यत के वाकिआत भी सुना करती थी। चुनान्चे एक मरतबा मैं ने दा'वते इस्लामी के तहत होने वाले ग्यारहवीं शरीफ़ के इजतिमाए ज़िक्रो ना'त में अपनी बेटी की इस्लाह के लिये गिड़-गिड़ा कर दुआ मांगी। मेरी ख़्वाहिश थी कि मेरी बेटी भी दा'वते इस्लामी की मुबल्लिगा बने। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मेरी दुआ क़बूल हुई और मेरी बेटी किसी न किसी तरह इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शरीक होने पर रिज़ामन्द हो गई। उस ने जब शिर्कत की तो इतनी मुतअष्षिर हुई कि बस दा'वते इस्लामी ही की हो कर रह गई। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ तरक्की की मंजिलें तै करते करते (ता दमे तहरीर) मेरी बेटी हल्का जिम्मेदार की हैषिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमतों में मशगूल है।

गिर पड़ के यहां पहुंचा मर मर के इसे पाया

छूटे न इलाही अब संगे दरे जानाना

(सामाने बख़्शिश अज़ मुफ़ितये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों

भरे इजतिमाआत में रहमतें क्यूं नाज़िल न होंगी कि इन आशिकाते रसूल और आका की दीवानियों में न जाने कितनी **अल्लाह** की मुकर्रब बन्दियां होती होंगी । मेरे आका आ'ला हज़रत फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 सफ़हा 184 पर फ़रमाते हैं : जमाअत में बरकत है और दुआए मज्माए मुस्लिमीन अक़ब ब क़बूल (या'नी मुसलमानों के मजमअ में दुआ मांगना क़बूलियत के करीब तर है) । उ-लमा फ़रमाते हैं : **जहां चालीस मुसलमान सालेह (या'नी नेक) जम्अ होते हैं उन में से एक वलियुल्लाह ज़रूर होता है ।** (التَّيْسِيرُ شرح جامع الصَّغِيرِ حرف الهمزة، ج ١، ص ١١٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

पानी पीने के 13 मद्दनी फूल

दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :-

❁ ऊंट की तरह एक ही सांस में मत पियो, बल्कि दो या तीन मरतबा (सांस ले कर) पियो और पीने से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰهِ पढ़ो और फ़राग़त पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहा करो (तिरिज़ी, ज ३, व ३५२, الحديث: 1894)

❁ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बरतन में सांस लेने या इस में फूंकने से मन्अ फ़रमाया है । (ابوداؤد، ج ३، ص ३५२، الحديث: 3428)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ इस हदीषे पाक के तहत फ़रमाते हैं : बरतन में सांस लेना जानवरों का काम है नीज़ सांस कभी ज़हरीली होती है इस लिये बरतन से अलग मुंह कर के सांस लो (या'नी सांस लेते वक़्त गिलास मुंह से हटा लो) गर्म दूध या चाय को फूंकों से

ठंडा न करो बल्कि कुछ ठहरो, कदरे ठंडी हो जाए फिर पियो ।
 (मिरआत जि. 6 स. 77) अलबत्ता दुरूदे पाक वगैरा पढ़ कर ब निय्यते
 शिफ़ा पानी पर दम करने में हरज नहीं ❀ पीने से पहले بِسْمِ اللّٰهِ पढ़
 लीजिये ❀ चूस कर छोटे छोटे घूंट पियें, बड़े बड़े घूंट पीने से जिगर
 की बीमारी पैदा होती है ❀ पानी तीन सांस में पियें ❀ बैठ कर और
 सीधे हाथ से पानी नोश कीजिये ❀ लोटे वगैरा से वुजू किया हो तो उस
 का बचा हुआ पानी पीना **70 मरज़** से शिफ़ा है कि येह आबे ज़म ज़म
 शरीफ़ की मुशाबहत रखता है, इन दो (या'नी वुजू का बचा हुआ पानी
 और ज़म ज़म शरीफ़) के इलावा कोई सा भी पानी खड़े खड़े पीना
 मकरूह है । (माखूज़ अज़ फ़त्तावा रज़विय्या, जि. 4 स. 575, जि. 21 स. 669)
 येह दोनों पानी किब्ला रू हो कर खड़े खड़े पियें ❀ पीने से
 पहले देख लीजिये कि पीने की शै में कोई नुक़सान देह चीज़
 वगैरा तो नहीं है (593) ❀ (إتحاف السادة للريدي، ج 5، ص 593) पी चुकने के बा'द
 الْحَمْدُ لِلّٰهِ कहिये ❀ हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम
 मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي मुहम्मद
 हैं : بِسْمِ اللّٰهِ पढ़ कर पीना शुरू करे पहली सांस के आख़िर
 में الْحَمْدُ لِلّٰهِ दूसरे के बा'द الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ और तीसरे सांस के
 बा'द الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़े । (أحياء العلوم، ج 2، ص 8)
 ❀ गिलास में बचे हुए मुसलमान के साफ़ सुथरे झूटे पानी को
 काबिले इस्ति'माल होने के बा वुजूद ख़्वा मख़्वाह फैंकना न
 चाहिये ❀ मन्कूल है سُورَةُ الْمُؤْمِنِينَ شِفَاءٌ या'नी मुसलमान के झूटे में
 शिफ़ा है । (كشف الخفاء، ج 1، ص 382) ❀ पी लेने के चन्द लम्हों के
 बा'द ख़ाली गिलास को देखेंगे तो इस की दीवारों से बह कर चन्द
 कतरे पैंदे में जम्अ हो चुके होंगे उन्हें भी पी लीजिये ।

बयान नम्बर 6

खातूने जन्नत
का
निकाह व जहेज

215

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खातूने जन्नत का निकाह व जहेज

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूअ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" सफ़हा 1 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ज़ुर्वी बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़ल फ़रमाते हैं : हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की, कि मैं (सारे विर्द, वज़ीफ़े, दुआएं छोड़ दूंगा और) अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा। तो सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : "येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।"

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، ابواب صفة القيامة والرقائق والورع، باب ما جاء في صفة أواني الحوض، ص ٥٨٣، الحديث: ٢٣٥٤، ملتقطاً)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

बरकते दुश्दो शलाम

शारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي “मिरआतुल मनाजीह” जिल्द 2, सफ़हा 103 पर इस हदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : या’नी (हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का’ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की, कि मैं) सारे वज़ीफ़े दुआएं छोड़ दूंगा सब की बजाए दुरूद ही पढूंगा क्यूंकि अपने लिये दुआएं मांगने से बेहतर येह है कि हर वक़्त आप (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) को दुआएं दिया करूं (जिस के जवाब में सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कैसी प्यारी बिशारत से नवाज़ा) या’नी अगर तुम ने ऐसा कर लिया तो तुम्हारी दीन व दुन्या दोनों संभल जाएंगी, दुन्या में रंजो ग़म दफ़अ होंगे, आख़िरत में गुनाहों की मुआफ़ी होगी ।

इसी बिना पर उ-लमा फ़रमाते हैं कि जो तमाम दुआएं वज़ीफ़े छोड़ कर हमेशा कषरत से दुरूद शरीफ़ पढा करे तो उसे बिगैर मांगे सब कुछ मिलेगा और दीनो दुन्या की मुशिकलें खुद ब खुद हल होंगी । पता लगा कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद पढना दर हकीक़त रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से अपने लिये भीक मांगना है । हमारे भिकारी हमारे बच्चों को दुआएं दे कर हम से मांगते हैं हम रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के भिकारी हैं, उस के हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को दुआएं दे कर उस से भीक मांगें, हमारे दुरूद से हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का भला नहीं होता बल्कि हमारा अपना भला होता है, इस तक़रीर से येह ए’तिराज़ भी उठ गया कि जब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर हर

वक़त रहमतों की बारिश हो रही है तो इन के लिये दुआए रहमत करने से फ़ाइदा क्या ? शैख़ अब्दुल हक़ (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) फ़रमाते हैं कि मुझे अब्दुल वहहाब मुत्तकी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي) जब भी मदीना (رَأَاهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا) से वदाअ करते तो फ़रमाते कि सफ़रे हज़ में फ़राइज़ के बा'द दुरूद से बढ कर कोई दुआ नहीं, अपने सारे अवक़ात दुरूद में घेरो और अपने को दुरूद के रंग में रंग लो ।

(مرآة المناجیح، کتاب الصلاة، باب الصلوة علی النبی ﷺ وفضلها، الفصل الثانی، ج ۲، ص ۱۰۳، ملقطاً)

विदेँ लब हर दम दुरूदे पाक हो

या शहे अरबो अजम ! चश्मे करम

(229 स. دامت بركاتهم العالیه س. 229) (वसाइले बख़िश अज़ अमीरे अहले सुन्नत

صَلُّوا عَلَي الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

सख्यिदा फ़तिमा कल नलकलह

हज़रते सख्यिदुना शोएब हरीफ़ीश (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِير) फ़रमाते हैं : जब आस्माने रिसालत (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) पर हज़रते सख्यिदतुना फ़तिमा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) का आफ़ताबे हुस्नो जमाल चमका और उफ़ुके अज़मतो जलाल पर आप (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) का बदरे कमाल तुलूअ हुवा, तो नेक ख़स्लत ज़ेहनों में आप (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) का ख़याल आया, मुहाजिरीन व अन्सार के मुअज़्ज़ीन ने पैग़ामे निकाह दिया । लेकिन रिज़ाए इलाही व क़ज़ाए खुदावन्दी के साथ मख़सूस ज़ाते अक़दस (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ने जवाबन इरशाद फ़रमाया :

“मैं खुदाई फ़ैसले का मुन्तज़िर हूँ ।”

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने भी पैग़ामे निकाह अर्ज़ किया तो उन से भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येही इरशाद फ़रमाया : “येह मुआमला **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिपुर्द है ।”

अबू बक्र व उमर की सय्यिदुना अली के तश्रीब

एक दिन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ, हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआज़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मस्जिदे नबवी शरीफ़ علیٰ صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में तशरीफ़ फ़रमा थे कि हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का ज़िक्रे ख़ैर चल निकला तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “तमाम मुअज़्ज़ीन ने पैग़ामे निकाह अर्ज़ किया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन्कार करते हुए येही इरशाद फ़रमाया : येह मुआमला **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिपुर्द है ।” लेकिन हज़रते अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने पैग़ामे निकाह अर्ज़ नहीं किया और न ही इस का तज़क़िरा किया । इस की वजह मेरे ख़याल में उन की गुर्बत हो सकती है । हमें हज़रते अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم के पास चल कर उन से शहज़ादिये रसूल (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) का मुआमला ज़िक्र करना चाहिये और अगर वोह तंगदस्ती को वजह बनाएं तो उन की मदद करनी चाहिये । फिर येह सब हज़रते वाला इज़्ज़त

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ की तलाश में चल दिये, पता चला कि वोह इस वक़्त किसी अन्सारी के बाग़ में उजरत पर ऊंटों के ज़रीए पानी निकालने में मसरूफ़ हैं। वहां जब मुलाकात हुई तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली ! (बात येह है कि) कुरैश के मुअज़्ज़ज़ीन ने बिन्ते रसूल के लिये पैग़ामे निकाह दिया लेकिन हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह कह कर लौटा दिया कि “येह मुआमला **اَبْلَاٰه** عَزَّ وَجَلَّ के सिपुर्द है।” और (हम देखते हैं कि) आप हर अच्छी आदत से कामिल तौर पर मुत्तसिफ़ हैं और हुज़ूर सय्यिदे अलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कराबत दार भी हैं, मुझे उम्मीद है कि **اَبْلَاٰه** व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन का मुआमला आप के लिये रोका हुवा है। रावी फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ की आंखें अशकबार हो गईं और फ़रमाया : “ऐ अबू बक्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ! गुर्बत ने मुझे इस से रोक रखा है।” हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : ऐ अली ! ऐसा न कहो ! **اَبْلَاٰه** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नज़दीक़ दुन्या और जो कुछ इस में है, उड़ते गुबार की मानिन्द है।

(الْكَرُوْهُنَّ الْفُلَائِقُ، المجلس الثامن والاربعون في زواج على ابن ابى طالب بفاطمة... الخ، ص ۲۷۵، ملخصاً)

अस्लाफे किराम का मुबारक शिआर

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपने मुसलमान बहन भाई की ज़रूरत का एहसास करना और इस ज़रूरत की तक्मील के लिये हत्तल इमकान दामे दरमे क़दमे सुख़ने (या'नी रूपिये पैसे जान और ज़बान हर तरह से) मदद करना और मदद की निय्यत करना हमारे अस्लाफे किराम का मुबारक शिआर है। और इन मुबारक हस्तियों का वतीरा रहा है कि दीनी व नसबी तौर पर ख़्वाह कितना ही फ़ज़लो शरफ़ अता हो जाए अपना बोझ खुद ही उठाया जाए और मेहनते शाक़्का की तक्लीफ़ गवारा कर के खुद अपनी दुन्यावी ज़रूरिय्यात पूरी करने का सामान किया जाए। बारगाहे रिसालत के तरबियत याफ़्तगान के कुलूब व अज़हान में येह बात रासिख़ हो चुकी थी कि दीने इस्लाम दुन्या और अस्बाबे दुन्या को अहम्मिय्यत नहीं देता बल्कि रिज़ाए इलाही और क़ज़ाए खुदावन्दी के आगे सरनिगूं होना (या'नी सर झुकाना) सिखाता है और बताता है कि दुन्यावी जाहो हश्मत (या'नी इज़्ज़त व शौकत) और सीमो ज़र (या'नी मालो दौलत) की हैषिय्यत ढलती छाऊं और उड़ते गुबार की सी है। निगाहे इस्लाम में इज़्ज़तो क़बूलिय्यत का मदार तक्वा व इख़्लास पर है। इसी बिना पर इन सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم का हौसला बढ़ाया और बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अपना मुद्दा पेश करने का मश्वरा दिया।

सय्यिदुना अली की बारगाहे रिशालत में हाज़िरी

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा क़रّم اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيمِ अपने काम से वापस आ कर हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर की तरफ़ चल दिये, दरवाज़ा खट-खटाया, हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने पूछा : कौन ? तो सरकारे अली वकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “उठो और दरवाज़ा खोलो, येह वोह हैं जिन से **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ महब्बत करते हैं और येह भी उन से महब्बत करते हैं ।” हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अर्ज की : “मेरे मां बाप आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कुरबान ! येह कौन हैं ?” तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “येह मेरा भाई है और मुझे सारी मख़्लूक से बढ़ कर प्यारा है ।” हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मैं इस तेज़ी से उठी कि चादर में उलझने लगी थी । मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि हज़रते अली رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं, आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हाज़िरे खिदमते अक़दस हो कर सलाम अर्ज किया और सामने बैठ गए और ज़मीन कुरैदने लगे गोया कुछ कहना चाहते हैं लेकिन हया का पर्दा हाइल है ।”

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना

! (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) 'ऐ अली ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

कोई काम है तो बताओ, हमारे हां तुम्हारी हर हाजत पूरी

होगी ।" हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ

ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरे मां बाप

आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कुरबान ! आप जानते हैं कि आप ने

मुझे अपने चचा और चची फ़ातिमा बिनते असद से लिया, मैं उस

वक्त एक ना समझ बच्चा था । आप ने मेरी रहनुमाई फ़रमाई,

मुझे अदब सिखाया, मुझे शाइस्ता (شائستا-اسماء) या'नी बा अख़्लाक़)

बनाया ।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझ पर मां बाप से बढ़ कर

शफ़क़त व एहसान फ़रमाया, **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ ने आप

के ज़रीए मुझे हिदायत बख़शी । या रसूलल्लाह

! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आप ही दुनिया व आख़िरत में मेरा वसीला

और ज़ख़ीरा हैं, और मैं यह पसन्द करता हूँ कि **اَللّٰهُمَّ**

عَزَّ وَجَلَّ आप के ज़रीए मेरी पुश्त पनाही इस तरह फ़रमाए कि मेरा

भी एक घर और बीवी हो, मैं जिस में चैन हासिल करूँ । लिहाज़ा

मैं आप की बारगाह में आप की शहज़ादी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا

के लिये निकाह का पैग़ाम ले कर हाज़िर हुवा हूँ ।

(الرّوْضُ الْفَاتِحُ، المجلس الثامن والاربعون، فى زواج على ابن ابى طالب بفاطمة... الخ، ص ۲۵، ملخصاً)

शाने मुस्तफ़ा व अज़मते मुर्तज़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायत से शाने मुस्तफ़ा, इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा, शफ़क़त व एहसाने मुस्तफ़ा और अज़मते अलिय्युल मुर्तज़ा के मुअत्तर व मुअम्बर मदनी फूल चुनने को मिलते हैं। **اَبُو** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को दरो दीवार के पीछे का भी इल्म था कि वहां कौन है ? अमीरुल मोअमिनीन, मौला अली मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने हाज़िर हो कर अपने करीम, मोहसिन व मुर्ब्बी⁽¹⁾ आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के एहसानात और शफ़क़तों का तज़क़िरा किया। नबवी तरबियत से हमें येह मदनी फूल चुनने को मिला कि सिलए रेहूमी, हुस्ने सुलूक और अच्छी ता'लीमो तरबियत का एहतियाम महबूबे रब्बुल इज़ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मुबारक सुन्नत है। और एहसान लेने वाला अपने मोहसिन के एहसानात को याद रखे और उस का वफ़ादार व शुक्र गुज़ार रहे। मज़ीद बरआं⁽²⁾ महबूबे रहूमतुल्लिल अलमीन, अमीरुल मोअमिनीन, मौला अली मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ की शाने अज़मत निशान कि महबूबे खुदा, हबीबे क़िब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन को अपना महबूब क़रार दिया। इस्लाम व सहाबियत का शरफ़ ही बहुत बड़ी ने'मत है, इस के साथ अगर बारगाहे रिसालत में मक्बूलियत व महबूबियत का मुद्दए जांफ़िज़ा⁽³⁾ मिल जाए तो उस मुक़द्दर के सिकन्दर के क्या कहने !!!

(1) ... يَا 'نِي تَرَبِيَّتْ فَرْمَانِے وَالے (2) ... يَا 'نِي اِس سے बढ कर

(3) ... يَا 'نِي जान को खुश करने वाली खुश ख़बरी

मुर्तजा शरे हक, أَشْجَعُ الْأَشْجَعِيْنَ साकिये शीरो शरबत पे लाखों सलाम
 अस्ले नस्ले सफ़ा, बजहे वस्ले खुदा बाबे फ़ज़ले विलायत पे लाखों सलाम
 शरे शमशीरे ज़न, शाहे ख़ैबर शिकन पर्वते दस्ते कुदरत पे लाखों सलाम

(हदाइके बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत रबّ العوत सुन्नत)

शर्हे कलामे रज़ा : हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा

كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के शेर और बहादुरों में सब से बड़े बहादुर हैं, दूध और शरबत से मेहमान नवाज़ी करने वाले हैदरे करार पर लाखों सलाम हों। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़ालिस पाक सादात की बुन्याद हैं, वासिले बिल्लाह (या'नी **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ का मुकर्रब) होने का सबब और फ़ज़ाइले विलायत मिलने का दरवाज़ा हैं, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पर लाखों सलाम नाज़िल हों। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ तलवार चलाने वाले बहादुरी में शेर की मिष्ल, ख़ैबर का दरवाज़ा तोड़ने वाले और **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के यदे कुदरत का पर्वत हैं, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पर लाखों सलाम का नुज़ूल हो। (सुखने रज़ा, स. 373 ता 376, मुलख़ब्रसन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आश्मान पर निक्कह और फिरिशतों की बाशत

हज़रते सय्यिदुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मैं ने देखा कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का चेहरए अन्वर खुशी व मसरत से खिल उठा। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते

अलिय्युल मुर्तजा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** को देख कर मुस्कुराए और इस्तिफ़सार (या'नी दरयाफ़्त) फ़रमाया : “ऐ अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है जिस से तुम फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का हक्के महर अदा कर सको ?” हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आप पर मेरी हालत पोशीदा नहीं, मेरे पास मेरी ज़िरह⁽¹⁾ तलवार और पानी भरने के लिये एक ऊंट के सिवा कुछ नहीं । तो दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अपनी तलवार से तो तुम **اَللّٰهُ** की राह में जिहाद करोगे लिहाजा इस के बिगैर गुज़ारा नहीं और ऊंट से अपने घर वालों के लिये पानी भर कर लाओगे और सफ़र में भी इस पर अपना सामान लादोगे, लेकिन ज़िरह के बदले में, मैं अपनी बेटि का निकाह तुम से करता हूँ और मैं तुम से खुश हूँ, और ऐ अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! तुम्हें मुबारक हो कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर फ़ातिमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) से तुम्हारा निकाह करने से पहले आस्मान में तुम दोनों का निकाह कर दिया है और तुम्हारे आने से पहले आस्मानी फ़िरिश्ता मेरे पास हाज़िर हुवा जिस को मैं ने पहले कभी न देखा था । उस के कई चेहरे और पर थे, उस ने आ कर कहा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप **اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ!** को मुबारक मिलन और पाकीजा नस्ल की बिशारत हो ।”

(1)... फ़ैलाद का जालीदार कुर्ता जो लड़ाई में पहनते थे । (फ़ीरोजुल्लुगात, स. 789)

फिर हज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने आ कर सलाम अर्ज किया और मुझे बताया कि “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **اَللّٰهُ** نے दुनिया पर नज़रे रहमत फ़रमाई और आप **اَللّٰهُ** के लिये एक हबीब, भाई और दोस्त मुन्तख़ब फ़रमा कर इस के साथ आप की बेटी हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का निकाह फ़रमा दिया है। और **اَللّٰهُ** ने सारी जन्नतों और हूरों को आरास्ता व पैरास्ता होने, शजरे तूबा को जेवरात से मुज़य्यन होने और मलाइका को चौथे आस्मान में बैतुल मा'मूर के पास जम्अ होने का हुकम दिया है और रिज़वाने जन्नत **اَللّٰهُ** ने **اَللّٰهُ** के हुकम से बैतुल मा'मूर के दरवाज़े पर मिम्बरे करामत रख दिया है। यह वोही मिम्बर है जब **اَللّٰهُ** ने हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को तमाम अश्या के नाम सिखाए थे तो उन्होंने इस पर ख़ुत्बा दिया था।”

फिर **اَللّٰهُ** के हुकम से इस मिम्बर पर राहील नामी फ़िरिश्ते ने **اَلलّٰهُ** के शायाने शान उस की हम्दो षना की तो आस्मान फ़रहत व सुरूर से झूम उठा। हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने मज़ीद यह भी बताया कि **اَللّٰهُ** ने मुझे व्हय फ़रमाई कि “मैं ने अपने महबूब बन्दे अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) का निकाह अपनी महबूब बन्दी और अपने रसूल की बेटी फ़ातिमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) से कर दिया है, तुम इन का अक्दे निकाह कर दो।” पस मैं ने अक्दे निकाह कर दिया और इस पर फ़िरिश्तों को गवाह बनाया और

अब्बाह عَزَّ وَجَلَّ ने शजरे तूबा को हुक्म दिया कि वोह अपने जेवरात बिखरे। जब उस ने जेवरात की बोछाड़ की तो मलाइका और हूरों ने सब जेवरात चुन लिये और वोह क्रियामत तक येह जेवरात एक दूसरे को तोहफे में देते रहेंगे और **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि बारगाहे रिसालत में येह पैगाम पहुंचा दूं कि जमीन पर हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की शादी हज़रते अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ से कर दीजिये और हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को दो ऐसे शहज़ादों की बिशारत भी अता कर दीजिये जो इन्तिहाई सुथरे, उम्दा ख़साइल (या'नी आदात) व फ़ज़ाइल के हामिल, पाकीज़ा फ़ितरत और दोनों जहां में भलाई वाले होंगे ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आस्मान पर निकाह की तक़रीब और बैतुल मा'मूर⁽¹⁾ में फ़िरिश्तों की बारात फ़ातिमा बतूल और महबूबए रसूल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) का ही खास्सा (या'नी खास वस्फ) है ।

फिर मक्की मदनी सुल्तान, रहमते आलमिय्यान, सरवरे दो जहान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) मैं तुम्हारे मुतअल्लिक हुक्मे इलाही नाफ़िज़ कर रहा हूं, तुम मस्जिद में पहुंच जाओ, मैं भी आ रहा हूं। मैं लोगों की मौजूदगी में तुम्हारा निकाह करूंगा तुम्हारे वोह फ़ज़ाइल बयान करूंगा जिन से तुम्हारी आंखें ठंडी हों ।

(1) बैतुल मा'मूर फ़िरिश्तों का क़िब्ला है । का'बए मुअज़्ज़मा के मुक़ाबिल सातवें आस्मान के ऊपर है ।” (مراة المناجیح، کتاب الفضائل، معراج کابیان، ج ۸، ص ۱۳۴)

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं बारगाहे रिसालत **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ** से जल्दी से निकला और मैं खुशी की शिद्दत की वजह से खुद-रफ़ता हो गया । जब रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो उन का चेहरा खुशी से दमक रहा था । आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते बिलाल (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**) को हुक्म फ़रमाया की वोह मुहाजिरीन व अन्सार को बुलाएं । जब सब लोग जम्अ हो गए तो आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने मिम्बरे अक्दस पर जलवा अफ़रोज़ हो कर **اَبْلَاح** **عَزَّ وَجَلَّ** की हम्दो षना की और इरशाद फ़रमाया : ऐ मुसलमानो ! अभी अभी हज़रते जिब्रीले अमीन **عَلَيْهِ السَّلَام** मेरे पास आए और येह ख़बर दी कि **اَبْلَاح** ने बैतुल मा'मूर के पास मलाइका को गवाह बना कर मेरी बेटी फ़ातिमा (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا**) का निकाह अली (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**) से कर दिया है ।” और मुझे भी हुक्म फ़रमाया है कि मैं ज़मीन पर इन का निकाह कर दूँ । मैं तुम सब को गवाह बनाता हूँ कि मैं ने अपनी बेटी का निकाह अली (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**) से कर दिया है । फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते सय्यिदुना अली **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को खुत्बए निकाह पढ़ने का हुक्म इरशाद फ़रमाया ।

खुत्बए निकाह

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** ने खड़े हो कर येह खुत्बा पढ़ा :

”الْحَمْدُ لِلَّهِ وَشُكْرًا لِأَنْعَمِهِ وَيَا دَيْبِهِ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَلَا شَيْبَةَ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ نَبِيُّهُ النَّبِيُّ وَرَسُولُهُ الْوَجِيهُ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَبَنِيهِ صَلَاةً دَائِمَةً تَرْضِيهِ“

तर्जमा : सब ता'रीफें **अल्लाह** عز وجل के लिये हैं और उस के इन्आमात व एहसानात पर उस का शुक्र है, मैं गवाही देता हूँ कि **अल्लाह** عز وجل के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, वोह यक्ता (अकेला) है, उस का कोई शरीक व मिष्ल (या'नी उस जैसा) नहीं और गवाही देता हूँ कि (हज़रते सय्यिदुना) मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस के खास बन्दे और रसूल हैं, उस के मोअज़्ज़ज नबी और अज़ीमुश्शान रसूल हैं, इन पर और इन के आल व अस्ताब, अज़वाजे मुतहहरात और अवलादे अतहार رَضُوا لِلَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ पर **अल्लाह** عز وجل की ऐसी दाइमी रहमत हो जो हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को खुश कर दे (आमीन) ।

इस के बा'द फ़रमाया : “निकाह **अल्लाह** عز وجل के हुक्म पर अमल है और उस ने इस की इजाज़त दी है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी शहज़ादी हज़रते फ़तिमा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का निकाह मुझ से कर दिया है और मेरी इस, जि़रह को ब तौरै हक्के महर⁽¹⁾ मुक़रर फ़रमाया है । हाज़िरीन ने मुबारक बाद देते हुए कहा : “**अल्लाह** عز وجل आप के जोड़े में बरकत व इत्तिफ़ाक़ अता फ़रमाए ।”

(1) खातूने जन्नत हज़रते सय्यिदुना फ़तिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के हक्के महर के मुतअल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं । तमाम अक़वाल में नफ़ीस ततबीक़ देते हुए आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : “अस्ल महेरे करीम जिस पर अक़दे अक़दस वाकेअ हुवा चार सो मिषक़ाल (तक़रीबन 150 तोले) चांदी थी व लिहाज़ा उ-लमाए सियर ने इस पर जज़म फ़रमाया ।” (फ़तावा रज़विख्या, जि. 12, स. 155)

सय्यिदुना काएनात का जहेज

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी ज़िरह ली और बाज़ार में हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को 400 दिरहम में फ़रोख़्त कर दी। जब मैं ने दिरहमों पर और उन्होंने ने ज़िरह पर क़ब्ज़ा कर लिया तो मुझ से फ़रमाने लगे : “ऐ अ़ली (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) क्या अब मैं ज़िरह का और आप दराहिम के हक़दार नहीं ?” मैं ने कहा : क्यूं नहीं। तो कहने लगे : “फिर येह ज़िरह मेरी तरफ़ से आप को हदिय्या (يَا - ٥ - وَي - ي) या’नी तोहफ़ा) है।” हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم फ़रमाते हैं : मैं ने ज़िरह और दराहिम लिये और रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हो कर हज़रते सय्यिदुना उषमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हुस्ने सुलूक की ख़बर दी तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें दुआए ख़ैरो बरकत से नवाज़ा। फिर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बुला कर उन्हें (मुठ्ठी भर) दिरहम दिये और फ़रमाया : “इन दराहिम के इवज़ फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के लिये मुनासिब अश्या ख़रीद लाओ।” हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी और हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ख़रीदी हुई अश्या उठाने में मदद के लिये साथ भेजा। हज़रते सय्यिदुना

अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं : मुझे हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने 63 दिरहम अता फ़रमाए थे, मैंने रूई से भरा हुवा मोटे कपड़े का बिस्तर, चमड़े का दस्तर ख़्वान, चमड़े का तकिया जिसमें खजूर के पत्ते भरे हुए थे, पानी के लिये एक मशकीज़ा और कूज़ा (या'नी मिट्टी का आबख़ूरा) और नर्म ऊन का एक पर्दा ख़रीदा। फिर मैं, हज़रते सलमान और हज़रते बिलाल (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ने थोड़ा थोड़ा कर के वोह सामान उठा लिया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर कर दिया। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने देखा तो रोने लगे और आस्मान की जानिब निगाह उठा कर अर्ज़ की : “ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ऐसे लोगों को अपनी रहमत से नवाज़ जिन का शिआर (या'नी तरीका) ही तुझ से डरना है।”

(الرُّؤُوسُ الْفَائِقُ، المجلس الثامن والاربعون في زواج علي... الخ، ص ٢٤٥ تا ٢٤٧، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

खातूने जन्नत की जहेज की मन्ज़ूम (1) तफ़सील

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي ने शहजादिये कौनैन, वालिदए हसनैन (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُم) के जहेज की तफ़सील नज़्म में लिखी है, मुलाहज़ा फ़रमाइये और तरगीब हासिल कीजिये।

(1).... अशआर में लिखा हुवा कलाम।

फातिमा ज़हरा का जिस दिन अक़द था सुन लो ! उन के साथ क्या क्या नक़द था एक चादर सतरह पैवन्द की मुस्तफ़ा ने अपनी दुख़तर को जो दी एक तौशक⁽¹⁾ जिस का चमड़े का ग़िलाफ़ एक तकिया, एक ऐसा ही लिहाफ़ जिस के अन्दर ऊन, न रेशम, रूई बल्कि इस में छाल खुर्म⁽²⁾ की भरी एक चक्की पीसने के वासिते एक मशकीज़ा था पानी के लिये एक लकड़ी का प्याला साथ में नुकरई कंगन⁽³⁾ की जोड़ी हाथ में और गले में हार हाथी दांत का एक जोड़ा भी खड़ाऊं⁽⁴⁾ का दिया शाहज़ादी सय्यिदुल कौनैन की बे सुवारी ही अली के घर गई वासिते जिन के बने दोनों जहां उन के घर थीं सीधी सादी शादियां उस जहेजे पाक पर लाखों सलाम साहिबे लौलाक पर लाखों सलाम

(दीवाने सालिक अज़ हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ

इरशाद फ़रमाते हैं : आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बक़िया दिरहम हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के हवाले कर दिये और इरशाद फ़रमाया : “इन दराहिम को अपने पास रखो।” फिर एक महीने तक शर्मो हया के बाइष मैं आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाज़िर न हुवा । जब कभी अकेले में आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मुलाक़ात होती तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

(1) रूई दार बिस्तर (2) खजूर के दरख़्त का छिलका

(3) कलाई में पहनने वाला चांदी का ज़ेवर (4) लकड़ी की जूती ।

इरशाद फ़रमाते : ऐ अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) मैं ने तुम्हारा निकाह

उस के साथ किया है जो तमाम जहानों की औरतों की सरदार है । (الرَّوْضُ الْفَائِقُ، المجلس الثامن والاربعون فى زواج على... الخ، ص 277) ।

जहेज कैसा और कितना हो ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मख़दूमए काएनात रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का जहेज किस क़दर सादा और मुख़सर था, और जो दिया गया मौलाए काएनात रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की तरफ़ से इस का भी मुतालबा न था, इस में उम्मत के लिये दर्स व रग़बत है कि कषीर और पुर तकल्लुफ़ जहेज का एहतिमाम ज़रूरी नहीं और न ही लड़के वाले इस का मुतालबा करें, येह सुन्नत जिस क़दर सादगी से अदा की जाए बेहतर है, जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 679 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "जन्ती ज़ेवर" सफ़हा 153 पर शैखुल हदीष हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي तहरीर फ़रमाते हैं : "मां-बाप कुछ कपड़े, कुछ ज़ेवरात, कुछ सामान, बरतन, पलंग, बिस्तर, मेज-कुरसी, तख़्त, जाए नमाज़, कुरआने मजीद, दीनी किताबें वगैरा लड़की को दे कर सुसराल भेजते हैं येह लड़की का जहेज कहलाता है । बिला शुबा येह जाइज़ बल्कि सुन्नत है क्यूंकि हमारे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भी अपनी प्यारी बेटी हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को जहेज में कुछ सामान दे कर रुख़सत फ़रमाया था लेकिन याद रखो कि जहेज में सामान का देना येह मां-बाप की महबूबत व

शपकृत की निशानी है और उन की खुशी की बात है। मां-बाप पर लड़की को जहेज देना यह फ़र्जों वाजिब नहीं है। लड़की और दामाद के लिये हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं कि वोह ज़बरदस्ती मां-बाप को मजबूर कर के अपनी पसन्द का सामान जहेज में वुसूल करें, मां-बाप की हैषियत इस क़ाबिल हो या न हो मगर जहेज में अपनी पसन्द की चीज़ों का तकाज़ा करना और उन को मजबूर करना कि वोह कर्ज़ ले कर बेटी-दामाद की ख़्वाहिश पूरी करें, येह ख़िलाफ़े शरीअत बात हैं बल्कि आज कल तिलक जैसी रस्म मुसलमानों में भी चल पड़ी है कि शादी तै करते वक़्त ही येह शर्त लगा देते हैं कि जहेज में फुलां फुलां सामान और इतनी इतनी रक़म देनी पड़ेगी, चुनान्चे बहुत से ग़रीबों की लड़कियां इसी लिये बियाही नहीं जा रहीं हैं कि इन के मां बाप लड़की के जहेज की मांग पूरी करने की ताक़त नहीं रखते येह रस्म यकीनन ख़िलाफ़े शरीअत है और ज़ब्रन क़हरन (या'नी बज़ोर) मां बाप को मजबूर कर के ज़बरदस्ती जहेज लेना येह ना जाइज़ है। लिहाज़ा मुसलमानों पर लाज़िम है कि इस बुरी रस्म को ख़त्म कर दें।” (जन्तती ज़ेवर, रूसूमात, स. 153 ता 154)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बिन्ते अ़त्तार का जहेज

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज के इस पुर फ़ितन दौर में भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो शादी-बियाह के मौक़अ पर होने वाली इन ना जाइज़ रूसूमात से इजतिनाब करते हैं : इन में

नुमायां नाम शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** का है : आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** शादी बियाह की खुशी में होने वाली बेहूदा तक़रीबात व रुसूमात को न सिर्फ़ खुद ना पसन्द करते हैं बल्कि दीगर मुसलमानों को भी इन गुनाहों भरे मुआमलात से इजतिनाब की शफ़क़त आमेज़ ताकीद फ़रमाते रहते हैं : अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ने अपनी इकलौती बेटी की शादी भी सादगी को मल्लूज़ रखते हुए ऐन सुन्नत के मुताबिक़ करने की कोशिश फ़रमाई थी । अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ने एक मदनी मुज़ाकरे में कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : मैं ने पूरी कोशिश की, कि हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهَا** को मेरे आका **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने जो जो इनायत फ़रमाया इस की पेरवी की जाए ।

वासिते जिन के बने दोनों जहां

उन के घर थीं सीधी सादी शादियां

उस जहेज़े पाक पर लाखों सलाम

साहिबे लौलाक पर लाखों सलाम

(दीवाने सालिक अज़ हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ**)

मषलन मशकीज़ा, गेहूं पीसने वाली हाथ की चक्की, नुकरई (نُقْرِي) या'नी चांदी के) कंगन पेश किये, इसी तरह की दीगर चीज़ें किताबों से देख कर जो जो मुयस्सर आया : चटाई, मिट्टी के बरतन और खजूर की छाल भरा चमड़े का तकिया वगैरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ जहेज में पेश करने की कोशिश की । और रुख़सत करते वक़्त जिस तरह सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खातूने जन्नत फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पर शफ़क़तें फ़रमाई थीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इन सुन्नतों पर भी अमल करने की कोशिश की थी ।

(सुन्नते निकाह, किस्त. 3, स. 44)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

सख्यिदा फ़ातिमा की रुख़सती

हज़रते सख्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ इरशाद फ़रमाते हैं : जब महीना गुज़र गया तो मेरे भाई हज़रते अक़ील رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मेरे पास तशरीफ़ लाए और कहने लगे : “ऐ मेरे भाई ! आज तक मैं इतना खुश नहीं हुवा जितना येह सुन कर खुश हुवा की आप की शादी बिन्ते रसूल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से हो गई है, अब अगर आप इन को अपने घर भी ले आओ तो तुम्हारी मुलाक़ात से हमारी आंखें ठंडी हो जाएंगी ।” मैं ने जवाब दिया : “**اَبْلَاٰه** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भी येही चाहता हूं लेकिन मुझे ताजदारे हरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से शर्म आती है ।” उन्होंने ने कहा : “मैं आप को क़सम देता हूं कि आप मेरे साथ चलें ।” लिहाज़ा हम आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में मुलाक़ात के इरादे से घर से निकले तो रास्ते में हमें बारगाहे रिसालत की ख़ादिमा हज़रते उम्मे ऐमन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا मिलीं । हम ने उन से तज़किरा किया तो कहने लगीं : “ज़रा इन्तिज़ार करें, हम औरतें आप

के मुतअल्लिक़
 बात करती हैं कि (इन मुआमलात में) मर्दों की निस्बत औरतों की
 बातें ज़ियादा मुअष्विर होती हैं।” वोह वापस मुड़ कर हज़रते
 सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास गई और उन्हें और
 फिर दूसरी अज़वाजे मुतहहरात رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ को सारी बात
 बताई तो सब उम्महातुल मोअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ इकठ्ठी हो
 कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास हज़रते सय्यिदतुना अइशा
 सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के हुजरए मुबारका में हाज़िर हुई और आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चारों तरफ़ बैठ कर अर्ज़ गुज़ार हुई : “या
 रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमारे मां-बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर
 कुरबान ! हम एक अहम मुआमले में आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के
 पास हाज़िर हुई हैं, वोह येह कि आप के चचाज़ाद और दीनी
 भाई हज़रते अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी बीवी हज़रते फ़ातिमा
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रुख़सती चाहते हैं।” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ
 ने हज़रते अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) को बुला भेजा।

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكُرَيْمِ मुर्तजा
 फ़रमाते हैं : “मैं बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर सर झुका कर
 बैठ गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : क्या
 तुम अपनी ज़ौजा की रुख़सती चाहते हो ?” मैं ने अर्ज़ की : “जी
 हां ! या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! इरशाद फ़रमाया : “बड़ी
 महबूबतो इज़्ज़त से, إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आज रात से तुम अपनी ज़ौजा
 के साथ रहा करोगे।”

दा'वते तझाम

अब्बाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल, रसूले मक़बूल, बीबी आमिना के गुलशन के महकते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को आरास्ता करने का हुक्म दिया और हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास रखे हुए दराहिम में से 10 दिरहम हज़रते अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم को दिये और इरशाद फ़रमाया : “इन से खजूर, घी और पनीर ख़रीद लो।” आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं येह चीज़ें ख़रीद कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाज़िर हो गया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने चमड़े का एक दस्तरख़्वान मंगवाया और आस्तीनें चढ़ा कर खजूरों को घी में मसलने लगे और फिर पनीर के साथ इस तरह मिलाया कि वोह हलवा बन गया। फिर इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) जिसे चाहो बुला लाओ।” मैं मस्जिद गया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सहाबए किराम رَضُوا اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِم से कहा : “आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दा'वत क़बूल करें।” सब लोग उठ कर चल दिये। जब मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में अर्ज़ की, कि लोग बहुत ज़ियादा हैं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने चमड़े के दस्तरख़्वान को एक रूमाल से ढांप दिया और इरशाद फ़रमाया : “दस दस अफ़्राद को दाख़िल करते जाओ।” मैं ने ऐसा ही किया। सब सहाबए

किराम رَضُوا اللّٰهَ تَعَالَى عَلَيْهِمْ ने खाना खाया लेकिन खाने में बिल्कुल कमी न हुई यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهَ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बरकत से 700 अफ़ाद ने वोह हलवा तनावुल फ़रमाया ।

इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهَ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते फ़ातिमा और हज़रते अली (رَضِيَ اللّٰهَ تَعَالَى عَنْهُمَا) को अपने पास बुलाया और हज़रते अली كَرَّمَ اللّٰهَ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم को अपने दाएं और हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللّٰهَ تَعَالَى عَنْهَا को अपने बाएं तरफ़ बिठा कर सीने से लगाया और दोनों की आंखों के दरमियान पेशानी पर बोसा दिया और हज़रते अली رَضِيَ اللّٰهَ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया : “ऐ अली (رَضِيَ اللّٰهَ تَعَالَى عَنْهُ) मैं ने कितनी अच्छी ज़ौजा से तेरा निकाह किया है ।” फिर उन दोनों के साथ उन के घर तक पैदल चले । फिर घर से बाहर निकल कर दरवाज़े के किवाड़ पकड़े और येह दुआ फ़रमाई : “**اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ तुम दोनों को इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद अता फ़रमाए, मैं तुम्हें **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ के सिपुर्द करता हूं और तुम दोनों को उस की हिफ़ाज़त में देता हूं ।” (الرُّوْضُ الْفَائِقُ، المجلس الثانی والاربعون فی زواج علی بفاطمة...الخ، ص ۲۷۷ تا ۲۷۸، ملخصاً)

शहज़ादिये कौनैन, वालिदए हसनैन (رَضِيَ اللّٰهَ تَعَالَى عَنْهُم) के निकाह के मुतअल्लिक़ मुफ़स्सरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَنِي का मन्ज़ूम कलाम मुलाहज़ा फ़रमाइये और नसीहत के मदनी फूल चुनिये :

गोशे दिल से मोमिनो ! सुन लो ज़रा है येह किस्सा फ़ातिमा के अक्द का
 पन्दरह सालह नबी की लाडली और थी बाईस साल उम्रे अली
 अक्द का पैग़ाम हैदर ने दिया मुस्तफ़ा ने मरहबा अहलन कहा
 पीर का दिन सतरह माहे रजब दूसरा सिने हिजरत शाहे अरब
 फिर मदीने में हुवा ए'लाने आम जोहर के वक़्त आएं सारे ख़ासो आम
 इस ख़बर से शोर बरपा हो गया कूचा व बाज़ार में गुल सा मचा
 आज है मौला की दुख़तर का निकाह आज है उस नेक अख़्तर का निकाह
 आज है उस पाक व सच्ची का निकाह आज है बे मां की बच्ची का निकाह
 ख़ैर से जब वक़्त आया जोहर का मस्जिदे नबवी में मज्मअ हो गया
 एक जानिब हैं अबू बक्रो उमर एक तरफ़ उषमान भी हैं जलवा गर
 हर तरफ़ अस्हाबो अन्सार हैं दरमियां में अहमदो मुख़्तार हैं
 सामने नौशा अलिय्युल मुर्तज़ा हैदरे करार शाहे ला फ़ता
 आज गोया अर्श आया है उतर या कि कुदसी आ गए हैं फ़र्श पर
 चार सो मिषक़ाल चांदी महर था वज़्न जिस का डेढ़ सो तोला हुवा
 बा'द में खुर्मे लूटाए ला कलाम मा सिवा इस के न था कोई त़आम
 उन के हक़ में फिर दुआए ख़ैर की और हर एक ने मुबारक बाद दी
 घर से रुख़सत जिस घड़ी ज़हरा हुई वालिदा की याद में रोने लगीं
 दी तसल्ली अहमदे मुख़्तार ने और फ़रमाया शहे अबरार ने

मैके व सुसराल में आ'ला हो तुम फ़ातिमा हर तरह से बाला हो तुम
 और शोहर औलिया के पेशवा बाप तुम्हारे इमामुल अम्बिया
 तब अली के घर में एक दा'वत हुई माहे ज़िल हिज्जा में जब रुख़्त हुई
 कुछ पनीर और थोड़े खुर्मे बे गुमां जिस में थीं दस सैर जव की रोटियां
 और येह दा'वते सुन्नते इस्लाम है इस ज़ियाफ़त⁽¹⁾ का वलीमा⁽²⁾ नाम है
 और बुरी रस्मों से बचना चाहिये सब को इन की राह चलना चाहिये

(दीवाने सालिक अज़ हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلِيُّ رَحْمَةُ الْحَنَانِ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَوَبُّوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُ اللَّهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शादियां तो बहुत हुई हैं,
 हो रही हैं और होती रहेंगी लेकिन ऐसी सादा मगर अज़ीमुशशान
 रस्मे निकाह व बियाह सिर्फ़ महबूबीने खुदा और मुकर्रबीने
 मुस्तफ़ा का हिस्सा है, तकल्लुफ़ (या'नी ज़ाहिरदारी) नाम का
 नहीं लेकिन रश्क हर मुसलमान को आता है, धूम धाम का कोई
 अता पता नहीं लेकिन चर्चा आज भी हो रहा है ।

(1) दा'वत

(2) निकाह के बा'द की दा'वत जो दुल्हा की तरफ़ से दी जाती है ।

(फ़ीरोजुल लुगात, स. 1482)

नामवरी का कोई इरादा नहीं लेकिन डंके चार दांगे आलम⁽¹⁾ बज रहे हैं। येह बात बिल्कुल नहीं कि येह शादी धूम धाम से नहीं हो सकती थी बल्कि अगर सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खुद भी नहीं बल्कि सिर्फ अपने गुलामों को ही इशारा कर देते तो इस की मिष्ल व हमसरी करना किसी के बस की बात न रहती। लेकिन वालिये उम्मत, महबूबे रब्बुल इज्जत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सादगी और बे तकल्लुफी को सुन्नत बनाया, ताकि उम्मत परेशानी और कर्जों के बोझ तले न दबे। इसी जानिब हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने भी तवज्जोह दिलाई, चुनान्चे

शादी बियाह की इस्लामी रश्में

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 170 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "इस्लामी जिन्दगी" सफ़हा 54 पर हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार खान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَنِي तहरीर फ़रमाते हैं : सब से बेहतर तो येह होगा कि अपनी अवलाद के निकाह के लिये हज़रते खातूने जन्त, शाहज़ादिये इस्लाम, फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के निकाहे पाक को नुमूना बनाओ। यकीन करो कि हमारी अवलाद इन के क़दमे पाक पर कुरबान ! और येह भी समझ लो कि अगर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मरज़ी होती कि मेरी लख्ते जिगर की शादी बड़ी धूम धाम से हो और सहाबए किराम

(1) दुन्या की चारों तरफ़

عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ से इस के लिये चन्दा वगैरा के लिये हुक्म फ़रमा दिया जाता तो उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का ख़ज़ाना मौजूद था। जो एक एक जंग के लिये नव नव सो ऊंट और नव नव सो अशरफ़ियां हाज़िर कर देते थे। लेकिन चूँकि मनशा (या'नी मक्सद) येह था कि क़ियामत तक येह शादी मुसलमानों के लिये नुमूना बन जाए। इस लिये निहायत सादगी से येह इस्लामी रस्में अदा की गईं।

लिहाज़ा मुसलमानो ! अव्वलन तो अपनी बियाह बारात से सारी हराम रस्में निकाल डालो, बाजे, आतश बाज़ी, औरतों के गाने, मीराषी, डोम वगैरा के गीत, रन्डियों, औरतों के नाच, औरतों और मर्दों का मेल जोल, फूल पत्ती का लुटाना एक दम **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर मिटा दो। अब रही फुज़ूल ख़र्ची की रस्में इन को या तो बन्द ही कर दो अगर बन्द न कर सको तो इन के लिये ऐसी ह़द मुक़रर कर दो जिस से फुज़ूल ख़र्ची न रहे और घर की बरबादी न हो। जिन्हें अमीर व ग़रीब सब बे तकल्लुफ़ पूरा कर सकें। लिहाज़ा हमारी राय येह है कि इस तरीके से निकाह की रस्म अदा होनी चाहिये।

दुल्हा, दुल्हन निकाह से पहले उबटन या खुशबू का इस्ति'माल करें मगर मेहंदी और तेल लगाने और उबटन की रस्म बन्द कर दी जाए या'नी गाना बाजा औरतों का जम्अ होना बन्द कर दो। अब अगर बारात शहर की शहर में है तो ज़ोहर की नमाज़ पढ़ कर बारात का मज्मअ दुल्हा के घर जम्अ हो और दुल्हन वाले लोग दुल्हन के घर जम्अ हों। दुल्हन के यहां इस वक़्त

ना'त ख़वानी या वा'ज या दुरूद शरीफ़ की मजलिस गर्म हो । उधर दुल्हा को ले कर पैदल या सुवार कर के इस तरह बरात का जुलूस रवाना हो, आगे आगे उमदा ना'त ख़वानी होती जावे, तमाम बाजारों में येह जुलूस निकाला जाए । जब येह बरात दुल्हन के घर पहुंचे तो दुल्हन वाले इस बरात को किसी किसम की रोटी या खाना हरगिज़ न दें क्यूंकि हज़रते ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के निकाह में हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने कोई खाना न दिया । गरज़ येह कि लड़की वाले के घर खाना न हो । बल्कि पान या ख़ाली चाय से तवाज़ोअ कर दी जाए । फिर उमदा तरीके से खुत्बाए निकाह पढ़ कर निकाह हो जाए । अगर निकाह मस्जिद में हो तो और भी अच्छा है । निकाह का मस्जिद में होना मुस्तहब है और अगर लड़की के घर हो तब भी कोई हरज नहीं । निकाह होते ही बाराती लोग वापस हो जाएं । येह तमाम काम अ़स्स से पहले हो जाएं और बा'दे मग़रिब को दुल्हन को रुख़सत कर दिया जाए ख़वाह रुख़सत टांगे में हो या डोली वगैरा में । मगर इस पर किसी किसम का निछावर और बिखेर बिल्कुल न हो कि बिखेर करने में पैसे गुम हो जाते हैं । हां ! निकाह के वक्त खुर्मे (या'नी खजूरे या छूहारे) लुटाना सुन्नत है ।

(इस्लामी जिन्दगी, फ़स्ले शानी : निकाह और रुख़सत की रस्में, स. 54 ता 55)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

घ्यारी घ्यारी इस्लामी बहनो ! शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरী دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ हर मुआमले में मीठे मीठे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की

सुन्नतों पर अमल की कोशिश फरमाते हैं, चुनान्चे आप ने अपनी अवलाद की शादियां भी फुजूल रस्मों से दूर रह कर और आका की सुन्नतों पर अमल कर के सर अन्जाम दीं जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 86 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "सुन्नते निकाह" सफ़हा 32 से 41 तक आप के बड़े साहिब ज़ादे की शादी का ज़िक्र मौजूद है मुख़्तसरन पेशे ख़िदमत है मुलाहज़ा फ़रमाइये :

शहज़ादए अत्तार مَدَّ ظِلُّهُ की शादी

जहां अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने अपनी शादी ख़ाना आबादी में हर मौक़अ पर शरई अहक़ाम की पासदारी की, वहीं आप ने अपने शहज़ादए खुश-लका, उरूसे दिलरुबा, अलहाज मौलाना अबू उसैद अहमद उबैदुर्रज़ा कादिरी रज़वी अत्तारी अल मदनी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ की "शादी" के पुर मुसरत लमहात में तमाम मुआमलात शरीअत के ऐन मुताबिक़ रखने पर भी भरपूर तवज्जोह फ़रमाई। जिस के नतीजे में الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ येह शादी मुबारक भी इन्तिहाई सादगी का मज़हर और दौरे हाज़िर की मिषाली शादी करार पाई।

मरहबा अत्तार का लख़्ते ज़िगर दुल्हा बना

खुशनुमा सेहरा उबैदे कादिरी के सर सजा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तक़रीबे निकाह

शहज़ादए अत्तार مَدَّ ظِلُّهُ के निकाह की तक़रीब बरकी कुमकुमों से जगमगाते शादी होल के बजाए मदीनतुल औलिया

मुल्तान शरीफ में होने वाले दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे बैनल अक़वामी इजतिमाअ में 18 अक्टूबर सि. 2003 ई. को शबे इतवार बड़ी सादगी के साथ अन्जाम पाई ।

बराती हैं तमामी अहले सुन्नत

उबैदे कादिरी दुल्हा बना

तिलावत के बा'द पुरसोज़ ना'तें पढ़ी गई, रिक्कत अंगेज समां था, खुत्बए निकाह पढ़ कर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ही ने निकाह पढ़ाया फिर छूहारे लुटाए गए जो मंच (स्टेज) के क़रीब मौजूद मख़सूस इस्लामी भाइयों ने लूटे । निकाह के बा'द छूहारे लुटाने के बारे में आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “हदीष शरीफ़ में लूटने का हुक्म है और लुटाने में भी कोई हरज नहीं ।” (أَحْكَامُ شَرِيْعَتِ، بَلْبُ مَلْفُوظَاتِ اَعْلَى حَضْرَتِ، حَصْمَه دَوْم، ص २२५)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

मक़न पर सजावट

इस मौक़अ पर देखने वाले हैरत ज़दा थे कि दुन्याए अहले सुन्नत के अमीर, बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के शहज़ादे की शादी के मौक़अ पर घर पर मुरुव्वजा सजावट या बरक़ी कुमकुमों वगैरा की कोई तरकीब ही नहीं थी ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

पुर तकल्लुफ़ जहेज लेने से इन्कार

हाजी अहमद उबैद रज़ा مَدَّظَلُّهُ الْعَالِي की शादी में जब लड़की वालों ने पुर तकल्लुफ़ जहेज देना चाहा तो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उन्हें सादगी अपनाने की तलक़ीन की। दूसरी तरफ़ शहज़ादए अत्तार دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ भी पलंग वगैरा के बजाए चटाई क़बूल करने पर रिज़ामन्द हुए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इजतिमाए ज़िक्रो ना'त

शहज़ादए अत्तार مَدَّظَلُّهُ الْعَالِي की शादी की खुशी में दा'वते इस्लामी की बाबुल मदीना (कराची) की मजलिसे मुशावरत ने अलामी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) में इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का एहतियाम किया। जिस में हज़ारों इस्लामी भाइयों ने शिक़त की। इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का आगाज़ तिलावते कुरआने हकीम से हुवा, फिर सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में गुलहाए अक़ीदत ना'त शरीफ़ की सूरत में पेश किये गए। इस के बा'द शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने इस मौक़अ पर मदनी मुज़ाकरे में इस्लामी भाइयों के सुवालात के जवाबात दिये। फिर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ का लिखा हुवा मन्ज़ूम दुआइया सहरा शरीफ़ पढ़ा गया और सलातो सलाम पर इस इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का इख़िताम हुवा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

रश्मे रुख़्सती

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ने पहले ही से ताकीद कर दी थी कि किसी सूरत में कोई गैर शरई रस्म या मुआमला न होने पाए बल्कि वक्ते रुख़्सती भी तमाम मुआमलात ऐन शरीअत के दाइरे में रहते हुए होने चाहियें ।

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ आप की इस ख़्वाहिश को अमली जामा पहनाया गया और आख़िर तक हर हर मुआमला ऐन शरीअत के मुताबिक़ रखने की ही कोशिश की गई । हत्ता कि रुख़्सती के वक्त जो ख़्वातीन दुल्हन को छोड़ने के लिये रस्म के तौर पर आती हैं इस से पेशगी मन्अ कर दिया गया कि सिर्फ़ दुल्हन का सगा भाई शरई पर्दे के साथ दुल्हन को ले आए । इस शादी में अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** के घर वालों की तरफ़ से भी इस्लामी बहनों के लिये कोई तक़रीब नहीं रखी गई थी ।

मेरी जिस क़दर हैं बहनें सभी काश बुक़अ पहनें
हो करम शहे ज़माना मदनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

धूमधाम से वलीमा करने का मुतालबा

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ने मदनी मुज़ाकरे के दौरान कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : धूम धाम से वलीमा का भी बहुत इसरार रहा । किसी ने ओफ़र भी की, कि 200 देगें बिला उजरत पका देंगे, बस दो लाख रूपे का सामान आएगा । मैं ने कहा : दो लाख रूपे तो मेरे पास नहीं हैं, मगर मेरे लिये दो लाख रूपे जम्अ करना मुश्किल भी नहीं है, बस येही होगा कि जिस

से कहूंगा उस के दिल में मेरी जो इज़्ज़त होगी वोह ख़त्म हो जाएगी, दो चार सेठों को फ़ोन कर दूंगा, थोड़ी सी खुशामद करना पड़ेगी जो कि मेरे मिज़ाज में नहीं है, 200 की जगह 1200 देंगे हो जाएंगी, यूं मेरे बेटे का वलीमा तो धूम धाम से होगा और आप लोग भी खुश हो जाएंगे मगर मुझे इस के लिये अपनी खुदारी का सौदा करना पड़ेगा। फिर आप ने बतौरै तरगीब एक वाकिअ भी सुनाया :

एक पीर साहिब के हां लंगर ख़ाना चल रहा था। एक साहिबे षरवत मुरीद पैसे देने की तरकीब कर रहा था। लंगर ख़ाने के मुन्तज़िम ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! अब महंगाई बढ़ गई है, बहुत दिक्कत हो रही है, अगर आप इस लंगर ख़ाने का खर्चा देने वाले मुरीद को इशारा कर देंगे कि वोह रक़म दुगनी कर दे तो अपना लंगर ख़ाना ज़रा आसानी से चलेगा। पीर साहिब इस पर राज़ी हो गए और उस मुरीद को फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ने तुझे बहुत दिया है, तुम माहाना चन्दा दुगना कर दो। उस मुरीद ने सआदत मन्दी से जवाब दिया : मुर्शिद ! आप का हुक्म सर आंखों पर। कुछ अर्से के बा'द लंगर ख़ाने के मुन्तज़िम ने पूछा : हुज़ूर ! आप ने रक़म में इज़ाफ़े के लिये कहा या नहीं ? पीर साहिब ने फ़रमाया कि मैं ने उस से कह दिया था और उस ने दुगना कर भी दिया है मगर फ़र्क़ येह है कि पहले बड़ी अक्वीदत से आ कर पेश करता था, अब खुद नहीं आता भिजवा देता है।

(फिर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने फ़रमाया)

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मेरा बेटा (या'नी हाजी अहमद उबैद रज़ा अत्तारी
خُودِ وَلِيْمَةِ كِي سُنُنْتِ اَدَا كَرِيغَا । धूम धाम से न
सही मगर वलीमा होगा ।

صَلُّوا عَلَي الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

दा'वते वलीमा

शहज़ादए अत्तार مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي ने अमीरे अहले सुन्नत
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की हस्वे ख़्वाहिश इन्तिहाई सादगी से दा'वते
वलीमा का एहतिमाम फ़रमाया जिस में सिर्फ़ दा'वते इस्लामी
की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के तमाम अराकीन और तीन या चार
दूसरे इस्लामी भाइयों को मदरू किया लेकिन खाने के वक्त घर
के बाहर जम्अ होने वाले दीगर अकीदत मन्द इस्लामी भाइयों को
भी अन्दर बुलवा लिया गया । اَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ भी वलीमे में शरीक थे । दा'वते वलीमा में दाल
और चावल पेश किये गए । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ
ने बताया कि “खाना घर में पकाया गया है, दाल पानी में पकाई
गई है और इस में तेल का एक कतरा भी नहीं डाला गया ।” मगर
खाने वालों का कहना है कि दाल-चावल हैरत अंगेज़ तौर पर
इन्तिहाई लज़ीज़ थे । (सुन्नते निकाह, किस्त. 3 स. 32 ता 41 मुल्लक़तन)

صَلُّوا عَلَي الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शादी के मौक़अ पर रुख़सती के वक़्त क़ब्र की तरफ़ रुख़सती को पेशे नज़र रखना चाहिये । अक़षर नमाज़ की पाबन्द इस्लामी बहनें भी इस मौक़अ पर फ़र्ज़ नमाज़ तक छोड़ देती हैं । देखिये ! खातूने जन्त رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने शादी की पहली रात कैसे गुज़ारी आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को शादी की पहली रात भी फ़िक़रे क़ब्रो आख़िरत ने बेचैन कर रखा था चुनान्चे मन्कूल है कि

शादी की पहली रात भी इबादत

सय्यिदए काएनात⁽¹⁾ हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की रुख़सती के बा'द जब रात का अन्धेरा छाया तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا रोने लगीं । हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने पूछा : “ए तमाम औरतों की सरदार ! क्या तुम इस बात से खुश नहीं कि मैं तुम्हारा शोहर और तुम मेरी जौजा हो ?” कहने लगीं : “मैं क्यूं कर राज़ी न होऊंगी, आप तो मेरी रिज़ा बल्कि इस से भी बढ़ कर हैं, मैं तो अपनी उस हालत व मुआमले के मुतअल्लिक़ सोच रही हूं कि जब मेरी उम्र बीत जाएगी और मुझे क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाएगा । आज मेरा इज़्ज़त व फ़ख़्र के बिस्तर में दाख़िल होना कल क़ब्र में दाख़िल होने की मानिन्द है । आज रात हम अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़े हो कर इबादत करेंगे कि वोही इबादत का ज़ियादा हक़ रखता है । इस के बा'द वोह दोनों इबादत की जगह खड़े हो कर पूरी रात रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ रहे ।”

(الرُّؤُوسُ الْفَائِقُ، المجلس، الثامن والاربعون في زواج على بفاطمة... الخ، ص 278)

(1) या'नी काएनात की सरदार ।

इबादत हो तो ऐसी हो !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यह ऐसे लोग हैं कि जिन का पुख़्ता अज़्म, ख़्वाहिशात और मक्सूद न तो दुन्या और इस की लज़्जात थीं और न ही नफ़्स की राहत व ख़्वाहिशात । बल्कि इन की बुलन्द हिम्मतों की परवाज़ हमेशा बाकी रहने वाले ठिकाने की तरफ़ थी । यकीनन इन का ज़िक्र कुरआने पाक में लिख दिया गया और इन को बिशारत दे दी गई :

اِنَّمَا يُرِيدُ اللهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ
الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ
تَطْهِيراً ﴿٣٣﴾

(प २२, الاحزاب: ३३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अब्बास**

तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे । ⁽¹⁾

(1) मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल हाफ़िज़ मुफ़्ती सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي "तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इस आयए मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : या'नी गुनाहों की नजासत से तुम आलूदा न हो । इस आयत से अहले बैत की फ़ज़ीलत षाबित होती है और अहले बैत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अज़वाजे मुतहहरात और हज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़हरा और अलिय्युल मुर्तज़ा और हसनैने करीमैनु रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ सब दाख़िल हैं । आयत व अहादीष को जम्अ करने से येही नतीजा निकलता है और येही हज़रते इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मन्कूल है । इन आयत में अहले बैते रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को नसीहत फ़रमाई गई है ताकि वोह गुनाहों से बचे और तक्वा व परहेज़गारी के पाबन्द रहें ।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22. अल अहज़ाब, तहत्तुल आयत, 33)

इन दोनों मुबारक हस्तियों ने अपनी लज्जात के बिस्तर को छोड़ दिया और **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ हो गए, रात क़ियाम में तो दिन रोज़े की हालत में बसर होता हत्ता कि तीन रोज़ इसी तरह गुज़र गए। फिर वोह दोनों अपने बिस्तर पर आराम फ़रमा हुए। चौथे दिन हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की : “**अब्बाह** तअ़ाला आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सलाम भेजता है और इरशाद फ़रमाता है कि अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) और फ़ातिमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) ने तीन दिन से नींद और बिस्तर को तर्क कर रखा है और इबादत और रोज़ों में मसरूफ़ हैं, तुम उन के पास जाओ और उन से इरशाद फ़रमाओ कि **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारी वजह से मलाइका पर फ़ख़्र फ़रमा रहा है और येह कि तुम दोनों बरोज़े क़ियामत गुनहगारों की शफ़ाअत करोगे।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़ौरन उन के घर तशरीफ़ लाए तो वहां हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिनते उमैस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को पाया तो इस्तिफ़सार फ़रमाया : “किस चीज़ ने तुझे यहां ठहराया है ? हालांकि घर में एक मर्द भी मौजूद है।” अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह ! मैं हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की ख़िदमत के लिये हाज़िर हुई थी। इस पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की चश्माने मुबारक

नमनाक (या'नी आंसूओं से तर-बतर) हो गई और दुआ फ़रमाई :
 “ऐ अस्मा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) **اَبْلَاح** عَزَّ وَجَلَّ तेरी दुन्या व
 आखिरत की तमाम हाजात पूरी फ़रमाए ।”

(الرَّوْضُ الْفَائِقُ، الثامن والاربعون في زواج على بفاطمة... الخ، ص ٢٤٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनों ! اَبْلَاح रब्बुल इज़्जत
 ने जिस तरह खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को अज़मतो
 रिफ़अत अता फ़रमाई इसी तरह आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की अवलाद
 को भी अज़ीम शानों से नवाज़ा । अहले बैते पाक की अज़मत
 तो देखिये कि एक तरफ़ मां जन्नती औरतों की सरदार है तो
 दूसरी तरफ़ बेटे जन्नती जवानों के सरदार । आइये ! खातूने
 जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की अवलादे पाक का जिक्रे ख़ैर भी
 मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये !

खातूने जन्नत की अवलादे पाक

﴿1﴾.... सय्यिदुना इमामे हसन की विलादते बा सअ़ादत

खातूने जन्नत के बड़े शहज़ादे हज़रते सय्यिदुना इमामे
 हसन मुज्ताबा हैं, आप का इस्मे गिरामी हसन, कुन्यत अबू
 मुहम्मद और अल्काब सय्यिदे शबाबे अहले जन्नत, सब्तो रैहाने
 रसूल हैं । आप की विलादते बा सअ़ादत 15 रमज़ानुल मुबारक

3 हि. में हुई । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम हसन रखा

फिर पैदाइश के सातवें दिन आप का अक्रीका किया, बाल उतरवाए और हुक्म फरमाया कि बालों के वज़न के बराबर चांदी सदका की जाए। (أَسَدُ الْغَابَةِ فِي مَعْرِفَةِ الصَّحَابَةِ، باب الحاء والسين، حسن بن علي، ج ٢، ص ١٢-١٣، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

सय्यिदुना इमामे हसन की अजवाज व अवलाद

हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन मुज्ताबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने 90 शादियां कीं। (تاريخ الخلفاء، ص ١٢٢)

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की चन्द बीवियों के नाम दर्जे जैल हैं :

(1).... हज़रते सय्यिदतुना उम्मे बशीर बन्ते अबू मसऊद अन्सारी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا)

(2)... हज़रते सय्यिदतुना खौला बन्ते मन्ज़ूर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا

(3)... हज़रते सय्यिदतुना रमला बन्ते सईद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا

(4).... हज़रते सय्यिदतुना उम्मे इस्हाक़ बन्ते तल्हा बिन उबैदुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के चन्द शहजादों और शहजादियों के

नाम दर्जे जैल हैं : (1).... हज़रते सय्यिदुना जैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

(2).... हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ (3).... हज़रते

सय्यिदुना तल्हा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ (4).... हज़रते सय्यिदुना

अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ (5).... हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ (6).... हज़रते सय्यिदुना कासिम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

- (7).... हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (8).... हज़रते सय्यिदुना हुसैन इषरम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (9).....हज़रते सय्यिदुना अम्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا (10)..... हज़रते सय्यिदतुना उम्मूल हसन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا (11).... हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا
- (أَنْسَابُ الْأَشْرَافِ، ج ٣، ص ٣٠٣ تا ٣٠٦، مَلْخَصًا)

सय्यिदुना इमामे हसन की शहादत

फ़कीहे मिल्लत मुफ़ती जलालुद्दीन अहमद अम्जदी अपनी किताब “खुत्बाते मुह्रम” सफ़हा 278 पर नक्ल फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पेंतालीस (45) साल छे माह चन्द रोज़ की उम्र में ब मक़ामे मदीनए तय्यिबा 5 रबीउल अव्वल सि. 49 हि. में ज़हर ख़्वानी से शहादत नसीब पाई और जन्तुल बकीअ में अपनी प्यारी अम्मी जान खातूने जन्त जिगार गोशए रसूल हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बतूल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पहलू में मदफून हुए। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُونَ 0

वोह हसने मुज्ताबा सय्यिदुल अस्ख़िया राकिबे दोशे इज़ज़त पे लाखों सलाम शहद ख़्वारे लुआबे ज़बाने नबी चाशनी गीर इस्मत पे लाखों सलाम

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

﴿2﴾.... सय्यिदुना इमामे हुसैन की विलादते बा सअदात

आप का इस्मे गिरामी हुसैन, कुन्यत अबू अब्दुल्लाह और अल्काब सय्यिदे शबाबे अहले जन्नत, सब्तो रैहाने रसूल हैं। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की विलादते बा सअदात 5 शा'बान सि. 4 हि. में हुई। हुजूर नबिय्ये करीम ने प्यारे शहजादे के कान में अज़ान इरशाद फ़रमाई और सातवें दिन आप का अक्कीका किया गया।

(اسد الغابة، باب الحاء والسين، حسين بن علي، ج ٢، ص ٢٥-٢٢، ملخصاً)

आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की विलादत पर हज़रते रूहुल अमीन ब हुक्मे रब्बुल आलमीन तहनिय्यते विलादत (या'नी पैदाइश की मुबारक बाद) के साथ ता'ज़ियत भी लाए। उस वक़्त हुजूर आप के गुलूए नाज़ को चूम रहे थे। रूहुल अमीन ने आबदीदा हो कर अर्ज़ किया कि इस बोसागाह पर छुरी चलेगी और यह कुर्रतुल ऐन खुदा की राह में शहीद होगा। (أوراقِ غم، ص ٢٤٠)

मरहबा सरवरे आलम के पिसर आए हैं सय्यिदा फ़ातिमा के लख्ते जिगर आए हैं
वोह किस्मत के चरागे हरमैन आए हैं ऐ मुसलमानो! मुबारक कि हुसैन आए हैं

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

शय्यिदुना इमामे हुसैन की अज़वाज व अ़वलाद

हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कई शादियां कीं, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की चन्द बीवियों के नाम दर्जे जैल हैं :

(1).... हज़रते सय्यिदतुना लैला बिनते अबी मुरह उर्वा बिन मसऊद षकफ़ी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا (2).... हज़रते सय्यिदतुना उम्मे इस्हाक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا (3).... हज़रते सय्यिदतुना रुबाब बिनते इम्रउल कैस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا । इमामे अली मक़ाम हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के चन्द शहज़ादों और शहज़ादियों के नाम दर्जे ज़ैल हैं : (1)... हज़रते सय्यिदुना अली अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (2).... हज़रते सय्यिदुना अली असगर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (3).... हज़रते सय्यिदुना (أَنْسَابُ الْأَشْرَافِ، ج ۳، ص ۳۶۱، ۳۶۲، ملخصاً) मुहम्मद (ایضاً، ج ۲، ص ۲۲۲) رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (4).... हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا (5).... हज़रते सय्यिदतुना सुकैना (أَنْسَابُ الْأَشْرَافِ، ج ۳، ص ۳۶۱، ۳۶۲، ملخصاً) رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا

सय्यिदुना इमामे हुसैन की शहादत

सय्यिदुशुहदा, इमामे अली मक़ाम हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की पैदाइश के साथ ही आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शहादत की भी शोहरत आम हो गई थी। हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ दस मुहर्मुल हराम सि. 61 हि. ब रोज़ जुमुअतुल मुबारक अपने अहले बैते अतहार और 72 जां निषारों के साथ मैदाने करबला में मर्तबए शहादत पर फ़इज़ हो कर सय्यिदुशुहदा के लक़ब से मुलक़ब हुए। शहादते इमामे अली मक़ाम की तफ़सील दरकार हो तो सवानहे करबला, आईनए क़ियामत, करबला का खूनी मन्ज़र वगैरा कुतुब की तरफ़ रुजूअ करें।

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

﴿3-4﴾...सय्यिदुना मोहसिन व सय्यिदतुना रुक़य्या

हज़रते सय्यिदुना मोहसिन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का इन्तिकाल तो बचपन में ही हो गया था इस लिये तारीख़ो सीरत की किताबों में इन का तज़क़िरा न होने के बराबर है ।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿5﴾..... सय्यिदतुना ज़ैनब का जिक्रे ख़ैर

हज़रते सय्यिदा ज़ैनब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की बड़ी शहज़ादी हैं । इन की कुन्यत उम्मुल हसन थी और वाकिअए करबला के बा'द इन की कुन्यत उम्मुल मसाइब मशहूर हो गई थी ।

सय्यिदा ज़ैनब का निक्कह

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी लख्ते जिगर हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का निक्कह हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के साहिब ज़ादे हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया ।

(أَسَدُ الْغَايَةِ فِي مَعْرِفَةِ الصَّحَابَةِ، حرف الزّاي، زينب بنت علي، ج 4، ص 133)

सय्यिदा जैनाब की अवलाद

हज़रते सय्यिदतुना जैनाब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के चार साहिबज़ादे थे जिन के नाम दर्जे जैल हैं : (1).... हज़रते सय्यिदुना अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (2).... हज़रते सय्यिदुना औन अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (3).... हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (4).... हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदतुना जैनाब रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की एक साहिबज़ादी थीं जिन का नाम हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا है । (ऐज़न)

﴿6﴾..... सय्यिदा उम्मे कुलषूम

खातूने जन्नत की सब से छोटी साहिबज़ादी हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا अपनी बड़ी हमशीरा हज़रते सय्यिदतुना जैनाब रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के मुशाबेह थीं ।

सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम का निक्कह

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से निक्कह फ़रमाया और हक्के महर में 40,000 दिरहम दिये । जैसा कि रिवायत में है कि हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को महर में 40,000 दिरहम दिये ।

(أَسَدُ الْغَابَةِ فِي مَعْرِفَةِ الصَّحَابَةِ، ج ٤، حرف الكاف، ام كلثوم بنت علي، ص ٤٨٣)

सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम की अवलाद

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के बतने मुबारक से हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का एक बेटा ज़ैद बिन उमर अक्बर और एक बेटी रुक़य्या पैदा हुई ।

(أُسَدُ الْغَابَةِ فِي مَعْرِفَةِ الصَّحَابَةِ، ج ٤، حرف الكاف، ام كلثوم بنت علي، ص ٣٤٨)

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के इन्तिक़ाल के बा'द आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का निकाहे षानी हज़रते सय्यिदुना औन बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से हुवा और हज़रते सय्यिदुना औन बिन जा'फ़र के इन्तिक़ाल के बा'द उन के भाई हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से हुवा और हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन जा'फ़र रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के इन्तिक़ाल के बा'द उन के भाई हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से हुवा ।

(الطبقات الكبرى لابن سعد، تسمية النساء اللواتي..... الخ، ام كلثوم بنت علي، ج ٨، ص ٣٣٨)

सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम का इन्तिक़ाले पुर मलाल

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का इन्तिक़ाल हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के निकाह में हुवा । हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا और उन के बेटे हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) का इन्तिक़ाल एक ही साअत में हुवा ।

(الاصابة فى تمييز الصحابة، القسم الرابع، ام كلثوم بنت علي، ج ٨، ص ٣٦)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़िताम की तरफ़ लाते हुए सय्यिदना अली व फ़ातिमा के हुस्ने मुआशरत पर मुशतमिल एक रिवायत पेश की जाती है :

अली व फ़ातिमा कभी नाशज न हुए

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रमैल्लै तैअली व ज़हेहै क़र्रिमै फ़रमाते हैं : “एक इन्तिहाई ठंडी और शदीद सर्द सुब्ह रसूले खुदा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमारे हां तशरीफ़ लाए । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हमें दुआए ख़ैर से नवाज़ा और फिर हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से तन्हाई में पूछा : ऐ मेरी बेटी ! तू ने अपने शोहर को कैसा पाया ?” जवाब दिया : “वोह बेहतरीन शोहर हैं ।” फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को बुला कर इरशाद फ़रमाया : “अपनी जौजा से नर्मी से पेश आना, बेशक फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا मेरे जिस्म का टुकड़ा है, जो चीज़ इसे दुख देगी मुझे भी दुख देगी और जो इसे खुश करेगी मुझे भी खुश करेगी, मैं तुम दोनों को **आब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिपुर्द करता हूँ, और तुम दोनों को उस की हिफ़ाज़त में देता हूँ। उस ने तुम से नापाकी दूर कर दी और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दिया ।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** फ़रमाते हैं : “**اَللّٰهُ** **عَزَّ وَجَلَّ** की क़सम ! इस हुक्मे मुस्तफ़ा के बा’द मैं ने न तो कभी हज़रते फ़ातिमा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** पर गुस्सा किया न ही किसी बात पर उन्हें ना पसन्द किया यहां तक कि **اَللّٰهُ** **عَزَّ وَجَلَّ** ने उन को अपने पास बुला लिया, बल्कि वोह भी कभी मुझ से नाराज़ न हुई और न ही किसी बात में मेरी ना फ़रमानी की और जब भी मैं उन को देखता तो वोह मेरे दुख-दर्द दूर करती दिखाई देती ।”

(الرُّؤْيُ الْفَائِقُ، المجلس الثامن والاربعون في زواج علي بفاطمة..... الخ، ص ٢٤٨، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस से **اَللّٰهُ** व रसूल **عَزَّ وَجَلَّ** **وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** महबूबत करें उस को अजिय्यत व तकलीफ़ से बचाना और हर दम उस को खुश रखने की कोशिश करना हर सहीहुल अक़ीदा कामिल मुसलमान अपने ऊपर लाज़िम गरदानता (या’नी लाज़िम मानता) है, जैसे हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** ने नसीहते मुस्तफ़ा पर कारबन्द रहते हुए अपने ऊपर लाज़िम कर लिया था कि बिनते रसूल हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** पर गुस्से और ना पसन्दीदगी का इज़हार नहीं करना । और इस खुश गवार माहोल को मज़ीद तकविय्यत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के तर्ज़े अमल ने दी कि अपने शोहरे नामदार,

महबूबे हबीबे परवर दगार के दुख-दर्द दूर करने और उन को खुश रखने की कोशिश की, अगर बीवी सय्यिदए काएनात और शोहर मौलाए काएनात (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) के तर्जे अमल को अपना लें तो घर जरूर अमन का गहवारा बन जाएंगे।⁽¹⁾ क्यूंकि इन नुफूसे कुदसिय्या (या'नी पाकबाज लोगों) की हयाते तय्यिबा (या'नी पाकीजा जिन्दगी) का हर हर पहलू तमाम मुसलमानों के लिये मशअले राह (या'नी रहनुमा) है। आप से गुज़ारिश है कि तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल को अपना कर इन हज़राते वाला इज़्जत के नक़शे क़दम पर चलते हुए जिन्दगी गुज़ारना सीखें कि दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल बुराइयों से बचने और नेकियों पर कारबन्द रहने का ज़ेहन देता है। इस मदनी माहोल को अपना कर मुआशरे के कई बिगड़े हुए अफ़राद सुधरने में काम्याब हो गए, जैसा कि

मैं ने मदनी बुर्क़अ कैसे अपनाया ?

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 308 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “इस्लामी बहनों की नमाज़” सफ़हा 273 पर है : बाबुल मदीना (कराची) की एक

(1) अपने घरों को अमन का गहवारा बनाने के लिये शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की VCD “घर अमन का गहवारा कैसे बने ?” खुद भी देखिये और घर वालों को भी दिखाइये।

इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले मैं बहुत ज़ियादा फैशनेबल थी, फ़ोन के ज़रीए ग़ैर मर्दों से दोस्ती करने में बड़ा लुत्फ़ आता, पड़ोस की शादियों में रस्मे मेहंदी वगैरा के मौक़अ पर मुझे खा़स तौर पर बुलाया जाता, वहां मैं न सिर्फ़ खुद रक्स करती बल्कि दूसरी लड़कियों को भी डांडिया रास सिखा कर अपने साथ नचवाती, ला ता'दाद गाने मुझे ज़बानी याद थे, आवाज़ चूंकि अच्छी थी इस लिये मेरी सहेलियां मुझ से अकषर गाना सुनाने की फ़रमाइश किया करतीं। बद किस्मती से घर में **T.V** बहुत देखा जाता था, इस के बेहूदा प्रोग्रामों का मेरी तबाही में बहुत अहम किरदार था। रबीउन्नूर शरीफ़ की एक सुहानी शाम थी, नमाज़े मग़रिब के बा'द मेरे बड़े भाई घर आए तो उन के हाथ में मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की तीन केसिटें थीं, इन में से एक बयान का नाम “क़ब्र की पहली रात” था खुश किस्मती से मैं ने येह केसेट सुनने की सआदत हासिल की, क़ब्र का मर्हला किस क़दर कठिन है, इस का एहसास मुझे येह बयान सुन कर हुवा। मगर अफ़सोस ! मेरे दिल पर गुनाहों की लज़ज़त का इस क़दर ग़लबा था कि मुझ में कोई खा़स तब्दीली न आई। हां ! इतना फ़र्क़ ज़रूर पड़ा कि अब मुझे गुनाहों का एहसास होने लगा। कुछ ही दिन बा'द पड़ोस में दा'वते इस्लामी की जिम्मेदार इस्लामी बहनों ने ब सिलसिला “**ग्यारहवीं शरीफ़**” इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम किया। मुझे भी

शिकत की दा'वत दी गई। "क़ब्र की पहली रात" सुन कर मेरा दिल पहले ही चोट खा चुका था, चुनान्चे मैं ने जिन्दगी में पहली बार इजतिमाए ज़िक्रो ना'त में जाने का इरादा किया। मगर मेरी हमाक़त कि ख़ूब मेक-अप कर के जदीद फैशन का लिबास पहन कर इजतिमाअ में गई, एक इस्लामी बहन ने वहां सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया, जिसे सुन कर मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई। बयान के बा'द जब मन्क़बत "या गौष बुलाओ मुझे बग़दाद बुलाओ" पढ़ी गई। इस ने गोया गर्म लोहे पर हथोड़े का काम किया ! यूं मैं दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआत में शरीक होने लगी। मदनी आका की दीवानियों की सोहबतों की बरकत से मेरे दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हुई, तौबा की सआदत मिली। और الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर नेकियों की शाहराह पर ऐसी गामज़न हुई कि मैं वोही फैशन की पुतली जो कि पहले बाहर निकलते वक़्त दूपट्टा भी ठीक तरह से नहीं ओढ़ती थी, कुछ ही अर्से में मदनी बुर्क़अ पहनने की सआदत पाने लगी। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ आज मैं दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

(वसाइले बख़िश अज अमीरे अहले सुन्नत बरकतुهم العالیه स. 193)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ !

बयान नम्बर 7

खातूने जन्मत
और
उमूरे खानादारी

269

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ख़ातूने जन्नत और उमूरे ख़ानादारी

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 308 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "इस्लामी बहनों की नमाज़" सफ़हा 170 पर शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़ल फ़रमाते हैं कि ख़ातमुल मुरसलीन, रहूमतुल्लिल आलमीन, शफ़ीज़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आलमीन, जनाबे सादिक्को अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : जब जुमा'रात का दिन आता है **अब्बाह** फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के कागज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ मुज़ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ता है ।

(كُنزُ الْعُمَل، كتاب الاذكار، الباب السادس فى الصلاة عليه وعلى اله... الخ، ج ١، ص ٢٥٠، الحديث: ٤٢٠٤)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ!

इज़िदवाजी जिन्दगी

जिगर गोशए रसूल, हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बतूल
निकाह के बा'द जब हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल
मुर्तजा, शेरे खुदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौलत ख़ाने में तशरीफ़ लाई तो
घर के तमाम कामों की जिम्मेदारी आप पर आ पड़ी। आप
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस जिम्मेदारी को बड़े अहसन अन्दाज़ में निभाया
और हर तरह के हालात में अपने अज़ीमुल मर्तबत शोहर का
साथ दिया, चुनान्चे

घरेलू कामों की तक्सीम

हज़रते सय्यिदुना ज़मरा बिन हबीब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते
हैं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उमूरे ख़ानादारी (मषलन चक्की
पीसने, झाड़ू देने, खाना पकाने के काम वगैरा) अपनी शहज़ादी
हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सिपुर्द फ़रमाए
और घर से बाहर के काम (मषलन बाज़ार से सौदा सलफ़ लाना,
ऊंट को पानी पिलाना वगैरा) हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के जिम्मे लगा दिये।

(الْمُصَنَّفُ لِأَبِي أَبِي شَيْبَةَ، كِتَابُ الزَّهْدِ، كَلَامُ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، ج ٨، ص ٥٤، الْحَدِيثُ: ١٢)

एक रिवायत में है कि हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी वालिदए माजिदा हज़रते सय्यिदतुना
फ़ातिमा बन्ते असद (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) की खिदमत में अर्ज की :
“फ़ातिमतुज्ज़हरा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) आप की खिदमत और घर के
काम-काज किया करेंगी।” (الإصَابَةُ فِي تَمْيِيزِ الصَّحَابَةِ، ج ٨، ص ٢٩٤)

हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की सीरत का मुतालअा करने से पता चलता है कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا खानादारी के कामों की अन्जाम देही के लिये कभी किसी रिश्तेदार या हमसाई को अपनी मदद के लिये नहीं बुलाती थीं । न काम की कषरत और न किसी किस्म की मेहनत व मशक्कत से घबराती थीं । सारी उम्र शोहर के सामने हर्फें शिकायत ज़बान पर न लाईं और न उन से किसी चीज़ की फ़रमाइश की । खाने का उसूल येह था कि चाहे खुद फ़ाके से हों जब तक शोहर और बच्चों को न खिला लेतीं खुद एक लुक़्मा भी मुंह में न डालतीं ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि हैदरे करार, शेरे खुदा हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शहज़ादी, जन्नती औरतों की सरदार हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने घर में काम के लिये खादिम नहीं रखा बल्कि अपने घर के काम खुद किया करती थीं । हो सकता है कि किसी के ज़ेहन में आए कि वोह और दौर था अब और ज़माना है । तो सुनिये कि इस दौर की अज़ीम रूहानी शख़िस्सय्यत शैख़े तरिक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के घर में कभी कोई काम करने वाली नहीं रखी गई, इस में हर इस्लामी बहन, बिल खुसूस अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की मुरीद, त़ालिब या मुहिब्ब इस्लामी बहनो

के सीखने के लिये बहुत कुछ है। याद रहे ! फ़ारिग़ दिमाग़ शैतान का कारख़ाना होता है तो ज़ियादा मुनासिब येही है कि घर के काम-काज में लगी रहें, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** फ़रमाते हैं : करने के काम करो, वरना न करने के कामों में पड़ जाओगे।

घर के काम-काज करने के फ़ाइदे

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रिज़ाए खुदा व मुस्तफ़ा की खातिर घर का काम-काज खुद किया करें। घर के काम करने के भी बहुत से फ़ाइदे हैं और इस से भी बन्दा **عَزَّ وَجَلَّ** का कुर्ब हासिल करता है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 75 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "सीरते सय्यिदुना अबू दरदा" सफ़हा 62 पर है : हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की तरफ़ एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में येह भी था कि ऐ मेरे भाई ! मुझे मा'लूम हुवा है कि तूने एक ख़ादिम ख़रीदा है। मैं ने **عَزَّ وَجَلَّ** के हबीब, हबीबे लबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को इरशाद फ़रमाते सुना है कि "बन्दा जब तक किसी ख़ादिम से मदद नहीं लेता **عَزَّ وَجَلَّ** के क़रीब होता रहता है और जब वोह किसी ख़ादिम से ख़िदमत लेता है तो इस पर उस का हिसाब लाज़िम हो जाता है।" मेरी जौजा ने मुझ से एक ख़ादिम रखने का मुतालबा किया था लेकिन हिसाब के ख़ौफ़ से मैं ने उसे ना पसन्द जाना, हालांकि मैं उन दिनों मालदार था।

(حلية الاولياء، ابو الدرءاء، ج ١، ص ٢٤٢، رقم ٤٠٢)

जरा हम अपना मुहासबा भी कर लें कि हमारी कैफ़ियत क्या है ? और याद रखिये कि खातूने जन्नत हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का घर का काम खुद करना शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मरज़ी व मन्शा के मुताबिक़ था । यकीनन जो काम शाहे ख़ैरुल अनाम, महबूबे रब्बुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पसन्द फ़रमाएं वोह रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में भी पसन्दीदा और महबूब है । अब ज़रा ग़ौर फ़रमाइये कि जिस काम में खुदा व मुस्तफ़ा عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी हो उस से जी चुराना, जान छुड़ाना, सुस्ती करना कैसा ? घर में काम-काज की बरकत से भाई बहनों और मां बाप की मन्ज़ूरे नज़र बन जाएंगी । शादीशुदा हैं तो शोहर, नन्द और सास के दिलों में जगह बन जाएगी । अगर पहले से ही काम करने की आदत पड़ेगी तो शादी के बा'द घर संभालना आसान होगा और घर अम्न का गहवारा बन जाएगा, कई नादान वालिदैन् अपनी बच्चियों को काम नहीं करने देते । नतीजतन उन्हें खाना पकाने, बरतन धोने, कपड़े धोने, कपड़े सीने की तरबियत नहीं होती और शादी के बा'द आजमाइश होती है ।

घर में काम वाली रख सकते हैं या नहीं ?

अब येह भी मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये कि घर में काम वाली रख सकते हैं या नहीं । चुनान्चे दा'वते इस्लामी के

इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” सफ़हा 161 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा’वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी ज़ियाई **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** फ़तावा रज़विय्या के हवाले से फ़रमाते हैं :
सुवाल : घर में “काम वाली” रख सकते हैं ?

जवाब : रख तो सकते हैं मगर 5 शराइत के साथ

(1).... कपड़े बारीक न हों जिन से सर के बाल या कलाई वगैरा सित्र का कोई हिस्सा चमके । (2).... कपड़े तंगो चुस्त न हों जो बदन की हैअत (या’नी सीने का उभार या पिन्डली वगैरा की गोलाई वगैरा) ज़ाहिर करें । (3).... बालों या गले या पेट या कलाई या पिन्डली का कोई हिस्सा ज़ाहिर न होता हो । (4).... कभी ना महरम के साथ ख़फ़ीफ़ (या’नी मा’मूली सी) देर के लिये भी तन्हाई न होती हो । (5).... उस के वहां रहने या बाहर आने जाने में कोई मज़िन्नए फ़ितना (फ़ितने का गुमान) न हो । येह पांचों शर्तें अगर जम्अ हैं तो हरज नहीं । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 248)

(1) किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” पर्दे के मुतअल्लिक़ बेहतरीन किताब है, अपने मौजूअ पर जामेअ और बहुत आम फ़हम है, हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन के लिये यक्सां मुफ़ीद है, अपने शहर के मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन हासिल कीजिये या फिर दा’वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से पढ़ लीजिये या प्रिन्ट आऊट कर लीजिये ।

मगर इन पांच शराइत पर अमल फी जमाना मुश्किल तरीन है। अगर बे पर्दगी करने वाली हुई तो घर के मर्दों का बद निगाहियों में ले जाने वाली हरकतों से बचना सख्त दुश्वार होगा बल्कि **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ** घर की पर्दा नशीन ख़वातीन के अख़्लाक भी तबाह कर देगी। ग़ैर औरत के साथ मर्द की ख़फ़ीफ़ या'नी मा'मूली सी तन्हाई भी हराम है और घर में रहने वाले मर्द का आज कल इस से बचना तक़रीबन ना मुमकिन होता है। लिहाज़ा घर में काम वाली न रखने ही में आफ़िय्यत है।

बा'जू काम करने वालियां ऐसी भी होती हैं कि घरों में चोरियां करती हैं, मोबाइल ले जाती हैं, घरों में नाचाकियों का सबब बनती हैं, बे पर्दगी का सबब बनती हैं, बसा अवकात घरों में डकेतियों का बाइष बनती हैं, घर वाली को नशा आवर चीज़ पिला कर सोने के ज़ेवरात ले उड़ती हैं, अगर्चे सारी ऐसी नहीं होतीं, मगर ऐसी भी होती हैं, तो काम वालियों या काम वालों से बचने में ही आफ़िय्यत है।

ख़ालिक़ की ना फ़रमानी में किस्सी की इताअत जाइज नहीं

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तज़ा, शेरे खुदा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ** से रिवायत है, सरकारे मदीना, सुल्ताने बा करीना, करारे क़ल्बो सीना, फ़ैजे गन्जीना, साहिबे

मुअत्तर पसीना, बाइषे नुजूले सकीना का फ़रमाने बा करीना है : “ لَا طَاعَةَ فِي مَعْصِيَةِ اللَّهِ إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوفِ ” **अब्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ना फ़रमानी में किसी की इताअत जाइज़ नहीं, इताअत तो सिर्फ़ नेकी के कामों में है ।”

(صَحِيح مُسْلِم، كتاب الاماره، باب وجوب طاعة الامراء في غير... الخ، ص ٤٣٤، الحديث: ١٨٣٠)

इस हदीषे पाक में इरशाद फ़रमूदा लफ़ज़ “मा’रूफ़” की ता’रीफ़ बयान करते हुए मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيِّ फ़रमाते हैं : मा’रूफ़ वोह काम है जिसे शरीअत मन्अ न करे, मा’सिय्यत वोह काम है जिसे शरीअत मन्अ फ़रमा दे ।

(مرآة السائق شرح مشطوؤة المضائق، كتاب الامارة والقضاء، ج ٥، ص ٣٢٠)

अगर आप का घर से निकलना ज़रूरी हो तो शरई इजाज़त की सूरत में घर से निकलते वक़्त इस्लामी बहन ग़ैर जाज़िबे नज़र कपड़े का ढीला ढाला मदनी बुर्क़अ ओढ़े, हाथों में दस्ताने और पाउं में जुराबें पहने । मगर दस्तानों और जुराबों का कपड़ा इतना बारीक न हो कि खाल की रंगत झलके । जहां कहीं ग़ैर मर्दों की नज़र पड़ने का इमकान हो वहां चेहरे से निक़्ाब न उठाए मषलन अपने या किसी के घर की सीढ़ी और गली महल्ले वग़ैरा । नीचे की तरफ़ से भी इस तरह बुर्क़अ न उठाए कि बदन के रंग बिरंगे कपड़ों पर ग़ैर मर्दों की नज़र पड़े । वाजेह रहे कि औरत के सर से ले कर पाउं के गिट्टों के नीचे तक जिस्म का कोई भी हिस्सा मषलन सर के बाल या बाजू या कलाई या

गला या पेट या पिन्डली वगैरा अजनबी मर्द (या'नी जिस से शादी हमेशा के लिये हराम न हो) पर बिला इजाजते शरई ज़ाहिर न हो बल्कि अगर लिबास ऐसा महीन या'नी पतला है जिस से बदन की रंगत झलके या ऐसा चुस्त है कि किसी उज़्व की हैअत (या'नी शक्लो सूरत या उभार वगैरा) ज़ाहिर हो या दूपट्टा इतना बारीक है कि बालों की सियाही चमके येह भी बे पर्दगी है। मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, अलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइषे ख़ैरो बरकत हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो वज़ए लिबास (या'नी लिबास की बनावट) व तरीक़ए पौशिश (या'नी पहनने का अन्दाज़) अब औरात में राइज है कि कपड़े बारीक जिन में से बदन चमकता है या सर के बालों या गले या बाजू या कलाई या पेट या पिन्डली का कोई हिस्सा खुला हो यूं तो सिवा ख़ास महारिम के जिन से निकाह हमेशा को हराम है किसी के सामने होना सख़्त हरामे क़तई है। (फ़तावा रज़विख्या, जि. 22, स. 217)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

जहन्नम में औरतों की कषरत

आह! औरतों में बे पर्दगी और गुनाहों की कषरत होना इनतिहाई तशवीशनाक है, खुदा की क़सम! जहन्नम का अज़ाब बर्दाश्त नहीं हो सकेगा। “सहीह मुस्लिम” में है : हुज़ूर नबिय्ये

करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे इब्रत बुन्याद है : मैं ने जहन्म में मुलाहज़ा फ़रमाया कि औरतें जहन्म में ज़ियादा हैं ।

(صحيح مُسَلِّم، كتاب الرقاق، باب اكثر اهل الجنة الفقراء... الخ، ص ۲۲۸، الحديث: ۲۷۳۷)

येह शर्हे आयए इस्मत है जो है बेश न कम दिलो नज़र की तबाही है कुर्बे ना मह्रम हया है आंख में बाकी न दिल में ख़ौफ़े खुदा बहुत दिनों से निज़ामे हयात है बरहम येह सैरगाहें कि मक़तल हैं शर्मो ग़ैरत के येह मा'सियत के मनाज़िर हैं जीनते आलम येह नीम बाज़ सा बुर्क़अ येह दीदा ज़ैब निक्काब झलक रहा है झला-झल क़मीस का रेशम न देख रश्क से तहज़ीब की नुमाइश को कि सारे फूल येह कागज़ के हैं खुदा की क़सम ! वोही है राह तेरे अज़मो शौक़ की मंज़िल जहां हैं अइशा व फ़ातिमा के नक़शे क़दम

तेरी हयात है किरदारे राबिआ बसरी

तेरे फ़साने का मौजूअ इस्मते मरयम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَوَبُّوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

घर खुशियों का गहवारा कैसे बने ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! घर को खुशियों का गहवारा बनाने और महबूबत भरा माहोल काइम करने का एक तरीका येह है कि घर के तमाम अफ़राद अपने सिपुर्द कामों को

सर अन्जाम दें अगर ऐसा हो जाए तो किसी को भी शिकायत नहीं होगी और घर का निज़ाम अच्छे तरीके से चलता रहेगा और घर में मदनी माहोल भी बन जाएगा । लगे हाथों घर में मदनी माहोल बनाने के मदनी फूल भी मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ रिसाले “ख़ामोश शहज़ादा” सफ़हा 39 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ फ़रमाते हैं :

“या रूबी क़रीम ! हमें मुत्तक़ी बना” के उनीस हूस्फ़ की निश्चत से घर में मदनी माहोल बनाने के 19 मदनी फूल

- (1)..... घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये ।
- (2)..... वालिदा या वालिद साहिब को आते देख कर ता'जीमन खड़े हो जाइये ।
- (3)..... दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साहिब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाऊं चूमा करें ।
- (4)..... वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, इन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बात कीजिये ।
- (5)..... इन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शरअ न हो फ़ौरन कर डालिये ।
- (6)..... सन्जीदगी अपनाइये । घर में तू तुकार, अबे तबे, और मज़ाक़

मस्खरी करने, बात-बात पर गुस्से हो जाने, खाने में ऐब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझने, बहर्षे करते रहने की अगर आप की आदतें हों तो अपना रविय्या यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआफी तलाफी कर लीजिये ।

(7).... घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो **ان شاء الله عزوجل** घर के अन्दर (और बाहर) भी ज़रूर इस की बरकतें जाहिर होंगी ।

(8).... मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी “आप” कह कर ही मुख़ातिब हों ।

(9).... अपने महल्ले की मस्जिद में इशा की जमाअत के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये । काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए । वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज़्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअत) मुयस्सर आए और फिर काम-काज में भी सुस्ती न हो ।

(10).... घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गानों बाजों का सिलसिला हो और आप अगर सरपरस्त नहीं हैं, नीज़ ज़न्ने ग़ालिब है कि आप की नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका-टोक के बजाए सब को नर्मी के साथ मक्ताबतुल मदीना से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ओडियो केसिटें सुनाइये, विडियो सीडीज़ दिखाइये, मदनी चैनल दिखाइये, **ان شاء الله عزوجل** “मदनी नताइज” बर आमद होंगे ।

(11).... घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े सब्र सब्र और सब्र कीजिये । अगर आप ज़बान चलाएंगे तो “मदनी माहोल” बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता

है कि बे जा सख्ती करने से बसा अवकात शैतान लोगों को ज़िद्दी बना देता है ।

(12).... मदनी माहोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ येह भी है कि घर में रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर, ज़रूर, ज़रूर दीजिये या सुनिये ।

(13).... अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिल सोज़ी के साथ दुआ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है ”الدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ“ या’नी दुआ मोमिन का हथियार है ।

(الْمُسْتَذْرَكُ لِلْحَاكِمِ، كِتَابُ الدُّعَاءِ وَالتَّكْبِيرِ وَالتَّهْلِيلِ... الخ، بَابُ الدُّعَاءِ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ... الخ، ج ٢، ص ١٢٢، الْحَدِيثُ: ١٨٥٥)

(14).... सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए शरई न हो । हां ! येह एह्तियात ज़रूरी है कि बहू सुसर के हाथ-पाउं न चूमे, यूंही दामाद सास के ।

(15).... “मसाइलुल कुरआन” में है हर नमाज़ के बा’द येह दुआ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे । और घर में मदनी माहोल काइम होगा । (दुआ येह है :)

(اللَّهُمَّ) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿١٩٦﴾ (الفقران: ٤٢)

(اللَّهُمَّ) आयते कुरआनी का हिस्सा नहीं) या'नी ऐ हमारे रब्ब ! हमें दे हमारी बीबियों और हमारी अवलाद से आंखों की टंडक और हमें परहेजगारों का पेशवा बना ।

(مسائل القرآن، چند قرآنی اعمال، ص ۲۸۲)

(16).... ना फ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो 11 या 21 दिन तक उस के सिरहाने खड़े हो कर येह आयाते मुबारका सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़िये कि उस की आंख न खुले

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿١﴾ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿٢﴾ (پ ۳۰، البروج: ۲۲، ۲۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : **अव्वल** के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहूम वाला । बल्कि वोह कमाले शरफ़ वाला कुरआन है लौहे महफूज़ में ।

(अव्वल व आख़िर एक मरतबा दुरूद शरीफ़) याद रहे !

बड़ा ना फ़रमान हो तो सोते सोते सिरहाने वजीफ़ा पढ़ने में उस के जागने का अन्देशा है खुसूसन जब कि उस की नींद गहरी न हो, येह पता चलना मुश्किल है कि सिर्फ़ आंखें बन्द हैं, या सो रहा है लिहाज़ा जहां फ़ितने का ख़ौफ़ हो वहां येह अमल न किया जाए, ख़ास कर बीबी अपने शोहर पर येह अमल न करे ।

(17).... नीज़ ना फ़रमान अवलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़ज़्र के बा'द आस्मान की तरफ़ रुख़ कर के "يَا شَهِيدُ" 21 बार पढ़िये (अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़)

(18).... मदनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल की आदत बनाइये और घर के जिन अफ़राद के अन्दर नर्म गोशा पाएं उन में, और आप अगर बाप हैं तो अवलाद में नर्मी और हिक़मते अमली के

साथ मदनी इन्आमात का निफ़ाज़ कीजिये, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रहमत से घर में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा ।

(19).... पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के मदनी काफ़िले में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के घर वालों के लिये भी दुआ कीजिये । मदनी काफ़िले में सफ़र की बरकत से भी घरों में मदनी माहोल बनने की “मदनी बहारें” सुनने को मिलती हैं ।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ !
صَلَّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

खादिम के लिये दरख़्वास्त

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ से रिवायत है कि जनाबे सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللّهُ تَعَالَى عَنْهَا नबिय्ये करीम صَلَّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाज़िर हुई उस तकलीफ़ की शिकायत करने जो इन के हाथ को चक्की से पहुंचती थी इन्हें जब ख़बर मिली थी कि हुज़ूर صَلَّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास गुलाम आए हैं । इन्होंने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को न पाया तो हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللّهُ تَعَالَى عَنْهَا से येह किस्सा अर्ज़ किया । मज़ीद फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमारे पास तशरीफ़ लाए जब कि हम बिस्तर पकड़ चुके थे तो हम उठने लगे तो फ़रमाया : अपनी जगह रहो । तशरीफ़ लाए, मेरे और फ़ातिमतुज्ज़हरा (رَضِيَ اللّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) के दरमियान बैठ गए । हत्ता कि

मैं ने हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कदम की ठंडक अपने पेट पर महसूस की। फरमाया : “मैं तुम्हें तुम्हारे सुवाल से बेहतर चीज न बता दूं ? जब तुम अपने बिस्तर लो तो 33 बार سُبْحَانَ اللَّهِ 33 बार الْحَمْدُ لِلَّهِ और 34 बार اللَّهُ أَكْبَرُ पढ़ लो, येह तुम्हारे लिये खादिम से बेहतर है।”

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب مايقول عند الصباح والمساء والغنام، ج 1، ص 226، الحديث: 2384)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार खान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي “मिरआतुल मनाजीह” जिल्द 4 सफ़हा 7 पर इस हदीषे पाक की शर्ह में फरमाते हैं : हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हुजूर की सब से छोटी प्यारी-चहीती साहिबज़ादी थीं, शादी से पहले काम-काज न किया था। हज़रते अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के हां आ कर तमाम काम करने पड़े, काम से कपड़े काले और चक्की से हाथों में छाले पड़ गए थे जो फूट कर ज़ख़्म बन गए थे।

(जब हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हुजूर की बारगाह में हाज़िर हुईं) उस दिन हुजूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कियाम हज़रते उम्मुल मोअमिनीन आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर था, इस लिये खातूने जन्त उन्हीं के घर तशरीफ़ लाई, मगर इत्तिफ़ाक़न हुजूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बाहर थे। दौलत खाने में न थे इस लिये वालिदए माजिदा से अर्ज कर के वापस हो गई।

पर न थे दौलत कदे में शाहे दीं

वालिदा से अर्ज कर के आ गईं

खुद हज़रते सय्यिदुना अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को बताया था कि आज कैदी गुलाम हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हां आए हैं, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गुलाम बांट रहे हैं एक लौंडी तुम भी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मांग लो जो घर का काम-काज करे ।

घर में जब आए हबीबे किन्निया वालिदा ने माजरा सारा कहा
फ़ातिमा छाले दिखाने आई थीं घर की तकलीफें सुनाने आई थीं
एक लौंडी आप अगर इन को भी दें चक्की और चूलहे के दुख से वोह बचें

हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने न तो हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को कुछ जवाब दिया न दिन में हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के हां तशरीफ़ लाए, रात को सोते वक़्त तशरीफ़ लाए तो बिस्तरे फ़ातिमतुज्जहरा पर इस तरह तशरीफ़ फ़रमा हुए कि एक क़दम हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पर था दूसरा जनाबे अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सीनए पुर अन्वार पर, उस सीने के कुरबान जो क़दमे रसूल चूमे । मुफ़ती साहिब हदीषे मुबारक के इस हिस्से “मैं तुम्हें तुम्हारे सुवाल से बेहतर चीज़ न बता दूँ?” के तहत फ़रमाते हैं : “या’नी लौंडी ख़ादिम का फ़ाइदा तुम को सिर्फ़ दुन्या में पहुंचे मगर इस दुआ का फ़ाइदा दुन्या, क़ब्र, हशर

हर जगह पाओगी, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन्हें खादिम क्यूं न अता फ़रमाया ।”

शब को आए मुस्ताफ़ा ज़हरा के घर और कहा दुख़ार से ऐ जाने पिदर हैं यह खादिम उन यतीमों के लिये बाप जिन के जंग में मारे गए तुम पे साया है रसूलुल्लाह का आसरा रख फ़क़त **अब्बाह** का मुफ़्ती साहिब हदीषे मुबारक के इस हिस्से जब तुम अपने बिस्तर लो तो **33** बार **سُبْحَانَ اللَّهِ** **33** बार **الْحَمْدُ لِلَّهِ** और **34** बार **اللَّهُ أَكْبَرُ** पढ़ लो, यह तुम्हारे लिये खादिम से बेहतर है। के तहत फ़रमाते हैं : इस का नाम तस्बीहे फ़ातिमा है जो तमाम सिलसिलों में खुसूसन सिलसिलए क़ादिरिया में बहुत मा'मूल है, इस तस्बीह के लिये अ़ाम तस्बीहों में हर **33** दाने पर छोटा इमाम पड़ा होता है।

(مرآة المناجیح، کتاب الدعوات، باب ما یقول عند الصبح..... الخ، ج ۳، ص ۸)

हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मुहाजिर फुक़रा रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाज़िर हो कर बोले कि मालदार बड़े दर्जे और दाइमी ने'मत ले गए। फ़रमाया : यह कैसे ? अर्ज़ किया : जैसे हम नमाज़ें पढ़ते हैं वोह भी पढ़ते हैं, जैसे हम रोज़े रखते हैं वोह भी रखते हैं जब कि वोह ख़ैरात करते हैं हम नहीं करते, वोह गुलाम आज़ाद करते हैं हम नहीं करते। तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न

सिखाऊं जिस से तुम आगे वालों को पकड़ लो और पीछे वालों से आगे बढ़ जाओ और तुम में से कोई अफ़ज़ल न हो उस के सिवा जो तुम्हारे से काम करे ? बोले : हां ! या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! फ़रमाया : हर नमाज़ के बा'द 33-33 बार तस्बीह, तक्बीर और हम्द करो। हज़रते अबू सालेह عَنْهُ اللهُ تَعَالَى कहते हैं कि फिर मुहाजिर फुकरा हुजूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में लौटे और अर्ज किया : हमारे इस अमल को हमारे मालदार भाइयों ने सुन लिया तो उन्होंने ने भी यूं ही किया तब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि यह **अल्लाह** का फ़ज़ल है जिसे चाहे दे।

(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الصلاة، باب الترغيب في مكث المصلي..... الخ، ج ٢، ص ٢٦٥، ٢٦٦، ٣٠٢٣، ملقطاً)

हज़रते मुल्ला अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي “मिरकात शरहे मिशकात” में फ़रमाते हैं : सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जो तस्बीहात पढ़ने की ता'लीम फ़रमाई इस में येह हिक्मत भी है कि सोते वक़्त इन तस्बीहात के पढ़ने से दिन के काम-काज की थकन और दर्दों आलाम दूर हो जाते हैं।

(رِقَاةُ التَّفَاتِيحِ شَرْحُ مَشْكَاةِ التَّصَابِيحِ، كتاب الدعوات، باب ما يقول عند الصباح والمساء والمنام، ج ٥، ص ٣٠٠)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी बहनों के लिये जो 63 मदनी इन्आमात अता फ़रमाए हैं इन में मदनी इन्आम नम्बर 3 में है : “क्या आज आप ने नमाज़े पंजगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम

एक एक बार आयतुल कुर्सी, सूरए इख्लास और तस्बीहे फ़ातिमा पढ़ी ? नीज़ रात में सूरतुल मुल्क पढ़ या सुन ली ?”

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर आज से पहले तस्बीहे फ़ातिमा पढ़ने में सुस्ती थी तो अभी से निय्यत फ़रमा लीजिये और न सिर्फ़ तस्बीहे फ़ातिमा की बल्कि अमीरे अहले सुन्नत के अता कर्दा तमाम मदनी इन्आमात पर अमल की निय्यत कीजिये और मक्तबतुल मदीना के बस्ते से मदनी इन्आमात का रिसाला हासिल कीजिये इस के मुताबिक़ अपना मुहासबा फ़रमाइये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तरबियत व ता'लीम का ख़जाना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जि़क्र कर्दा हदीषे पाक में आप ने सुना कि सय्यिदा फ़ातिमा ने ख़ादिम की दरख़्वास्त की तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें प्यारे प्यारे मदनी फूल अता फ़रमाए । शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَلِيِّ मिरआतुल मनाजीह जिल्द 4 सफ़हा 8 पर हदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : मां बाप को चाहिये कि अपनी अवलाद को मेहनती, अ़ाबिद, ज़ाहिद, मुत्तकी बनाएं, उन्हें सिर्फ़ मालदार करने की कोशिश न करें । लड़की के लिये बेहतरीन जहेज़ आ'माले सालेहा हैं न कि सिर्फ़ माल ।

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰة المصابیح، کتاب الدعوات، باب مايقول عند الصباح..... الخ، ج 4، ص 8)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

खातूने जन्नत और घरेलू काम-काज

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا मेरे पास अपने हाथ से चक्की पीसती थीं जिस की वजह से हाथों में निशान पड़ गए थे और खुद पानी की मशक भर कर लाती थीं जिस की वजह से सीने पर मशक की रस्सी के निशान पड़ गए थे और घर में झाड़ू वगैरा खुद ही देती थीं जिस की वजह से तमाम कपड़े मैले हो जाया करते थे ।

(سُنَنُ أَبِي دَاوُدَ، كِتَابُ الْاَدَبِ، بَابُ فِي التَّسْبِيحِ عِنْدَ النَّوْمِ، ص ٢٩٠، الْحَدِيثُ: ٥٠٢٣)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! घर का काम-काज अपने हाथों से करना जिगर गोशए ताजदारे रिसालत, खातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन, उम्मुल हसनैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की सुन्नते मुबारका है । इस्लामी बहनें अपने काम खुद करेंगी तो उन का घर खुशियों का गहवारा बन जाएगा । अपने बच्चों के अब्बू के सोंपे हुए काम भी करें और अपनी सास के सोंपे हुए काम भी करें । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी बेटी की इसी तरह तरबियत फ़रमाई, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 86 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “सुन्नते निकाह” सफ़हा 48 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि

रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हवाले से मन्कूल है :

घर को खुशियों का गहवाश बनाने और आखिरत संवाशने के लिये “अब्बाए” की तरफ से “बिब्वे अब्बाए” के लिये 12 मदनी फूल

- ❶.... शोहर की तरफ से मिलने वाला हर हुक्म जो ख़िलाफ़े शरअ न हो, बजा लाना ज़रूरी है ।
- ❷.... अपने शोहर और सास का खड़े हो कर इस्तिक्बाल कीजिये और खड़े हो कर ही रुख़सत भी कीजिये ।
- ❸.... दिन में कम अज़ कम एक बार (मुमकिन हो तो) सास की दस्त बोसी कीजिये ।
- ❹.... अपनी सास और सुसर का वालिदैन की तरह इकराम कीजिये । इन की आवाज़ के सामने अपनी आवाज़ पस्त रखिये । इन के और अपने शोहर के सामने “जी जनाब” से बात कीजिये ।
- ❺.... शोहर ज़रूरतन सज़ा देने का मजाज़ है ।⁽¹⁾ ऐसा हो तो

(1).... मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَلِيِّ सूरतुनिसा की आयत नम्बर 34 के तहत लिखते हैं : रब्ब तआला ने यहां इन की (या'नी बीवियों की) इस्लाह की तीन सूरतें बयान फ़रमाई : (1).... नसीहत करना (2).... बाइकोट करना (3).... मारना । (मज़ीद लिखते हैं :) ना फ़रमानी पर ख़ावन्द मार सकता है मगर इस्लाह की मार मारे न कि ईज़ा (या'नी तकलीफ़ देने) की जैसे शागिर्द को उस्ताद या अवलाद को मां बाप इस्लाह के लिये मारते हैं । बिला कुसूर बीवी को मारना सख़्त ममनूअ है जिस की पकड़ रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हां ज़रूर होगी । (تفسير نعيمی، 5، النساء تحت الايه 34، ج 5، ص 40، ملتقطاً) । बहारे शरीअत में है : “बीबी नमाज़ न पढ़े तो शोहर उस को मार सकता है इसी तरह तर्के जीनत पर भी मार सकता है और (बिला इजाज़त) घर से बाहर निकल जाने पर भी मार सकता है ।” (बहारे शरीअत, मुतफ़र्रिकात, जि. 3 हिस्सा. 16 स. 655)

सब्रो तहम्मूल का मुज़ाहरा कीजिये, गुस्सा कर के या ज़बान दराज़ी कर के घर से रूठ कर आ जाने की सूरत में आप पर “मैके” के दरवाज़े बन्द हैं ।

﴿6﴾....हां ! बिगैर रूठे शोहर की इजाज़त की सूरत में जब चाहें मैके आ सकती हैं ।

﴿7﴾.... अपने मैके की कोताहियां शोहर को बता कर ग़ीबत के गुनाहे कबीरा में न खुद मुब्तला हों न अपने शोहर को “सुनने” के गुनाहे कबीरा में मुलव्वष करें ।

﴿8﴾.... अपनी बे अमली या ला इल्मी को ढांपने के लिये इस तरह कह देना कि मुझे तो वालिदैन ने येह नहीं सिखाया सख़्त हमाक़त है ।

﴿9﴾.... बहारे शरीअत हिस्सा 7 से “नान-नफ़का का बयान” “ज़ौजैन के हुकूक” वगैरा का मुतालआ कर लीजिये ।

﴿10﴾.... अपने लिये किसी किस्म का “सुवाल” अपने शोहर से कर के उन पर बोझ मत बनना । हां ! अगर वोह मुकर्रर कर्दा हुकूक अदा न करें तो मांग सकती हैं ।

﴿11﴾.... मेहमान की खिदमत सआदत समझ कर करना, इस के अख़राजात के मुआमले में शोहर पर बे जा बोझ मत डालना । अपने वालिद (या'नी सगे मदीना) से त़लब कर लेना, *إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ* मायूसी नहीं होगी और अगर वोह खुश दिली से रिज़ामन्द हों तो उन की सआदत मन्दी होगी ।

﴿12﴾.... शोहर की इजाज़त के बिगैर घर से न निकलें ।

(इस्लामी बहनों को चाहें तो तोहफ़े में इस तहरीर की फ़ोटो कौपी दे सकती हैं)

(3 सफ़रुल मुज़फ़र सि. 1418 हि.)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

हुकूके जौजैन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! घर को चलाने और इस को खुशियों का गहवारा बनाने में मियां और बीवी का बहुत किरदार है। अगर दोनों अपनी अपनी जिम्मेदारियां अदा करें तो घर खुशियों का गहवारा बन सकता है। मियां-बीवी के दरमियान हर एक के दूसरे पर बहुत से हुकूक़ वाजिब हैं इन में जो अपने हुकूक़ अदा न करेगा अपने गुनाह में गिरिफ़्तार होगा, अगर बीवी या शोहर में से एक हक़ अदा न करे तो दूसरा इसे दलील बना कर उस के हक़ की अदाएगी को नहीं छोड़ सकता। लिहाज़ा मियां-बीवी के हुकूक़ पर मुश्तमिल चन्द अह्दादीषे मुबारका पेश की जाती हैं।

“हुकूके शोहर” के झाठ हुशफ़ की निश्चत से शोहर के हुकूक़ से मुतअल्लिक 8 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू बुरैदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत

है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : अगर मैं किसी

शख्स को किसी के लिये सज्दा करने का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वोह अपने शोहर को सज्दा करे ।

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ، كتاب البر والصلة، حق الزوج على الزوجة، ج ٥، ص ٢٢٠، الحديث: ٤٣٠٦)

﴿2﴾..... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : अगर आदमी का आदमी के सिये सज्दा करना दुरुस्त होता तो मैं औरत को हुक्म देता कि अपने शोहर को सज्दा करे कि इस का उस के जिम्मे बहुत बड़ा हक़ है, क़सम है उस की जिस के कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर क़दम से सर की चोटी तक शोहर के तमाम जिस्म में ज़ख़्म हों जिन से पीप और कच-लहू (या'नी पीप मिला खून) बहता हो फिर औरत इसे चाटे तो हक़के शोहर अदा न किया ।

(مُسْتَدْرَأُ أَحْمَدَ، مسند أس بن مالك، ج ٥، ص ٢٣٥، الحديث: ١٢٩٣٩)

﴿3﴾..... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : शोहर ने औरत को अपने पास बुलाया उस ने इन्कार कर दिया और गुस्से में इस ने रात गुज़ारी तो सुब्ह तक उस औरत पर फ़िरिशते ला'नत भेजते रहते हैं ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، كتاب بدأ الخلق، باب إذا قال أحكم أمين والملائكة في السماء... الخ، ص ٨٢٩، الحديث: ٣٢٣٤)

और दूसरी रिवायत में है : जब तक शोहर उस से राज़ी न हो, **اَبْلَاهُ** عَزَّ وَجَلَّ उस औरत से नाराज़ रहता है ।

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ، كتاب النكاح، باب تحريم امتناعها من فراش زوجها، ص ٥٣٩، الحديث: ١٤٣٦)

﴿4﴾..... हज़रते सय्यिदुना मुअज़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है

कि हज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जब औरत अपने शोहर को दुन्या में ईज़ा देती है तो हूरे ऐन कहती हैं : खुदा अपने शोहर को दुन्या में ईज़ा देती है तो हूरे ऐन कहती हैं : खुदा अपने शोहर को दुन्या में ईज़ा न दे, यह तो तेरे पास मेहमान है, अज़ क़रीब तुझ से जुदा हो कर हमारे पास आएगा ।”

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، كِتَابُ الرِّضَاعِ، بَابُ مَلْجَأِهِ فِي كِرَاهِيَةِ الدَّخُولِ... الخ، ص ۳۰۵، الحديث: ۱۱۷۴، ملخصاً)

﴿5﴾..... हुस्ने अख़लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जो औरत इस हाल में मरी कि उस का शोहर उस से राज़ी था तो वोह जन्नत में दाख़िल होगी ।

(سنن ابن ماجه، كتاب النكاح، باب حق الزوج على المرأة، ص ۲۹۷، الحديث: ۱۸۵۴)

﴿6﴾..... खातमुल मुरसलीन, रहूमतुल्लिल अ़लमीन

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब औरत पांच वक़्त नमाज़ पढ़े, माहे रमज़ान के रोज़े रखे, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करे और अपने शोहर की फ़रमां बरदारी करे तो वोह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहेगी दाख़िल हो जाएगी ।”

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب النكاح، باب معاشرّة الزوجين،

ذكر ايجاب الجنة للمرأة اذا طاعت زوجها... الخ، ص ۱۱۷، الحديث: ۴۱۶۳)

﴿7﴾..... सय्यिदे अलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक शादीशुदा औरत (या'नी हज़रते सय्यिदुना हसीन बिन मोहसिन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की फूफी) से दरयाफ़्त फ़रमाया : “तेरा अपने शोहर से कैसा बरताव है ?” उस ने अर्ज़ की : “मैं ने उस की ख़िदमत में कोई कमी नहीं की लेकिन अब मैं उस से अज़िज़ आ गई हूँ ।” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “गौर करो ! तुम कैसे उस से अज़िज़ आ गई हो हालांकि वोह तो तेरी जन्मत और दोज़ख़ है ।”

(مسند احمد بن حنبل مسند القبائل، حديث عمّة حسين بن محسن، ج 11، ص 264، الحديث: 28113)

﴿8﴾..... उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका ف़रमाती हैं कि मैं ने रहमते अलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهَا की बारगाह में अर्ज़ की : “औरत पर सब से ज़ियादा हक़ किस का है ?” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “शोहर का ।” फिर मैं ने अर्ज़ की : “मर्द पर सब से ज़ियादा हक़ किस का है ?” इरशाद फ़रमाया : “उस की मां का ।” (المستدرک على الصحيحين، کتاب البر والصلّة،

باب اعظم الناس حقا على الرجل امه، ج 5، ص 232، الحديث: 1818)

बीवी के हुक्क के मुतअल्लिक चन्द अहादीषे मुबारक

मर्दों को भी औरतों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना चाहिये क्यूंकि औरत टेढ़ी पस्ली से पैदा की गई है इस लिये इस के टेढ़ेपन से ही फ़ाइदा उठाना चाहिये ।

﴿1﴾..... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा से मरवी है

कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मुसलमान मर्द औरते मोमिना को मबगूज़ न रखे अगर उस की एक आदत बुरी मा'लूम होती है दूसरी पसन्द होगी ।”

(صَحِيحُ مُسْلِم، کتاب الرضاع، باب الوصية بالنساء، ص ۱۵۵۶ الحدیث: ۱۴۶۹)

या'नी तमाम आदतें ख़राब नहीं होंगी जब कि अच्छी बुरी हर किस्म की बातें होंगी तो मर्द को येह न चाहिये कि ख़राब ही आदत को देखता रहे बल्कि बुरी आदत से चश्मपोशी करे और अच्छी आदत की तरफ़ नज़र करे ।

﴿2﴾..... हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तुम में अच्छे वोह लोग हैं जो औरतों से अच्छी तरह पेश आएंगे ।

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَةَ، کتاب النکاح، باب حسن معاشرۃ النساء، ص ۳۱۶، الحدیث: ۱۹۷۸)

﴿3﴾..... एक रिवायत में है : “औरत को गुलाम की तरह मारने का क़स्द करता है (या'नी ऐसा न करे) कि शायद दूसरे वक़्त उसे अपना हम ख़्वाब करे ।”

(صَحِيحُ الْبُخَارِي، کتاب التفسیر، سورة الشمس وضحها، ص ۱۲۷۶، الحدیث: ۴۹۴۲)

या'नी ज़ौजिय्यत के तअल्लुकात इस किस्म के हैं कि हर एक को दूसरे की हाज़त और बाहम ऐसे मरासिम कि इन को छोड़ना दुश्वार है लिहाज़ा जो इन बातों का ख़याल करेगा मारने का हरगिज़ क़स्द न करेगा ।

मियां-बीवी की इस्लाह के लिये निगराने शूरा का **VCD** बयान “शोहर को कैसा होना चाहिये ?” और “बीवी को कैसा होना चाहिये ?” मक्तबतुल मदीना से खुद भी हासिल कीजिये और दूसरी इस्लामी बहनों को भी इस की तरगीब दिलाइये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बीवी के जिम्मे शोहर के हुक्क

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शोहर के हुक्क औरत पर ब कषरत हैं और शोहर के हुक्क की अदाएगी औरत पर बहुत ज़ियादा लाज़िम और ज़रूरी है । औरत पर सब से बड़ा हक़ शोहर का है या'नी मां बाप से भी ज़ियादा । मर्द पर सब से बड़ा हक़ मां का है या'नी जौजा का हक़ इस से कम बल्कि बाप से भी कम । येह इस लिये कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी । وَاللّٰهُ تَعَالَى اَعْلَمُ ।

मेरे आका, आ'ला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن “फ़तावा रज़विय्या” जिल्द 24 में बीवी के जिम्मे शोहर के हुक्क बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : औरत पर मर्द का हक़ ख़ास उमूरे मुतअल्लिका जौजियत में **اَللّٰهُ** व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बा'द तमाम हुक्क हत्ता कि मां बाप के हक़ से जाइद है, इन उमूर में उस के अहक़ाम की इताअत और उस के नामूस की निगहदाशत औरत

पर फ़र्जे अहम है, बे इस के इज़्ज के (या'नी इस की इजाज़त के बिगैर) महारिम के सिवा कहीं नहीं जा सकती और महारिम के यहां भी मां बाप के यहां हर आठवें दिन वोह भी सुब्ह से शाम तक के लिये और बहन, भाई, चचा, मामूं, ख़ाला, फूपी के यहां साल भर बा'द और शब (या'नी रात) को कहीं नहीं जा सकती ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 24 स. 380)

एक और मक़ाम पर फ़रमाया : उमूरे मुतअल्लिक़ा ज़न-शवी में मुतलक़न उस की इताअत (या'नी मियां-बीवी से मुतअल्लिक़ मुआमलात में बीवी मुतलक़न शोहर की फ़रमांबरदारी करे) कि इन उमूर में उस की इताअत वालिदैन पर भी मुक़द्दम है, उस के नामूस की ब शिद्दत (या'नी सख़्ती से) हिफ़ाज़त, उस के माल की हिफ़ाज़त, हर बात में उस की ख़ैरख़्वाही (या'नी अच्छा चाहना), हर वक़्त उमूरे जाइज़ में उस की रिज़ा का तालिब रहना, उसे अपना मौला जानना, नाम ले कर न पुकारना, किसी से उस की बे जा शिकायत न करना, और खुदा عَزَّوَجَلَّ तौफीक़ दे तो बजा (या'नी दुरुस्त शिकायत) से भी एहतिराज़ करना (या'नी बचना), न बे उस की इजाज़त के आठवें दिन से पहले वालिदैन या साल भर से पहले और महारिम के यहां जाना, वोह नाराज़ हो तो उस की इन्तिहाई खुशामद कर के उसे मनाना (कि) अपना हाथ उस के हाथ में रख कर कहना कि येह मेरा हाथ तुम्हारे हाथ में है यहां तक कि तुम राज़ी हो या'नी मैं तुम्हारी ममलूका हूं जो चाहो करो मगर राज़ी हो जाओ ।

(ऐज़न, स. 371)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ!

दुन्यवी मुशिकलात पर सब्र की तलक्वीन

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदा फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को देखा, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ऊंट के बालों से बना मोटा लिबास पहने चक्की पीस रही थीं, नबियों के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आंखों से सैले अशक रवां हो गए फिर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “(आज) दुन्या की तंगी व सख्ती पर सब्र करो ताकि कल जन्नत की अबदी ने'मतें हासिल हों ।”

(كنز العمال، كتاب الفضائل، باب فضائل النبي ﷺ، ج ٢، ص ١٩٠، الحديث: ٣٥٢٤٠)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कैसी तरबियत थी कि इतने मसाइबो आलाम मगर ज़बां पर हर्फे शिकायत नहीं बल्कि राज़ी ब रिज़ा हैं अपनी तकलीफ़ का किसी से ज़िक्र नहीं करतीं और एक हम नादान हैं कि मा'मूली सी तकलीफ़ आ जाए तो आस्मान सर पे उठा लेती हैं । **अब्बाह** वाले मसाइब पर सब्र करते हैं और सब्र के बारे में तो हमारा रब्ब आयात नम्बर 200 में इरशादे खुदाए रहमान है :

”يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَبِرُوا وَاصْبِرُوا وَاصْبِرُوا وَأَطِئُوا وَأَطِئُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾“
तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ इमान वालो ! सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और **अब्बाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि काम्याब हो ।

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 244 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "बिहिशत की कुंजियां" सफ़हा 220 पर शैखुल हदीष हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि सब्र तीन हैं : (1).. मुसीबत पर सब्र (2).. इबादत पर सब्र (3).. गुनाह से सब्र, तो जो मुसीबत पर सब्र करे यहां तक कि मुसीबत को अच्छी तसल्ली से दूर कर दे तो **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये 300 दर्जे लिख देता है जिस के दो दर्जों के दरमियान इतना फ़ासिला होता है जितना कि ज़मीनो आस्मान के दरमियान है और जो इबादत पर सब्र करता है **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये 600 दर्जे लिख देता है जिस के दो दर्जों के दरमियान इतना फ़ासिला होता है जितना कि ज़मीन की निचली कीचड़ और तमाम ज़मीनों के मुन्तहा के दरमियान फ़ासिला है और जो गुनाह से सब्र करे तो **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये 900 दर्जे लिख देता है जिस के दो दर्जों के दरमियान इतना फ़ासिला होता है जितना की ज़मीन की निचली कीचड़ों और अर्श के मुन्तहा के दरमियान के दो गुने के दरमियान फ़ासिला है ।

(كَنْزُ الْعُمَالِ، ج ٣ كتاب الاخلاق، فضيلة الصبر، ص ١١١، الحديث: ٦٥١٢)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

तशरीहात व फ़वाइद

सब्र के मा'ना "حَبْسُ النَّفْسِ عَلَى الْمَكَارِهِ" या'नी नफ़्स को तकलीफ़ों के ऊपर रोके रहना और कन्ट्रोल में रखना, अब गौर कीजिये कि सब्र की तीनों किस्मों पर येह ता'रीफ़ सादिक् आती है।

(1).... صَبْرٌ عَلَى الْمُصِيبَةِ या'नी "मुसीबत पर सब्र" : ज़ाहिर है कि मुसीबत के वक़्त नफ़्स में बड़ी बेचैनी और बे करारी पैदा होती है और बा'ज़ मरतबा ऐसी बोखलाहट बल्कि जुनून व दीवानगी की कैफ़ियत पैदा हो जाती है कि इन्सान रोने पीटने, बाल नोचने और कपड़े फाड़ने लगता है अब इसी मौक़अ पर अपने नफ़्स को रोने पीटने और जज़अ व फ़ज़अ की हरकतों से रोके रहना येही "मुसीबत पर सब्र करना" है।

(2).... صَبْرٌ عَلَى الطَّاعَةِ या'नी "इबादत पर सब्र" : ज़ाहिर है कि गर्मियों का रोज़ा हो और आदमी प्यास की शिदत से बे करार हो और सामने ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा शरबत रखा हुवा हो नफ़्स बार बार शरबत की तरफ़लपक्ता है मगर रोज़ादार नफ़्स को रोकेहुए है जो नफ़्स पर गिरां और शाक़ है येही "इबादत पर सब्र करना" है।

(3).... صَبْرٌ عَنِ الْمَعْصِيَةِ या'नी "गुनाह से सब्र" : जवान आदमी है, शहवत का ग़लबा शबाब पर है, बदकारी के लिये नफ़्स बे करार है मगर परहेज़गार मुसलमान (मर्दों औरत) अपने नफ़्स को रोके हुए है और बदकारी से बचा हुवा है। येही "गुनाह से सब्र करना" है।

हदीष में आप ने पढ़ लिया कि सब्र की इन तीनों किस्मों का बड़ा दरजा है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया :

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٥٧﴾

(प २१ البقرة: १५३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक

अल्लाह साबिरों के साथ है।

सब्र करने वालों के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इमदाद व नुस्त होती है और साबिरीन का मददगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ होता है। **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** इस से बढ़ कर सब्र का अज़्रो षवाब क्या होगा कि खुद खुदा **عَزَّوَجَلَّ** साबिरीन के साथ होता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि कुछ अन्सारी लोगों ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुवाल किया। हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें दिया। उन्होंने ने फिर मांगा हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अता फ़रमाया हत्ता कि वोह माल जो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास था ख़त्म हो गया, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाया : जो कुछ माल मेरे पास होगा वोह तुम से हरगिज़ बचा न रखूंगा और जो सुवाल से बचना चाहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बचाएगा और जो ग़नी बनना चाहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ग़नी कर देगा और जो सब्र चाहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सब्र अता करेगा और किसी को सब्र से बेहतर और वसीअ कोई चीज़ न मिली।

(سُنَنُ الدَّارِمِيِّ، كِتَابُ الزَّكَاةِ، بَابُ فِي الاسْتِعْفَافِ عَنِ الْمَسْأَلَةِ، ص २८१، الْحَدِيثُ: १६५२)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार खान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنَى इस हदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : वोह हज़रत मांगते रहे और हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ देते रहे उन्हें सब कुछ दे कर मस्अला बताया, इस में तल्लीग़ भी है और सखावते मुतलका का इज़हार भी । खयाल रहे कि जिस को हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कुछ खुश हो कर दिया है वोह बहुत अर्से तक ख़त्म न हुवा, चुनान्चे हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا और हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को थोड़े थोड़े जव अता फ़रमाए थे जो उन बुजुर्गों ने सालहा साल खाए और खिलाए, फिर जब तोले तो उतने ही थे मगर तोलने से ख़त्म हो गए । हज़रते सय्यिदुना तल्हा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हां साढ़े चार सेर (तक़रीबन चार किलो) जव की रोटी पर सेंकड़ों आदमियों की दा'वत फ़रमाई । रब्ब तअला फ़रमाता है : اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي يَا'नी मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब रहता हूं । इस का जुहूर आख़िरत में तो होगा ही, कि अगर बन्दा मुआफ़ी की उम्मीद करता हुवा मर जाए तो ان شاء الله عزوجل उसे मुआफ़ी ही मिलेगी, अक़षर दुन्या में भी हो जाता है कि जो क़र्ज न लेने न मांगने का खुदा के भरोसे पर पूरा इरादा कर ले तो **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ उसे इन से बचा ही लेता है और जो येह कोशिश करे कि दुन्या वालों से ला परवाह रहूं तो

बहुत हृद तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ला परवाह ही रखता है, मगर येह फ़क़त ज़बानी दा'वा न हो अमली कोशिश भी हो कि कमाने में मशगूल रहे, खर्च दरमियाना रखे, गुलछर्रे न उड़ाए **अल्लाह** व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सच्चे हैं इन के वा'दे हक़, ग़लती हम कर जाते हैं ।

“जो सब्र चाहे **अल्लाह** तअ़ाला उसे सब्र अ़ता करेगा” इस के तहत मुफ़ती साहिब फ़रमाते हैं : रब्ब तअ़ाला की अ़ताओं में से बेहतरीन और बहुत गुन्जाइश वाली अ़ता सब्र है कि रब्ब तअ़ाला ने इस का ज़िक्र नमाज़ से पहले फ़रमाया :

اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ (پ २, البقرة: १५३)

(तर्जमए कन्ज़ुल इम़ान : सब्र और नमाज़ से मदद चाहो)

और साबिर के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ होता है, नीज़ सब्र के ज़रीए इन्सान बड़ी बड़ी मशक्कतें बरदाश्त कर लेता है और बड़े बड़े दर्जे हासिल कर लेता है, रब्ब तअ़ाला ने हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلِيَّ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के बारे में फ़रमाया :

(پ २३, ص: २२) اِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا يَا'नी हम ने इन्हें बन्दए साबिर पाया ।

“सब्र ही की बरकत से हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सय्यिदुशुहदा हुए ।”

(مِرَاةُ الْمَنَاجِيحِ شَرْحُ مَشْكَوَةِ الْمَصَابِيحِ، كِتَابُ الزَّكَاةِ، بَابُ لَا تَحِلُّ لَكَ الْمَسْأَلَةُ وَمَنْ تَحَلَّ لَهُ، ج ३، ص १०، ملئقطاً)

सब्र की हकीकत

कुतबे रब्बानी, गौषे समदानी हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी قُدَسَ سَيِّدُهُ النُّوْرَانِ से सब्र के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “सब्र येह है कि बला व मुसीबत के वक़्त **اَبْوَاه** عَزَّوَجَلَّ के साथ हुस्ने अदब रखे और उस के फ़ैसलों के आगे सरे तस्लीम ख़म कर दे।”

(बहजतुल असरार (मुतर्जम) स. 417)

अब्दाजे अमीरे अहले सुन्नत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 101 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “ता'रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत” सफ़हा 47 पर है : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के महल्ले में रहने वाले एक इस्लामी भाई ने जो आप को बचपन से जानते हैं, हल्फ़िया बताया कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ बचपन में भी निहायत ही सादा तबीअत के मालिक थे। अगर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ को कोई डांट देता या मारता तो इन्तिक़ामी कार-रवाई करने की बजाए ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाते। हम ने इन्हें बचपन में भी कभी किसी को बुरा भला कहते या किसी के साथ झगड़ा करते हुए नहीं देखा।

यकीनन इस्लामी बहनों के लिये खातूने जन्त की इत्तिबाअ में बेहतरीन अज्रो षवाब और अफ़ियत ही अफ़ियत है चुनान्चे तिरमिज़ी शरीफ़ “किताबुल मनाकिब” में है : सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना का फ़रमाने बा करीना है : “तुम्हें तक़लीद के लिये तमाम दुन्या की औरतों में मरयम बन्ते इमरान ख़दीजा बन्ते ख़ुवैलिद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़ातिमा बन्ते मुहम्मद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا और फिराउन की बीवी आसिया काफ़ी हैं ।”

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، ابواب المناقب، باب فضل خديجة رضى الله عنها، ص ٨٤٣، الحديث: ٣٨٩٣)

शहज़ादिये कौनैन, उम्मुल हसनैन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की इत्तिबाअ की नियत कीजिये ख़ूब अज्रो षवाब हासिल होगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

छोटे भाई की इनफ़िशदी कोशिश

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इल्मे दीन हासिल करने, हुकूको फ़राइज़ सीखने, हलाकत से खुद को बचाने और मग़फ़िरत पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा मदनी माहोल भी है । बसा अवक़ात एक फ़र्द की दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्तगी घर भर की इस्लाह का सबब बन जाती है ऐसी बीसियों बहारें मौजूद हैं,

एक मदनी बहार मुलाहज़ा हो चुनान्वे बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि हमारा घराना बहुत मोडर्न था। घर के अफ़राद फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों के रसिया थे। खुदा का करना यूं हुवा कि मेरे छोटे भाई पर एक इस्लामी भाई ने इनफ़िरादी कोशिश की। इस पर उन्होंने ने दा'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत की सअ़ादत पाई। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ। इजतिमाअ में मुसल्लसल हाज़िरी से भाई के किरदार में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, नमाज़ों के पाबन्द हो गए, सुन्नतों पर अमल की कोशिश और घर वालों की इस्लाह की फ़ि़क़्र में रहने लगे। वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतें बताते और हमें इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत की रग़बत दिलाते। उन की मुसल्लसल इनफ़िरादी कोशिश बिल आख़िर रंग लाई और मैं ने इस्लामी बहनों के इजतिमाअ में शिर्कत की सअ़ादत पाई, वहां के माहोल की रूहानिय्यत और सुन्नतों भरे बयान ने मुझ पर अजीब कैफ़िय्यत तारी कर दी, दुआ के दौरान मैं ने ख़ूब रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल को कभी न छोड़ने का अज़मे मुसम्मम किया। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ। इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इजतिमाआत में पाबन्दी से शिर्कत की ब दौलत ख़ौफ़े खुदा और इश्के मुस्तफ़ा बढ़ाने का ज़ब्बा नसीब हुवा। दा'वते

इस्लामी के सद्के हमारे घर का बिगड़ा हुआ माहोल मदनी माहोल में तब्दील हो गया। घर वालों की बा-हमी रिज़ा मन्दी से T.V निकाल दिया गया क्यूंकि इस के होते हुए फ़िल्मों डिरामों से बचना बेहद दुश्वार है और अब हमारे घर में फ़िल्में डिरामे और गाने नहीं बल्कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ना'तों के तराने सुने जाते हैं। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 62)

न मरना याद आता है न जीना याद आता है

मुहम्मद याद आते हैं मदीना याद आता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बिगैर हिम्मत हारे ख़ूब ख़ूब इनफ़िरादी कोशिश करती रहें إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ नाकामी नहीं होगी। इस ज़िम्न में अगर कोई तकलीफ़ भी पहुंच जाए तो सब व शिकैबाई का दामन हाथ से मत छोड़िये कि आने वाली मुसीबत إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ बहुत बड़ी भलाई का पेश ख़ैमा षाबित होगी। हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रूह परवर है :
“अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे मुसीबत में मुब्तला फ़रमा देता है।”

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، كتاب المرضي، باب ماجاء في كفارة المرض، ص ۱۴۳۲، الحديث: ۵۶۴۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

बयान नम्बर 8

ख़ातूने जन्नत
का
पर्दे का एहतिमाम

311

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खातूने जन्नत का पर्दे का एहतिमाम

दुश्बद शरीफ़ की फज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना इमाम शमसुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुरहमान सखावी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الشَّافِي नक़ल फ़रमाते हैं :
हज़रते सय्यिदुना शैख़ शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मेरा एक पड़ोसी फ़ौत हो गया। मैं ने उसे ख़्बाब में देखा और पूछा :
؟ عَزَّ وَجَلَّ **अब्बाह** या'नी **مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ** ?
फ़रमाया ? उस ने कहा : ऐ शिबली ! मुझ पर बहुत बड़ी मुसीबतें आईं हत्ता कि सुवाल के वक़्त मेरी ज़बान बन्द हो गई। मेरे दिल में ख़याल आया कि मुझ पर येह आज़माइश कहां से आई, क्या मेरी मौत इस्लाम पर नहीं हुई ? तो निदा आई कि येह परेशानियां दुन्या में ज़बान की ग़फ़लत की वजह से हैं। इसी दौरान जब (अज़ाब के) फ़िरिश्ते मेरे क़रीब आने लगे तो एक ख़ूबसूरत उम्दा खुशबू वाला शख़्स मेरे और फ़िरिश्तों के दरमियान हाइल हो गया और उस ने मुझे जवाबात याद करवाए जो मैं ने फ़िरिश्तों के सामने पेश कर दिये (तो मेरी जां बख़्शी हो गई)। मैं ने उस (नूरानी) शख़्स से पूछा : **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए !
आप कौन हैं ? उस ने कहा : मैं एक ऐसा शख़्स हूं जिस को तेरे नबिय्ये अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर ब कषरत दुरुदे पाक

पढ़ने की वजह से पैदा किया गया है। अब मुझे तुम्हारी हर तकलीफ़ पर मदद करने का हुक्म दिया गया है।

(الْقَوْلُ الْبَدِيعُ، الباب الثانی فی ثواب الصلاة علی رسول الله، ص ۱۲۷)

हज़रते अल्लामा किफ़ायत अली काफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الشَّافِي
फ़रमाते हैं :

نَجْزٍ مِّنْ غَوْرٍ مِّنْ كِيَامَتٍ مِّنْ

हर जगह यारे ग़मगुसार है दुरूद

(काफ़ी की ना'त, अज़ मौलाना किफ़ायत अली काफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الشَّافِي)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

मुनादी की निदा बशाए सय्यिदा फ़ातिमा

हाफ़िज़ुल हदीष हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुरहमान जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الشَّافِي ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तज़ा, शोरे ख़ुदा से रिवायत की है कि सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोहूतशम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे मुअज़्ज़म है : “जब क़ियामत का दिन होगा तो एक मुनादी निदा करेगा, ऐ अहले मज्मअ ! अपनी निगाहें झुका लो ताकि हज़रते फ़ातिमा बिनते मुहम्मदे मुस्तफ़ा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) पुल सिरात से गुज़रें।”

(الْجَامِعُ الصَّغِيرُ مَعَ فَيْضِ الْقَدِيرِ، حر ف الهمزة، ج ۱، ص ۵۳۹، الحديث: ۸۲۲)

अब्बाह रब्बुल इज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो।

أصوين بجا لا النبي الأمين صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वोह रिदा जिस की ततहीर **अल्लाह** रे आस्मां की नज़र भी न जिस पर पड़े
जिस का दामन न सहवन हवा छू सके जिस का आंचल न देखा मह व मिहर ने

उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बा इज़्ज़त व बा वफ़ा,

पैकरे शर्मो हया मुहम्मदुरसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की
साहिबज़ादी और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आगोश में तरबियत
पाने वाली शहज़ादी ज़ौजए अली हज़रते सय्यिदतुना
फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के मक़ामो मर्तबे की एक झलक
अज़ रूए हदीष आप ने मुलाहज़ा फ़रमाई कि **अल्लाह** रब्बुल
इज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को पर्दादार रहने का एक
सिला येह दिया कि रोज़े मेहशर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की खातिर
अहले मेहशर को निगाहें झुकाने का हुक्म सादिर किया जाएगा
क्यूंकि येह वोह अफ़ीफ़ व तय्यिब शख़िसय्यत हैं जिन्हों ने सारी
ज़िन्दगी बल्कि बा'द अज़ विसाल भी अपने परदे का ख़याल
रखा । तो जो अपनी आदात निखारने और अपने हालात सुधारने
का मुतमन्नी और इस के लिये कोशां होता है **अल्लाह** तबारक
व तअ़ला उस का हामी व नासिर होता है । उसे उस की कोशिशों
का बदला उस की निय्यतों के मुताबिक़ अपने फ़ज़लो करम से
दुन्या या आख़िरत या दोनों जहां में अता फ़रमाता है । पस जो
शख़्स अपनी इज़्ज़त को ख़राब और अपने वक़ार को मजरूह

नहीं होने देता उस के लिये मुअज़्ज़ज़ व बा वकार बनना और इसी हालत पर काइम रहना आसान होता है। औरत के मुअज़्ज़ज़ व बा वकार होने और रहने में शरई पर्दे का बहुत बड़ा दख़ल है। जो इस्लामी बहन पर्दादार होती है वोह मुअज़्ज़ज़ होती है उस का मुआशरे में भी मक़ाम होता है और बारगाहे रब्बुल अनाम में भी। पैकरे इफ़फ़तो अज़मत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के नक़्शे क़दम पर चल कर चादर और चार दीवारी को अपने ऊपर लाज़िम कर लेने वाली इस्लामी बहन **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** खातूने जन्नत के जिलौ में जगह पाएगी और जिसे अपने पर्दे का ख़याल नहीं, तो उस के लिये मुआशरे में इज़्ज़त पाना और अपना मक़ाम बनाना बहुत मुश्किल है। क्यूंकि मुआशरा और अफ़ादे मुआशरा उसी को इज़्ज़त देते हैं जो अपनी इज़्ज़त का ख़याल रखता है। जो जिस ख़स्लत का अ़ादी होता है लोग उस की उसी ख़स्लत का लिहाज़ रखते हैं, इज़्ज़त उसी की होती है जो अपनी इज़्ज़त संभालता है जैसे महबूबे मुस्तफ़ा, सय्यिदुल अस्ख़िया उषमाने बा हया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के बारे में मन्कूल है कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बहुत बा हया थे, इस ख़स्लते बा अज़मत ने आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को येह इज़्ज़त दी कि सय्यिदुल अम्बिया (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) और मलाइकए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام भी आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से हया फ़रमाते थे जैसा कि

बा हया से हया

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 649 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "हिकायतें

और नसीहतें” सफ़हा 598 पर हज़रते सय्यिदुना शैख़ शोऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हदीषे पाक नक्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबी तालिब (كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ) से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सरापा बरकत है :

اَللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ अबू बक्र पर रहूम फ़रमाए, उन्होंने ने अपनी बेटी मेरी जौजिय्यत में दी, मुझे अपनी ऊंटनी पर सुवार कर के मदीनए पाक ले गए और बिलाल (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) को अपने माल से आज़ाद किया । **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ उमर (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) पर रहूम फ़रमाए, वोह हक़ बोलते हैं अगर्चे कड़वा हो । **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ उषमाने ग़नी (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) पर रहूम फ़रमाए, मलाइका इन से हया करते हैं । **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) पर रहूम फ़रमाए, या **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) जहां चले हक़ को इस के साथ चला दे ।

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، ابواب المناقب عن رسول الله، باب مناقب علي بن ابي طالب، ص ٨٣٦، الحديث: ٣٤٢٣)

हयाए उषमानी

उम्मुल मोअमिनीन बिनते अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बयान करती हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे घर में तशरीफ़

फरमा थे इस अलम में कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दोनों मुबारक पिन्डलियां कुछ ज़ाहिर थीं। इस दौरान हज़रते अबू बक्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आए और इजाज़त त़लब की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें इजाज़त अता फ़रमाई और इसी तरह आराम फ़रमा रहे और गुफ़्तगू फ़रमाते रहे। फिर हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इजाज़त त़लब की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें भी इजाज़त मर्हमत फ़रमाई जब कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ इसी तरह लैटे रहे और गुफ़्तगू फ़रमाते रहे। फिर हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इजाज़त त़लब की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ उठ कर बैठ गए और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये। हज़रते सय्यिदुना उषमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ भी बातें करते रहें। जब वोह चले गए तो हज़रते सय्यिदुना आइशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं, मैं ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब हज़रते अबू बक्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन के लिये कोई फ़िक्रो एहतिमाम नहीं किया, जब हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आए तब भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने कोई एहतिमाम नहीं किया लेकिन जब हज़रते उषमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ उठ कर बैठ गए और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये। रसूले रहमत, नबिय्ये रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

“मैं उस शख़्स से कैसे हया न करूं जिस से
फ़िरिश्ते भी हया करते हैं।”

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ، كِتَابُ فَضَائِلِ الصَّحَابَةِ، بَابُ فَضَائِلِ عِثْمَانَ بْنِ عَفَّانٍ، ص ٩٣٤، الْحَدِيثُ: ٢٣٠١)

अब्लाह रब्बुल इज्जत عُزُّوْ حَلِّ وَحَلِّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मगफिरत हो।

اصيبن بجا لا النبي الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

उलुव्वए शान का क्यूं कर बयां हो आप की प्यारे
हया करती है मौला आप से मख्लूके नूरानी

(वसाइले बख़ि़श अज अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتهم العالیه स. 498)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा दुन्या में बहुत

ज़ियादा पैकरे शर्मो हया और बा पर्दा रहीं तो उन्हें इस के सिले में रोज़े मेहशर भी बा पर्दा रखा जाएगा, हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी ज़िन्दगी बा हया गुज़ारी इस के सिले में रोज़े मेहशर इन का हिसाब ही नहीं होगा, जैसा कि महबूबे रहमान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : (हज़रते) उषमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बहुत ज़ियादा हया करने वाले शख्स हैं, मैं ने **अब्लाह** तअ़ाला से दुआ मांगी है कि वोह उषमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से हिसाब न ले तो **अब्लाह** तअ़ाला ने मेरी सिफ़ारिश कबूल फ़रमाई ।

(کنز العمال، کتاب الفضائل، ذکر الصحابة وفضلهم، ج ۱، ص ۲۹۲، الحديث: ۳۳۰۹۲)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

जन्नत में भी पर्दा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम ने औरत के हक में पर्दे को किस क़दर अहम्मियत दी कि जन्नत जहां किसी बद निगाही और बदकारी का वहमो गुमान तक नहीं वहां भी जन्नती औरतें और हूरें पर्दे में होंगी जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन क़ैस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि रसूले खुदा, अहमदे मुज्ताबा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है : (मोमिन के लिये) जन्नत में एक खोखले मोती का खैमा होगा जिस की चौड़ाई या लम्बाई 60 मील (तक़रीबन 96.54 किलो मीटर) की है इस के हर गोशे में उस के घर वाले होंगे कि दूसरों को न देख सकेंगे । मोमिन इस खैमे में घूमें फिरेंगे ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، كِتَابُ التَّفْسِيرِ، بَابُ حُورٍ مَقْصُورَاتٍ فِي الْخِيَامِ، ص ٢٥٠، الْحَدِيثُ: ٢٨٤٩)

बयान कर्दा हदीषे पाक की शर्ह करते हुए हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَنِي “मिरआतुल मनाजीह शर्हे मिश्कातुल मसाबीह” में रक़म तराज़ है : “या’नी इस मोती के मकान के चारों गोशों में उस के मुख़्तलिफ़ घर वाले आबाद होंगे । कहीं अपनी दुन्यावी बीवी बच्चे, कहीं वोह दुन्यावी औरतें जिन के ख़ावन्द काफ़िर मरे और इन के निकाह में दी गई, कहीं वोह कंवारी लड़कियां जो दुन्या में बिगैर शादी फ़ौत हुई, कहीं हूरें, खुद्दाम इन के इलावा इन्हें एक दूसरे को न देखना

फ़ासिले की वजह से न होगा कि जन्नती मोमिन की निगाह बहुत दूर से देखेगी बल्कि इन जगहों में इमारतें मुख़्तलिफ़ होंगी कोठियां, बंगले। ख़याल रहे कि जन्नत में पर्दा होगा। रब्ब फ़रमाता है : ” حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْبُيُوتِ (پ ۲۷، الرَّحْمَنُ: ۷۲) : (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हूरें हैं खैमों में पर्दा नशीन) ” और फ़रमाता है : (فُصْرَاتُ الظَّرْفِ (پ ۲۷، الرَّحْمَنُ: ۵۶) : (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह औरतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखती।) ” पर्दा इस लिये नहीं होगा कि वहां लोग फ़ासिक़ो फ़ाजिर होंगे बल्कि इस लिये कि शर्मो हया अच्छी चीज़ है, बे पर्दगी में बे शर्मो है, हां ! दोज़ख़ में पर्दा नहीं होगा वहां नंगे मर्दो औरत एक ही तन्नूर में जलेंगे।

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰة المناجیح، کتاب احوال قیمة و بدء الخلق، باب صفه الجیز و اصلاحها، ج ۷، ص ۷۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बीबी फ़ातिमा के कफ़न का भी पर्दा

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” सफ़हा 200 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के विसाले नक़ल फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जाहिरी के बा'द ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا पर ग़मे मुस्तफ़ा का

इस क़दर ग़लबा हुवा कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के लबों की मुस्कुराहट ही ख़त्म हो गई ! अपने विसाल से क़ब्ल सिर्फ़ एक ही बार मुस्कुराती देखी गई । इस का वाक़िआ कुछ यूँ है : शर्मो हया की पैकर हज़रते सय्यिदतुना खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को येह तशवीश थी कि उम्र भर तो ग़ैर मर्दों की नज़रों से खुद को बचाए रखा है अब कहीं बा'दे वफ़ात मेरी कफ़नपोश लाश ही पर लोगों की नज़र न पड़ जाए ! एक मौक़अ पर हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिनते उमैस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने कहा : मैं ने हब्शा में देखा है कि जनाज़े पर दरख़्त की शाखें बांध कर एक डोली की सी सूरत बना कर उस पर पर्दा डाल देते हैं । फिर उन्हों ने खजूर की शाखें मंगवा कर उन्हें जोड़ कर उस पर कपड़ा तान कर सय्यिदा खातूने जन्नत रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को दिखाया तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बहुत खुश हुईं और लबों पर मुस्कुराहट आ गई । बस येही एक मुस्कुराहट थी जो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाले ज़ाहिरी के बा'द देखी गई ।

(جَذْبُ الْقُلُوبِ (مُتَرْجِمٌ)، ص ۲۳)

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदा खातूने जन्नत रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पर्दे की भी क्या बात है ! किसी ने कितना प्यारा शे'र कहा है :

چو زهرا باش از مخلوق زوپوش

که در آغوش شبیر به بینی

या'नी हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की तरह परहेज़गार व पर्दादार बनो ताकि अपनी गोद में हज़रते सय्यिदुना शब्बीरे नामदार इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जैसी अवलाद देखो ।

जिस का आंचल न देखा मह व मिहर ने

उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम

(हदाइके बख़्शाश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَالَمِينَ)

शर्हे सलामे रज़ा :

या'नी हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की चादरे अन्वर का पल्लू चांद सूरज ने भी नहीं देखा, उस पाकीज़ा चादर की तहारत व पाकीज़गी पर लाखों सलाम नाज़िल हों ।

उस बतूल, जिगर पारए मुस्तफ़ा

ह-जला आराए इफ़फ़त पे लाखों सलाम

(हदाइके बख़्शाश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَالَمِينَ)

शर्हे सलामे रज़ा :

या'नी पारसाई व परहेज़गारी की चारपाई को ज़ैबो ज़ीनत देने वाली सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا जिन का लक़ब बतूल है, सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जिगर मुबारक का टुकड़ा हैं, उन पर लाखों सलाम हों ।

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

उम्मते मुस्लिमा की तनज़ुली का एक सबब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज मुसलमान औरतों की हालत ऐसी है कि सर शर्म से झुक जाता है पर्दे का तसव्वुर ही नहीं रहा । जब से कुफ़ारे मक्कार के ज़ेरे अषर आ कर मुसलमानों ने बे पर्दगी का सिलसिला शुरू किया है, मुसलसल

तनज़ुल (या'नी ज़वाल) के गहरे गढ़े में गिरते चले जा रहे हैं, कल तक जो कुफ़ारे बद अन्जाम मुसलमान के नाम से लर्ज़ा बर अन्दाम हो जाते (या'नी कांप उठते) थे आज वोह मुसलमानों की बे पर्दगियों और बद अमलियों के बाइष ज़ोर आवर हो चुके हैं, इस्लामी मुमालिक पर बा काइदा जारिहाना हम्ले हो रहे हैं और ज़ालिमाना क़ब्जे किये जा रहे हैं मगर मुसलमान है कि ग़फ़लत की चादर ताने लम्बी नींद सोया हुवा है। ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये इस्लाम, जिगर गोशाए शाहे ख़ैरुल अनाम हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की सीरते मुबारका, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का रातों को जाग जाग कर इबादत करने का जौक और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के शर्मो हया का येह मुबारक हाल उन नादान मुसलमानों के लिये बाइषे तवज्जोह है जो **T.V** और **INTERNET** पर फ़िल्में डिरामे चला कर, बेहूदा फ़िल्मी गीत गुनगुना कर, शादियों में नाचरंग की महफ़िलें जमा कर, काफ़िरो की नक्काली में दाढ़ी मुंडा कर कुफ़ार जैसा बे शर्माना लिबास बदन पर चढ़ा कर, स्कूटर के पीछे बे पर्दा बेगम को बिठा कर, बे हया बीवी को मैक-अप करवा कर, मख़्लूत तफ़रीह गाह में ले जा कर, अपनी अवलाद को दुन्यवी ता'लीम की ख़ातिर कुफ़ार के मुमालिक में काफ़िरो के सिपुर्द करवा कर बे हयाई की आख़िरी हदें फ़लांग रहे हैं।

वोह क़ौम जो कल तक खेलती थी शमशीरो के साथ

सीनेमा देखती है आज वोह हमशीरो के साथ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
 تَوَدُّوا إِلَى اللَّهِ!
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बे पर्दगी की होलनाक राजा

हजरते सय्यिदुना इमाम शहाबुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद बिन हजर मक्की शाफेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الشَّافِعِيُّ हदीषे पाक नक्ल फरमाते हैं : “मे’राज की रात सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जो बा’ज औरतों के अज़ाबात के होलनाक मनाज़िर मुलाहज़ा फरमाए, उन में येह भी था कि एक औरत बालों से लटकी हुई थी और उस का दिमाग़ खोल रहा था, सरकारे अली मर्तबत, बाइषे खैरो बरकत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमते सरापा शफ़कत में अर्ज़ की गई कि येह औरत अपने बालों को गैर मर्दों से नहीं छुपाती थी ।”

(الزَّوْجَرِ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِرِ، الْكَبِيرِ ه ٢٨٠، نشوز المرأة، ج ٢، ص ٨٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कंधी के बाल भी छुपाइये !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कहीं हमारे फ़ैशन हमें तबाह न कर दें, हमारी बे पर्दगी हमें जहन्नम में न धकेल दे, मरने से पहले संभल जाना चाहिये और पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा कर लेनी चाहिये, गैर मर्दों से अपने बाल

न छुपाने की वजह से बालों से लटकाए जाने का अज़ाब आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया, इस्लामी बहनों को ग़ैर मर्दों से अपने बाल छुपाना भी ज़रूरी है यहां तक कि कंधी से निकलने वाले बालों को भी ऐसी जगह फैंकना मन्नुअ है जहां पर अजनबी मर्दों की नज़र पड़े, जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअत” जिल्द 3 हिस्सा 16 सफ़हा 449 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْرى फ़रमाते हैं : “औरतों के लिये लाज़िम है कि कंधा करने या सर धोने में जो बाल निकलें उन्हें कहीं छुपा दें कि उन पर अजनबी (या'नी ग़ैर मर्दों) की नज़र न पड़े।”

सुन्नतों का हो अता दर्द मुसलमानों को

दूर फ़ैशन की हो भरमार रसूले अरबी

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه س. 326)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ना जाइज़ फ़ैशन करने वालियों के

अज़ाब का मुशाहदा

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 480 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बयानाते अत्तारिय्या” हिस्सए अव्वल के रिसाले “क़ब्र का इम्तिहान” सफ़हा 30 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते

इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गंजीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “(मे)राज की रात) मैं ने एक बदबूदार गढ़ा देखा जिस में शोरो गोगा बरपा था, मैं ने कहा : येह कौन हैं ? तो जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अर्ज़ की : येह वोह औरतें हैं जो ना जाइज़ अश्या से ज़ीनत हासिल करती थीं ।” (तारिख़ بغداد، ج ۱، ص ۱۵۴)

मुसलमां बाज़ आ जाएं शहा ! फ़ैशन परस्ती से
करम कर दो बनें पाबन्दे सुन्नत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ स. 148)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
أَسْتَغْفِرُ اللهَ	تُوبُوا إِلَى اللهِ!
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम अपने मानने वाले हर मर्द व ज़न को सादगी अपनाने की तरगीब देता और ना जाइज़ ज़राएअ़ से ज़ीनत हासिल करने से मन्अ़ करता है । सादगी में इज़ज़त व बचत है । फ़ैशन की ख़ातिर रोज़ रोज़ नए लिबास पहनने वालियां, ज़रा फ़ैशन तब्दील हुवा या लिबास थोड़ा पुराना हुवा या कहीं से मा'मूली सा फटा तो पैवन्दकारी कर के उस को पहनने में आर (या'नी ऐब) महसूस करने वालियां इस रिवायात को बार बार पढ़ें :

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि महबूबे रब्बुल इबाद, करारे हर क़ल्बे नाशाद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे हकीकत बुन्याद है : “क्या तुम सुनते नहीं ? क्या तुम सुनते नहीं ? कि कपड़े का पुराना होना ईमान से है, बेशक कपड़े का पुराना होना ईमान से है ।”

(سُنَنِ ابْنِ دَاوُدَ، كِتَابُ التَّرْجَمِ، ص ٦٥٣، الْحَدِيثُ: ٢١٦١)

इस रिवायत के तहत हज़रते सय्यिदुना शैख़ शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिष देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “ज़ीनत का तर्क करना अहले ईमान के अख़्लाक़ में से है ।”

(أَشْفَقَةُ النَّعَمَاتِ (مُتَرَجِّمٌ)، كِتَابُ اللِّبَاسِ، الْفَصْلُ الثَّانِي، ج ٥، ص ٥٦)

वलवला सुन्नते महबूब का दे दे मालिक

आह ! फ़ैशन पे मुसलमान मरा जाता है

(127. دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ س. 127) (वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

औरतों के ना जाइज़ फ़ैशन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रेशम, सोना, मेहंदी, मूछों के बाल साफ़ करवाना वग़ैरा औरत के लिये जाइज़ है । हां ! ज़ीनत व फ़ैशन की बा'ज़ ऐसी सूरतें भी हैं जो औरतों के लिये भी मन्अ हैं, जैसे इन्सानी बालों की चोटी बना कर अपने बालों में गूंधना, अब्रू के बाल नोचना, रेती से दांत रगड़ना वग़ैरा जैसा कि दा'वते

इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1197

सफ़हात पर मुशतमिल किताब “बहारे शरीअत” जिल्द 3 हिस्सा 16 सफ़हा 596 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : इन्सान के बालों की चोटी बना कर औरत अपने बालों में गूंधे येह हराम है । हदीष में इस पर ला'नत आई बल्कि उस पर भी ला'नत जिस ने किसी दूसरी औरत के सर में ऐसी चोटी गूंधी और अगर वोह बाल जिस की चोटी बनाई गई खुद उसी औरत के हैं जिस के सर में जोड़ी गई जब भी ना जाइज़ और अगर ऊन या सियाह धागे की चोटी बना कर लगाए तो इस की मुमानअत नहीं । सियाह कपड़े का मूबाफ़⁽¹⁾ बनाना जाइज़ है और कलावा⁽²⁾ में तो अस्लन हरज नहीं कि येह बिल्कुल मुमताज़ होता है । इसी तरह गूदने वाली और गूदवाने वाली या रेती से दांत रेत कर खूबसूरत करने वाली या दूसरी औरत के दांत रेतने वाली या मोचने⁽³⁾ से अब्रू के बालों को नोच कर खूबसूरत बनाने वाली और जिस ने दूसरी के बाल नोचे इन सब पर हदीष में ला'नत आई है ।

(رَدُّ الْمُحَرَّمِ، كِتَابُ الظُّرِّ وَالْإِبَاهَةِ، فَصْلٌ فِي الظُّرِّ، ج 9، ص 115)

(1).... बालों में धागा लगा कर इन्हें दराज़ करना मूबाफ़ कहलाता है ।

(2).... कच्चा सूत जो तक्ले पर लगा हुवा हो और तक्ला चर्खे की उस आहनी सलाख़ को कहते हैं जिस पर कातते वक्त लच्छी बनती जाती है

(3).... मोचना : या'नी बाल उखाड़ने का आला ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
 تَوُوبُوا إِلَى اللَّهِ!
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वोह इस्लामी बहनें जो शरई हुदूद व कुयूद को बालाए ताक़ रख कर आए दिन फैशन के नित नए ढंग और जैबो ज़िनत के नए रंग अपनाने में इस क़दर जी जान से मगन रहती हैं कि फ़र्ज़ पर्दा तक को **مَعَاذَ اللَّهِ** बोझ महसूस करने लग जाती हैं । उन के तसव्वुराते बद में चादर और चार दीवारी किसी अहम्मियत की हामिल नहीं होती । ऐसी ख़वातीन का आईडियल अज़वाज व बनाते मुस्तफ़ा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ) नहीं बल्कि कुफ़ारे ना बकार की चाल-ढाल और फ़िरंगी तहज़ीब होती है । फैशन परस्ती और बे पर्दगी की इस बेहूदगी का अन्जाम क्या होता है ? इस से हर जी शुज़र बा ख़बर होगा ।

बे ग़ैरती की इन्तिहा

काफ़िरों की उलटी तरक्की की रेस करते हुए बे पर्दगी और बे हयाई का बाज़ार गर्म करने वाले ज़रा ग़ैर तो करें । यूरोप, अमरीका और इन से मुतअष्विर होने वाले मुल्कों में क्या हो रहा है ! रक्स गाहों में लोग अपनी आंखों से अपनी बहू बेटियों को दूसरों की आगोश में देखते हैं और टस से मस नहीं होते बल्कि

वोह दय्यूष⁽¹⁾ फ़ख़ से इतराते हुए दाद दे रहे होते हैं !!! बे पर्दा और फैशनेबल औरतों के “मुंह काले” होने की हयासोज़ ख़बरें आए दिन अख़बारत में छपती हैं। वोह औरत जो मर्द की शहवत रानी का शिकार होती है उसे अगर ह्म्ल ठहर गया तो कहां सर छुपाएगी ? ह्म्ल गिराने की सूरत में वोह अपनी जान भी खो सकती है। चलिये माना कि यूरोप के तरक्की याफ़ता मुमालिक (बल्कि अब तो दुन्या भर) में ऐसे अस्पताल मौजूद हैं जो इसकाते ह्म्ल (या’नी ह्म्ल गिराने) की “ख़िदमत” अन्जाम देते हैं और ऐसी पनाह गाहें भी मौजूद हैं जहां ग़ैर शादीशुदा माओं को “पनाह” मिल जाती है लेकिन क्या मुआशरे में इन्हें कोई क़ाबिले एहतिराम मक़ाम भी नसीब हो सकता है ! माना कि रुसवा हो कर इन दोनों (या’नी ग़ैर शादी शुदा जोड़े) ने अपने किये की दुन्या में हाथों हाथ सज़ा पाई लेकिन वोह बच्चा जो इस तरह पैदा हुवा है अगर ज़िन्दा बच भी गया तो उस का क्या बनेगा ? उस के हवस कार बाप ने भी उस से आंखें फ़ैर लीं, बदकार मां भी उसे कचरा कूंडी या किसी मोहताज ख़ाने में छोड़ कर चली गई ! येह सब बे ग़ैरती और बे पर्दगी का दुन्यवी अन्जाम है। न जाने कियामत के दिन क्या होगा ?

(1)..... जो लोग बा वुजूदे कुदरत अपनी औरतों और महारिम को बे पर्दगी से मन्अ न करें वोह “दय्यूष” हैं। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 65) हज़रते अल्लामा अलाउद्दीन हस्कफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “दय्यूष” वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या किसी महरम पर ग़ैरत न खाए। (فَرْحَاتَار، كِتَابُ الْحُدُودِ، يَا بِ التَّعْزِيرِ، ص 318)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
 تَوَبُّوا إِلَى اللَّهِ!
 صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
 اسْتَغْفِرُ اللَّهُ
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बहारे शरीअत का मुतालफ़ा फ़रमाइये !

इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये ज़ीनत के शरई अहकाम क्या हैं इन को जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअत" जिल्द 3 हिस्सा 16 सफ़हा 591 ता 597 मुलाहज़ा फ़रमाएं। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** जाइज़ व ना जाइज़ ज़ीनत के बारे में मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा। **अल्लाह** तआला अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अमल का हो ज़ब्बा अता या इलाही !

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही !

(स. 84) دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ سُنَنَاتِ اَهْلِهِ سُنَنَاتِ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पिछले सफ़हात में दय्यूष या'नी बे ग़ैरत के मुतअल्लिक़ बयान हुवा, जिस के मुतअल्लिक़ अहादीषे करीमा में बहुत सारी वईदात हैं इस के बा'द यहां एक ग़ैरत मन्द शोहर की हिकायत

बयान की जाती है जिस ने गैरत मन्दी का षुबूत देते हुए अपनी बीवी का चेहरा गैर मर्द के सामने जाहिर नहीं होने दिया । इस गैरत खाने की वजह से उसे इज़्ज़त भी नसीब हुई, चुनान्चे

गैरत मन्द शोहर

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 413 सफ़हात पर मुशतमिल किताब “इयूनुल हिक्कायात” हिस्साए दुवुम, सफ़हा 123 पर इमाम अब्दुरहमान बिन अली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद बिन मूसा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से मन्कूल है कि “एक मरतबा मैं “रै” (ईरान के दारुल ख़िलाफ़ा, मौजूदा नाम तेहरान) के काज़ी हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन इस्हाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَاق की महफ़िल में था । काज़ी साहिब लोगों के मसाइल हल कर रहे थे । इतने में एक औरत उन के पास लाई गई, उस के सर परस्तों का दा'वा था कि उस औरत के शोहर ने उस का 500 दीनार महर अदा नहीं किया । जब उस के शोहर से पूछा गया तो उस ने इन्कार कर दिया और कहा : मुझ पर महर का दा'वा बे बुन्याद है । शोहर के इन्कार पर काज़ी साहिब ने औरत से गवाह त़लब किये । गवाह हाज़िर किये गए तो उन में से एक ने कहा : मैं इस औरत को देखना चाहता हूँ ताकि इसे पहचान कर

गवाही दूं।” चुनान्चे वोह औरत की तरफ बढा और कहा : “तुम अपना निकाब हटाओ ताकि तुम्हारी पहचान हो सके।” येह देख कर उस के शोहर ने कहा : “येह शख्स मेरी जौजा के पास क्युं आया है ?” वकील ने कहा : “येह गवाह तुम्हारी जौजा का चेहरा देखना चाहता है ताकि पहचान हो जाए।”

येह सुन कर गैरत मन्द शोहर पुकार उठा : “इस शख्स को रोक दो, मैं काजी साहिब के सामने इकरार करता हूं कि जो दा'वा मेरी जौजा ने मुझ पर किया है वोह मुझ पर लाजिम है, मैं 500 दीनार अदा करने को तय्यार हूं, खुदारा ! मेरी जौजा का चेहरा किसी गैर मर्द पर जाहिर न किया जाए।” चुनान्चे गवाह को रोक दिया गया। जब औरत ने अपने गैरत मन्द शोहर का येह जब्बा देखा तो कहा : “सब गवाह हो जाओ ! मैं ने अपना महर मुआफ कर दिया, मैं दुन्या व आखिरत में इस का मुतालबा न करूंगी, येह महर मेरे गैरत मन्द शोहर को मुबारक हो।”

महफिल में मौजूद तमाम लोग मियां-बीवी के इस फ़ैसले पर अश-अश कर उठे। काजी साहिब ने फ़रमाया : “इन दोनों का येह मुआमला बेहतरीन अवसाफ़ और आ'ला अख्लाक़ पर दलालत करता है।” (उयूनुल हिकायात, स. 275)

अब्बाह रबुल इज्जत عُزَّ وَجَلَّ كِي उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मगफ़िरत हो।

اٰمِيْنَ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ !

इस वाकिए में हमारे लिये बेहतरीन सबक है। कैसा गैरत मन्द था वोह शख्स ! कि अपने ऊपर लाजिम पांच सो (500) दीनार का इकरार कर लिया लेकिन उस की गैरत ने येह गवारा न किया कि मेरी जौजा का चेहरा किसी गैर मर्द के सामने जाहिर हो। येह ह्या का आ'ला दर्जा है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में तरगीब दिलाई जाती है कि गैर महरम से पर्दा किया जाए और बे पर्दगी की नुहूसत से खुद भी बचा जाए और अपने घर वालों को भी बचाया जाए। इसी उन्वान या'नी पर्दे के बारे में अहकाम से मुतअल्लिक शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ की जामेअ किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना से हासिल फरमाएं, खुद भी पढ़िये और मुसलमानों की खैर ख्वाही की निय्यत से दूसरों को भी तोहफतन पेश करें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पर्दा इज्जत है बे इज्जती नहीं

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूअ 679 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “जन्नती ज़ेवर” सफ़हा 82 पर शैखुल हदीष हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي तहरीर फरमाते हैं : आज कल बा'ज मुलहिद (या'नी बे दीन) किस्म के दुश्मनाने इस्लाम मुसलमान

औरतों को यह कह कर बहकाया करते हैं कि इस्लाम ने औरतों को पर्दे में रख कर औरतों की बे इज़्ज़ती की है इस लिये औरतों को पर्दों से निकल कर हर मैदान में मर्दों के दोश बदोश खड़ी हो जाना चाहिये । मगर प्यारी बहनो ! ख़ूब अच्छी तरह समझ लो कि इन मर्दों का यह प्रोपेगन्डा इतना गन्दा और घिनावना फ़रैब और धोका है कि शायद शैतान को भी न सूझा होगा ।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दियो ! तुम्हीं इन्साफ़ करो कि तमाम किताबें खुली पड़ी रहती हैं और बे पर्दा रहती हैं मगर कुरआन शरीफ़ पर हमेशा ग़िलाफ़ चढ़ा कर इस को पर्दे में रखा जाता है तो बताओ क्या कुरआने मजीद पर ग़िलाफ़ चढ़ाना यह कुरआन की इज़्ज़त है या बे इज़्ज़ती ? इसी तरह तमाम दुनिया की मस्जिदें बे पर्दा रखी गई हैं मगर ख़ानए का'बा पर ग़िलाफ़ चढ़ा कर इस को पर्दे में रखा गया है तो बताओ क्या का'बए मुक़द्दसा पर ग़िलाफ़ चढ़ाना इस की इज़्ज़त है या बे इज़्ज़ती ? तमाम दुनिया को मा'लूम है कि कुरआने मजीद और का'बए मुअज़्ज़मा पर ग़िलाफ़ चढ़ा कर इन दोनों की इज़्ज़तो अज़मत का ए'लान किया गया है कि तमाम किताबों में सब से अफ़ज़लो आ'ला कुरआन है और तमाम मस्जिदों में अफ़ज़लो आ'ला का'बए मुअज़्ज़मा है । इसी तरह मुसलमान औरतों को पर्दे का हुक्म दे कर **अल्लाह** व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ से इस बात का ए'लान किया गया है कि अक़वामे आलम की तमाम औरतों में मुसलमान औरत तमाम औरतों से अफ़ज़लो आ'ला है ।

प्यारी बहनो ! अब तुम्हीं को इस का फैसला करना है कि इस्लाम ने मुसलमान औरतों को पर्दे में रख कर इन की इज़्जत बढ़ाई है या इन की बे इज़्जती की ही ?

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

किस किस से पर्दा है ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देवर व जेठ, बहनोई और ख़ालाज़ाद, मामूज़ाद, चचाज़ाद व फूफीज़ाद, फूफा और ख़ालू से पर्दे की ताकीद करते हुए मेरे आका आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत **मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** फ़रमाते हैं : “जेठ, देवर, बहनोई, फुप्पा (फुप्फा), ख़ालू, चचाज़ाद, मामूज़ाद, फुप्पी (फुप्फी) ज़ाद, ख़ालाज़ाद भाई येह सब लोग औरत के लिये महज़ अजनबी (या'नी ग़ैर मर्द) हैं बल्कि इन का ज़रर (नुक़सान) निरे (या'नी मुतलक़न) बेगाने (या'नी पराए) शख़्स के ज़रर से ज़ाइद है कि महज़ ग़ैर (या'नी बिल्कुल ना वाकिफ़) आदमी घर में आते हुए डरेगा और येह (या'नी बयान कर्दा रिश्तेदार) आपस के मेलजोल (या'नी जान पहचान) के बाइष ख़ौफ़ नहीं रखते । औरत निरे अजनबी (या'नी मुतलक़न ना वाकिफ़) शख़्स से दफ़अतन (फ़ौरन) मेल नहीं खा सकती (या'नी बे तकल्लुफ़ नहीं हो सकती) और इन (या'नी मजक़ूरा रिश्तेदारों) से लिहाज़ टूटा होता है (या'नी झिजक उड़ी हुई होती है) लिहाज़ा जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ग़ैर

औरतों के पास जाने को मन्अ फ़रमाया (जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ में है कि इस पर) एक अन्सारी सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! जेठ-देवर के लिये क्या हुक्म है ? फ़रमाया : जेठ-देवर तो मौत हैं ।”

(صحيح البخارى، كتاب النكاح، باب لا يخلون رجل بامرأة... الخ، ص ۱۳۲۲، الحديث: ۵۲۳۲)

دار المعرفة بيروت. فتاوى رضويه (مُخرَجُه)، ج ۲۲، ص ۲۱۷

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
अपने देवर जेठ से पर्दा करो उन से हरगिज बे तकल्लुफ़ मत बनो
वरना सुन लो ! कब्र में जब जाओगी सांप बिच्छू देख कर चिल्लाओगी

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

أَسْتَغْفِرُ الله

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

تَوَبُّوا إِلَى اللهِ !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

औरत के लिये फ़ोन वुसूल करने का तरीका

इस्लामी बहनों को चाहिये कि अगर ग़ैर मर्दों का फ़ोन वुसूल करना पड़ जाए तो आवाज़ नर्म न रखें मषलन नर्मी के साथ “हेलो हेलो” कहने के बजाए रूखे अन्दाज़ में पूछे : “कौन ?” यहां मुआमला ज़रा दुश्वार है क्यूंकि इम्कान है कि सामने वाला घर के किसी मर्द से बात करवाने का मुतालबा करे, अपना नाम व पैग़ाम बयान करे और बात करने का वक़्त वग़ैरा पूछे, नीज़ येह भी हो सकता है कि खुदा न ख़्वास्ता बा हया और बा अमल इस्लामी बहन के भिंचे हुए रूखे अन्दाज़े गुफ़्तगू का बुरा मनाए, और शरई मसाइल से ना वाकिफ़ होने के सबब

मुंह फट हो तो “कुछ” बोल भी पड़े जैसा कि बा’ज इस्लामी भाइयों ने अपना तजरिबा बयान किया है कि ना महरम औरतों से जरूरतन फ़ोन पर बात करने की नौबत आने पर हमारे गैर नर्म और रूखे लहजे पर औरतों ने **مَعَاذَ اللَّهِ** इस तरह की बातें सुना दी हैं : (मघलन) **मौलाना ! आप को गुस्सा क्यों आ रहा है !** बहर हाल अफ़ियत इसी में मा’लूम होती है कि “आन्सरिंग मशीन (**Answering Machine**)⁽¹⁾ लगा दी जाए और इस में मर्द की आवाज़ में येह जुम्ला भर दिया जाए : “पैग़ाम रेकोर्ड (**Record**) करवा दीजिये ।” बा’द में मर्दों के रेकोर्ड शुदा पैग़ामात घर के मर्द अपनी सहूलियत से सुन लिया करें । इसी तरह ना महरम पीर साहिब से लबो लहजा क़दरे रूखा सा हो । आवाज़ लोचदार व नर्म और अन्दाज़ बे तकल्लुफ़ाना न हो ।”

उम्महातुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ** के मुतअल्लिक़ पारह

22 सूरतुल अहज़ाब आयत नम्बर 32 में इरशादे रब्बुल इबाद है :

يُنِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ

النِّسَاءِ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ

بِلِقَوْلِ فَيْطَمَةَ الزَّيْنِ فِي قَلْبِهِ

مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

(प २२, الاحزاب: ३२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ नबी की बीबियो ! तुम और औरतों की तरह नहीं हो, अगर **अब्बाह** से डरो तो बात में ऐसी नर्मी न करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे हां अच्छी बात कहो ।

(1).... ऐसी मशीन जो किसी की गैर मौजूदगी में टेलीफ़ोन कोल रेकोर्ड करती है ।

साबिका रिवायात से पता चला कि औरत घर में या बाहर सर ता पा बापर्दा रहे, घर में रहते हुए भी अपने गैर महरम रिश्तेदारों से पर्दा लाजिम है, इसी तरह जरूरतन घर से बाहर निकलते वक्त भी पर्दे का लिहाज रखना इन्तिहाई जरूरी है लिहाजा

घर से निकलते वक्त की एहतियात

शरई इजाजत की सूरत में घर से निकलते वक्त इस्लामी बहन गैर जाज़िबे नज़र कपड़े का ढीला ढाला मदनी बुर्क़अ औढ़े, दस्ताने और जुराबें पहने। मगर दस्तानों और जुराबों का कपड़ा इतना बारीक न हो कि खाल की रंगत झलके, जहां कहीं गैर मर्दों की नज़र पड़ने का इमकान हो वहां चेहरे से निकाब न उठाए मषलन अपने या किसी के घर की सीढ़ी और गली महल्ला वगैरा, नीचे की तरफ़ से भी इस तरह बुर्क़अ न उठाए कि बदन के रंग बिरंगे कपड़ों पर गैर मर्दों की नज़र पड़े, वाजेह रहे कि औरत के सर से ले कर पाउं के गिट्टों के नीचे तक जिस्म का कोई भी हिस्सा मषलन सर के बाल या बाजू या कलाई या गला या पेट या पिन्डली वगैरा अजनबी मर्द (या'नी जिस से शादी हमेशा के लिये हराम न हो) पर बिला इजाजते शरई ज़ाहिर न हो बल्कि अगर लिबास ऐसा महीन या'नी पतला है जिस से बदन की रंगत झलके या ऐसा चुस्त है कि किसी उज़्व की हैअत (या'नी शक्लो सूरत या उभार वगैरा) ज़ाहिर हो या दूपट्टा

इतना बारीक है कि बालों की सियाही चमके येह भी बे पर्दगी है। मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, अलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइषे ख़ैरो बरकत हज़रते अल्लामा मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो वज़ू लिबास (या'नी लिबास की बनावट) व तरीक़ए पौशिश (या'नी पहनने का अन्दाज़) अब औरात में राइज है कि कपड़े बारीक जिन में से बदन चमकता है या सर के बालों या गले या बाजू या कलाई या पेट या पिन्डली का कोई हिस्सा खुला हो यूं तो (सिवा) ख़ास महारिम के जिन से निकाह हमेशा को हराम है, किसी के सामने होना सख़्त हरामे क़तई है।

(फ़तावा रज़विय्या (मुखर्ज़ा), जि. 22, स. 217)

मेरी जिस क़दर हैं बहनें, सभी मदनी बुर्क़अ पहनें
हो करम शहे ज़माना मदनी मदीने वाले !

(वसाइले बख़िश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العالیه स. 288)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बे पर्दगी सबबे ग़ज़बे इलाही

मुफ़स्सरे कुरआन, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना हाफ़िज़ सय्यिद मुफ़्ती मुहम्मद नईमुदीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي पारह 18 सूरतुन्नूर आयत नम्बर 31 के तहत "तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"

में झांझन⁽¹⁾ की मुमानअत बयान करते हुए फरमाते हैं : “इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अदमे कबूले दुआ (या'नी दुआ कबूल न होने) का सबब है तो खास औरत की (अपनी) आवाज़ (का बिला इजाज़ते शरई ग़ैर मर्दों तक पहुंचना) और **उस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी, पर्दे की तरफ़ से बे परवाई, तबाही का सबब है (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह) ।”**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पर्दे की अहम्मियत

घ्यारी घ्यारी इस्लामी बहनो ! इस बयान में आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि सरापाए इफ़्त व इस्मत, जिगर गोशाए मुस्तफ़ा जाने रहमत, सय्यदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का कैसा मदनी पर्दा था। जिन्दगी भर पर्दा, कफ़न व दफ़न में भी पर्दा, जनाज़ा भी रात के अन्धेरे में पढ़ने की वसियत फ़रमाई ताकि ग़ैर महरम की नज़र न पड़े लिहाज़ा इस मालिकए जन्नत, साहिबए रिदाए इफ़्त व इस्मत को **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ बरोजे क़ियामत इतनी इज़्ज़त अता फ़रमाएगा कि जब आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पुल सिरात पर तशरीफ़ लाएंगी तो तमाम अहले मेहशर को हुकम होगा : सर झुका लो ! हज़रते मुहम्मदे मुस्तफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की बेटी फ़ातिमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आ रही हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(1) औरतों के पाउं का एक ज़ेवर जो अन्दर से खोखला होता है और अन्दर पड़े हुए दानों की वजह से झन-झन करता है।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यकीनन परदे की बहुत ज़ियादा अहम्मियत है, पर्दा मुसलमान औरत की ज़ीनत है, उस की इफ़त व पाक दामनी की अ़लामत है, शर्मो हया का निशान है, बा पर्दा इस्लामी बहन **अब्बाह** व रसूल **عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का हुक्म मानने वाली है जब कि बे पर्दगी ग़ज़बे इलाही की मूजिब और मुसलमानों की तबाही व बरबादी, तनज़ुली व पस्ती और दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लत का सबब है। तमाम इस्लामी बहनों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि इस्लाम की ता'लीमात पर अ़मल और ख़वातीने इस्लाम को आईडियल बनाने में ही बेहतरी और दीनो दुन्या की भलाई है। ग़ैर शरई ज़ीनतों और फ़ैशनों से जान छुड़ाइये, शरई परदे की पाबन्दी कीजिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअत में शिर्कत कीजिये।

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअत की ख़ूब ख़ूब बहारें हैं, मषलन फ़ैशन परस्ती और फ़ह्हाशी व उरयानी से सरशार मुआशरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों की दल-दल से निकल कर उम्महातुल मोअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ) की दीवानियां बन गईं, जो बे नमाज़ी थीं नमाज़ी बन गईं, गले में

दूपट्टा लटका कर शॉपिंग सेन्ट्रों और मख्लूत तफ़रीह गाहों में भटकने वालियों को करबला वाली इफ़फ़त मआब शहजादियों की शर्मो हया की वोह बरकतें नसीब हुई कि मदनी बुर्फ़अ उन के लिबास का जुज़वे ला युन्फ़क (या'नी जुदा न होने वाला हिस्सा) बन गया और उन्होंने ने इस मदनी मक्सद को अपना लिया कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मदनी काफ़िलों की बरकत से बा'ज अवकात रब्बे काएनात **عَزَّوَجَلَّ** की इनायात से ईमान अफ़रोज़ करिश्मात का भी जुहूर हुवा मषलन मरीजों को शिफ़ा मिली, बे अवलादों को अवलाद नसीब हुई, आसेब ज़दा को खुलासी मिली वगैरहा। तरगीब व तहरीस के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूअ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" सफ़हा 182 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** नक्ल फ़रमाते हैं :

में फैशनेबल थी !

इस्लामी बहनो ! एक मुबल्लिग़ दा'वते इस्लामी ने दा'वते इस्लामी में अपनी शुमूलिय्यत के जो अस्बाब बयान किये वोह मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे एक इस्लामी बहन के

तहरीरी बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं नित नए फ़ैशन के कपड़े पहना करती और बे पर्दा ही घर से निकल जाया करती थी। एक मरतबा चन्द इस्लामी बहनें हमारे घर आई और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतें बताते हुए हमारे घर में सुन्नतों भरा इजतिमाअ करने की इजाजत मांगी। हम ने ब खुशी इजाजत दी, आखिर इजतिमाअ का दिन भी आ गया, मैं खुद भी उस इजतिमाअ में शरीक हुई, मुझे इस्लामी बहनों की सादगी, हुस्ने अख्लाक और मदनी काम करने का अन्दाज बहुत पसन्द आया। बिल खुसूस रिक्कत अंगेज दुआ से मैं बहुत मुतअष्विर हुई, ऐसी दुआ मैं ने पहली मरतबा सुनी थी। यूं इस इजतिमाअ की बरकत से मुझे गुनाहों से तौबा नसीब हुई और मैं मदनी माहोल से वाबस्ता हो गई। फ़ैशन तर्क कर के मैं ने भी सादगी अपना ली और अब जैली सत्ह की जिम्मेदार की हैषियत से दा'वते इस्लामी का मदनी काम कर के अपनी आखिरत बनाने के लिये कोशां हूं, الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मक्तबतुल मदीना का जारी कर्दा एक केसिट बयान रोज़ाना सुनने का भी मा'मूल है। मैं अब्बाह तआला का शुक्र अदा करती हूं कि उस ने मुझे इतना प्यारा मदनी माहोल अता किया, ऐ काश ! हर इस्लामी बहन दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाए।

ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिये भी सुनो है बहुत काम का मदनी माहोल तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अहकाम येह ता'लीम फ़रमाएगा मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश अज अमीरे अहले सुन्नत 603) دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةَ

क्रिश्चैन का कबूले इस्लाम

मर्कजुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि हमारे अलाके में एक वर्कशोप थी, उस में एक **T.V** भी रखा हुवा था जिस पर कारीगर मुख्तलिफ़ चैनलज़ देखा करते थे। रमज़ानुल मुबारक सि. 1429 हि. (सि. 2008 ई.) में जब दा'वते इस्लामी का मदनी चैनल शुरू हुवा तो उन्हें कुछ ऐसा भाया के दीगर तमाम चैनलज़ के बजाए अब वोह मदनी चैनल देखने लगे। इन कारीगरों में एक क्रिश्चैन नौजवान भी शामिल था वोह भी मदनी चैनल के पुरसोज़ सिलसिलों (प्रोग्राम्ज़) में दिलचस्पी लेने लगा। **السُّمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** सिर्फ़ तीन दिन के बा'द वोह कहने लगा कि मैं अमीरे अहले सुन्नत की सादगी से बहुत मुतअब्धिर हुवा हूं। और वोह कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया।

मदनी चैनल की मुहिम है नफ़सो शैतां के ख़िलाफ़ जो भी देखेगा करेगा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ए'तिराफ़
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बयान नम्बर 9

ख़ातूने जन्नत
के
फ़ाके

347

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खातूने जन्नत के फ़ाके

दुश्बद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के वालिदे गिरामी हज़रते सय्यिदुना समुरा सुवाई رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत फ़रमाते हैं कि हम सरकारे अली वकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दरबारे गुहरबार में हाज़िर थे कि एक शख्स हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बारगाहे रब्बे लम यज़ल में सब से अच्छा अमल कौन सा है ? तो महबूबे खुदा, सरवरे अम्बिया, शाहे हर दो सरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सच बोलना और अमानत अदा करना ।” (राविये हदीष हज़रते सय्यिदुना समुरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :) मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मज़ीद कुछ इरशाद फ़रमाइये ! फ़रमाया : “कषरते ज़िक्र और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना कि येह अमल फ़क़ (या'नी गुर्बत) को दूर करता है ।”

(الْقَوْلُ الْبَدِيعُ، الباب الثاني في ثواب الصلاة على رسول الله، ص ۱۳۵)

तुम पढ़ो साहिबे लौलाक पर कषरत से दुरूद
है अज़ब दर्दे निहां⁽¹⁾ और अमां⁽²⁾ का ता'वीज़

(काफ़ी की ना'त, अज़ मौलाना किफ़ायत अली काफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الشّافِئِي)

(1).... पोशीदा, छुपा हुवा दर्द । (2).... हिफ़ाज़त

खातूने जन्नत का आलमे शुर्बत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 680 सफ़हात पर मुश्तमिल किताबे मुस्तताब "मुकाशफ़तुल कुलूब" सफ़हा 265 पर हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि दिलो जान से प्यारे, बे कसों के सहारे, दो आलम के राज दुलारे मुझ से बहुत हुस्ने ज़न रखते थे। एक मरतबा आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ इमरान (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) मेरे नज़दीक तुम्हारा एक ख़ास मक़ाम है, क्या तुम मेरी बेटी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की इयादत को चलोगे ? मैं ने अर्ज़ की : "فِدَاكَ أُمِّي وَأَبِي يَا رَسُولَ اللَّهِ" या'नी या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर कुरबान ! क्यूं नहीं ? ज़रूर चलूंगा।

हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : फिर मैं महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मइय्यत में (مَعِي سِت) या'नी साथ) ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये इस्लाम हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के दरे अन्वर पर हाज़िर हो गया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दरवाज़े पर दस्तक दी और सलाम के बा'द अन्दर आने की इजाज़त त़लब फ़रमाई। शहज़ादिये मुस्तफ़ा हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने तशरीफ आवरी के लिये अर्ज की, तो आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया : मेरे साथ एक और शख्स भी है ।
 पूछा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वोह कौन है ? फरमाया :
 “इमरान ।” पैकरे शर्मो हया हजरते सय्यिदतुना फातिमतुज्जहरा
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अर्ज करने लगी : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ
 रब्बे जुल जलाल عَزَّ وَجَلَّ की कसम ! मेरे पास पर्दे के लिये सिर्फ
 एक चादर है । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दस्ते अक़दस के इशारे
 से फरमाया : तुम ऐसे ऐसे पर्दा कर लो । अर्ज की : इस तरह
 मेरा जिस्म तो ढक जाता है मगर सर नहीं छुपता । आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन की तरफ अपनी मुबारक चादर बढ़ा दी
 और फरमाया : इस से सर ढांप लो । फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ
 घर में दाखिल हुए और सलाम के बा'द पूछा : बेटी ! कैसी
 हो ? तो शहजादिये इस्लाम, मालिकए दारुस्सलाम हजरते
 सय्यिदतुना फातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपनी गुर्बत और बीमारी
 की हालत बयान करते हुए अर्ज किया : ऐ हबीबे खुदा
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं दोहरी तक्लीफ में मुब्तला हूं, एक तो बीमारी
 की तक्लीफ और दूसरी भूक की तक्लीफ ! और मेरे पास ऐसी
 कोई चीज भी नहीं जिसे खा कर भूक मिटा सकूं । ये सुन कर दो
 आलम के मालिको मुख्तार, दुन्या व आखिरत के शाहो ताजदार,
 उम्मत के ग़म गुसार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अशक बार हो गए और
 अपने इख्तियारी फ़ाकों की ख़बर और तसल्ली देते हुए इरशाद
 फरमाया : बेटी ! घबराओ नहीं, रब्ब (عَزَّ وَجَلَّ) की कसम ! मैं ने
 तीन दिन से कुछ नहीं खाया हालांकि बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में

मेरा तुम से ज़ियादा मर्तबा है, अगर मैं **अल्लाह** तआला से मांगू तो वोह मुझे ज़रूर खिलाए मगर मैं ने दुनिया पर आखिरत को तरजीह दी है।

कौनो मकां के आका हो कर, दोनों जहां के दाता हो कर फाके से हैं शाहे दो अलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सरवरे दो जहां⁽¹⁾ नबिय्ये इन्सो जां⁽²⁾ वालिये कौषरो जिनां⁽³⁾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के कंधे पर हाथ रख कर मज़ीद महब्बतों, शफ़क़तों और बिशारतों से नवाज़ते हुए इरशाद फ़रमाया : “ख़ुश हो जाओ कि तुम जन्नती औरतों की सरदार हो और तुम जन्नत के ऐसे महल्लात में रहोगी, जिन में कोई ऐब होगा न दुख और न ही कोई तकलीफ़। फिर फ़रमाया : अपने चचाज़ाद के साथ ख़ुश रहो⁽⁴⁾ मैं ने दुनिया व आखिरत के सरदार के साथ तुम्हारा निकाह किया है।”

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ، بَابُ فِي فَضْلِ الْفُقَرَاءِ ص ١٨٠)

अल्लाह रबुल इज़्ज़त عزّ وجلّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी माग़ि़रत हो।

أَصْبَحِينَ بِحَاجَاتِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मक़ामे मरयमो हव्वा भी है बजा लेकिन तेरा मक़ाम है तेरा मक़ाम या ज़हरा !
हर एक सांस से आती थी मुस्तफ़ा की महक तेरी हयात पे लाखों सलाम या ज़हरा !

(1).... या'नी दोनों जहां के सरदार (2).... या'नी इन्सानो जिन्नात के नबी (3).... या'नी नहरे कौषर व जन्नतों के मालिक (4).... या'नी हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अहले अरब बाप के चचाज़ाद को भी चचाज़ाद कह देते हैं। (इल्मिय्या)

“फ़ातिमा” के 5 हुरूप की निश्चत से इश वाकिरु से हाशिल होने वाले 5 मदनी फूल

﴿1﴾.... हबीबे खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और अहले बैते मुस्तफ़ा
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ अस्थाबे इफ़फ़तो अज़मत (या'नी पाक दामनी व
बुजुर्गी वाले), शर्मो हया के पैकर और हर हाल में इस दौलते
बे मिषाल से माला माल मुक़द्दस हस्तियां हैं। बिल खुसूस
वालिदए हसनैन व उम्मे कुल्षूम व रुक़य्या हज़रते सय्यिदतुना
फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا तो इन्तिहाई दर्जा बा पर्दा व
बा हया हैं, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का जनाज़ा भी पर्दे में उठाया
गया यहां तक कि रिवायत में आता है कि बरोजे क़ियामत भी
आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के शर्मो हया का मुकम्मल लिहाज़ रखते हुए
आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की आमद पर तमाम अहले मेहशर को निगाहें
झुकाने का हुक्म दिया जाएगा।

(الْجَامِعُ الصَّغِيرُ مَعَ فَيْضِ الْقَدِيرِ، حَرْفُ الْهَمْزِ، ج ١، ص ٥٢٩، الْحَدِيثُ: ٨٢٢)

येही माएं हैं जिन की गोद में इस्लाम पलता था

हया से उन की इन्सान नूर के सांचे में ढलता था

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तनावुल फ़रमाते । **अल्लाह अल्लाह !** इस पेट के सब्र का येह आलम ! उस साबिर पेट पर लाखों सलाम का नुज़ूल हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿4﴾.... गुर्बत और फ़क्रो फ़ाका में सब्र करना और इस की तलकीन करना सुन्नते मुस्तफ़ा है, जैसा कि इस वाकिए से पता चलता है कि राहतुल अशिकीन, अनीसुल गुरबाए वल मसाकीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी लाडली और चहीती बेटी हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को गुर्बत की आजमाइश में सब्र करने और षाबित क़दम रहने की तलकीन फ़रमाई और खुद भी कई दिनों से फ़ाकों पर सब्र किये हुए थे ।

आप भूके रहें और पेट पे पथ्थर बांधें

ने 'मतों के दें हमें ख़्वान मदीने वाले

(306) دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةَ س. 306) सुन्नत अहले अमीरे अज बख़िश वसाइले

﴿5﴾.... गुर्बत **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ की ने'मत, नबिय्ये रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की चाहत, बहुत सारी फ़ज़ीलत और बे शुमार फ़वाइद का पेश ख़ैमा है, इसी वजह से अल्लाह वालों ने गुर्बत को पसन्द फ़रमाया ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

काशानए फातिमा में फाका कशी का आलम

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 85 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी” सफ़हा 42 पर है : एक दिन हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक हुज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के हां तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : मेरे दोनों बेटे (या'नी हुज़रते हसन व हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) कहां हैं ? हुज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज़ की : आज जब हम ने सुब्ह की तो हमारे घर में खाने के लिये कोई चीज़ नहीं थी तो हुज़रते अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुझ से फ़रमाया कि “मैं इन दोनों को कहीं ले जाता हूं, मुझे डर है कि येह तुम्हारे पास (भूक की वजह से) रोएंगे और तुम्हारे पास इन्हें खिलाने को कुछ नहीं।” पस वोह फुलां यहूदी की तरफ़ गए हैं।

तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी उधर तशरीफ़ ले गए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वहां पहुंचे तो देखा कि दोनों शहज़ादे हौज़ में खेल रहे हैं और कुछ बची हुई खजूरें उन के सामने पड़ी हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “ऐ अली ! क्या मेरे बेटों को गर्मी की शिद्दत से पहले पहले घर नहीं ले जाओगे ?” हुज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आज जब हम ने सुब्ह

की तो हमारे घर में खाने के लिये कुछ नहीं था, अगर आप थोड़ी देर बैठ जाएं तो मैं हज़रते फ़ातिमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये यह बची हुई खजूरें चुन लूं।” पस हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ फ़रमा हो गए और हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने बची हुई खजूरें इकट्ठी कर के एक कपड़े में जम्अ कीं फिर चल दिये, एक शहज़ादे को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने और दूसरे को हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने उठा लिया यहां तक कि उन को घर पहुंचा दिया ।

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ، أسماء بنت عميس عن فاطمة، ج ٩، ص ٤٦، الحديث: ١٨٣٤٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नबी की लाडली, आका की शहज़ादी हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी किस क़दर फ़ाका मस्ती में और इस कठिन दौर को कितने सब्रो शुक्र के साथ गुज़ारा, पूरी तारीख़े इस्लाम शाहिद है कि गुर्बत व फ़ाके बल्कि किसी भी मुश्किल के बारे में शिकवा व शिकायत के लिये आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के लब न खुले, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बारगाहे नुबुव्वत के ज़ेरे साया पलीं बढीं, जहां से इन्होंने तरबियत पाई थी कि फ़क्र, ग़ना (या'नी दौलत मन्दी) से अफ़ज़ल है। इस बारगाहे अलिया की ता'लीमात में से है कि साबिर ग़रीब को रोज़े क़ियामत उमरा पर फ़ज़ीलत हासिल होगी जैसा कि

जन्नत पाने में सबक़त

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 743 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “जन्नत में ले जाने वाले आ'माल” सफ़हा 672 पर हाफ़िज़ुल मशरिको मग़रिब हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुहम्मद शरफ़ुद्दीन अब्दुल मोमिन दिमयाती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़ुकरा की फ़ज़ीलत बयान करते हुए नक्ल फ़रमाते हैं : फ़ैज़याबे फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मुहिब्बुल फ़ुकराए वल मसाकीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है :

“يَدْخُلُ فُقَرَاءُ الْمُسْلِمِينَ الْجَنَّةَ قَبْلَ الْأَغْنِيَاءِ بِنِصْفِ يَوْمٍ وَهُوَ خَمْسُمِائَةِ عَامٍ”

या'नी मुसलमान फ़ुकरा अग़निया से आधा दिन पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और वोह (आधा दिन) 500 साल (के बराबर) होगा ।
(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، كتاب الزهد، باب ماجاء ان فقراء المهاجرين يدخلون...الخ، ص ٥٦٢، الحديث: ٢٣٥٢)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي “मिरआतुल मनाजीह” जिल्द 7, सफ़हा 67 पर इस हदीषे पाक की तशरीह में फ़रमाते हैं : “येह उन फ़ुकरा की शान दिखाने के लिये होगा कि अमीरों को हि़साब के नाम पर रोक लिया गया और फ़कीरों को जन्नत की तरफ़ चलता कर दिया गया ।”

(مِرَاةُ الْمَسْجُوحِ، كتاب الرقاق، باب فضل الفقراء، ج ٤، ص ٦٤)

अज़ाबे क़ब्रों मेहशर से, बचा लो नारे दोज़ख़ से
ख़ुदारा साथ ले के जाओ जन्नत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ स. 147)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गुर्बत पर सब्र

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यह सब फ़जाइल उस ग़रीब मुसलमान के लिये हैं जो अपनी गुर्बत पर सब्र करे। हर वक़्त जम्मा माल के चक्कर में पड़े रहने, अमीरों और उन की ने'मतों को देख देख कर दिल जलाने या हसद की आफ़त में मुब्तला होने वाला जो मुफ़्लिस व नादार अपनी गुर्बत पर साबिर नहीं वोह बयान कर्दा इन्आम का मुस्तहिक् नहीं और अगर बद किस्मती से बे सब्री में मज़ीद आगे बढ़ गया तो फिर ज़िल्लतो रुस्वाई मुक़द्दर बन सकती है। पस नादारों और मुसीबत के मारों को भी **अल्लाह** क़दीर عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़या तदबीर से डरते रहना ज़रूरी है क्यूंकि हो सकता है इन आफ़तों के ज़रीए आजमाइश में डाला गया हो और ना जाइज़ गिले शिकवे, ग़ैर शरई बे सब्री व गुर्बत व मुसीबत को हराम ज़राएअ से ख़त्म करने की कोशिशें आख़िरत में तबाही व बरबादी का सबब बन जाएं। मोहताजी एक मरज़ है जो इस में मुब्तला हुवा और सब्र

किया वोह इस का अज्रो षवाब पाएगा और गरीब लोग अमीरों से पहले जन्त में जाएंगे चुनान्चे नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे पाक है कि फुकरा अमीरों से 500 साल पहले जन्त में दाखिल हो जाएंगे ।

(سنن الترمذی، کتاب الزهد، باب ما جاء ان فقرا.....الخ، ص ۵۶۲، الحديث: ۲۳۵۳)

रहें सब शाद घरवाले शहा ! थोड़ी सी रोजी पर

अता हो दौलते सब्रो कनाअत या रसूलल्लाह !

(186 स. दाक ब्रकतुहम العالیه सुन्नत अहले अज् अमीरे वसाइले बख्शिश अज् अमीरे अहले सुन्नत)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अहले बैत के तीन रोजे

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द अव्वल सफ़हा 1442 पर मन्कूल है : हज़राते हसनैने करीमैने رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا बचपन में एक बार बीमार हो गए तो अमीरुल मोअमिनीन हज़राते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तजा, शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ व हज़राते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा और ख़ादिमा हज़राते सय्यिदतुना फ़िज़्ज़ा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ने इन शहजादों رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की सिद्दहत याबी के लिये तीन रोज़ों की मन्नत मानी । अब्बाह तअ़ाला ने दोनों शहजादों رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को शिफ़ा अता फ़रमाई, चुनान्चे तीन रोजे रख लिये गए । हज़राते

मौला अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तीन साअ जव लाए, एक एक साअ

(या'नी 4 किलो में से 160 ग्राम कम) तीनों दिन पकाया, जब इफ्तार का वक्त आया और तीनों रोज़ादारों के सामने रोटियां रखी गईं तो एक दिन मिस्कीन, एक दिन यतीम और एक दिन कैदी दरवाजे पर हाज़िर हो गए और रोटियों का सुवाल किया तो तीनों दिन सब रोटियां उन साइलों को दे दीं और सिर्फ पानी से इफ्तार कर के अगला रोज़ा रख लिया ।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़न, पा. 29, अदहर : तहतुल आयह : 8, स. 1073, मुलाख़्बसन)

अल्लाह रबुल इज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदकेहमारी मग़फ़िरत हो।

أَوَّيْنِ بِجَايَ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भूके रह के खुद औरों को खिला देते थे

कैसे साबिर थे मुहम्मद के घराने वाले

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने अपने प्यारे

महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

की प्यारी शहज़ादी के घराने के इस ईमान अफ़रोज़ ईषार को

पारह 29 सूरतुद्दहर आयत नम्बर 8-9 में इस तरह बयान

फ़रमाया है :

تَرْجَمَ عَ كَنْجُولِ إِيمَانٍ : और खाना
 खिलाते हैं उस की महबूबत पर
 مِسْكِينًا وَأَسِيرًا ۝ إِنَّمَا
 مِسْكِينًا وَأَسِيرًا ۝ إِنَّمَا
 نُطْعِمُكُمْ لِرُؤْجِهِ اللَّهُ لَا نُرِيدُ
 مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكْرًا ۝
 (प २९, الدهर: ९०, ८)

इस ईमान अफ़रोज़ हिकायत में अहले बैते
 अतहार के ज़बए ईषार का क्या ख़ूब इज़हार है !
 वाकेई तीन दिन तक सिर्फ़ पानी पी कर रोज़ा रख लेना कोई
 मा'मूली बात नहीं । हम अगर एक रोज़ा रखें तो इफ़तार में ठंडा
 ठंडा शरबत, कबाब समोसे, मीठे मीठे फल, गर्मा गर्म बिरयानी
 और न जाने क्या क्या चाहिये ! इस क़दर तंगदस्ती के आ़लम में
 इतना शानदार ईषार इन्हीं का हिस्सा था ।

ईषार की फ़ज़ीलत में खुद मदीने के सुल्तान, रहमते
 आ़लमिय्यान का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है :
 “जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस
 ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (किसी और को) तरजीह
 दे, तो **अल्लाह** उसे बख़्श देता है ।”

(كُنُزُ الْعَمَالِ كِتَابُ الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِقِ وَالْخُطْبِ وَالْحُكْمِ، الْبَابُ الْأَوَّلُ فِي الْمَوَاعِظِ وَالتَّرغِيبَاتِ، ج ٥، ص ٣٣، الْحَدِيثُ: ٣٣١٠٥)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

फाका कशिये फातिमा और दुआए मुस्तफा

हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक दफ़आ हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बारगाहे रिसालत में हज़िर हुई, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी बेटी का हाल मुलाहज़ा फ़रमाया कि शिदते भूक की वजह से चेहरे से खून ख़त्म और रंग ज़र्द पड़ चुका है, हबीबे खुदा, शाहे हर दो सरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को क़रीब बुलाया और अपना दस्ते पुर अन्वार आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के सीने पर रख कर बारगाहे इलाही में अर्ज़ की :

”اللَّهُمَّ مَشِّعُ الْجَاعَةِ وَرَافِعُ الْوَضِيعَةِ ارْفَعْ فَاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ

तर्जमा : ऐ भूकों को सैर करने वाले और पस्तों को बुलन्द करने वाले परवर दगार ! फ़ातिमा बिनते मुहम्मद से भूक की शिदत उठा ले ।

हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : दुआए मुस्तफा के बा'द मैं ने मुलाहज़ा किया कि हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के चेहरे की ज़र्दी पर खून ग़ालिब आ गया और फिर किसी मौक़अ पर जब हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मुलाक़ात हुई तो मेरे पूछने पर बताया कि इस वाक़िए के बा'द मुझे (शदीद) भूक न लगी ।

(دلائل النبوة للبيهقي، باب ما جاء في دعائه لابنته فاطمة... الخ ج ٦، ص ١٠٨، ملخصاً)

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया बढी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद

इजाबत का सहरा इनायत का जोड़ा दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद

(हदाइके बरिख़ाश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةٌ رَبِّ الْعَزَّة)

शार्हे कलामे रज़ा :

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दुआ ने जब इज़्ज़तो शान से क़दम आगे बढ़ाया तो क़बूलिय्यत ने झुक कर ता'ज़ीम दे कर उस को अपने गले लगाया और मुजीबुद्दा'वात की बारगाह से क़बूलिय्यत का शाहाना ताज दिलवाया ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस हस्ती की दुआएं इस क़दर पुर अषर और मक़ामे क़बूलिय्यत पाने में जल्द तर हों उन्हें किस चीज़ की कमी ? लेकिन दुन्यावी व ज़ाहिरी ज़िन्दगी में जो पसन्द किया वोह येही कि अगर्चे **अल्लाह** तआला ने दो जहां की ने'मते अपने हाथ में दे दी हैं लेकिन गुज़ारा इस तरह किया जाए कि ता क़ियामत आने वाली उम्मत के लिये सब्रो भूक की सुन्नत क़ाइम हो जाए । सय्यिदी आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत عَلَيْهِ رَحْمَةٌ رَبِّ الْعَزَّة "हदाइके बरिख़ाश शरीफ़" में शहनशाहे काएनात की मिलकिय्यत व इख़्तियारी फ़क्र की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं :

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं इन के खाली हाथ में

(हदाइके बख्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَالَمِينَ)

शर्हे कलामे रजा :

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तमाम जहानों के मालिको मुख्तार हैं मगर अपने पास कुछ नहीं रखते। दोनों जहां (दुन्या व उक़्बा) की तमाम ने'मतें हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के तसररुफ़ में हैं मगर हाथ खाली हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वस्वशा : येह चश्म दीद वाकिअ़ा बयान करने वाले सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ खातूने जन्नत, पैकरे इफ़फ़तो इस्मत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के लिये ना महरम हैं, फिर पर्दे का लिहाज़ क्यूं न रखा गया ?

जवाबे वस्वशा : हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने इख़ितामे रिवायत पर इस वस्वसे की काट करते हुए सराहत फ़रमाई है कि येह वाकिअ़ा आयते पर्दा नाज़िल होने से पहले का है।

(دَلَائِلُ النُّبُوَّةِ لِلْبَيْهَقِيِّ، بَابُ مَا جَاءَ فِي دَعَائِهِ لِابْنَتِهِ فَاطِمَةَ... الخ، ج ٦، ص ١٠٨)

वर्ना हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमा ज़हरा, तय्यिबा, ताहिरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا तो बा पर्दा और पैकरे शर्मो हया थीं, पर्दे के शरई

हुक्म के नुजूल के बा'द ग़ैर मर्दों से गुफ्तगू और बे पर्दगी से कोसों दूर रहीं, इन की पर्दादरी और हयादारी **ज़र्बुल मषल**⁽¹⁾ बन गई, पर्दा और रिदाए हया का इतना ख़याल कि ब वक्ते कुर्बे वफ़ात अपने कफ़न को भी बा पर्दा रखने की वसिय्यत फ़रमाई। सीरते फ़ातिमा का येह लाइके तकलीद पहलू (या'नी गोशा) इस्लामी बहनों की तवज्जोह चाहता है। फ़ोन पर ग़ैर मर्दों से गुफ्तगू, ना महरमों से इन्टरनेट पर चेटिंग और चादर व चार दीवारी को उबूर करने वालियां ग़ौर करें और सुन लें कि अगर दुन्या में इज़्ज़त व वकार और आख़िरत में सुख़्रूई मतलूब हो तो पर्दा व रिदाए हया का बहुत ख़याल रखिये वर्ना लोग ख़्वाह आप को मोहतरमा कहते रहें दुन्या व आख़िरत में आप ना मोहतरमा ही होंगी।

येह शर्हे आयए इस्मत है जो है बेश न कम
हया है आंख में बाकी न दिल में ख़ौफ़े खुदा
येह सैरगाहें कि मक़तल हैं शर्मो ग़ैरत के
येह नीम बाज़ सा बुर्क़अ येह दीदाज़ैब निकाब
न देख रश्क से तहज़ीब की नुमाइश को
वोही है राह तेरे अज़मो शौक़ की मंज़िल
तेरी हयात है किरदारो राबिआ बसरी

दिलो नज़र की तबाही है कुर्बे ना महरम
बहुत दिनों से निज़ामे हयात है बरहम
येह मा'सियत के मनाज़िर हैं जीनते आलम
झलक रहा है झला झल क़मीस का रेशम
कि सारे फूल येह काग़ज़ के हैं खुदा की क़सम!
जहां हैं आइशा व फ़ातिमा के नक़शे क़दम
तेरे फ़साने का मौजूअ इस्मते मरयम

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ!

(1).... **कहावत** या'नी ऐसा जुम्ला जो मिषाल के तौर पर मशहूर हो।

तीन दिन का फाका

खादिमे बारगाहे रिसालत हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि एक दिन **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के हबीब, बीमार दिलों के तबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मख़्दूमए काएनात, हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर तशरीफ़ ले गए, तो हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपने फ़ाके का अ़लम बयान करते हुए अर्ज़ की : मैं ने अपने पेट पर तीन पथ्थर बांध रखे हैं और हर पथ्थर एक दिन की भूक की वजह से बांधा है। जवाब में मालिके कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने बतने अक्दस पर चार पथ्थर बंधे हुए दिखाए।

(بَرِيْقَةُ مَحْمُودِيَّة، ج ۳، ص ۶۵، المكتبة الشاملة)

मालिके दीनो दुन्या हो कर दोनों जहां के सरवर हो कर
फ़ाके से हैं शाहे दो अ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शिकम सैर रहना और खाने की लज़्ज़तों से लुत्फ़ अन्दोज़ होते रहना सुन्नत नहीं बल्कि सुन्नत भूक और फ़ाके में है अगर्चे पेट भर कर खाना मुबाह या'नी जाइज़ है मगर “पेट का कुफ़ले मदीना” लगाते हुए या'नी अपने पेट को हराम और शुबुहात से बचाते हुए हलाल ग़िज़ा भी भूक से कम खाने में दीनो दुन्या के बे शुमार फ़वाइद

हैं। खाना मुयस्सर न होने की सूरत में मजबूरन भूका रहना कमाल नहीं, वाफ़िर मिक्दार में खाना मौजूद होने के बा वुजूद फ़क़त रिज़ाए इलाही की खातिर भूक बर्दाश्त करना हकीक़त में कमाल है और कषीर फ़वाइद व फ़ज़ाइल का मूजिब है जैसा कि

भूक के 10 फ़वाइद

- (1) दिल की सफ़ाई । (2) रिक्कते क़ल्बी ।
- (3) आज़िज़ी व इन्किसारी । (4) आख़िरत की भूक व प्यास की याद । (5) गुनाहों की रग़बत में कमी । (6) नींद में कमी ।
- (7) इबादत में आसानी । (8) तन्दुरुस्ती । (9) थोड़ी रोज़ी में किफ़ायत । (10) बचा हुआ ख़ैरात करने का ज़ब्बा ।

(أَحْيَاءُ عُلُومِ الدُّيْنِ، كِتَابُ كَسْرِ الشَّهَوَاتَيْنِ، بَيَانُ فَوَائِدِ الْجُوعِ وَأَفَاتِ الشَّبَعِ، ج ٣، ص ١٠٥، اتا ١، ١، ملخصاً)

भूक का शिला

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي فَرَمَاتे हैं : बुजुर्गाने दीन रَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّبِيحِينَ فَرَمَاتे हैं : يَا 'نِي الْجُوعُ رَأْسُ مَالِنَا : भूक हमारा बेहतरीन सरमाया है। इस से मुराद येह है कि हमें जो वुस्अत, सलामती, इबादत, हलावत और इल्मे नाफ़ेअ़ हासिल होता है येह **अब्बाह** तबारक व तआला के लिये भूक और इस पर सब्र करने के सबब हासिल होता है।

(مِنْهَاجُ الْعَابِدِينَ، تَقْوَى الْأَعْضَاءِ الْخَمْسَةِ، فَصْلُ فِي رِعَايَةِ الْأَعْضَاءِ الْأَرْبَعَةِ الْعَيْنِ... الخ، ص ٢٢٩)

भूक सरमाया बने मेरा खुदाए जुल जलाल !

अज़ तुफैले मुस्तफ़ा ! कर भूक से मुझ को निहाल

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

जन्नत व दोज़ख़ के दरवाजे

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي

फ़रमाते हैं : पेट और शर्मगाह जहन्नम के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है और इस की अस्ल पेट भर कर खाना है और आजिज़ी व इन्किसारी जन्नत के दरवाज़ो में से एक दरवाज़ा है और इस की जड़ (या'नी बुन्याद) भूक है। अपने ऊपर जहन्नम का दरवाज़ा बन्द करने वाला यकीनन अपने लिये जन्नत का दरवाज़ा खोलता है क्योंकि इन दोनों मुआमलात के अन्दर एक दूसरे में मशरिफ़ व मगरिब की तरह फ़र्क़ है लिहाज़ा इन में से एक दरवाज़े के करीब होना यकीनन दूसरे से दूर होना है। (या'नी जो भूक के ज़रीए आजिज़ी अपना कर जन्नत के करीब हुवा वोह जहन्नम से दूर हुवा और जो डट कर खाने के ज़रीए पेट और शर्मगाह की आफ़तों में मुब्तला हुवा वोह जहन्नम से करीब हो कर जन्नत से दूर जा पड़ा।)

(احياءُ عُلوْمِ الدِّيْنِ، كتاب كسر الشهوتين، بيان فوائد الجوع وآفات الشبع، ج ٣، ص ١٠٦)

दूर आफ़त हो डट कर खाने की

काश ! सूरत हो, खुल्द पाने की

बिल बिलाने वालों के लिये सूरज जल्दी तुलूअ नहीं हो जाता । हां ! सब्र से रोशन सुब्ह का इन्तिज़ार करने वालों की नींद ज़ाएअ होती है न जान जोखों में पड़ती है । ब तकाज़ाए बशरिय्यत जब हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا दुन्यावी मुश्किलात व मसाइब से कबीदा ख़ातिर (या'नी रंजीदा दिल) हुई तो रसूले करीम, رَكُورْفَرِّهِيْمِ عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ ने इन की तवज्जोह जन्नती इन्आमात व करामात की तरफ़ दिला दी या'नी रात को सुब्ह का इन्तिज़ार करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया । इस नफ़िसयाती उसूल को अगर हर ग़मज़दा मुसलमान अपने ऊपर लागू कर ले तो बईद नहीं कि दिल बरदाशतगी और ग़मज़दगी अपनी राह ले और राहतो सुकून का बसेरा हो जाए । बहर कैफ़ सीरते फ़ातिमा में हर मुसलमान के लिये नसीहत व हिदायत के मदनी फूल हैं बिल खुसूस इस्लामी बहनों के लिये तो ह्याते ज़हरा का हर दौर मषलन शरीफ़ाना बचपन, सौतेले रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक, शादी की सादगी और बेहतरीन इज़्दिवाजी ज़िन्दगी अपने अन्दर कई मदनी फूल लिये हुए हैं । काश ! हर इस्लामी बहन हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के नक़्शे क़दम पर चलने की हत्तल इमकान सअ्यू करे, और इस पर मदद पाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी का मदनी माहोल अपना ले कि येह माहोल सीरते उम्महातुल मोअमिनीन और सीरते फ़ातिमा पर अमल का दर्स देता है । तरगीब के लिये एक मदनी बहार और इस्लामी बहनों में मदनी काम की कुछ तफ़्सील मुलाहज़ा फ़रमाइये :

मेरे मसाइल हल हो गए

बाबुल मदीना (कराची) की एक मुअम्मर इस्लामी बहन का हलफिया बयान कुछ इस तरह है कि मैं मुख्तलिफ़ घरेलू मसाइल में गिरिफ़्तार थी। हम किराये के मकान में रहते, मगर आमदनी कम होने की वजह से किराया भी वक्त पर न दे पाते। बच्चियां भी जवान हो रही थीं, इन की शादियों की फ़िक्र अलग खाए जा रही थी। एक रोज़ किसी इस्लामी बहन से मेरी मुलाकात हुई, उन्होंने ने मेरी ग़मख़्तारी की और इनफ़िरादी कोशिश करते हुए दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में पाबन्दी के साथ शिर्कत की नियत करवाई और वहां आ कर अपने मसाइल के लिये दुआ करने की भी तरगीब दी। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत की सआदत हासिल करने लगी। मैं वहां अपने मसाइल के हल के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ भी किया करती। कुछ ही अर्सा गुज़रा था कि **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के करम से मेरे बच्चों के अब्बू को अच्छी मुलाजमत मिल गई और करम बालाए करम येह हुवा कि कुछ ही अर्से में हम ने किराये का घर छोड़ कर अपना जाती मकान भी ख़रीद लिया। **अल्लाह** मुजीब عَزَّوَجَلَّ ने अपने हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके, सुन्नतों भरे इजतिमाआत में मांगी जाने वाली दुआ की बरकत से बच्चियों की शादियों के फ़रीजों से ओहदा बरआ होने की ताक़त भी इनायत फ़रमा दी। इस

तरह दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से हमारे मसाइल का रेगिस्तान, हंसते मुस्कराते लहलहाते गुलिस्तान में तब्दील हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

(इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 289)

बे कसो बे बस व बे यारो मददगार जो हो

आप के दर से शहा सब का भला होता है

(सामाने बख़्शिश अज़ मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

इस्लामी बहनों में मदनी इन्क्लाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी वालों पर सरकारे नामदार, बि इज़ने परवर दगार दो अ़लम के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कितना बड़ा करम है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाइयों के साथ साथ इस्लामी बहनों में भी दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की हर तरफ़ धूमें हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी दा'वते इस्लामी के मदनी पैग़ाम को क़बूल किया, फ़ैशन परस्ती से सरशार मुआशरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों के दलदल से निकल कर उम्महातुल मोअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ की दीवानियां बन गईं। गले में दूपट्टा लटका कर शोपिंग सेन्ट्रों और मख़्लूत तफ़रीह गाहों में भटकने वालियों, नाइट क्लबों और सीनेमा घरों

की ज़िनत बनने वालियों को करबला वाली इफ़फ़त मआब शहज़ादियों رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ की शर्मो हया के सद्के वोह बरकतें नसीब हुई कि मदनी बुर्क़अ उन के लिबास का जुच्चे ला यन्फ़क (या'नी जुदा न होने वाला हिस्सा) बन गया। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मदनी मुन्नों और इस्लामी बहनों को कुरआने करीम हिफ़ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम देने के लिये कई मदारिसुल मदीना और अ़ालिमा बनाने के लिये मुतअद्दद "जामिअतुल मदीना" काइम हैं।

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी में "हाफ़िज़ात" और "मदनिया अ़ालिमात" की ता'दाद बढ़ती जा रही है। बहर हाल इस्लामी भाइयों से इस्लामी बहनें किसी तरह पीछे नहीं हैं, 1433 सिने हिजरी के मदनी माह रबीउल ग़ौष (ब मुताबिक़ मार्च 2012 ई.) में पाकिस्तान के अन्दर होने वाले दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की इस्लामी बहनों की "मजलिसे मुशावरत" की तरफ़ से मिलने वाली कारक़र्दगी की एक झलक मुलाहज़ा हो :

﴿1﴾.... इस एक मदनी माह में मुल्क भर के अन्दर रोज़ाना तक़रीबन 64,762 घर दर्स हुए ﴿2﴾.... रोज़ाना लगने वाले मद्रसतुल मदीना (बालिगात) की ता'दाद लगभग 3,495 और इन से इस्तिफ़ादा करने वालियों की ता'दाद तक़रीबन 38,552 ﴿3﴾.... हल्का/अ़लाका सत्ह के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ात की ता'दाद तक़रीबन 3,000 और इन में शरीक होने वालियां लगभग 1,95,175 ﴿4﴾.... हफ़तावार तरबियती हल्कों

की शुरका की ता'दाद तक़रीबन 29,829 ﴿5﴾.... तक़रीबन 91,254 मदनी इन्आमात के रसाइल तक़सीम हुए और 82,340 वुसूल हुए ﴿6﴾.... मदनी दौरा की शुरका की ता'दाद 20,479 ﴿7﴾.... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का बयान या मदनी मुज़ाकरा सुनने वाली इस्लामी बहनों की ता'दाद तक़रीबन 1,19,924 ﴿8﴾.... इनफ़िरादी कोशिश से 22,976 इस्लामी बहनें मदनी माहोल से मुन्सलिक हुईं ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

मेरी जिस क़दर हैं बहनें, सभी मदनी बुर्क़अ पहनें
हो करम शहे ज़माना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शाश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ स. 288)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नाखुन काटने के 9 मदनी फूल

﴿1﴾.... जुमुआ के दिन नाखुन काटना मुस्तहब है । हां ! अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ का इन्तिज़ार न कीजिये ।
(الْمُنْتَقَاةُ، ص ११३) सदरुशशरीआ बदरुत्तरीका मौलाना अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 226 पर हदीषे पाक नक्ल फ़रमाते हैं : जो जुमुआ के रोज़ नाखुन तरशवाए (काटे) **अब्लाह** तअ़ाला उस को दूसरे जुमुए तक बलाओं से महफूज़ रखेगा और 3 दिन ज़ाइद या'नी 10 दिन तक । (الْمُنْتَقَاةُ، ص ११३)
एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ के दिन नाखुन तरशवाए (काटे) तो रहमत आएगी और गुनाह जाएंगे । (الْمُنْتَقَاةُ، ج १، ص ११३)

﴿2﴾.... हाथों के नाखुन काटने के मन्कूल तरीके का खुलासा पेशे खिदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ कर के तरतीब वार छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) समेत नाखुन काटे जाए मगर अंगूठा छोड़ दीजिये । अब उलटे हाथ की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन काट लीजिये । अब आखिर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाखुन काटा जाए । (النَّارُ الْمُخْتَارُ، ص 113)

﴿3﴾.... पाऊं के नाखुन काटने की कोई तरतीब मन्कूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाऊं की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन काट लीजिये फिर उलटे पाऊं के अंगूठे से शुरूअ कर के छुंगलिया समेत नाखुन काट लीजिये ।

﴿4﴾.... जनाबत की हालत (या'नी गुस्ल फर्ज होने की सूरत) में नाखुन काटना मकरूह है । (फ़तावा अ़लम गीरी, जि, 5 स. 358)

﴿5﴾.... दांत से नाखुन काटना मकरूह है और इस से बर्स या'नी कोढ़ के मरज़ का अन्देशा है । (الترجِعُ السَّايِقُ)

﴿6﴾.... नाखुन काटने के बा'द इन को दफ़्न कर दीजिये और अगर इन को फैंक दें तो भी हरज नहीं । (الترجِعُ السَّايِقُ)

﴿7﴾.... नाखुन का तराशा (या'नी कटे हुए नाखुन) बैतुल ख़ला या गुस्ल ख़ाने में डाल देना मकरूह है कि इस से बीमारी पैदा होती है । (الترجِعُ السَّايِقُ)

﴿8﴾.... बुध के दिन नाखुन नहीं काटने चाहिये कि बर्स या'नी कोढ़ हो जाने का अन्देशा है अलबत्ता अगर 39 दिन से नहीं काटे थे, आज बुध को 40 वां दिन है अगर आज नहीं काटता तो 40 दिन से ज़ाइद हो जाएंगे तो उस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिये के 40 दिन से ज़ाइद नाखुन रखना ना जाइज़ व मकरूहे तहरीमी है । (तफ़सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 22 सफ़ह 574-685 मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये)

﴿9﴾.... लम्बे नाखुन शैतान की निशस्तगाह हैं या'नी इन पर शैतान बैठता है । (احياء العلوم، ج 1، ص 189)

बयान नम्बर 10

ख़ातूने जन्नत
का
जोहद

377

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खातूने जन्नत का जोहद

हुज़ूर ﷺ का मुश्किल कुशाई फ़रमाना

हज़रते सय्यिदुना शैख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار

“तज़किरतुल औलिया” में इरशाद फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की विलादत की शब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के वालिदे माजिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد के हां न तो इतना तेल था जिस से नाफ़ की मालिश की जाती और न इतना कपड़ा था जिस में आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا को लपेटा जा सकता, हत्ता कि गुर्बत का येह अ़ालम था कि घर में चराग़ तक न था और चूँकि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا अपनी तीन बहनों के बा’द पैदा हुई थीं इसी मुनासबत से आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا का नाम “राबिआ” (या’नी चौथी) रखा गया ।

जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا की वालिदे माजिदा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا ने आप के वालिद साहिब से कहा कि पड़ोस से थोड़ा सा तेल मांग लाइये ताकि घर में कुछ रोशनी हो जाए तो उन्होंने ने शदीद इस्सार पर हमसाया के दरवाजे पर सिर्फ़ हाथ रख कर घर आ कर कह दिया कि वोह दरवाज़ा नहीं खोलता क्यूँकि वोह येह अ़हद कर चुके थे कि **अब्बाहु** रब्बुल अ़ालमिन عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कभी किसी से कुछ त़लब न करूंगा । इसी

परेशानी में नींद आ गई तो ख़्वाब में मक्की मदनी, मुश्किल कुशा नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत हुई, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तसल्ली व तशफ़्फ़ी देते हुए फ़रमाया कि तेरी येह बच्ची बहुत ही मक्बूलियत हासिल करेगी और इस की शफ़ाअत से मेरी उम्मत के **1000** अफ़ाद बख़्श दिये जाएंगे ।

इस के बा'द सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात, महबूबे रब्बुल अरदे वस्समावात, अहमदे मुजतबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया कि वालिये बसरा के पास एक काग़ज़ पर तहरीर कर के ले जाओ कि तुम हर रोज़ **100** मरतबा मुझ पर दुरूद भेजते हो और शबे जुमुआ **400** मरतबा । लेकिन आज जुमुआ की जो रात गुज़री है इस में तुम दुरूद भेजना भूल गए लिहाज़ा बतौरै कफ़ारा येह तहरीर लाने वाले को **400** दीनार दे दो ।

हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهَا के वालिदे माजिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد अगली सुब्ह बेदार हो कर बहुत रोए और ख़त तहरीर कर के दरबान के ज़रीए वालिये बसरा के पास भेज दिया, उस ने मक्तूब पढ़ते ही हुक्म दिया कि **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की याद आवरी के शुक्राने में **10,000** दिरहम तो फुक़रा में तक्सीम कर दो और **400** दीनार उस शख़्स को दे दो । इस के बा'द वालिये बसरा ता'जीमन खुद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهَا से मुलाकात करने पहुंचा और अर्ज़ किया कि

जब भी आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को किसी चीज़ की ज़रूरत हुवा करे मुझे इत्तिलाअ़ फ़रमा दिया करें, चुनान्चे उन्हों ने 400 दीनार ले कर ज़रूरत का तमाम सामान ख़रीद लिया ।

(تَنْكَرَةُ الْأَوْلِيَّةِ (مَنْزَجِم)، ص २३)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सुल्तान रहमते आलमिय्यान मक्की मदनी सुल्तान रहमते आलमिय्यान

ने अपने गुलाम की किस तरह मुश्किल कुशाई फ़रमाई कि ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर अपनी ज़ियारत से भी मुशर्रफ़ फ़रमाया और हाजत की चीज़ें भी दिला दीं नीज़ उस दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का भी काम बन गया कि रहमते आलम, शफीए मुअज़्ज़म صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खुद अपनी ज़बाने हक्के तर्जमान से अपने उस दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले गुलाम का तज़क़िरा फ़रमाया यकीनन एक अशिके रसूल के लिये येही बहुत बड़ी सआदत है कि मक्के मदीने के ताजदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बेकस पनाह में उस का ज़िक़रे ख़ैर हो, जिस का तज़क़िरा खुद सरकारे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाएं उस की खुश बख़्ती का आलम क्या होगा ?

उफ़ वोह रहे संगलाख़ आह येह पा शाख़ शाख़

ऐ मेरे मुश्किल कुशा तुम पे करोरों दुरूद

(हदाइके बख़िश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

शहँ क्लामे रजा :

हाए ! अफसोस ! रास्ता पथरीला है, आह ! येह पाऊं जख्मों से चूर चूर हैं, ऐ मेरी मुश्किलों को हल फ़रमाने वाले आका ! मेरी मुश्किल कुशाई फ़रमाइये, **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर करोड़ों रहमतें नाज़िल फ़रमाए ।

अल्लाह मो'ती है, हुजूर क़सिम हैं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **اَللّٰهُمَّ** रब्बुल इज्जत عَزَّ وَجَلَّ ने हमारे प्यारे प्यारे आका, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को बे शुमार इख़्तियारात अता फ़रमाए जिस तरह विसाले ज़ाहिरी से क़ब्ल आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लोगों की रहनुमाई व मुश्किल कुशाई फ़रमाया करते थे बा'द अज विसाल भी रब्बे क़दीर عَزَّ وَجَلَّ की अता से अपने गुलामों की मुश्किलें हल फ़रमाते हैं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي "सहीह बुख़ारी शरीफ़" में रिवायत फ़रमाते हैं कि सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात, महबूबे रब्बुल अरदे वस्समावात, अहमदे मुज्ताबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **”اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَخَازِنٌ وَاللّٰهُ يُعْطِي** ” या'नी **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ अता फ़रमाता है और मैं क़ासिम (या'नी तक्सीम करने वाला) और ख़ाज़िन हूं ।

(صحيح البخارى، كتاب فرض الخمس، باب قول الله تعالى فان لله خمسة، ص ٤٩٨، الحديث: ٣١١٣)

उस की बख़्शिश इन का सदका देता वोह है दिलाते येह हैं
रब्ब है मो'ती, ये हैं कासिम रिज़्क उस का है खिलाते येह हैं
लाखों बलाएं करोड़ों दुश्मन कौन बचाए बचाते येह हैं

(हदाइके बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّة)

शर्हे कलामे रजा :

हकीकत में बख़्शिश फ़रमाने वाली ज़ात **अल्लाह**
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ عَزَّ وَجَلَّ की ही है लेकिन रब्ब عَزَّ وَجَلَّ अपने महबूब
के सदके हमारी बख़्शिश फ़रमाता है, हकीकत में अ़ता **अल्लाह**
عَزَّ وَجَلَّ ही फ़रमाता है और हमारे प्यारे प्यारे आका, दो आलम
के दाता صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बारगाहे रब्बुल इज़ज़त में सिफ़ारिश
फ़रमाते हैं ।

रब्ब तअ़ाला मो'ती (या'नी अ़ता फ़रमाने वाला) है और
सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रब्ब
की ने'मते उस के बन्दों में तक्सीम फ़रमाते हैं, रोज़ी **अल्लाह**
रब्बुल आलमिन عَزَّ وَجَلَّ ही की है और उस के महबूब
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस के इज़्ज से अ़ता फ़रमाते हैं ।

और हमारे सामने दुन्या व आख़िरत में बे शुमार बलाएं
और दुश्मन हैं जिन से हमें प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के
सिवा और कौन बचा सकता है ?

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

जोहद की ता'रीफ़

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي "एहयाउल इलूम" में "जोहद" से मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाते हैं : अगर जोहद से मुराद "माल के होने या न होने में बिल्कुल रग़बत न होना" हो तो येह कमाल की इन्तिहा है और अगर इस से मुराद "माल के न होने में रग़बत होना" हो तो येह भी कमाल है लेकिन पहले दर्जे से कम ।

(أَحْيَاءُ عُلُومِ الدِّينِ، كتاب الفقر والزهد، الشطر الاول من الكتاب فى الفقر، ج ٤، ص ٢٣٤)

जोहद व फ़क्र की फ़ज़ीलत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! फ़क्र का सब से बुलन्द दर्जा "जोहद" है और "जोहद" अबरार (या'नी नेक लोगों) का कमाल है और इस को इख़्तियार करने वाले "मुफ़रबीन" में शुमार होते हैं, शहनशाहे अबरार, महबूबे रब्बे ग़फ़ार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जोहद व फ़क्र के फ़ज़ाइल बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने जन्नत में झांक कर देखा तो अकषर जन्नती (वोह थे जो दुन्या में) फ़ुकरा थे और मैं ने जहन्नम में झांक कर देखा तो अकषर जहन्नमी औरतें थीं ।

(صحيح البخارى، كتاب الرقاق، باب فضل الفقر، ص ١٥٨٤، حديث ٢٢٢٩)

एक दूसरी रिवायत में है : (जब मैं ने जन्नत में अकषर "फ़ुकरा" को देखा तो) मैं ने पूछा कि "अग़निया (या'नी मालदार)

कहां हैं ? बताया गया : (माल इकठ्ठा करने की) तगो दो (या'नी कोशिश) ने इन्हें रोक रखा है।” (احیاء علوم الدین، کتاب الفقر والرزق، ج ۴، ص ۲۳۸)

एक और रिवायत में है : जब मैं ने जहन्नम में ज़ियादा तर औरतों को देखा तो पूछा : इन का क्या हाल है (या'नी येह क्यूं जहन्नम में हैं) ? बताया गया : इन्हें दो सुर्ख चीजों या'नी सोने और ज़ा'फ़रान ने मशगूल रखा (कि येह दोनों चीजें औरतों के भलाई से गाफ़िल होने और इस से रू-गरदानी करने का सबब हैं।)

(المرجع السابق)

अब्बाह के महबूब बन्दे

हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ की : ऐ मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ तेरी मख़्लूक में तेरे महबूब बन्दे कौन हैं ताकि तेरी वजह से मैं भी इन से महबूबत करूं ? **अब्बाह** रब्बुल इज़ज़त عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : हर फ़कीर (मेरा महबूब बन्दा है) (المرجع السابق، ص २३९)

रुहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का पसन्दीदा नाम

हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام रुहुल्लाह इरशाद फ़रमाते हैं : बेशक मैं मिस्कीनी से महबूबत और आसाइशों को ना पसन्द करता हूं। आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का पसन्दीदा नाम येह था कि आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को “या मिस्कीन” कह कर पुकारा जाए।

(المرجع السابق)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़ोहद व फ़क्र की एक बहुत बड़ी फ़ज़ीलत येह है कि हमारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इसे खुद भी इख़्तियार फ़रमाया और अपने अहले बैते अतहार رَضَوْنَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ को भी इस के इख़्तियार करने की तरगीब फ़रमाई चुनान्चे इस सिलसिले में प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अपनी शहज़ादी, ख़ातूने जन्मत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को ज़ोहद व फ़क्र की ता'लीम देने के मुतअहद वाकिअत ज़िक्र किये गए हैं जैसा कि

हुज़ूर की ख़ातूने जन्मत के ज़ोहद की ता'लीम

सह़ाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना षौबान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा प्यारे प्यारे आका, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपनी शहज़ादी हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास तशरीफ़ लाए तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपनी गर्दन में पहना हुवा सोने का हार पकड़ कर अर्ज़ की : येह अबुल हसन (या'नी हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ) ने मुझे तोहफ़े में दिया है । इमामुज्ज़ाहिदीन, सय्यिदुल महबूबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी शहज़ादी रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की तरबियत करते हुए इरशाद फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! क्या लोगों के इस तरह कहने से तुम्हें खुशी होगी कि “फ़ातिमा बिनते मुहम्मद” के हाथ में आग का हार है ?

येह कह कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बैठे बिगैर ही तशरीफ ले गए इस के बा'द उम्मुस्सादात हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने वोह हार दे कर एक गुलाम ख़रीदा फिर उसे आज़ाद कर दिया ।

जब नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इस बात की ख़बर पहुंची तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : ”الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّى فَاطِمَةَ مِنَ النَّارِ” या'नी सब ख़ूबियां **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ को जिस ने फ़ातिमा को आग से नजात अता फ़रमाई ।

(المُسْتَدْرَك عَلَى الصَّحِيحَيْنِ لِلْحَاكِمِ، كِتَابُ مَعْرِفَةِ الصَّحَابَةِ،
زهد فاطمة رضى الله عنها، ج ٢، ص ٣٣، الحديث: ٢٧٤٨)

अब्बाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो ।

اصيبن بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! प्यारे प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी शहज़ादी खातूने जन्त हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की कैसी तरबियत फ़रमाई ? अगर्चे इस्लामी बहनों को सोने के ज़ेवरात पहनना जाइज़ हैं लेकिन इमामुज़्ज़ाहिदीन, सय्यिदुल महबूबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी शहज़ादी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को जोहद की ता'लीम देते हुए

इस से मन्अ फ़रमा दिया । याद रहे ! अवलाद की सहीह दीनी तरबियत करना, उन्हें इल्मे दीन की ला ज़वाल ने'मत से बहरा वर करना और अच्छे अख़लाक़ सिखाना वालिदैन की जिम्मेदारी है । आ'ला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "مُسْعَلَةُ الْإِرْشَادِ فِي حُقُوقِ الْأَوْلَادِ" में वालिदैन पर अवलाद के हुकूक़ बयान करते हुए एक हक़ येह भी बयान फ़रमाते हैं कि (वालिदैन अपनी अवलाद को) इल्मे दीन खुसूसन वुज़ू, गुस्ल, नमाज़ व रोज़ा के मसाइल, तवक्कुल, क़नाअत, जोहद, इख़्लास, तवाज़ोअ, अमानत, सिद्क़, अद्ल, हया, सलामते सद्र व लिसान वगैरहा (दिलो ज़बान और दीगर आ'ज़ा की सलामती की) ख़ूबियों के फ़ज़ाइल (पढ़ाए नीज़), हिर्स व तम्अ, हुब्बे दुन्या (दुन्या की महब्बत), हुब्बे जाह, रिया, उज़्ब, तकब्बुर, ख़ियानत, किज़्ब, जुल्म, फ़ोह़श, गीबत, हसद, कीना वगैरहा बुराइयों के रज़ाइल पढ़ाए ।

और ख़ास बच्चियों के हुकूक़ बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : 9 बरस की उम्र से (वालिद बेटियों को) न अपने पास सुलाए न भाई वगैरा के साथ सोने दे, इस उम्र से ख़ास निगहदाश्त शुरूअ करे, शादी बारात में जहां नाच-गाना हो हरगिज़ न जाने दे अगर्चे ख़ास अपने भाई के यहां हो कि गाना सख़्त संगीन जादू है और इन नाजूक शीशों को थोड़ी ठेस बहुत है, बल्कि हंगामों में जाने की मुतलक़ बन्दिश करे (या'नी फ़ंक्शनों में जाने से बिल्कुल

रोक दे), घर को इन पर ज़िन्दां (कैद ख़ाने की तरह) कर दे, बाला ख़ानों (छतों) पर न रहने दे, जब कुफ़व मिले निकाह में देर न करे, ज़निहार.... ! ज़निहार.....! किसी फ़ासिक़ फ़ाजिर खुसूसन बद मज़हब के निकाह में न दे ।

(مَشْعَلَةُ الْأَرْشَادِ فِي حُقُوقِ الْأَوْلَادِ، ص ۲۸-۲۱، ملقطاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने अवलाद के चन्द हुक्क़ मुलाहज़ा फ़रमाए इस से मा'लूम हुवा कि अवलाद को "जोहद" की ता'लीम देना भी वालिदैन पर अवलाद के हुक्क़ में से है, अवलाद के हुक्क़ के बारे में मज़ीद मा'लूमात हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूअ सय्यिदी आ'ला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ के 32 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "अवलाद के हुक्क़" का मुतालआ फ़रमाइये,

ان شاء الله عز وجل । मा'लूमात का अज़ीम ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मुजय्यन घर में दाख़िल होना

नबी के शायाने शान नहीं

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना सफ़ीना

रिवायत करते हैं कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल

मूर्तजा, शरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ का मेहमान हुवा आप
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस के लिये खाना तय्यार किया तो जनाबे फ़ातिमा
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बोलीं कि काश ! हम रसूले खुदा, अहमदे मुज्ताबा,
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को बुलाते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 साथ खाना तनावुल फ़रमाते, चुनान्चे आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 को बुलाया गया । नबिय्युल हरमैन, इमामुल क़िब्लतैन
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ लाए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने
 अपने दोनों हाथ दरवाजे की चोखटों पर रखे, घर के एक गोशे
 में पर्दा देखा, चुनान्चे आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वापस तशरीफ़ ले
 गए । जनाबे फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पीछे गई, अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! किस
 चीज़ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को वापस किया ? फ़रमाया :
 “मेरे लिये या नबी के लिये येह मुनासिब नहीं कि मुज़य्यन
 घर में दाख़िल हो ।”

(مشکوّة المصابيح، کتاب النکاح، باب الولیمة، ج ۱، ص ۵۹۱، الحدیث: ۳۲۲۱)

आस्मां ख़्वान, ज़मीं ख़्वान, ज़माना मेहमान

साहिबे ख़ाना लक़ब किस का है तेरा तेरा

(हदाइके बख़िश अज़ इमामे अहले सुन्नत (عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَالَمِينَ)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद
 यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ ज़िक्र कर्दा हदीष शरीफ़ की शर्ह करते हुए
 तहरीर फ़रमाते हैं : बा'ज उ-लमा ने फ़रमाया कि येह पर्दा

नक़शीन (या'नी नक़शो निगार वाला) था और इस पर जानदारों की तसावीर थीं, इस लिये हज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वहां तशरीफ़ न लाए, इस से मा'लूम हुवा कि अगर दा'वत में कोई ममनूअ काम हो तो न जाए, मगर येह (कहना) ग़लत है (कि पर्दा नक़शीन था) अगर ना जाइज़ पर्दा होता तो सरकारे अ़ली صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मन्अ फ़रमाते बल्कि दस्ते अक्दस से फ़ाड़ देते, पर्दा सादा था, जाइज़ था मगर दुन्यावी तकल्लुफ़ और ज़ाहिरी टीप टोप अहले नुबुव्वत के लाइक़ न थी इस लिये मन्अ तो न फ़रमाया अमलन ना पसन्दीदगी का इज़हार फ़रमा दिया ताकि आयन्दा जनाबे ज़हरा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) अपना घर नेक आ'माल से ही आरास्ता रखें। ज़ीनते दुन्या नुक्साने आख़िरत का ज़रीअ बन सकती है।

(مرآة المناجیح، کتاب النکاح، باب الولیمه، ج ۵، ص ۷۸)

कंगन सदक़ा कर दिये !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अब आइये प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का अपनी शहज़ादी हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत की रग़बत का ज़ेहन देने का एक और वाकिअ मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे एक बार मदीने के ताजदार, नबियों के सालार, महबूबे किर्दगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए तो ख़ातूने जन्मत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के हां तशरीफ़ ले गए देखा कि उन के दरवाजे पर एक पर्दा है और

हाथों में चांदी के कंगन पहन रखे हैं (येह देख कर) आप वापस तशरीफ़ ले गए । हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास आए तो आप रो रही थीं, आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने उन्हें नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के वापस चले जाने की इत्तिलाअ़ दी तो हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ किया : पर्दे और कंगनों की वजह से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वापस तशरीफ़ ले गए, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने पर्दा फाड़ दिया और कंगन उतार कर हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के हाथ सय्यिदुल मुरसलीन, रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में भेज दिये और अर्ज़ किया : “मैं ने इन को सदक़ा कर दिया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जहां मुनासिब समझें खर्च फ़रमा दें ।”

सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे आदमो बनी आदम, रसूले मोहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जाओ ! इसे फ़रोख़्त कर के इस की कीमत अहले सुफ़फ़ा को दे दो । चुनान्चे दोनों कंगन अढ़ाई दिरहम में फ़रोख़्त हुए और अस्हाबे सुफ़फ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ पर सदक़ा कर दिये गए फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के (घर) तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : तेरा बाप तुझ पर कुरबान ! तूने अच्छा किया । (ثَوْتُ الثَّلَوْبِ، الْفَصْلُ الثَّانِي وَالثَّلَاثُونَ، شَرْحُ مَقَامَاتِ الْيَتِيمِينَ --- رَج ١٣٠، ص ٣٣٠)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ सय्यिदा

ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ना गवारी से किस क़दर इजतिनाब की
 कोशिश फ़रमाती थीं कि महज़ इस वजह से कि आप
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अन्दर तशरीफ़ न लाने की वजह येह पर्दा
 और कंगन है, पर्दे को फाड़ दिया और कंगन सदक़ा कर दिये ।
अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सय्यिदा ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के सदके हमें भी
 रसूले खुदा, अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ऐसा सच्चा
 आशिक़ बनाए कि हराम व ना जाइज़ बल्कि ख़िलाफ़े सुन्नत
 कामों से इजतिनाब करते हुए नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हर हर सुन्नत को दीवाना वार अपनाने की
 सआदत नसीब हो जाए । आमीन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायत पर्दे
 का हुक्म आने से पहले की है इसी वजह से हज़रते सय्यिदुना
 अबू राफ़ेअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का ख़ातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना
 फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास आने का ज़िक्र है । फिर
 जब **अल्लाह** तबारक व तआला ने पर्दे का हुक्म नाज़िल फ़रमा
 दिया तो इस के बा'द आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की क्या कैफ़ियत थी ।
 आइये ! मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे एक मरतबा पैकरे अन्वार,
 तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने
 अपनी बेटी हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से

इस्तिफ़सार फ़रमाया : ऐ बेटी ! औरत के लिये क्या चीज़ बेहतर है ? आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जवाबन अर्ज़ की : “न वोह किसी (अजनबी) मर्द को देखे और न कोई (अजनबी) मर्द उसे देखे ।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें सीने से लगा लिया और येह आयत तिलावत फ़रमाई :

دُرَيْبَةُ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ط
 (प ३, अल عم्रन: ३३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह एक नस्ल है एक दूसरे से ।

(ایضاً، الفصل، الخامس والاربعون فيه ذكر التزويج وتركه... الخ، ج ۲، ص ۱۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पारह 22 सूरतुल अहज़ाब, आयत नम्बर 33, परवर दगारे अ़ालम عَزَّ وَجَلَّ पर्दे का हुक्म देते हुए इरशाद फ़रमाता है :

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ
 تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَى
 (प २, الاحزاب: ३३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलियत की बे पर्दगी ।

ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي इस आयत के तहत फ़रमाते हैं : अगली जाहिलियत से मुराद कब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औरतें

इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व महासिन (या'नी बनाव

सिंघार और जिस्म की खूबियां मषलन सीने के उभार वगैरा) का इज़हार करती थीं कि गैर मर्द देखें, लिबास ऐसे पहनती थीं जिन से जिस्म के आ'जा अच्छी तरह न ढकें ।

(تفسير خَزَائِنِ الْعُرْفَانِ، پ ۲۲، الأَحْزَاب، تحت الآية: ۳۳، ص ۷۸۰)

अफ़सोस, सद करोड़ अफ़सोस ! मौजूदा दौर में भी वोही ज़मानए जाहिलिय्यत वाली बे पर्दगी पाई जा रही है, यकीनन जैसे उस ज़माने में पर्दा ज़रूरी था वैसा ही अब भी है बल्कि अब तो हालत येह है कि औरतें बाजारों, कम्पनी, बागों, तफ़रीह गार्हों और सीनेमा घरों में घूमती फिरती हैं, स्कूलज़-कोलेजिज़ में लड़के लड़कियां एक साथ बैठ कर ता'लीम हासिल करते हैं बल्कि मर्द व औरत वगैरा मिल कर टेनिस, होकी वगैरा खेल खेलते हैं ।

याद रहे ! औरतों का बे पर्दा बाहर आना जाना, घूमना फिरना, गैर महरम मर्दों से मिलना जुलना हराम हराम हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, रसूले करीम, रऊफुर्रहीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने इब्रत निशान है : औरत छुपाने के लाइक़ है (लिहाज़ा इस को पर्दे में रहना चाहिये) जब कोई औरत बाहर निकलती है तो शैतान उस को झांक झांक कर देखता है ।

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ، كتاب الرضاع، باب ماجاء فى كراهية الدخول على المغيبات، ص ۳۰۲، الحديث: ۱۷۳۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَوَبُّوا إِلَى اللَّهِ!

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

सीधा रास्ता मिल गया

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बद अक़ीदगी से बचने और गुनाहों भरी जिन्दगी छोड़ कर नेकियों पर इस्तिक्ामत पाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये । दा'वते इस्लामी का मदनी काम भी करती रहिये । **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** इस मदनी माहोल की बरकत से लाखों इस्लामी बहनों की जिन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, इस जिम्न में एक मदनी बहार मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है : हमारा ख़ानदान अक़ाइद के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ ख़ानों में बटा हुवा था, मैं शदीद परेशान थी कि न जाने कौन से लोग सहीह रास्ते पर हैं ! मैं अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में दुआएं किया करती कि या **اَبْلَاه** **عَزَّوَجَلَّ** मुझे सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा । **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मुझे सीधा रास्ता मिल गया और इस की सूरत यूं बनी कि एक दिन चन्द इस्लामी बहनों ने मुझे तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत की दा'वत पेश की, मैं सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शरीक हुई । वहां एक मुबल्लिगा इस्लामी बहन ने **फ़ैजाने सुन्नत** से देख कर बयान किया, बयान सुन कर मैं ख़ौफ़े खुदा से कांप उठी, रिक्कत अंगेज़ दुआ, सलातो सलाम और इस्लामी

बहनों की अपनाइयत भरी मुलाक़ातों ने मज़ीद बहुत मुतअष्विर किया, الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत की बरकत से मज़हबे मुहज़ज़ब अहले सुन्नत की सदाक़त पर यक़ीन की दौलत के साथ साथ मुझे नमाज़े पन्जगाना और रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की पाबन्दी भी नसीब हुई, यूँ मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतों को समेटती समेटती ता दमे तहरीर तहसील जिम्मेदार की हैषियत से इस्लामी बहनों में नेकी की दा'वत आम करने के लिये कोशां हूँ।

(इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 277)

ज़ालिम हूँ जफ़ाकार व सितम गर हूँ मैं आसी व ख़ताकार भी हृद भर हूँ मैं
येह सब है मगर प्यारे तेरी रहमत से सुनी हूँ मुसलमान मगर हूँ मैं

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

सलाम के 11 मदनी फूल

- ﴿1﴾ मुसलमान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे सलाम करना सुन्नत है। ﴿2﴾ बहारे शरीअत, हिस्सा 16, सफ़हा 102 पर लिखे हुए जुज़इये का खुलासा है : “सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को सलाम करने लगा हूँ इस का माल और इज़्ज़तो आबरू सब कुछ मेरी हिफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना हराम जानता हूँ।”
- ﴿3﴾.... दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो वहां मौजूद मुसलमानों को सलाम करना कारे षवाब है। (سُنَنِ ابْنِ دَاوُدَ، ص ٨١٠، الْحَدِيث: ٥٢٠٠)

﴿4﴾.... सलाम में पहल करना सुन्नत है । (الرَّجْعُ السَّابِقُ، الحديث: ٥١٩٤)

﴿5﴾.... सलाम में पहल करने वाला **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ का मुकर्रब है । (الرَّجْعُ السَّابِقُ) ﴿6﴾.... सलाम में पहल करने

वाला तकब्बुर से भी बरी है । जैसा कि मेरे मक्की मदनी आका, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले सलाम कहने वाला तकब्बुर से बरी है ।

﴿7﴾.... सलाम (में पहल) करने वाले पर 90 रहमतें और जवाब देने वाले पर 10 रहमतें नाज़िल होती हैं । (شُعَبُ الْإِيمَانِ، ج ٦، ص ٢٣٣، الحديث: ٨٤٨٦)

﴿8﴾.... **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ** कहने से 10 नेकियां मिलती हैं । साथ में **وَرَحْمَةُ اللهِ** भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी और शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी ।

﴿9﴾.... इसी तरह जवाब में **وَعَلَيْكُمْ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ** कह कर 30 नेकियां हासिल की जा सकती हैं । ﴿10﴾.... सलाम का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले । (بَهَارَةُ الشَّرَائِعِ، ج 16، ص 103 تا 107)

﴿11﴾.... सलाम और जवाबे सलाम का दुरुस्त तलफ़ुज़ याद फ़रमा लीजिये :

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ (أَسْ-سَلَامُ - عَلَيَّ - كُمْ) وَعَلَيْكُمْ السَّلَامُ (وَ-عَلَيْكُمْ - مُسْ-سَلَامُ)

बयान नम्बर 11

विशाले रसूल पर
खातूने जन्नत
की
कैफियत

399

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

विशाले रसूल पर ख़ातूने जन्नत की कैफ़ियत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ख़ातमुल मुरसलीन, रहूमतुल्लिल अलमीन,
शफ़ीज़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन,
महबूबे रब्बुल अलमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है : जब जुमा'रात का
दिन आता है **अब्बाह** तअला फ़िरिशतों को भेजता है जिन के
पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह यौमे
जुमा'रात और शबे जुमुआ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ की
दरमियानी रात) मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ने वालों के
नाम लिखते हैं ।

(كُنْزُ الْعَمَالِ، كتاب الاذکار، الباب السادس فی آداب الصلاة علیه وعلى آله، ج ۱، الجزء الاول، ص ۲۵۰، الحدیث: ۲۱۷۴)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

नबी की ग़ैबी ख़बर

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا هَجْرَتِهِ سَيِّدَتَا فَرَاتِمَتُجْجَهْرَا هَجْرَتِهِ سَيِّدَتَا فَرَاتِمَتُجْجَهْرَا هَجْرَتِهِ سَيِّدَتَا
तशरीफ़ लाई, उन का चलना रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की

चाल के मुशाबेह था । नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “मेरी बेटी को मरहबा ! फिर उन्हें दाएं या बाएं बिठाया, फिर उन के कान में कोई बात फ़रमाई तो वोह रोने लगीं । मैं ने पूछा : तुम क्यूं रोई ? फिर थोड़ी देर के बा’द उन के कान में एक और बात कही, तो वोह हंसने लगीं । मैं ने कहा : आप में ग़म से ज़ियादा खुशी मैं ने आज से पहले नहीं देखी । फिर मैं ने हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से इस रोने और हंसने का सबब पूछा ? तो उन्होंने ने साफ़ कह दिया कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का राज़ ज़ाहिर नहीं कर सकती । जब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की वफ़ात हो गई तो (सय्यिदा अ़इशा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के दोबारा दरयाफ़्त करने पर) हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने कहा : हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पहली मरतबा मेरे कान में येह फ़रमाया था कि हज़रते ज़िब्रैल عَلَيْهِ السَّلَام हर साल एक मरतबा कुरआने पाक का मुझ से दौर करते (या’नी दोनों एक दूसरे को कुरआने पाक सुनाते) थे और इस साल इन्हों ने दो मरतबा दौर किया है, लगता है कि मेरी वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया है, मेरे घर वालों में से सब से पहले तुम मुझ से मिलोगी । येह सुन कर मैं फ़र्ते ग़म से रो पड़ी, फिर फ़रमाया : क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम अहले जन्नत की औरतों की सरदार हो ? येह सुन कर मैं मुस्कुरा पड़ी ।”

(صحيح البخارى، كتاب المناقب، باب علامات النبوة في الاسلام، ص ۹۲۰، الحديث: ۳۶۲۳، ۳۶۲۴)

जिन की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें

उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम

(علیہ رحمۃ رب العزت اجد ایمامہ اہلہ سوننت)

शर्ह सलामे रजा :

हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तसल्ली से गमजदा रोते हुए हंसने लगते और अपने गमों को भूल जाते थे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हमा वक्त मुस्कुराने की आदत खस्लत पर लाखों सलाम नाजिल हों ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस हदीषे मुबारक से चन्द मदनी फूल चुनने को मिले । पहला मदनी फूल यह है कि हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपनी बेटी से किस क़दर महबबत फ़रमाया करते थे कि इन की आमद पर फ़रमाया : “मेरी बेटी को मरहबा !” और फिर इन को अपने पास बिठाया । यकीनन बेटी **अब्बाह** रब्बुल इज़ज़त عَزَّ وَجَلَّ की अज़ीम नेमत है । बा'ज नादान बेटी को अच्छा नहीं समझते, बेटों की पैदाइश पर तो ख़ूब खुशियां मनाते हैं मगर बेटियों की पैदाइश पर खुश नहीं होते । याद रखिये ! इस्लाम ऐसे मजमूम ख़यालात की इजाज़त नहीं देता । अहादीषे मुबारका में बेटी की बहुत सी फ़ज़ीलतें वारिद हैं, चुनान्वे

बेटी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 2 फ़शमैने मुस्तफ़

﴿1﴾.... जब किसी के हां लड़की पैदा होती है तो **अब्बाह** तआला उस के घर फिरिशतों को भेजता है जो आ कर कहते हैं :

“ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती हो । फिर फिरिशते उस बच्ची को अपने परो के साए में ले लेते हैं और उस के सर पर हाथ फैरते हुए कहते हैं कि एक नातुवां व कमजोर जान एक नातुवां से पैदा हुई है, इस नातुवां जान की परवरिश करने वाला क्रियामत तक मदद किया जाएगा ।”

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الاولاد، ج ۸، ص ۲۸۵، الحديث: ۱۳۲۸۴)

﴿2﴾.... जो बेटियों के जरीए (आजमाइश में) मुब्तला किया जाए और वोह इन के साथ हुस्ने सुलूक करे तो येह बेटियां उस के लिये जहन्नम से रोक बन जाएंगी ।

(صحيح مسلم، کتاب البر والصلة والاداب، باب فضل الاحسان الى البنات، ص ۱۲۱، الحديث: ۲۶۲۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस हदीषे मुबारक से जो दूसरा मदनी फूल हमें चुनने को मिलता है वोह है राज को पोशीदा रखना कि हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का राज ज़ाहिर नहीं कर सकती । आज हम में से बा'ज ऐसी नादान भी हैं जो दूसरों के राजों को ज़ाहिर करती और ऐ'बों को उछालती हैं । याद रहे ! मुसलमान के हुकूक में से एक हक़ येह है कि वोह तमाम मुसलमानों के राजों को पोशीदा रखे । और राज़ को पोशीदा रखने के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बड़ी ताकीद फ़रमाई है, चुनान्चे

राज छुपाने के मुतअल्लिक 2 अहदीषे मुबारक

﴿1﴾.... मोमिन जब अपने भाई का कोई राज देखता है और उस को छुपाता है तो **अल्लाह** तअला उसे जन्त में दाखिल फरमाणा । (المعجم الاوسط، باب الالف، من اسمه احمد، ج 1، ص 202، الحديث: 1380)

﴿2﴾.... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते अमीरे मुअविया बिन अबी सुफ़यान (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) से इरशाद फ़रमाया : “बेशक तुम अगर लोगों के राजों को तलाश करोगे तो तुम उन को ख़राब कर दोगे या उन को ख़राब करने के क़रीब कर दोगे ।”

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النهی عن التجسس، الحديث: 4888، ص 22)

मेरे आका सरे मेहशर मेरा पर्दा रखना

राज ऐबों का मेरे फ़ाश हुवा जाता है

(127. س. دانت بركاتهم العالیة सुन्नत अहले मुन्नत अज़ अमीरे अहले सुन्नत बख़्शिश वसाइले)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस हदीषे मुबारक से हमें येह मदनी फूल भी चुनने को मिला कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने रसूले मक़बूल, गुलशने आमिना के महकते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इल्मे ग़ैब भी अता फ़रमाया है । जभी तो जान लिया कि मेरे विसाल का वक़्त क़रीब आ गया है और येह भी बता दिया कि मेरे घर वालों में से सब से पहले तुम मुझ से मिलोगी । और बा'द में येह बात उसी तरह़ षाबित भी हुई । और इल्मे ग़ैब का तो

अब्बाह عَزَّ وَجَلَّ ने कुरआने पाक में वाजेह इरशाद फ़रमा दिया है। चुनान्चे पारह 30 सूरतुत्तक्वीर आयत नम्बर 24 में इरशादे रब्बानी है :

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾ **तर्जमए कन्जुल ईमान** : और येह नबी ग़ैब बताने में बखील नहीं।
(प: ३०, त्कौर: २४)

और येह जब ही हो सकता है कि हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इल्मे ग़ैब हो और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लोगों को इस से मुत्तलअ़ फ़रमाते हों।

एक हदीषे मुबारक भी मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये, चुनान्चे ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : हम पर हमारी उम्मत पेश फ़रमाई गई अपनी अपनी सूरतों में मिट्टी में जिस तरह कि हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर पेश हुई थी हम को बता दिया गया कौन हम पर ईमान लाएगा और कौन कुफ़र करेगा येह ख़बर मुनाफ़ि़कीन को पहुंची तो हंस कर कहने लगे कि हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं कि उन लोगों की पैदाइश से पहले ही काफ़िर व मोमिन की ख़बर हो गई हम तो इन के साथ हैं और हम को नहीं पहचानते। येह ख़बर हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को पहुंची तो आप عَزَّ وَجَلَّ मिम्बर पर खड़े हुए और खुदा عَزَّ وَجَلَّ की हम्दो षना की, फिर फ़रमाया : उन लोगों का क्या हाल है जो हमारे इल्म में ता'न करते हैं, अब से क़ियामत तक किसी चीज़ के बारे में जो भी तुम हम से पूछोगे हम तुम को ख़बर देंगे।

(تَفْسِيرُ الْبَغَوِيِّ، پ: २, آل عمران، تحت: الآية 49، ج 1، ص 52)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार खान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي फ़रमाते हैं : इस हदीष से दो बातें मा'लूम हुई एक येह की हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इल्म में ता'ने करना मुनाफ़िकों का तरीका है। दूसरे येह कि क़ियामत तक के वाक़िआत सारे हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इल्म में हैं। (جاء الحق، ص ۹۳)

तुम मकीने ला मकां हो, और हक़ के राज़दां हो इज़ने रब्ब से ग़ैब दां हो, क्या है जो तुम से निहां हो

يا نبي سلام عليك يا رسول سلام عليك يا حبيب سلام عليك صلوة الله عليك
(573 स. دامت بركاتهم العالیه اھلے سۛنۛت ازمیۛرے اھلے باریشہ)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

महबूबे रब्बे जुल जलाल का ज़ाहिरी विशाल

हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह और अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمُ फ़रमाते हैं : एक दिन रसूले अकरम, नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को हुक्म दिया सब को नमाज़ के लिये बुलाओ, चुनान्चे मुहाजिरीन व अन्सार रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मस्जिद शरीफ़ में जम्अ हो गए। रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की हम्दो षना की, फिर ऐसा खुत्बा इरशाद फ़रमाया कि (इसे सुन कर) दिल डर गए और आंखों से सैले अशक रवां हो गया : फिर

इरशाद फरमाया : “ऐ लोगो ! तुम ने मुझे कैसा नबी पाया ?”

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज की : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप को जजाए खैर दे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बेहतरीन नबी हैं, हम पर बाप की तरह लुत्फो करम फरमाने वाले, भाई की तरह नासेह और शफीक हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के पैगामात पहुंचा दिये, हम तक उस की वहूय पहुंचा दी और अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के रास्ते की तरफ हिक्मत और अच्छी नसीहत के साथ दा'वत दी, **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ हमारी तरफ से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इस से बेहतर व अफजल जजा अता फरमाए जो जजा वोह किसी नबी को उस की उम्मत की तरफ से देता है। हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : ऐ मुसलमानों के गुरौह ! मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की और अपने उस हक की कसम देता हूं जो मेरा तुम पर है, मेरी तरफ से किसी को कोई तक्लीफ पहुंची हो तो वोह खड़ा हो और मुझ से बदला ले ले। कोई भी खड़ा न हुवा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दोबारा कसम दी, फिर भी कोई खड़ा न हुवा। तीसरी बार इरशाद फरमाया : ऐ मुसलमानों के गुरौह ! मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की और अपने उस हक की कसम देता हूं जो मेरा तुम पर है, मेरी तरफ से किसी को कोई तक्लीफ पहुंची हो तो वोह खड़ा हो और मुझ से कियामत के दिन क़िसास (ق.ص.ص) से पहले अपना क़िसास ले ले। सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ में से एक बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना अक्काशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ खड़े हुए और हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के

सामने पहुंच कर अर्ज गुज़ार हुए : मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कुरबान ! आप बार बार कसम न देते तो इन में से किसी चीज़ पर इक़दाम की जुअत न होती । एक ग़ज़वे में, मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ था । **अल्लेह** عَزَّ وَجَلَّ ने हमें फ़तह दी और अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मदद की, हम वापस लौट रहे थे कि मेरी ऊंटनी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ऊंटनी के करीब हो गई । मैं नीचे उतरा ताकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की पिन्डली मुबारक को चूम कर बरकतें हासिल करूं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने शाख़ उठा कर मेरे पहलू में मार दी, मैं नहीं जानता कि आप صَلَّى اللهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जान बूझ कर मारी या आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ऊंटनी को मारने का इरादा फ़रमा रहे थे । हज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : मैं तुझे **अल्लेह** عَزَّ وَجَلَّ की पनाह में लाता हूं इस बात से कि **अल्लेह** عَزَّ وَجَلَّ का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तुम्हें क़स्दन मारे । ऐ बिलाल (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा के घर जाओ और पतली लम्बी शाख़ ले कर आओ । हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने सर पर हाथ रखे परेशानी के आलम में कहते जा रहे थे कि **अल्लेह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ अपनी जान का किसास देंगे ? हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर पहुंच कर दरवाज़ा बजाया और अर्ज की : ऐ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की लाडली शहज़ादी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ! मुझे पतली लम्बी शाख़ दीजिये ।

आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया : ऐ बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मेरे वालिदे मोहतरम ने शाख़ क्या करनी है ? न तो आज हज़ का दिन है और न ही किसी ग़ज़वे का ! अर्ज़ की : ऐ सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा आप इस मुआमले से गाफ़िल न रहिये जिस में आप के वालिद हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दीन को (तक्मील के बा'द) अल वदाअ़ फ़रमाने वाले और येह दुन्या छोड़ कर जाने वाले हैं और अपनी जान का क़िसास देना चाहते हैं । फ़रमाया : ऐ बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ किस के दिल ने येह बात गवारा कर ली कि वोह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से क़िसास ले । ऐ बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ तुम हसन व हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को उस शख़्स के पास ले जाओ, वोह इन दोनों से क़िसास ले ले । हज़रते बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (शाख़ ले कर) मस्जिद में (बारगाहे रिसालत में) हाज़िर हुए । हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन से शाख़ ले कर हज़रते सय्यिदुना अक्काशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को पकड़ा दी । हज़रते अबू बक्र व उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا येह मन्ज़र देख कर खड़े हो गए और फ़रमाया : ऐ अक्काशा ! हम तेरे सामने खड़े हैं हम से क़िसास ले लो और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से न लो । हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन से फ़रमाया : ऐ अबू बक्र व उमर (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ठहरो, **اَللّٰهُ** तआला तुम्हारा मक़ामो मर्तबा जानता है । हज़रते सय्यिदुना अली इब्ने अबी तालिब (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) खड़े हुए और फ़रमाया । ऐ अक्काशा ! मैं अभी जिन्दा हूँ, मेरा दिल कैसे गवारा करेगा कि मेरे होते हुए तुम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से क़िसास लो !

देखो ! यह रही मेरी पीठ और यह रहा मेरा पेट, मुझे से किसास लो और मुझे 100 कोड़े मार लो मगर **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बदला मत लो, नबिय्ये रहमत (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने इरशाद फरमाया : ऐ अली (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) तुम बैठ जाओ, **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारा मक़ाम और तुम्हारी निय्यत जानता है। अब हसन व हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا खड़े हुए और फरमाया : ऐ अक्काशा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) क्या आप जानते नहीं कि हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नवासे हैं ? हम से किसास लेना ऐसे ही है जैसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से किसास लेना। हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : ऐ मेरी आंखों की ठंडक ! तुम दोनों बैठ जाओ, **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हें तुम्हारा यह मक़ाम न भुलाए। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : ऐ अक्काशा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) अगर तुम मारना चाहते हो तो मार लो। अर्ज की : या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब आप ने मुझे मारा था तब मेरे पेट पर कुछ न था, हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने अपने बतने अक़दस से कपड़ा हटा दिया, यह देख कर सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के रोने की आवाज़ बुलन्द हो गई और कहने लगे : क्या अक्काशा को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से बदला लेते हुए देखना गवारा कर लोगे ? जब हज़रते सय्यिदुना अक्काशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बतने अन्वर की पुरनूर सफ़ेदी देखी

तो बे ताबाना जिस्मे अक़दस से लिपट गए और अ़ालमे बेखुदी में बोसे लेने लगे और अर्ज़ गुज़ार हुए, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से क़िसास लेने की हिम्मत किस में है ? हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तुम मुझ से क़िसास ले लो या मुझे मुआफ़ कर दो । अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं ने अपना हक़ मुआफ़ किया इस उम्मीद पर कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन मुझे भी मुआफ़ फ़रमाए । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जो जन्नत में मेरे पड़ोसी को देखना चाहता है वोह इस शैख़ की तरफ़ देख ले, येह सुनते ही सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ खड़े हुए और हज़रते सय्यिदुना अक्काशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की दोनों आंखों के दरमियान बोसे देते हुए कहने लगे : (ऐ अक्काशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) तुम्हें मुबारक हो, तुम बुलन्द दरजात और जन्नत में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रफ़ाक़त पा गए ।

इसी दिन से हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अलील हो गए और 18 दिन तक अलील रहे (और मरज़ को बरकतें लेने की सआदत अता फ़रमाते रहे) इस दौरान सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ इयादत के लिये हाज़िर होते रहे, इतवार के दिन मरज़ ने शिद्दत इख़्तियार की, फिर पीर के दिन मरज़ ने और शिद्दत इख़्तियार की । **अल्लाह** तआला ने मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म इरशाद फ़रमाया : मेरे हबीब

मेरे सफ़ी की बारगाह में हाज़िरी दो, इन के पास बड़ी प्यारी सूरत में जाना और इन की रूह क़ब्ज़ करने में नर्मी करना । हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने एक आ'राबी की सूरत में दरवाज़े मुक़द्दसा पर खड़े हो कर सलाम किया और अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त त़लब की । हज़रते अइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया : ऐ फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا तुम उस शख़्स को जवाब दो । हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया : ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के बन्दे **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ तेरे आने का तुझे अज़्र दे, रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की त़बीअत ठीक नहीं । हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने फिर इजाज़त त़लब की तो येही जवाब मिला । तीसरी मरतबा दरवाज़ा बजा कर फ़रमाया मेरा अन्दर आना ज़रूरी है । हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़ सुनी तो पूछा : दरवाज़े पर कौन है ? हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज़ की : एक शख़्स बार बार अन्दर आने की इजाज़त त़लब कर रहा है, तीसरी मरतबा जब मैं ने उस की आवाज़ सुनी तो मेरे रोंगटे (या'नी जिस्म के बाल) खड़े हो गए और आ'जा कांपने लग गए । इरशाद फ़रमाया : ऐ फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ! तुम जानती हो, दरवाज़े पर कौन है ? येह लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाला, जमाअतों में जुदाई डालने वाला, बीवियों को बेवा करने वाला, अवलाद को यतीम करने वाला, घरों को वीरान करने वाला, क़ब्रों को आबाद करने वाला है, **येह मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام हैं । ऐ मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام अन्दर आ जाओ, **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहूँ फ़रमाए । हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे अक्दस में

हज़िर हुए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام तुम मेरी ज़ियारत के लिये हज़िर हुए हो या रूह कब्ज़ करने के लिये ? अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप की ज़ियारत के लिये हज़िर हुवा हूं और रूहे मुबारक को ले जाने का भी हुक्म हुवा है । मुझे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हुक्म दिया है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इजाज़त के बिग़ैर बारगाह में हज़िरी न दूं न ही बिग़ैर इजाज़त रूहे मुबारक कब्ज़ करूं, अगर आप इजाज़त अता फ़रमाएं तो ठीक वरना मैं अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ लौट जाता हूं । इरशाद फ़रमाया : मेरे महबूब जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को कहां छोड़ आए । अर्ज़ की : वोह आस्माने दुन्या पर हैं और फ़िरिश्ते उन से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ता'ज़ियत कर रहे हैं । नागाह (फ़ैरन) हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ! तशरीफ़ ले आए और सरे अन्वर के पास बैठ गए । हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ! येह दुन्या से कूच का वक़्त है जो कुछ मेरे लिये **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के पास है मुझे इस की बिशारत दो । अर्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ आप खुश हो जाएं, मैं आस्मानों के दरवाजे खुले छोड़ आया हूं, फ़िरिश्ते सफ़ दर सफ़, दस्त बस्ता, सलामती की दुआएं करते, खुशबू में बसे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की रूहे मुबारक के इस्तिक़बाल की ख़ातिर मुन्तज़िर खड़े हैं । इरशाद फ़रमाया : सब ता'रीफ़ें मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं, ऐ जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام मुझे और खुश ख़बरी दो ।

अर्ज की : मैं आप को खुश ख़बरी देता हूँ कि जन्नतों के दरवाज़े खुले हैं उस की नहरें जारी हैं, उस के दरख़्त फलों से लदे हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रूहे मुबारक के इस्तिक्बाल के लिये हूँ आरास्ता हैं। इरशाद फ़रमाया : तमाम ता'रीफ़ें मेरे रब्बِ عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं। ऐ जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام मुझे और खुशी की ख़बर सुनाओ। अर्ज की : आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सब से पहले शफ़ाअत फ़रमाने वाले हैं और क़ियामत के दिन सब से पहले आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ही की शफ़ाअत क़बूल की जाएगी। सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : तमाम ता'रीफ़ें मेरे रब्बِ عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं।

हज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام मज़ीद अर्ज गुज़ार हुए कि **اَللّٰهُ** तअ़ाला फ़रमाता है : ऐ मुहम्मद ! मैं ने तमाम अम्बियाए किराम और उम्मतों पर जन्नत ह़राम कर दी है यहां तक कि आप और आप की उम्मत इस में दाख़िल हो जाए। (येह सुन कर) फ़रमाया : अब मेरा दिल खुश हो गया है लिहाज़ा ऐ मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ! जिस का तुम्हें हुक्म हुवा वोह करो। हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को गुस्ल कौन दे, किन कपड़ों में कफ़न दें, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर नमाज़ कौन पढ़े और क़ब्र में कौन दाख़िल करे ? फ़रमाया : ऐ अ़ली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आप मुझे गुस्ल देना और फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पानी डालें और जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारे साथ होंगे। जब तुम मेरे गुस्ल से

फ़ारिग़ हो जाओ तो तीन नए कपड़ों में कफ़न देना और जिब्रील
 عَلَيْهِ السَّلَام जन्मती खुशबू लाएंगे। जब तुम मुझे चारपाई पर लैटा दो
 तो मुझे मस्जिद में रख कर चले जाना क्योंकि सब से पहले मेरा
 रब्ब फ़ौक़ल अर्श से (जैसे उस की शान के लाइक़ है) मुझ पर दुरूद
 भेजेगा फिर जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام फिर मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام फिर इसराफ़ील
 عَلَيْهِ السَّلَام फिर दीगर मलाइका عَلَيْهِمُ السَّلَام गुरौह दर गुरौह, इस के
 बा'द तुम सफ़ दर सफ़ खड़े होना और मुझ से आगे कोई भी न
 बढ़े। हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज की :
 बाबा जान ! आज जुदाई का दिन है तो मेरी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मुलाक़ात कब होगी ? इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरी बेटी ! तुम
 मुझे क़ियामत के रोज़ हौज़ के पास मिलना जहां मैं अपने उम्मतियों
 में से हौज़ पर आने वालों को पानी पिला रहा होऊंगा। अर्ज की :
 या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अगर मैं वहां आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से मुलाक़ात न कर सकूं तो ? रसूलल्लाह
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तुम मीज़ान के पास मुझे मिलना
 मैं अपने उम्मतियों की शफ़ाअत कर रहा होऊंगा। अर्ज की :
 अगर वहां न पाऊं तो कहां मिलूं ? इरशाद फ़रमाया : तुम पुल
 सिरात के पास मुझे मिल लेना मैं अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के हुज़ूर येह
 सदा बुलन्द कर रहा होऊंगा “رَبِّي سَلِّمْ أُمَّتِي مِنَ النَّارِ” या'नी ऐ मेरे
 रब्ब عَزَّ وَجَلَّ मेरी उम्मत को आग से सलामती के साथ गुज़ार दे।”

इस के बा'द मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने रूह क़ब्ज़ करनी
 शुरूअ की, जब रूह नाफ़ तक पहुंची तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے فرमाया : हाए ! कैसी सख्ती का वक्त है ।

हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا ने बेताबाना पुकारा :

हाए ! मेरे बाबा जान की तकलीफ़ ! जब रूहे मुबारक मुक़द्दस बतन से जुदा हुई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की वसियत के

मुताबिक़ अमल किया गया और हज़रते अबू बक्र सिदीक़, अलिय्युल मुर्तजा और अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُمْ

ने क़ब्रे अन्वर में उतारा और तदफ़ीन कर दी, जब सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُمْ तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो कर पलटे तो हज़रते

सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا ने हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ से कहा : ऐ अबल हसन

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तुम लोगों ने रसूलुल्लाह को दफ़्न कर दिया ? फ़रमाया : हां । हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा

رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया : तुम्हारे दिलों ने किस तरह गवारा कर लिया कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर मिट्टी डालो ?

क्या तुम्हारे सीनों में हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये रहम न था ? क्या वोह भलाई की बातें सिखाने वाले न थे ?

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया :

ऐ फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا क्यूं नहीं, लेकिन **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का हुक्म टाला नहीं जा सकता । हज़रते सय्यिदुना

फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا रोते हुए फ़रमाने लगीं : हाए बाबा जान ! अब जिब्रील कभी नहीं आएंगे ।

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ، بَابُ الْحَاءِ، بَقِيَّةُ أَخْبَارِ حَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ج ۲، ص ۱۹۱، الحديث: ۲۶۱۰، ملخصاً وملتقطاً)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वोह कैसा रिक्कत

अंगेज मन्जर होगा जब सय्यिदे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दुन्या से तशरीफ ले गए होंगे ! सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ पर कोहे गम टूट पड़ा होगा और हजरते सय्यिदा फातिमतुज्जहरा كِي كَلْبِي كَيْفِيَّت كया होगी ? यकीनन मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जुदाई से आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का दिल रंजो गम से घाइल हो गया होगा !!!

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हुकुकुल इबाद के बारे में किस क़दर मोहतात थे । गुनाहों से पाक होने के बा वुजूद फ़रमाया कि “ऐ मुसलमानों के गुरौह ! मैं तुम्हें **اَبْلَاهُ** عَزَّ وَجَلَّ की और अपने उस हक़ की क़सम देता हूं जो मेरा तुम पर है, मेरी तरफ़ से किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंची हो तो वोह खड़ा हो और मुझ से बदला ले ले” इस फ़रमाने अ़लीशान में हमारे लिये दर्स व नसीहत के कितने मदनी फूल हैं । हम गौर करें कि हमारी हालत क्या है ? और हम लोगों के कितने हुकुक पामाल करते हैं ? हमारे अस्लाफ़े किराम رَضُوا اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की आदते मुबारका थी कि वोह हुकुकुल इबाद से बहुत डरते थे

ख़्वाह मा'मूली सी चीज़ मषलन किसी का ख़िलाल (दांत कुरैदने का तिनका) या सूई ही हो तो इस से भी डरते थे। खुसूसन जब अपने आ'माल का मुहासबा फ़रमाते तो ख़ौफ़े खुदा के सबब बे करार हो जाते कि हमारे पास तो कोई ऐसी नेकी नहीं जिसे मुख़ालिफ़ को उस के हक़ के बदले क़ियामत के दिन दे कर राज़ी किया जाए। बसा अवक़ात किसी एक ही बे इन्साफ़ी के इवज़ ज़ालिम की तमाम नेकियां ले कर भी मज़लूम खुश न होगा।

आम तौर पर लोग बन्दों के हुकूक की अहम्मियत नहीं समझते हालांकि बन्दों के हुकूक का मुआमला बहुत ही अहम, नाजुक और इस में कोताही सख़्त तशवीशनाक है। बल्कि एक हैषियत से देखा जाए तो हुकूकुल्लाह (या'नी **अल्लाह** के हुकूक) से ज़ियादा हुकूकल इबाद (बन्दों के हुकूक) सख़्त हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाला है अगर वोह अपने फ़ज़्लो करम से चाहेगा तो अपने बन्दों पर रहूम फ़रमा कर अपने हुकूक मुआफ़ फ़रमा देगा मगर बन्दों के हुकूक को उस वक़्त तक मुआफ़ न फ़रमाएगा जब तक बन्दे अपने हुकूक को मुआफ़ न कर दें। लिहाज़ा बन्दों के हुकूक को अदा करना या मुआफ़ करा लेना बेहद ज़रूरी है वरना क़ियामत में बड़ी बड़ी मुश्किलात का सामना हो सकता है।

हुकूकुल इबाद की मुआफ़ी का तरीका

मेरे आका, आ'ला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ हुकूकुल इबाद की मुआफ़ी का तरीका बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : हुकूकुल इबाद मुआफ़ होने की दो सूरतें हैं :

- (1).... जो काबिले अदा है अदा करना वरना उन से मुआफ़ी चाहना ।
- (2).... साहिबे हक़ बिला मुआवज़ा लिये मुआफ़ कर दे ।

और बा'ज़ तुरुके जामेआ जिन से हुकूकुल्लाह व हुकूकुल इबाद बि इज़निल्लाहि तआला सब मुआफ़ हो जाते हैं मषलन (जिस से उस का कोई हक़ मुआफ़ कराना है उस से इस तरह कहे :)
 “छोटे से छोटा बड़े से बड़ा जो गुनाह एक मर्द दूसरे का कर सकता है जान माल इज़ज़त आबरू हर शै के मुतअल्लिक़ इस में से जो तेरा मैं ने गुनाह किया हो सब मुझे मुआफ़ कर दे ।”

(फ़तावा रज़विय्या (मुखर्रजा), जि. 24 स. 373-374, मुलतक़तन)

मुफ़्लिस कौन?

हदीष शरीफ़ में है कि रसूले खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से पूछा : “क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ?” सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस के पास दिरहम व मताअ न हो वोह मुफ़्लिस है । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने

फ़रमाया : मेरी उम्मत में से मुफ़िलस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात ले कर आए और उस ने किसी को गाली दी हो, किसी पर तोहमत लगाई हो किसी का माल खाया हो, किसी का खून बहाया हो, किसी को मारा हो (तो मुद्दई आ जाएं और अर्ज़ करें कि परवर दगार ! इस ने मुझे गाली दी, इस ने मुझे मारा, इस ने मेरा माल खाया, इस ने मेरा खून किया) तो उस की नेकियां इन मुद्दइयों को दे दी जाएंगी अगर लोगों के हुक्कू जो उस पर हैं इन के पूरा होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो इन के गुनाह ले कर उस पर डाल कर उसे जहन्नम में डाला जाए ।

(صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب تحريم الظلم، ص ١٠٠٠، حديث ٢٥٨١)

या'नी हकीकत में मुफ़िलस वोह है कि क़ियामत के रोज़ बा वुजूद नमाज़, रोज़ा, हज़, ज़कात होने के वोह ख़ाली का ख़ाली रह जाए ।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उनैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ
फ़रमाते हैं : **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन इरशाद फ़रमाएगा कि कोई दोज़खी दोज़ख में और कोई जन्नती जन्नत में दाख़िल न हो और न ही वोह शख्स जिस पर कोई जुल्म हुवा हो हत्ता कि मैं इस (या'नी मज़लूम) के लिये उस (या'नी ज़ालिम) से क़िसास ले लूं ।
(سَيَرَةُ الْمُعْتَرِينَ، مِنْ اَخْلَاقِهِمْ كَثْرَةُ الْخَوْفِ مِنَ اللّٰهِ... الخ، ص ٢٤)

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 318 सफ़हात पर मुशतमिल किताब “फ़ज़ाइले दुआ” सफ़हा 155 पर रईसुल मुतकल्लिमिनी मौलाना नकी

अली खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ नकल फ़रमाते हैं : सुफ़यान षौरी
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي कहते हैं : बनी इस्राईल सात बरस क़ह्त में
 मुब्तला रहे यहां तक कि मुर्दों और बच्चों को खाने लगे, हमेशा
 पहाड़ों में निकल जाते और आजिजी व इन्किसारी के साथ दुआ
 मांगते और रोते मगर रहमते इलाही उन के हाल पर असलन
 तवज्जोह न फ़रमाती यहां तक कि उन के पैग़म्बर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام
 पर वह्य हुई अगर तुम मेरी तरफ़ इस क़दर चलो कि तुम्हारे
 घुटने घिस जाएं और तुम्हारे हाथ आस्मान को लग जाएं और
 तुम्हारी ज़बानें दुआ करते करते गूंगी हो जाएं जब भी मैं तुम में
 से किसी दुआ मांगने वाले की दुआ क़बूल न करूं और किसी
 रोने वाले पर रहम न फ़रमाऊं, जब तक मज़लूमों को उन के हक़
 वापस न कर दें। पस बनी इस्राईल ने मज़लूमों को उन के हुकूक
 वापस किये, इसी दिन मीह बरसा।

(احياءُ عُلُومِ الدِّينِ، كتاب الانكار والدعوات، الباب الثاني في آداب الدعاء، وفضله... الخ ج ١، ص ٢٠٦)

हुकूक़ुल इबाद के हवाले से “फ़िक़्रे मदीना”

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कभी इस तरह अपना
 मुहासबा कीजिये कि मेरी ज़ात से कितने ही लोगों के शरई हुकूक़
 वाबस्ता हैं?... मषलन मां, बाप, बच्चों, बच्चों के अब्बू, मन्सूब,
 क़राबत दारों, पड़ोसियों, आम मुसलमानों, मुर्शिद, उस्ताज़,
 शागिर्द और मा तहत लोगों के हुकूक़ लेकिन अप्सोस ! मैं इन
 के हुकूक़ कमा हक़ुकुहू अदा करने में नाकाम रही, मैं सआदत मन्द

बेटी, शफीक़ मां, मिषाली बीवी, बे ज़रर पड़ोसन, सच्ची मुरीदनी, कामयाब उस्तानी, मिषाली त़ालिबा और बेहतरीन जिम्मेदार बनने में काम्याब न हो सकी ।

इन के हुकूक़ पूरे करना तो एक तरफ़ रहा, मैं ने तो इन में से किसी को गाली भी दी, किसी पर तोहमत लगाई, किसी की गीबत की, किसी का माल नाहक़ खाया, किसी का खून बहाया, किसी को बिला इजाज़ते शरई तकलीफ़ दी, किसी को मारा-पीटा, किसी का कर्ज़ दबा लिया, किसी की चीज़ आरियतन ले कर वापस न की, किसी का नाम बिगाड़ा, किसी की चीज़ बिला इजाज़त, बा वुजूद उसे ना गवार गुज़रने के इस्ति'माल की, किसी मा तहत की हक़ तलफ़ी की और बा वुजूदे कुदरत उस की परेशानी का कोई हल न निकाला वगैरा वगैरा

आह सद आह ! मैं ने जिन लोगों के हुकूक़ तलफ़ किये या..... उन पर जुल्म किया, अगर कियामत के दिन उन सब ने मेरे ख़िलाफ़ बारगाहे इलाही में दा'वा कर डाला तो मुझे उन से छुटकारा हासिल करने के लिये उन्हें अपनी नेकियां देना पड़ेंगी और जब नेकियां ख़त्म हो जाएंगी तो उन के गुनाह मेरी गर्दन पर डाल दिये जाएंगे । हाए अफ़सोस ! मेरे पास तो पहले ही नेकियों का फुक़दान (या'नी कमी) है इतने सारे लोगों के हुकूक़ के बदले में देने के लिये नेकियां कहां से लाऊंगी और इन सब के गुनाहों का बोझ मैं किस तरह बर्दाश्त कर पाऊंगी,

आह ! मेरा क्या बनेगा ?.... नहीं, नहीं, मैं जल्द अज़ जल्द अपने बचने की कोई सूरत निकालूंगी, जिस के लिये मैं उन सब से अपने हुकूक मुआफ़ कर देने की दरख़्वास्त करूंगी, उन पर किये गए जुल्म का इज़ाला करूंगी, किसी न किसी तरह उन सब को राज़ी कर लूंगी, ताकि मैदाने मेहशर के कर्बनाक (या 'नी बे करारी के) माहोल में मुझे उन के सामने शर्मिन्दा न होना पड़े।
 اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ !
 صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

जश सा क्वगज़ फटने पर मा'जिरत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस पुर फ़ितन दौर में भी ऐसी हस्तियां मौजूद हैं कि जो हुकूकुल इबाद का इस क़दर खयाल रखती हैं कि इन के वाक़िआत पढ़ या सुन कर दौरै अस्लाफ़ की याद ताज़ा हो जाती है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 101 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "तअरूफ़े अमीरे अहले सुन्नत" सफ़हा 70 पर है कि दौरै हदीष (जामिअतुल मदीना बाबुल मदीना कराची) के एक त़ालिबे इल्म की फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ की एक जिल्द चन्द दिन अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़ेरे मुतालआ रही। आप ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ की जिल्द मअ रुक़आ जब वापस फ़रमाई तो त़ालिबे इल्म रुक़आ पढ़ कर शशदर रह गए और ज़ब्बाते तअष्युर से उन की पलकें भीग गई। (मज़मून कुछ यूं था)

मेरे मीठे मीठे मदनी बेटे زَيْدٌ مَجْدُهُ की खिदमत में शुक्रिया

भरा सलाम, आप के फ़तावा रज़विध्या शरीफ़ से मतलूबा इबारात के इलावा भी इस्तिफ़ादा किया, खास खास कलिमात व फ़िक़रात को ख़त कशीदा करने की आदत है मगर मजाज़ (या'नी बा इख़्तियार) न होने के बाइ़ष मुजतनिब (या'नी रुका) रहा मगर बे एह़तियाती के सबब एक सफ़हे के ऊपर की जानिब मा'मूली सा काग़ज़ फ़ट गया, बसद नदामत, मा'ज़िरत-ख़्वा हूं, उम्मीद है मुआफ़ी की ख़ैरात से महरूम नहीं फ़रमाएंगे। काग़ज़ इतना कम शक़ हुवा है कि ग़ालिबन ढूंडने पर भी न मिल सके। इलावा अर्ज़ी भी जो हुकूक़ तलफ़ हुए हों मुआफ़ फ़रमा दीजिये। दैन हो तो वुसूल कर लीजिये (या'नी मेरी तरफ़ आप की कोई रक़म वग़ैरा बनती हो तो ले लीजिये)। दुआए मग़फ़िरत से नवाज़ते रहिये। وَالسَّلَامَ مَعَ الْاَكْرَامِ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! साहिबे जूदो नवाल, शाहे खुश ख़िसाल, महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का विसाल तो क्या हुवा गोया खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पर कोहे ग़म व अलम टूट पड़ा, चुनान्चे रिवायत में आता है कि

फ़िराके रसूल पर बे चैनी व इजतिशब

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाले जाहिरी के बा'द खातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पर ग़मे मुस्तफ़ा का इस क़दर ग़लबा हुवा कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के लबों की मुस्कुराहट ही ख़त्म हो गई अपने विसाल से क़ब्ल सिर्फ़ एक बार ही मुस्कुराती देखी गई।

(جذبُ الْقُلُوبِ (مترجم), ص २३१)

आप के हिज्र का ग़म काश रुलाए मुझ को
खून रोता रहूं सरकार ! रसूले अरबी

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دائمة برکاتہم العالیہ स. 325)

हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا रसूले
मक़बूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ग़म व जुदाई की मुसीबत के ज़माने
में लोगों की सोहबत से परेशान हो कर तन्हाई इख़्तियार कर के
बैतुल हुज़्न में क़ियाम पज़ीर हो गई थीं ।

(مَدَارِجُ السُّؤْدَةِ (مترجم), ج ۲, باب اول در ذکر اولاد کرام, ص ۶۲۵)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि हज़रते
सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
के फ़िराक़ में ख़ल्वत इख़्तियार कर ली । गोशा नशीनी व तन्हाई
की भी कई बरकात हैं, चुनान्वे फ़कीहे आ'ज़मे हिन्द हज़रते
मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي
ख़ल्वत के फ़वाइद बयान करते हुए फ़रमाते हैं : जब आदमी
अलाइके दुन्यविय्या से अलग हो कर एक गोशे में रहना इख़्तियार
करता है तो हज़ारों फ़ुज़ूल बातों से नजात पा जाता है और दिल
एक तरफ़ मुतवज्जेह होता है अब आदमी अगर मुतवज्जेह
इलल्लाह है तो येह क़वी से क़वीतर होगी इस में षबात व
इस्तिहक़ाम होगा इस तअल्लुक़ में जितनी कुव्वत और इस्तिमरार

होगा उसी क़दर अन्वारे इलाही व असरारे इलाही का इन्किशाफ़ होगा। आदमी जब लोगों से इख़्तिलात रखता है तो ला मुहाला हज़ारों तरह के मुआमलात दर पेश होते हैं। किसी की महब्बत, किसी से अ़दावत, किसी से लड़ाई, कभी किसी से खुश, कभी किसी से नाराज़, कभी ग़म, कभी फ़िक्रे नानो खुर्श, लिबास व सुकना वग़ैरा वग़ैरा। खुसूसन मुतअल्लिकीन से राबिता और इन रवाबित के अषरात दिल पर पड़ते हैं। जिस से दिल की तवज्जोह बटती है फिर ज़ब्बात की तक्मील की ख़्वाहिश और इस ख़्वाहिश के लिये जिद्दो जहद। इस में मा'रका आराइयां, हैजाने नफ़्स का बाइष हो सकते हैं और फिर इस से जो मफ़सिद पैदा हो सकते हैं वोह सब को मा'लूम है।

ख़ल्वत में जा कर आदमी खुद ब खुद कितने गुनाहों से महफूज़ हो जाता है इसे हर शख़्स जानता है और गुनाह **अल्लाह** के साथ तअल्लुक में कितने हारिज हैं येह किसी से मख़फ़ी (या'नी पोशीदा) नहीं इस लिये ख़ल्वत से बढ़ कर गुनाहों से रोकने वाली कोई चीज़ नहीं।

(نُزْهُةُ الْقَارِي شرح صحيح البخاري، باب كيف كان بدء الوحي، ج ١، ص ٢٢٢)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

विशाले रसूल पर ख़ातूने जन्नत का ग़म व झलम

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
 फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का विसाल हुवा
 तो हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا (शिद्दते ग़म के
 सबब) फ़रमाने लगीं । हाए बाबा जान ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 ने अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के बुलावे को क़बूल कर लिया, हाए बाबा
 जान ! जन्नतुल फ़िरदौस आप का मक़ाम हो गया, हाए बाबा
 जान ! हम जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को ता'ज़ियत देते हैं ।

(صَحِيحُ ابْنِ جَبَّان، كِتَابُ التَّارِيخِ، ذِكْرُ الْخَبْرِ الْمَدْحُضِ... الخ ص ١٤٦٥، الْحَدِيثُ: ٦٦٢٢)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

नौहा और बे सब्री में फ़र्क

शारेहे मिशकात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार
 ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَنَى इस रिवायत के तहत फ़रमाते हैं :
 सय्यिदा (फ़ातिमा) رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के येह अल्फ़ाज़ न तो नौहा हैं
 न बे सब्री, बल्कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के फ़िराक़ पर बे
 चैनी है जो ब जाते खुद इबादत है । नौहा येह है कि मय्यित के
 ऐसे अवसाफ़ बयान किये जावें जो उस में न हों और पीटा
 जावे । बे सब्री येह है कि रब्ब तअ़ाला की शिकायत की जावे ।
 जनाबे सय्यिदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا इन दोनों से महफ़ूज़ हैं । येह भी
 ख़याल रहे कि दुन्या में पांच हज़रात बहुत रोए हैं :

«1».... हज़रते सय्यिदुना आदम علیٰ نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ फिराके जन्नत में ।

«2-3».... हज़रते सय्यिदुना नूह علیٰ نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ व हज़रते सय्यिदुना

यह्या ख़ौफ़े खुदा में «4»..... हज़रते सय्यिदुतुना

फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फिराके रसूल में और «5».... हज़रते

सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल अ़बिदीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ वाक़िअए करबला

के बा'द हज़रते इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की प्यास याद कर के ।

जनाबे सय्यिदा ज़ैनब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती थीं :

صَبَّتْ عَلَيَّ مَصَائِبُ لَوْ أَنَّهَا

صَبَّتْ عَلَيَّ الْآيَامَ صَرَنْ لَيَالِيًا

तर्जमा : मुझ पर ऐसी मुसीबत पड़ी कि अगर रोज़े रोशन पर
पड़तीं तो वोह शबे तारीक बन जाते ।

(مِرَاةُ الْمَنَاجِيحِ شَرْحُ مَشْكَوَةِ الْمَصَائِبِ، كِتَابُ الْفَضَائِلِ وَالشَّمَائِلِ، بَابُ، ج ٨، ص ٢٩١)

दिन रात हिजरे यार में आहें भरा करूं

रोया करूं फिराक में ज़ारो क़ितार में

(407 स. دَاخَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةَ سُنَنَاتِ اَمِيْرِهِ اَهْلِهِ سُنَنَاتِ اَمِيْرِهِ اَهْلِهِ سُنَنَاتِ اَمِيْرِهِ اَهْلِهِ (वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

विशाले रशूल पर खातूने जन्नत की क़ब्बी कैफ़ियत

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल

मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि जब महबूबे करीम

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का विसाल हो गया और आप عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ

को दफ़्न कर दिया गया तो हज़रते फ़ातिम तुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا

मज़ार पर हाज़िर हुई, खाके अक़दस की मुठ्ठी भरी, आंखों पर लगाई, आंखों से आंसू रवां हो गए और ज़बाने अक़दस, ग़मे दिल को इन अल्फ़ाज़ में ढालने लगी ।

(1).... उस शख़्स पर क्या मलामत हो सकती है जिस ने तुर्बते अहमदे मुज्ताबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सूंघा है कि वोह रहती दुन्या तक कीमती से कीमती खुशबूओं को न सूंघे । महबूबे करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जसदे अतहर से खाके तुर्बत में बसने वाली खुशबू उस को हमेशा हमेशा के लिये दूसरी खुशबूओं से बे नियाज़ कर देने वाली है ।

(2).... मुझ पर मसाइबो शदाइद की वोह सियाह रातें आन पड़ी हैं कि इन को दिनों पर डाला जाता तो रातों में तब्दील हो जाते ।

(الرُّؤْيَا بِأَحْوَالِ النَّصِطَةِ (مترجم)، ابواب وصال مصطفیٰ، چالیسواں باب بعد وصال حضرت فاطمہ کی کیفیت، ص ۸۴)

दागे मुफ़रक़त (1) तो मिला काश ! अब ऐसा हो

रोया करूं फ़िराक़ (2) में ज़ारो क़ितार मैं

(वसाइले बख़िश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العالیه स. 409)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

(1)या'नी जुदाई (2) या'नी जुदाई

मय्यित पर रोना कैसा ?

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मय्यित पर आवाज़ से या सिर्फ़ आंसूओं से रोना जाइज़ है बल्कि मुर्दे के बा'ज़ फ़ज़ाइल बयान करना भी दुरुस्त है जैसे हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने हुज़ूर पर रोते हुए फ़रमाया था : अब्बा जान ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जन्नत में चले गए । अब वहूय आना बन्द हो गई वगैरा । हां ! उस पर सर या सीना कूटना, मुंह पर थप्पड़ लगाना, बाल नोचना, उस के झूटे अवसाफ़ बयान करना जैसे हाए मेरे पहाड़, हाए ! काली घोड़ी के सुवार । येह सब हराम है कि नौहा में दाख़िल है ।

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب البكاء علی المیت، ج ۲، ص ۴۹۹)

नौहा की ता'रीफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअत” जिल्द अव्वल सफ़हा 854 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : नौहा या'नी मय्यित के अवसाफ़ मुबालगा के साथ बयान कर के आवाज़ से रोना

जिस को बैन कहते हैं, बिल इजमाअ हुराम है यूहीं वावैला,
वा मुसीबता कह के चिल्लाना ।

(बहारे शरीअत, किताबुल जनाइज, ता'ज़ियत का बयान, जि. 1, स. 854)

नौहा करने का अज़ाब

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल
का फ़रमाने इब्रत निशान है : नौहा करने
वाली औरत क़ियामत वाले दिन अपनी क़ब्र से इस हाल में
निकलेगी कि उस के बाल बिखरे हुए और गर्द आलूद होंगे
और उस पर ख़ारिश का कुर्ता और ला'नत की चादर होगी वोह
अपने हाथों को अपने सर पर रखे चीखते और चिल्लाते हुए
कहेगी : हाए बरबादी । मालिक عَلَيْهِ السَّلَام कहेंगे : आमीन (या'नी
ऐसा ही हो) । फिर इस (या'नी रोने पीटने) में से उस का हिस्सा
जहन्नम की आग होगी ।

(کنز العمال، کتاب الموت، قسم الاقوال، ج ۸، الجزء الخامس عشر، ص ۲۶۰، حدیث ۴۲۴۷)

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए
रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है :
“**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने नौहा करने वाली और नौहा सुनने वाली
पर ला'नत फ़रमाई है ।” (مجموع الجوامع، قسم الاقوال، حرف اللام، ج ۶، ص ۳۲، الحدیث: ۱۷۰۵۸)

एक सय्यिदज़ादे इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते इमामे हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُفَى से पूछा : क्या ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़माने में भी मुहाजिरीन की औरतें नौहा करती थीं ? तो उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया ! नहीं । फिर फ़रमाया : **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! एक औरत रोती हुई बारगाहे रिसालत मआब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में हाज़िर हुई जिस का बाप, बेटा और भाई जंग में शहीद हो गए थे, हूज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस से इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तुझे किस मुसीबत ने रुलाया है ?” उस ने अर्ज़ की : “मेरे घर के तमाम मर्द फ़ौत हो गए ।” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तू सब करे तो तेरे लिये जन्नत है ।” उस ने अर्ज़ की : “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! जब मेरे लिये जन्नत है तो मैं आज के बा'द कभी न रोऊंगी ।”

(فُرَّةُ الْعُيُونِ وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْرُورُنَ مَعَ الرُّوضِ الْفَائِقِ، الْبَابُ السَّادِسُ فِي عَقُوبَةِ النَّائِثَةِ، ص ३९२)

सय्यिदुल मुबल्लिग़िन, रहूमतुल्लिल अलमीन

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अज़ीम है : “वोह हम में से नहीं (या'नी हमारे तरीके पर नहीं) जो अपने मुंह पर तमांचे मारे गिरेबान चाक करे और ज़मानए जाहिलिय्यत की तरह वावैला मचाए ।”

(صحيح البخارى، كتاب الجنائز، باب ليس منا من شق الجيوب، ص ३६६، الحديث: १२९३)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّمَا يُوقِي الصَّيْرُونَ أَجْرَهُمْ بِعَدْرِ

حَسَابٍ ۝ (प २३ الزمر: १०)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : साबिरीं

ही को उन का षवाब भरपूर दिया

जाएगा बे गिनती ।

बच्चे की मौत पर सब्र करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस औरत से जिस का बच्चा फ़ौत हो गया था, इस तरह इरशाद फ़रमाएगा : “ए मेरी बन्दी ! मैं तेरे बच्चे की मौत का फैसला लौहे महफूज़ में कर चुका था और जब मैं ने इस की रूह क़ब्ज़ की तो तेरे दिल ने जज़अ व फ़ज़अ न की और न ही तेरा सीना तंग हुवा तो सुन ! आज मेरी रिज़ा व खुशनूदी की तुझे खुश ख़बरी हो और तुझे अपने बेटे के साथ ऐसे जिन्दगी वाले घर या'नी जन्नत में इकठ्ठा कर दिया गया जहां न मौत है और न ही ग़म व मलाल और ऐसे मक़ाम में कि जहां से कभी निकलना नहीं ।”

(قرة العيون ومفرح القلب المحزون مع الروض الفائق، الباب السادس في عقوبة النائحة، ص ३९०)

जन्नत में घर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ज़ीशान है : जब किसी आदमी का बच्चा फ़ौत हो जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (सब कुछ जानने के बा वुजूद) फ़िरिशतों से इस्तिफ़सार फ़रमाता है : तुम ने मेरे बन्दे के बेटे की रूह क़ब्ज़ कर ली है ? फ़िरिशते अर्ज़ करते हैं : जी हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : तुम ने

इस के दिल का फल ले लिया है ? फिरिश्ते अर्ज करते हैं : जी हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मेरा बन्दा क्या कह रहा था ? वोह अर्ज करते हैं वोह तेरी हम्द कर रहा था और اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़ रहा था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है मेरे बन्दे के लिये जन्मत में घर बनाओ और उस का नाम बैतुल हम्द रखो ।

(جمع الجوامع، قسم الأقوال، حرف الهمزة، ج ۱، ص ۲۴۹، الحديث: ۱۸۰۰)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

बे पर्दगी से तौबा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमल का जज़्बा बढ़ाने के लिये मदनी माहोल ज़रूरी है वरना आरिज़ी तौर पर जज़्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोहबत के फुक़दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती । अपना मदनी ज़ेहन बनाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये ।

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल, सुन्नतों भरे इजतिमाअत और मदनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें और बरकतें हैं । दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे माहोल में रचने बसने की बरकत से मुतअद्द इस्लामी बहनों को शरई पर्दा करने की सआदत नसीब हो गई । ऐसी ही एक मदनी बहार मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के

तहरीरी बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले T.V पर फ़िल्में डिरामे देखने की आदी थी, बाज़ार वगैरा जाने के लिये बे पर्दा ही निकल खड़ी होती, नमाज़ भी नहीं पढ़ती थी। यूं मेरे सुब्हो शाम ग़फ़लत व मा'सियत में बसर हो रहे थे। एक बार किसी ने मुझे मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात के केसिट दिये, मैं ने इन्हें सुना तो الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो गई। इन बयानात की बरकत से मुझे ख़ौफ़े खुदा की दौलत नसीब हुई, इश्के रसूल का ज़ब्बा मिला और मैं नमाज़ी बन गई, मैं ने अपने तमाम गुनाहों बिल खुसूस बे पर्दगी से पक्की तौबा कर ली। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मदनी बुर्क़अ मेरे लिबास का हिस्सा बन गया। वोह बे लगाम ज़बान जो पहले गाने गुन-गुनाने में मसरूफ़ रहती थी अब الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ ना'ते मुस्तफ़ा सुनाने लगी। ता दमे तहरीर दा'वते इस्लामी की जैली मुशावरत की ख़ादिमा के तौर पर सुन्नतों की ख़िदमत की सआदत हासिल कर रही हूं।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 31)

कटी है ग़फ़लतों में ज़िन्दगानी न जाने हशर में क्या फैसला हो
इलाही ! हूं बहुत कमज़ोर बन्दी न दुन्या में न उ़क्बा में सज़ा हो

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत बरक़तुल्ले अलीये स. 165)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! ऐसी

इस्लामी बहन जो गुनाहों के दलदल में फंसी हुई थी उस को ख़ौफ़े खुदा जैसी अज़ीम दौलत मिल गई, बे पर्दगी से तौबा की तौफ़ीक़ भी नसीब हुई । आप भी मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले बयानात की केसिटें खुद भी सुनें और अपने महारिम रिश्तेदारों को भी तोहफ़तन पेश करें और दा'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअत में शिर्कत की भी दा'वत देती रहें कि अगर आप के दा'वत देने से किसी का दिल चोट खा गया और वोह इजतिमाअ में शिर्कत कर के कुरआनो सुन्नत की राह पर आ गई तो आप का भी सीना मदीना होगा । हर इस्लामी बहन अपना मदनी ज़ेहन बना ले कि **“मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है ।”** إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **“मदनी इन्आमात”** पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये अपने महारिम को, जिन की उम्र **22** साल या इस से ज़ियादा है, **“मदनी क़ाफ़िलों”** में सफ़र करवाना है । إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

अब्बास करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत رَفِي اللهُ عَنْهَا स. 193)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ !

तेल डालने के मद्दनी फूल

❁ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जिस के बाल हों वोह इन का एहतिराम करे ।” (ابوداؤد، ج ۴، ص ۱۰۳، احديث: ۴۱۲۳) या’नी इन्हें धोए, तेल लगाए और कंघी करे (أَشْعَةُ اللَّمَعَاتِ، ج ۳، ص ۶۱۷) बाल साबुन वगैरा से धोने का जिन का मा’मूल नहीं होता उन के बालों में अकषर बदबू हो जाती है खुद को अगर्चे बदबू न आती हो मगर दूसरों को आती है । ❁ हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا दिन में दो मरतबा तेल लगाते थे (مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ، ج ۶، ص ۱۱۷) बालों में तेल का ब कषरत इस्ति’माल खुसूसन अहले इल्म हज़रात के लिये मुफ़ीद है कि इस से सर में खुशकी नहीं होती, दिमाग़ तर और हाफ़िज़ा क़वी होता है

❁ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जब तुम में से कोई तेल लगाए तो भंवों (या’नी अबरूओं) से शुरूअ करे, इस से सर का दर्द दूर होता है ” (الْجَامِعُ الصَّغِيرُ، ص ۲۸، الحديث: ۳۶۹)

❁ कन्जुल उम्माल में है : प्यारे प्यारे आका, मक्की मद्दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब तेल इस्ति’माल फ़रमाते तो पहले अपनी उलटी हथेली पर तेल डाल लेते थे, फिर पहले दोनों अबरूओं पर फिर दोनों आंखों पर और फिर सरे मुबारक पर लगाते थे । (كَنْزُ الْمُفْتَالِ، ج ۷، ص ۲۶، رقم: ۱۸۲۹، ۷۶۲۹)

बयान नम्बर 12

ख़ातूने जन्नत
का
विशाले मुबारक

439

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

खातूने जन्नत का विशाले मुबारक

मोतियों का ताज

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 308 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "इस्लामी बहनों की नमाज़" सफ़हा 72 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعُفُورُ हज़रते सय्यिदुना अबू अब्बास अहमद बिन मन्सूर को अहले शीराज़ में से किसी ने ख़ाब में देखा कि वोह सर पर मोतियों का ताज सजाए जन्नती लिबास में मल्बूस "शीराज़" की जामेअ मस्जिद की मेहराब में खड़े हैं। ख़ाब देखने वाले ने अर्ज़ की : عَزَّ وَجَلَّ **अब्बाह** ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? फ़रमाया : الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ मैं कषरत से दुरुद शरीफ़ पढा करता था येही अमल काम आ गया कि **अब्बाह** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत कर दी और मुझे ताज पहना कर दाख़िले जन्नत फ़रमाया ।

(الْقَوْلُ الْبَدِيعُ، الباب الثاني في ثواب الصلاة على رسول الله، ص ٢٣، ملخصاً)

हर दर्द की दवा है सल्ले अ़ला मुहम्मद

ता'वीजे हर बला है सल्ले अ़ला मुहम्मद

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

वफ़ाते सय्यिदा की ख़बर

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी लाडली शहज़ादी, खातूने जन्नत हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा से फ़रमाया : "أَنْتِ أَوَّلُ أَهْلِ لِحْوَقًا بِي" या'नी मेरे घर वालों में सब से पहले तुम (वफ़ात पा कर) मुझ से मिलोगी ।

(حَبِيبَةُ الْأَوْلِيَاءِ وَطَبَقَاتُ الْأَصْفِيَاءِ، ذَكَرَ النِّسَاءُ الصَّحَابِيَّاتِ، فَاطِمَةُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ، ج ٢، ص ٥٠، الحديث: ١٢٣٣)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे आका, दो अ़लम

के दाता صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ग़ैब की ख़बर इरशाद फ़रमाई कि "मेरे अहल में से सब से पहले तुम मुझ से मिलोगी ।" ग़ैब क्या होता है ? आइये ! सुनिये, चुनान्चे मुफ़स्सरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ग़ैब के (लफ़्ज़ी) मा'ना गाइब या'नी छुपी हुई चीज़ । इस्तिलाह (मख़्सूस, मुरादी मा'ना) में ग़ैब वोह चीज़ कहलाती है जो कि ज़ाहिरी बातिनी ह़वास (महसूस करने की कुव्वतों) और अ़क़्ल से

छुपी हो या'नी न तो आंख, नाक, कान वगैरा से मा'लूम हो सके और न गौरो फ़िक्र से अक्ल में आ सके। (तफ़्सीर नेमी, ज १, व १२८)

मषलन जन्नत हमारे लिये इस वक़्त ग़ैब है क्यूंकि इस को हम हवास (या'नी आंख, नाक, कान वगैरा) से मा'लूम ही नहीं कर सकते।

हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुल्लाह बिन उमर शीराज़ी बैजावी फ़रमाते हैं : “ग़ैब से मुराद पोशीदा शै है कि हिस् इस का इदराक न कर सकें (हवासे खम्सा या'नी देखने, सुनने, सूंघने, चखने और छूने से न जाना जा सके) और बदाहते अक्ल इस का तकाज़ा नहीं करती। (तफ़्सीरुल बीयूसावौ, ज १, व १८०)

ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे मक्की मदनी आका, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ग़ैब की बातें जानते हैं। आइये ! इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ को जो कुछ बताया उस का खुलासा यह है। مُحَمَّدٌ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मुझे ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत की सआदत मिली, हिम्मत कर के अर्ज़ की : या रसूलल्लाह

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क्या आप को इल्मे ग़ैब है ? इरशाद फ़रमाया :

हां ! इस के बा'द सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक आयते कुरआनी सुनाई । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लबहाए मुबारका से तिलावत, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खुश आवाज़ी और अदाएगिये हुरूफ़ का हुस्ने उस्लूब (या'नी हुरूफ़ की अपने मख़ारिज से अदाएगी की ख़ूब सूरती) मरह़बा ! ऐसी उम्दा और शीरीं आवाज़ व क़िराअत मैं ने कभी नहीं सुनी, आयते शरीफ़ा मैं भूल गया हूं, हां ! इतना याद पड़ता है कि उस के आख़िर में लफ़्ज़ **بِرَّكَاتِهِمُ الْعَالِيَةِ** था इस पर अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ** ने पारह 30 सूरतुत्तक्वीर की आयत नम्बर डबल बारह (24) सुनाई “**وَمَا هُوَ عَلَى الْعَيْبِ بِصَنِينٍ**” वोह इस्लामी भाई बोल उठे : हां ! हां ! येही आयते करीमा थी । अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ** ने उन को आयते करीमा का **तर्जमा** बताया और फ़रमाया कि यकीनन सरकारे दो अ़ालम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को **اَللّٰهُ** **عَزَّ وَجَلَّ** की रहमत व इनायत से इल्मे ग़ैब है ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़िकायत से कोई इस वस्वसे में न पड़े कि लो भई ख़्वाबों से इल्मे ग़ैब षाबित किया जा रहा है । हालांकि ग़ैरे नबी का ख़्वाब तो हुज्जत (या'नी दलील) ही नहीं । अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ** फ़रमाते हैं कि मैं इक़्रार करता हूं कि वाक़ेई हर मस्अला ख़्वाब से हल नहीं किया जाता, मगर यहां ख़्वाब से नहीं, ख़्वाब में अ़ता कर्दा जवाब

में बयान कर्दा कुरआनी आयत से इल्मे गैब का षुबूत पेश किया जा रहा है और वोह आयते करीमा वाकेई इल्मे गैबे मुस्तफ़ा पर दाल्ल (या'नी दलील) है। लिहाज़ा ज़िक्र कर्दा आयत मअ तर्जमा मुलाहज़ा फ़रमाइये :

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝
(प ३० त्कोर: २२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह
नबी गैब बताने में बखील नहीं।

इस आयते मुबारका से मा'लूम हुवा कि मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गैब बताते हैं और ज़ाहिर है कि बताएगा वोही जिस को इल्म होगा। तो बिला शको शुबा रब्बुल अलमीन की इनायत से रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इल्मे गैब की दौलत से माला माल हैं। अशिके माहे रिसालत, आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّةٓ بَارगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में अर्ज़ करते हैं :

और कोई गैब क्या तुम से निहां हो भला

जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(हदाइके बख़िश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّةٓ)

शर्हे क्लामे रज़ा :

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप की शाने अज़मत निशान के क्या कहने ! शबे मे'राज ऐन जागती हालत में आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने मुबारक सर की आंखों से अपने पाक

परवर दगार का दीदार किया, तो यूं **اَبْلَاهُ** عَزَّ وَجَلَّ जो कि गैबुल गैब है वोह भी अपने फज़लो करम से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर जाहिरो आशकार हो गया तो अब कोई और गैब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से किस तरह निहां या'नी छुपा रह सकता है ।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि खातूने जन्नत हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को पहले ही गैबी ख़बर अता फ़रमा दी थी कि तुम सब से पहले मुझ से मिलोगी । अब येह मुलाहज़ा फ़रमाइये कि विसाले मुस्तफ़ा के बा'द खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की कैफ़ियत क्या थी ?

ग़मे मुस्तफ़ा का ग़लबा

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाले जाहिरी के बा'द खातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पर ग़मे मुस्तफ़ा का इस क़दर ग़लबा हुवा कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के लबों की मुस्कुराहट ही ख़त्म हो गई । अपने विसाल से क़ब्ल सिर्फ़ एक ही बार मुस्कुराती देखी गई । इस का वाक़िआ यूं है कि हज़रते सय्यिदतुना खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को येह तश्वीश थी कि उम्र भर तो ग़ैर मर्दों की नज़रों से खुद को बचाए रखा है अब कहीं बा'दे वफ़ात मेरी कफ़न पोश लाश ही पर लोगों की नज़र न पड़ जाए ! एक मौक़अ

पर हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिनते उमैस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने कहा :
 मैं ने हब्शा में देखा है कि जनाजे पर दरख्त की शाखें बांध कर
 एक डोली की सी सूरत बना कर उस पर पर्दा डाल देते हैं। फिर
 उन्हों ने खजूर की शाखें मंगवा कर उन्हें जोड़ कर उस पर कपड़ा
 तान कर सय्यिदा खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को दिखाया। आप
 बहुत खुश हुईं और लबों पर मुस्कुराहट आ गई। बस येही एक
 मुस्कुराहट थी जो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाले
 ज़ाहिरी के बा'द देखी गई। (جَدْبُ الْقُلُوبِ (مُتَرَجِمٌ)، ص ۲۳۱)

چۆ زهرا باش از مخلوق رُوپوش

که در آغوش شبیر به بینی

या'नी हज़रते फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की तरह
 परहेज़गार पर्दादार बनो, ताकि अपनी गोद में हज़रते सय्यिदुना
 शब्बीरे नामदार, इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जैसी अवलाद देखो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज कितनी इस्लामी
 बहनें पर्दा करती हैं। माहोल बहुत एडवान्स और फ़ेशन परस्ती
 आम है। शरई पर्दा करते हुए झिजक महसूस होती है। क्या ऐसे
 हालात में शरई पर्दा तर्क कर दिया जाए? नहीं, शरई पर्दा हरगिज़
 तर्क न किया जाए कि येह अज़ीम नेकी है और बे पर्दगी सख़्त
 गुनाह। पर्दा करने में जितनी तकलीफ़ ज़ियादा होगी उतना ही
 षवाब भी **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़ियादा मिलेगा। मन्कूल है :

أَفْضَلُ الْعِبَادَاتِ أَحْمَرُهَا

या'नी अफ़ज़ल तरिन इबादत वोह है जिस में ज़हमत ज़ियादा हो ।

(كَشَفُ الْخِيفَاءِ، حَرْفُ الِهَمْزَةِ مَعَ الْفَاءِ، ج ١، ص ١٣١، الحديث: ٣٥٩)

शौखुल इस्लाम हाफ़िज़ मुह्युद्दीन अबू ज़करिया यहूया बिन शरफ़नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : इबादत में मशक्कत और ख़र्च ज़ियादा होने से षबाब और फ़ज़ीलत भी ज़ियादा हो जाती है ।

(شَرْحُ صَحِيحِ مُسْلِمٍ لِلنَّوَوِيِّ، كِتَابُ الْحَجِّ، بَابُ بَيَانِ وَجْهِهِ الْأَحْرَامِ..... الخ، ج ١، ص ٣٩٠)

नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है : अफ़ज़ल अमल वोह है जिस पर नुफूस को मजबूर किया जाए । (احياء علوم الدين، كتاب الصبر والشكر، الاشر الاول، ج ٣، ص ٤٥)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم फ़रमाते हैं : “हशर में वोह अमल वज़न्दार होगा जो दुन्या में दुश्वार महसूस होता है ।” (तज़किरतुल औलिया (मुतर्जम) स. 72)

हां! अगर किसी के अपने ही दिल में खोट हो तो क्या कह सकते हैं! मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان “नूरुल इरफ़ान” सफ़हा 772 पर फ़रमाते हैं : जिस को गुनाह आसान मा'लूम हों और नेक काम भारी, समझो उस के दिल में निफ़ाक़ है, रब तआला महफूज़ रखे ।

(تفسير نور العرفان، پ ١٠، التوبة، تحت: الاية ٨١، ص ٤٢)

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

बा'ज इस्लामी बहनें यूं कहती सुनाई देती हैं कि बस “हमारे लिये दिल का पर्दा काफ़ी है” यह कहना दुरुस्त नहीं, दुरुस्त क्यूं नहीं ? आइये ! मुलाहज़ा फ़रमाइये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 397 सफ़हात पर मुशतमिल किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” सफ़हा 193 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ फ़रमाते हैं : “येह शैतान का बहुत बड़ा और बुरा वार है और इस कौले बद तर अज बौल में उन कुरआनी आयाते मुबारका के इन्कार का पहलू है जिन में जाहिरी जिस्म को पर्दे में छुपाने का हुक्म दिया गया है, मषलन पारह 22 सूरतुल अहज़ाब आयत नम्बर 33 में फ़रमाया गया, **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलियत की बे पर्दगी । इसी सूरए मुबारका की आयत नम्बर 59 में है : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : ऐ नबी ! अपनी बीबियों और साहिबज़ादियों और मुसलमानों की औरतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रहें ۞ । सूरतुन्नूर की आयत नम्बर 31 में है, **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और अपना बनाव न दिखाएं ۞ । जो जिस्म के पर्दे का मुतलक़न इन्कार करे और कहे कि “सिर्फ़

दिल का पर्दा होना चाहिये” उस का ईमान जाता रहा। शादीशुदा थी तो निकाह भी टूट गया किसी की मुरीदनी थी तो बैअत भी ख़त्म हुई अगर फ़र्ज़ हज़ कर लिया था तो वोह भी गया नीज़ गुज़श्ता ज़िन्दगी के तमाम नेक आ'माल बरबाद हो गए। अपने इस कुफ़्र से तौबा कर के कलिमा पढ़ कर नए सिरे से मुसलमान हो और शोहरे अव्वल ही से नए सिरे से निकाह करे। (हां ! अगर शोहरे अव्वल निकाह करना न चाहे तो किसी और मर्द से निकाह कर सकती है) और मुरीद होना चाहे तो किसी भी जामेअ शराइत पीर से बैअत हो जाए। अलबत्ता अगर कोई पर्दे की फ़र्ज़ियत का काइल है मगर पर्दे की किसी ख़ास नोइय्यत (या'नी मख़्सूस तर्ज़) का इन्कार करता है जिस का तअल्लुक ज़रूरियाते दीन से नहीं तो फिर हुक्मे कुफ़्र नहीं।”

कुफ़्र से तौबा नीज़ तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह का तरीका मक्तबतुल मदीना की तरफ़ से शाएअ कर्दा 16 सफ़हात के मुख़्तसर रिसाले “28 कलिमाते कुफ़्र” से देख लीजिये। **अल्लाह**

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ । ہمارا ईमान सलामत रखे । عَزَّ وَجَلَّ

हकीकत तो येह है कि “ज़ाहिर” दिल का नुमाइन्दा है, दिल अच्छा होगा तो इस का अषर ख़ारिज में भी ज़ाहिर होगा लिहाज़ा पर्दा वोही करेगी जिस का दिल अच्छा और **अल्लाह** की इताअत की तरफ़ माइल होगा, चुनान्वे मेरे आका आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّزَاتِ फ़रमाते हैं : येह ख़याल कि बातिन

(या'नी दिल) साफ़ होना चाहिये ज़ाहिर कैसा ही हो मद्ज़ बातिल है। हदीष में फ़रमाया कि इस का दिल ठीक होता तो ज़ाहिर आप (या'नी खुद ही) ठीक हो जाता। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 605)

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
अपने देवर जेठ से पर्दा करो उन से हरगिज़ बे तकल्लुफ़ मत बनो
वरना सुन लो क़ब्र में जब जाओगी सांप बिच्छू देख कर चिल्लाओगी

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دائمة بركانهم العالیه स. 669)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ख़ातूने जन्नत की वसियतें

हज़रते सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपने विसाल से क़ब्ल दो वसियतें फ़रमाई :

(1).... हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ को वसियत की, कि मेरी वफ़ात के बा'द आप हज़रते उमामा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से निकाह कर लें, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने हज़रते सय्यिदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की वसियत पर अमल किया। येह निकाह जुबैर बिन अव्वाम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के एहतियाम से हुवा। (إكمال مُتَرَجِّم مع مرآت المناجیح، ج 8، ص 4، مُلَخَّصاً)

(2).... जब मैं दुनिया से जाऊं तो मुझे रात में दफ़न करें ताकि मेरे जनाजे पर ना महरम की नज़र न पड़े। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 307)

ख़ातूने जन्नत رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने दुनिया से तशरीफ़ ले जाने से क़ब्ल वसियत फ़रमाई, वसियत किसे कहते हैं ? और इस के क्या फ़ज़ाइल हैं ? आइये ! मुलाहज़ा फ़रमाइये !

वसियत किसे कहते हैं ?

बहारे शरीअत में है : वसियत करने का मतलब यह है कि बतौर एहसान किसी को अपने मरने के बा'द अपने माल या मन्फ़अत का मालिक बनाना ।

(बहारे शरीअत, वसियत का बयान, जि. 3, हिस्सा. 19, स. 936)

वसियत की अक्शाम

वसियत चार किस्म की है : (1)..... **वाजिबा** : जैसे ज़कात की वसियत और कफ़ाराते वाजिबा की वसियत और सदका, सौमो सलात की वसियत (2)..... **मुबाह** : वसियते अग्निया के लिये (3)..... **वसियते मकरूहा** : जैसे अहले फ़िस्क व (अहले) मा'सियत के लिये वसियत जब यह गुमान ग़लिब हो कि वोह माले वसियत गुनाह में सर्फ़ करेगा (4).... **मुस्तहब** : इस के इलावा के लिये वसियत मुस्तहब है ।

(الَّذُرُّ الْمُخْتَارُ وَرَدُّ الْمُخْتَارِ، كتاب الوصايا، ج ١٠، ص ٥٥٣)

इस को आप इस तरह याद रखें कि जिन हुकूक का अदा करना फ़र्ज़ है उन के लिये वसियत फ़र्ज़ होगी और जिन हुकूक का अदा करना वाजिब है उन के बारे में वसियत करना वाजिब । ऐसे मुआमलात जो मुस्तहब्बात में से हैं उन की वसियत करना भी मुस्तहब, मुबाह कामों की वसियत भी मुबाह, मकरूह कामों की वसियत मकरूह और हराम कामों के लिये वसियत करना हराम ।

वसियत बाइषे मगफिरत

सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गंजीना, बाइषे नुजुले सकीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा करीना है : “जो अच्छी वसियत पर मरा वोह दीन के रास्ते और सुन्नत पर मरा और तक्वा व शहादत की मौत मरा और बख़्शा हुवा मरा ।” (مشؤلؤ الرصايع، كئاب الفرائض والوصايا، باب الوصايا، ج ١، ص ٥٦٤، الحدیث ٣٠٤٦)

मुफ़स्सरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ इस हदीषे पाक के तहत फ़रमाते हैं : (अच्छी वसियत से मुराद येह है कि) मरते वक़्त अपने माल का कुछ हिस्सा फुक़रा पर या किसी कारे ख़ैर में लगाने की वसियत कर गया या किसी दीनी इदारे में लगाने की वसियत कर गया ।

मज़ीद फ़रमाते हैं : इस हदीष से मा'लूम हुवा कि बा'ज नेक अमल ब जाहिर मा'मूली तर हैं मगर इन का षवाब बहुत ज़ियादा होता है । देखो ! बा'दे मौत माल राहे खुदा में खर्च करना मा'मूली काम है कि वोह इन्सान अब माल से बे नियाज़ हो चुका मगर इस पर भी इतना बड़ा षवाब मिला और ऐसे दर्जे का मुस्तहिक् हुवा । इसी लिये सूफ़िया फ़रमाते हैं कि मा'मूली नेकी को भी हलका न जानो, कभी एक घूंट पानी जान बचा लेता है और मा'मूली गुनाह कर न लो कि कभी छोटी चिंगारी घर जला देती है । ख़याल रहे कि यहां शहादत से मुराद हुक्मी शहादत है ।

(مِرَاةُ الْمَنَاجِيحِ شَرْحُ مَشْكُوةِ الْمَصَائِيحِ، باب الوصايا ج ٢، ص ٣٨٥)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने वसियत के बारे में सुना हमें भी इस पर अमल करने की नियत करनी चाहिये । अभी तक जिन के जो हुक्क हमारे जिम्मे हैं उन को अदा करने की कोशिश करें और जो हुक्क अदा करने में वक्त दरकार है (अभी नहीं हो सकते) अपने महारिम में से किसी को इन की वसियत फरमा दें । इस के मुतअल्लिक मजीद रहनुमाई हासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना से शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ का मुत्तब कर्दा 16 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाला “**मदनी वसियत नामा**” हासिल फ़रमा लीजिये । إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप को अपनी वसियतें लिखने में भी बहुत मदद मिलेगी । और वसियत के तफ़सीली अहकाम जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “**बहारे शरीअत**” जिल्द 3 उन्नीसवें हिस्से से “**वसियत का बयान**” का मुतालआ फ़रमा लें ।

खातूने जन्नत को किस ने गुस्ल दिया ?

आ'ला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्पू रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इस की वज़ाहत करते हुए “**फ़तावा रज़विध्या**” मुखर्रजा जिल्द 9 में इरशाद फ़रमाते हैं : वोह जो मन्कूल हुवा कि सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ ने हज़रते बतूल ज़हरा

को गुस्ल दिया :

अव्वलन (पहली बात तो यह कि) इस की ऐसी सिद्दहत व लियाक़ते हुज्जियत महल्ले नज़र है (या'नी इस के सहीह होने और दलील बनने के लाइक़ होने पर ए'तिराज़ है)

षानियन..... (दूसरी यह कि एक) दूसरी रिवायत यूं है कि इस जनाब को हज़रते उम्मे ऐमन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا (नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दाई) ने गुस्ल दिया ।

षालिषन..... (तीसरी यह कि यहां) ब मा'ना अम्रे शाएअ (या'नी चूंकि आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने गुस्ल देने का हुक्म फ़रमाया था इस वजह से आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ की तरफ़ ही गुस्ल देने की निस्बत कर दी गई और अरबी कलाम में बारहा ऐसा होता है कि काम करने की निस्बत उस काम का हुक्म देने वाले की तरफ़ कर दी जाती है जैसे) कहा जाता है बादशाह ने फुलां कौम से जंग की (हालांकि बादशाह खुद हथियार ले कर जंग नहीं करता बल्कि फ़ौज को जंग करने का हुक्म देता है तो इस हुक्म देने की वजह से जंग करने की निस्बत ही बादशाह की तरफ़ कर दी जाती है, इसी तरह) हदीष में आया : नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अज़ान दी या'नी अज़ान का हुक्म दिया ।

राबिअन.... (चौथी यह कि) इज़ाफ़ते फ़े'ल ब सूए मुसब्बिबे ग़ैर मुस्तन्कर और हदीषे अली उन वुजूह पर महमूल करने से तअरुज़ मुर्तफ़अ या'नी (बा'ज दफ़अ किसी काम की निस्बत उस की तरफ़ कर दी जाती है जो उस काम के करने का सबब होता है और यह कोई ग़ैरे मा'रूफ़ बात नहीं, खातूने जन्त हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को गुस्ल दिये जाने का सबब चूंकि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते

सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ बने इस तौर पर कि आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ ने इन्हें गुस्ल दिये जाने का हुक्म फरमाया या आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَरِيمَ ने गुस्ल का सामान मुहय्या फरमाया, इस बिना पर गुस्ल देने की निस्बत आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ की तरफ ही कर दी गई, चुनान्चे हजरते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) और हजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ के गुस्ल देने की रिवायतों में ततबीक़ इस तरह होगी कि) उम्मे ऐमन (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) ने अपने हाथों से नहलाया और सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ ने हुक्म दिया या अस्बाबे गुस्ल को मुहय्या फरमाया ।

ख़ामिसन..... (पांचवीं येह कि) मौला अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ के लिये खुसूसियत थी औरों का कियास इन पर रवा (या'नी दुरुस्त) नहीं हमारे उ-लमा जो शोहर को गुस्ले जौजा से मन्अ फरमाते हैं इस की वजह येही है कि बा'दे मौत ब सबबे इनइदामे महल्ल, मिलके निकाह ख़त्म हो जाती है (या'नी मरने के बा'द चूंकि निकाह का महल्ल ही ख़त्म हो गया लिहाज़ा निकाह भी ख़त्म हो गया और जब निकाह ख़त्म हुवा) तो शोहर अजनबी हो गया ।

इसी लिये मन्कूल हुवा कि सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ पर हजरते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस (गुस्ल देने वाले) अम्र पर ए'तिराज किया, हजरते मुर्तजा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ) ने जवाब इरशाद फरमाया : क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया : **إِنَّ فَاطِمَةَ زَوْجَتِكَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ** : **“या'नी बेशक फ़ातिमा दुन्या व आख़िरत में तेरी बीबी है ।”**

तो देखो ! इस खुसूसियत की तरफ इशारा फरमाया कि येह रिश्ता मुन्कतेअ (या'नी खत्म) नहीं येह जवाब न फरमाया कि शोहर को अपनी औरत का नहलाना रवा है। इस से और भी षाबित हुवा कि सहाबए किराम (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) के नजदीक सूरते मजकूरा में मजहब, अदमे जवाज था (या'नी सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के नजदीक मर्द का बीवी की मय्यित को गुस्ल देना ना जाइज था) जब तो हज़रते इब्ने मसऊद (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने इन्कार फरमाया और हज़रते (सय्यिदुना अली) मुर्तजा (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ) ने इसे तस्लीम फरमा कर अपनी खुसूसियत से जवाब दिया।

(फ़तावा रज़विय्या (मुखर्रजा), जि. 9, स. 92-94, मुल्तक़तन)

सय्यिदा ज़हश का जनाज़ा

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मन्कूल है कि हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की नमाजे जनाज़ा हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पढ़ाई।

(كَتَبُ الْعُمَّالِ، كتاب الموت، باب في اشياء قبل الدفن، ج 8، الجزء الخامس عشر، ص 303، الحديث: 22856)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّحِيمِ से मन्कूल है हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमा बिनते रसूलुल्लाह (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) की नमाजे जनाज़ा पढ़ाई और चार तकबीरें कहीं।

(كَتَبُ الْعُمَّالِ، كتاب الموت، باب في اشياء قبل الدفن، ج 8، الجزء الخامس عشر، ص 299، الحديث: 22816)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي فَرَمَاتे हैं : सहीह येह है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीकِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने आप का जनाज़ा पढ़ाया ।

(مِرَاةُ الْمَنَاجِيحِ شَرْحُ مَشْكُوتَةِ الْمَصَابِيحِ، كِتَابُ الْفَضَائِلِ، بَابُ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ، ج ٨، ص ٢٥٦)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बा'ज इस्लामी बहनें सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की कहानी और इस तरह के दीगर मन घड़त किस्से पढ़ती और घरों में पढ़ाती हैं । आइये ! इस बारे में मा'लूमात हासिल करते हैं कि येह पढ़ना कैसा है ? चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 499 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "नमाज़ के अहकाम" सफ़हा 485 पर शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةَ फ़रमाते हैं : दास्ताने अज़ीब, शहज़ादे का सर, दस बीबियों की कहानी और जनाबे सय्यिदा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की कहानी वगैरा सब मन घड़त किस्से हैं, इन्हें हरगिज़ न पढ़ा करें । इसी तरह एक पेम्फ़लेट ब नाम "वसिय्यत नामा" लोग तक्सीम करते हैं जिस में किसी "शैख़ अहमद" का ख़्वाब दर्ज है येह भी जा'ली है इस के नीचे मख़्सूस ता'दाद में छपवा कर बांटने की फ़ज़ीलत और न तक्सीम करने के नुक़सानात वगैरा लिखे हैं इस का भी ए'तिबार न करें ।

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

“यासीन शरीफ़ पढ़ें” के बारह हुरफ़ की निश्चत से सूरए यासीन शरीफ़के 12 फ़ज़ाइल

अगर ईसाले षवाब के लिये पढ़ना है तो कलिमा शरीफ़ पढ़िये, दुरूदे पाक पढ़िये, सूरए यासीन पढ़िये, सूरए मुल्क पढ़िये, कुरआने पाक की तिलावत कीजिये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** षवाब का अज़ीम ख़ज़ाना हासिल होगा । आइये ! सूरए यासीन शरीफ़ के फ़ज़ाइल मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

कुरआन का दिल

(1)..... हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّارِ** से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर दगार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : सूरए यासीन कुरआन का दिल है जो इसे **اَللّٰهُ** की रिज़ा और आख़िरत की बेहतरी के लिये पढ़ेगा उस की मग़फ़िरत कर दी जाएगी ।

(مُسْنَدُ أَحْمَدَ، مسند البصريين، معقل بن يسار، ج ٨، ص ٢٣٦، الحديث: ٢٠٨٣٦، ملقطاً)

10 कुरआन का षवाब

(2).... हज़रते सय्यिदुना अनस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : बेशक हर चीज़ का एक दिल है और कुरआन का दिल सूरए यासीन है और जो एक मरतबा सूरए यासीन पढ़ेगा उस के लिये दस मरतबा कुरआन पढ़ने का षवाब लिखा जाएगा ।

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، كتاب فضائل القرآن، باب ما جاء في فضل سورة يس، ص ٦٤١، الحديث: ٢٨٨٤)

दुन्या व आखिरत की भलाई

(3)... हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन अतिय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सरकारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तौरात में सूरे यासीन का नाम मुइम्मतुन है, क्यूंकि येह अपनी तिलावत करने वाले को दुन्या व आखिरत की हर भलाई अता करती है, इस से दुन्या व आखिरत की बलाएं दूर करती है और आखिरत की हौलनाकियों से नजात बख़्शाती है। और इस का नाम दाफ़ेअ और काज़िया भी है क्यूंकि येह अपनी तिलावत करने वाले से हर बुराई को दूर कर देती है और उस की हर हाजत पूरी करती है, जिस शख्स ने इस की तिलावत की येह उस के लिये 20 हज़ के बराबर है और जिस ने इस को सुना उस के लिये **अब्बाह** तअाला की राह में एक हज़ार दीनार खर्च करने के बराबर है और जिस ने इस को लिखा फिर इसे पिया तो उस के पेट में हज़ार दवाएं, हज़ार नूर, हज़ार यकीन, हज़ार बरकतें और हज़ार रहमतें, दाख़िल होंगी और इस से हर धोका और बीमारी निकाल देती है।

(کنز العمال، کتاب الانکار، قسم الاقوال، سورة یس، ج ۱، الجزء الاول، ص ۲۹۲، الحدیث: ۲۱۸۳)

शहीद की मौत

(4)..... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजूरे अकरम, रसूले मोहूतशम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ने फ़रमाया : जो शख़्स हमेशा हर रात सूराए यासीन की तिलावत करता रहा फिर मर गया तो वोह शहीद मरेगा ।

(المعجم الاوسط، بقية ذكر من اسمه محمد، ج ٥، ص ١٨٨، الحديث: ٤٠١٨)

तमाम हाजात पूरी हों

(5).... हज़रते सय्यिदुना अता बिन अबू रबाह ताबेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स दिन की इब्तिदा में सूराए यासीन की तिलावत करेगा, उस की तमाम हाजात पूरी कर दी जाएंगी ।

(سنن الدارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل سورة طه ویس، ص ١٠٣٥، الحديث: ٣٣١٩)

शाबिका गुनाह मुआफ़

(6)..... हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से रिवायत है कि बेशक हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक की रिज़ा के लिये इस सूराए यासीन की तिलावत करेगा, उस के पहले के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे, तो तुम इस की तिलावत अपने मरने वालों के पास करो ।

(شُعَبُ الْاِيْمَان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السور والایات، ج ٢، ص ٣٤٩، الحديث: ٣٣٥٨)

नड़क़ में आशानी

(7).... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजुरे अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जिस मरने वाले के पास सूराए यासीन तिलावत की जाती है । **अल्लाह** तबारक व तआला उस पर (उस की रूह क़ब्ज़ करने में) नर्मी फ़रमाता है ।

(کنز العمال، کتاب الموت، قسم الأقوال، ج ۸، الجزء الخامس عشر، ص ۲۴۰، الحديث: ۴۲۱۷۹)

मग़फ़िरत का इब्क़ाम

(8).... हज़रते सय्यिदुना अबू क़लाबा رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ से रिवायत है, वोह फ़रमाते हैं : जिस ने सूराए यासीन की तिलावत की उस की मग़फ़िरत हो जाएगी और जिस ने भूक की हालत में पढ़ी वोह शिकम सैर हो जाएगा और जिस ने रास्ता भूल जाने की हालत में पढ़ी वोह रहनुमाई पा लेगा और जिस ने किसी चीज़ के गुम होने पर इस की तिलावत की तो उसे गुमशुदा चीज़ मिल जाएगी और जिस ने खाने पर उस के कम होने के ख़ौफ़ से तिलावत की तो वोह उसे क़िफ़ायत करेगा और जिस ने किसी मरने वाले के पास इस की तिलावत की **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर नर्मी फ़रमाएगा जिस ने किसी औरत के पास उस के बच्चे की विलादत की दुश्वारी पर सूराए यासीन की तिलावत की उस पर आसानी होगी और जिस ने इस की तिलावत की गोया कि उस ने ग्यारह मरतबा

कुरआने पाक की तिलावत की और हर चीज़ के लिये दिल है और कुरआन का दिल सूरए यासीन है ।

(شُعْبُ الْإِيمَانِ، بَابُ فِي تَعْظِيمِ الْقُرْآنِ، فَصْلُ فِي فَضَائِلِ السُّورِ وَالْآيَاتِ، ج ٢، ص ٢٨١، الْحَدِيثُ: ٢٣٦٤)

दिल नर्म होगा !

(9)..... हज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन अली से रिवायत है, फ़रमाते हैं : जो शख़्स अपने दिल में सख़्ती पाए तो वोह एक प्याले में जा'फ़रान से **يَسُّ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ** लिखे, फिर इसे पी जाए । (المرجع السابق، ص ٢٨٢، الْحَدِيثُ: ٢٣٦٨)

हर हर्फ़ के बदले मग़फ़िरत

(10).... अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : जिस ने हर जुमुआ को अपने वालिदैन, दोनों या एक की क़ब्र की ज़ियारत की और सूरए यासीन की तिलावत की तो **اللَّهُ** उस की बख़्शिश व मग़फ़िरत फ़रमा देगा ।

(كَنْزُ الْعَمَالِ، كِتَابُ النِّكَاحِ، قِسْمُ الْأَقْوَالِ، ج ٨، الْجُزْءُ السَّادِسُ عَشَرَ، ص ٩٥، الْحَدِيثُ: ٢٥٢٨)

(क़ब्र की ज़ियारत का हुक्म मर्दों के लिये है । इस्लामी बहनों को क़ब्रिस्तान जाना मन्अ है घर पर ही तिलावत फ़रमा कर इस का षवाब वालिदैन को ईसाल कर दें ।)

अज़ीम सज़ादत

(11)..... हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “कुरआने हकीम में एक सूत है जिसे **अल्लाह** के हां अज़ीम कहा जाता है, इस के पढ़ने वाले को **अल्लाह** के हां शरीफ़ कहा जाता है, क़ियामत के रोज़ **रबीआ** और मज़र क़बाइल से भी जाइद अफ़राद के हक़ में इस के पढ़ने वाले की शफ़ाअत क़बूल की जाएगी, वोह सूए यासीन है।”

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف القاف، المطلى بأل من هذا الحرف، ج ٥، ص ٣٣٨، حديث ٥٥٢٠)

बरकते यासीन

(12)....दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 679 सफ़हात पर मुशतमिल किताब “जन्ती ज़ेवर” सफ़हा 595 पर शैख़ुल हदीष हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي नक़ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया कि सूए यासीन पढ़ो इस में बीस बरकतें हैं : **﴿1﴾**.....भूका आदमी इस को पढ़े तो आसूदा किया जाए । **﴿2﴾**....प्यासा पढ़े तो सैराब किया जाए । **﴿3﴾**....नंगा पढ़े तो लिबास मिले । **﴿4﴾**....मर्द बे औरत वाला पढ़े तो जल्द उस की शादी हो जाए ।

﴿5﴾.....औरत बे शोहर वाली पढ़े तो जल्द शादी हो जाए ।

﴿6﴾....बीमार पढ़े तो शिफा पाए । ﴿7﴾....कैदी पढ़े तो रिहा हो

जाए । ﴿8﴾.....मुसाफिर पढ़े तो सफ़र में **اَللّٰهُ** की

तरफ़ से मदद हो । ﴿9﴾.....ग़मगीन पढ़े तो उस का रंजो ग़म दूर

हो जाए । ﴿10﴾....जिस की कोई चीज़ गुम हो गई हो वोह पढ़े

तो जो खोया है वोह मिल जाए । सूरए यासीन की एक आयत

﴿سَمِ ۞ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ﴾ (प २३, ५८) को एक हज़ार चार सो उन्हत्तर

(1469) बार पढ़ो, **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** जिस मक्सद से पढ़ोगे मुराद पूरी

होगी, ख़्वाजा दैरबी लिखते हैं : येह मुजर्रब है । और

﴿سَمِ ۞ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ﴾ (प २३, ५८) को पांच जगह एक काग़ज़ पर

लिख कर ता'वीज़ बांधो तो हवादिषात और चोर वगैरा से

हिफ़ाज़त रहेगी । जो शख़्स सुब्ह को सूरए यासीन पढ़ेगा उस का

पूरा दिन अच्छा गुज़रेगा और जो शख़्स रात में इस को पढ़ेगा उस

की पूरी रात अच्छी गुज़रेगी । हदीष शरीफ़ में है कि यासीन

कुरआन का दिल है ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 594)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मुल्क के तीन हुस्फ़ की निश्चत से

सूरए मुल्क के 3 फ़ज़ाइल

(1)..... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

फ़रमाते हैं : “जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो (अज़ाब) उस के

क़दमों की जानिब से आएगा तो उस के क़दम कहेंगे तेरे लिये मेरी तरफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह मेरे साथ खड़े हो कर सूरए मुल्क पढ़ा करता था, फिर (अज़ाब) उस के सीने या पेट की तरफ़ से आएगा तो वोह कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी जानिब से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह मेरे साथ सूरए मुल्क पढ़ा करता था। फिर वोह उस के सर की तरफ़ से आएगा तो सर कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी तरफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह मेरे साथ सूरए मुल्क पढ़ा करता था।” पस येह सूरत रोकने वाली है, अज़ाबे क़ब्र से बचाती है, तौरात में इस का नाम **सूरए मुल्क** है।

(الْمُسْتَذْرَكُ عَلَى الصَّحِيحَيْنِ لِلْحَاكِمِ، كِتَابُ التَّفْسِيرِ، تَفْسِيرُ سُورَةِ الْمَلِكِ ج ٣، ص ٣٢٢، حَدِيثُ ٣٨٩٢)

बेदारी तक हिफ़ज़त

(2)..... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मीठे मीठे आका मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : बेशक मैं कुरआन में एक सूरत पाता हूं इस की 30 आयात हैं जो शख्स सोते वक़्त इस (सूरत) की तिलावत करे, उस के लिये 30 नेकियां लिखी जाएंगी और उस के 30 गुनाह मिटाए जाएंगे और उस के 30 दर्जात बुलन्द किये जाएंगे, **अब्लाह** रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता उस की तरफ़ भेजेगा जो उस पर अपने पर बिछा देगा और जागने तक हर चीज़ से उस की हिफ़ज़त करेगा

और यह मुजादला (या'नी झगड़ा) करने वाली है अपने पढ़ने वाले की मग़फ़िरत के लिये क़ब्र में झगड़ा करेगी और यह "تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ" है ।

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الهمزة مع النون، ج ۳، ص ۲۳۰، الحديث: ۸۳۷۹)

नजात दिलाने वाली

(3)..... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने एक आदमी से फ़रमाया : क्या मैं तुझे एक हदीष तोहफ़े के तौर पर न दूं जिस के साथ तू खुश हो जाए, उस ने अर्ज़ की : बेशक । तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : यह सूरत पढ़ो "تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ" और यह सूरत अपने अहलो इयाल, अपने तमाम बच्चों, अपने घर के बच्चों और अपने पड़ोसियों को सिखाओ (इस की उन्हें ता'लीम दो) क्यूंकि यह नजात दिलाने वाली है और क़ियामत के दिन अपने क़ारी के लिये अपने रब्ब के पास झगड़ने वाली है और यह उसे तलाश करेगी ताकि उसे जहन्नम के अज़ाब से नजात दिलाए और इस के सबब इस का क़ारी अज़ाबे क़ब्र से नजात पा जाएगा ।

(الدر المنثور، प २९، سورة الملك، ج ८، ص २३१)

मा'मूले रशूल

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस वक़्त तक आराम न फ़रमाते जब तक और التّم تنزیل "تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ" तिलावत न फ़रमा लेते ।

(الادب المفرد، باب مايقول اذا اوى الى فراشه، ص ३५३، الحديث: १०ॷ)

आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हर रात सूरए मुल्क की तिलावत फ़रमाया करते, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ
शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी
हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार
कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के इस्लामी बहनों को अता कर्दा
63 मदनी इन्आमात में से मदनी इन्आम नम्बर 3 में है कि “क्या
आज आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़
कम एक बार आयतुल कुरसी, सूरए इख़्लास और तस्बीहे फ़ातिमा
पढी ? नीज़ रात में सूरए मुल्क पढ़ या सुन ली ?”⁽¹⁾

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! अमीरे
अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ भी हमारी तवज्जोह इसी तरफ़
करवा रहे हैं । येह मदनी इन्आमात नेक बनने का नुस्खा हैं
अगर हम रोज़ाना फ़िक़रे मदीना करने में काम्याब हो गईं तो
हमारे दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा होने के साथ साथ षवाब
का भी ख़ज़ाना हाथ आएगा । जैसा कि हदीषे पाक में है
(आख़िरत के मुआमले में) घड़ी भर ग़ौरो फ़िक़र करना 60 साल
की इबादत से बेहतर है ।

(الْجَامِعُ الصَّغِيرُ لِلشُّيُوطِيِّ مع فيض القدير، حرف الفاء، ج ٤، ص ٥٨٢، الحديث: ٥٨٩٧)

(1) इस्लामी बहनें हैज़ो निफ़ास के अय्याम में कुरआने पाक की तिलावत न करें ।

दुआए अत्तार

मदनी इन्आमात की आमिलात के लिये अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** की दुआ भी है। फ़रमाते हैं: “या **अब्बाह** जो तेरी रिज़ा के लिये मदनी इन्आमात पर अमल कर के रोज़ाना इस रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर कर के हर माह अपनी जैली मुशावरत जिम्मेदार को जम्अ करवाए तू उस के अमल में इस्तिक़ामत अत्ता फ़रमा कर उस को अपनी मक्बूल बन्दी बना ले।”

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल

मदनी इन्आमात पर करता है जो कोई अमल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**“बाहिदु” के चार हुरूफ़ की निश्बत से
कलिमए तय्यिबा के 4 फ़जाइल**

(1)..... खुश नसीब कौन ?

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है, उन्होंने ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** क़ियामत के दिन आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की शफ़ाअत से बहरा मन्द होने वाले खुश नसीब लोग कौन होंगे? फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**) मेरा गुमान येही था कि तुम से पहले मुझ से येह बात कोई न

पूछेगा क्यूंकि मैं हदीष सुनने के मुआमले में तुम्हारी हिंस को जानता हूं, कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत पाने वाला खुश नसीब वोह होगा जो सिद्के दिल से لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहेगा ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، كِتَابُ الْعِلْمِ، بَابُ الْحَرَمِ عَلَى الْحَدِيثِ، ص ١٠٠، الْحَدِيثُ: ٩٩)

(2)..... अफ़ज़ल जि़क़रे दुआ

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते हुए सुना : सब से अफ़ज़ल जि़क़रे لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ और सब से अफ़ज़ल दुआ سُنُّنُ رِئَسِنِ مَاجِيهِ، كِتَابُ الْاَدَابِ، بَابُ فَضْلِ الْجَاهِلِينَ، ص ٦٠٩، الْحَدِيثُ: ٣٨٠٠) है । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

(3)..... आश्मानों के दरवाजे खुल जाते हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जिस बन्दे ने इख़्लास के साथ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहा तो आश्मानों के दरवाजे खोल दिये जाते हैं, यहां तक कि वोह कलिमा अर्श तक पहुंच जाता है जब कि कबीरा गुनाहों से बचता रहे ।

(سُنُّنُ الرَّبِّ مِذْي، احاديث شتى، باب دعاء ام سلمه، ص ٨٢٠، الْحَدِيثُ: ٣٥٩٠)

(4).... तजदीदे ईमान

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़िन, रहूमतुल्लिल अ़ालमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : अपने ईमान की तजदीद करो । अर्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम अपने ईमान की तजदीद कैसे करें ? फ़रमाया : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ! कषरत से पढ़ो ।

(مسند أحمد، مسند أبي هريرة، ج ٢، ص ٣٩٢، الحديث: ٨٩٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ज़ेहनी मरीज़ तब्दुरुस्त हो गया !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह फ़ज़ाइल व बरकात पढ़ कर आप का भी ज़ेहन बना होगा कि हमें भी तिलावते कुरआन करनी चाहिये, ज़िक्रो दुरूद में अपने अवकात गुज़ारने चाहियें मगर जैसे किताब पढ़ कर फ़ारिग़ होंगे तो हमारी कैफ़ियत दोबारा तब्दील होना शुरू हो जाएगी और शैतान हम पर इस क़दर वार करेगा कि शायद हम में से बा'ज़ तो आज भी इन पर अ़मल करने से महरूम रहें । नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये नेकियों भरा माहोल बहुत ज़रूरी है और येह ने'मत हमें दा'वते इस्लामी की सूरत में मुयस्सर है । दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतों के क्या कहने ! इन बरकतों को लूटने की आदत बनाने के लिये आप भी दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआत में शिर्कत की सआदत हासिल कीजिये ।

ان شاء الله عزوجل आखिरत की बे शुमार बरकात के साथ साथ आप के मसाइल भी हैरत अंगेज तौर पर हल होंगे और **अब्बाह** عزوجل के फज़्लो करम से गैबी इमदादें होंगी, चुनान्वे कहरोड़ पक्का (पंजाब, पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के तहरीरी बयान का खुलासा है कि मेरे छोटे भाई घरेलू नाचाक़ियों, तंग दस्तियों वगैरा परेशानियों के सबब मुसल्लसल टेन्शन (या'नी ज़ेहनी दबाव) में मुब्तला रहने की वजह से रफ़ता रफ़ता ज़ेहनी मरीज़ बन गए थे और ऊल फूल बकते रहते थे, यहां तक कि **مَعَادَ اللَّهِ** अपने हाथों अपनी जान लेने और खुदकुशी के बारे में सोचने लगे थे। मुझे इन की हालत पर बड़ा तरस आता मगर मैं एक बे बस औरत क्या कर सकती थी। **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं पहले ही से दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिकत करती थी, वहां मैं ने भाईजान की सिहहत याबी के लिये गिड़-गिड़ा कर दुआ मांगनी शुरूअ कर दी। कुछ ही अर्सा गुज़रा था कि मेरे भाई को **अब्बाह** शाफ़ी ने शिफ़ा अता फ़रमा दी। **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** अब वोह अम्मी और अब्बू की इज़्ज़त और इन का एहतिराम करने के बाइष इन की आंखों के तारे बन चुके हैं। (पदें के बारे में सुवाल जवाब, स.195)

अताए हबीबे खुदा मदनी माहोल है फ़ैज़ाने गौषो रज़ा मदनी माहोल अगर सुन्नतें सीखने का है ज़ब्बा तुम आ जाओ देगा सिखा मदनी माहोल बुरी सोहबतों से कनारा कशी कर के अच्छें के पास आ के पा मदनी माहोल संवर जाएगी आखिरत **ان شاء الله** तुम अपनाए रखो सदा मदनी माहोल

(वसाइले बरिख़ाश अज़ अमीरे अहले सुन्नत **604** س. دامت بركاتهم العالیه)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने खातूने जन्नत

के विसाले बा कमाल के बारे में पढ़ा। **अल्लाह** رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के विसाले बा कमाल के बारे में पढ़ा। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें इस्लाम पर ज़िन्दा रखे ईमान पर मौत अता फ़रमाए। बहुत सारे दुनिया में कुफ़्र पर ज़िन्दा रहेंगे कुफ़्र पर मरेंगे। बहुत से लोग इस्लाम पर ज़िन्दा रहेंगे इस्लाम पर मरेंगे। बहुत से कुफ़्र पर ज़िन्दा रहेंगे मगर मरने से पहले इस्लाम क़बूल कर के जाएंगे। जी हां ! दा'वते इस्लामी का एक मदनी काफ़िला केन्या गया और वहां एक ग़ैर मुस्लिम जो कि हॉस्पिटल (**Hospital**) में था इस्लामी भाइयों ने जा कर इनफ़िरादी कोशिश की तो उस ने इस्लाम क़बूल कर लिया और इस्लाम क़बूल करने के तक़रीबन **45** मिनट बा'द उस का इन्तिक़ाल हो गया। सारी ज़िन्दगी कुफ़्र पर रहा मगर मौत से क़बूल इस्लाम क़बूल कर के दुनिया से रुख़सत हुवा। और बहुत सारे बद नसीब ऐसे भी होंगे जो इस्लाम पर ज़िन्दा रहेंगे कुफ़्र पर मरेंगे। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ खातूने जन्नत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के सदके हमारा ईमान सलामत रखे।

हज़रते सय्यिदुना हबीब अज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي बयान किया करते थे कि जिस का ख़ातिमा لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ पर होगा वोह दाख़िले जन्नत होगा फिर रोते हुए कहते थे : मेरे लिये कौन ज़मानत देता है कि मेरा ख़ातिमा لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ पर होगा ?

(تَنْبِيهُ الْمُتَعَتِّرِينَ، الباب الثالث في جملة اخرى من الاخلاق، شدة خوفهم من سوء الخاتمة، ص ۱۳۶)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमारा ईमान सलामत रखे।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मुसलमां है **अत्तार** तेरी अता से
हो ईमान पर खातिमा या इलाही !

(वसाइले बख़िश अज अमीरे अहले सुन्नत **स. 78** دامت برکاتہم العالیہ)

تल्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं आप भी इस मदनी माहोल से हरदम वाबस्ता रहिये । हफ़तावार इजतिमाअ में पाबन्दिये वक्त के साथ शिर्कत और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के अपने यहां की जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा । हर इस्लामी बहन अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है ।" **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये मदनी इन्आमात पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये अपने महारिम को, जिन की उम्र **22** साल या इस से ज़ियादा है "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करवाना है । **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है”

के बाईस हुरफ़ की निश्चत से

दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 मदनी फूल

﴿1﴾..... फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत काइम की जाए या उस से बद मज़हबी दूर की जाए तो वोह जन्मती है।”

(حَلِيَّةُ الْأَوْلِيَاءِ، ج ١٠، ص ٣٥، رقم: ١٣٢٦٦)

﴿2﴾..... सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी हदीष को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।” (سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ، ج ٢، ص ٢٩٨، الحديث: ٢٦٦٥)

﴿3﴾..... हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के नामे मुबारक की एक हिकमत येह भी है कि कुतुबे इलाहिय्या की कषरते दर्स व तदरीस के बाइष आप عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का नाम इदरीस हुवा। (تَفْسِيرِ كَبِيرِ، ج ٤، ص ٥٥٠، تَفْسِيرِ الْحَسَنَاتِ ج ٢، ص ٢٨)

﴿4﴾..... हुज़ूरे ग़ौषे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : या'नी मैं ने इल्म का दर्स लिया यहां तक कि मक़ामे कुत्बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया। (قصيدة غوثية)

﴿5﴾..... फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देना भी दा'वते इस्लामी का एक मदनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कॉलेज, चौक वगैरा में वक्त मुक़रर कर के रोज़ाना दर्स के ज़रीए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के मदनी फूल लुटाइये और ढेरों षवाब कमाइये।

﴿6﴾..... **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम दो दर्स देने या सुनने की सआदत हासिल कीजिये । (इन दो में एक “घर दर्स” जरूर हो)

﴿7﴾.... पारह 28 सूरतुत्तहरीम की छटी आयत में इरशाद होता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ
وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथर हैं ।

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स भी है ।

(दर्स के इलावा दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान या मदनी मुज़ाकरे की एक केसिट या **V.C.D** भी घर वालों को सुनाइये)

﴿8﴾..... ज़िम्मेदार घड़ी का वक़्त मुक़रर कर के रोज़ाना चौक दर्स का एहतियाम करें । मषलन रात 9 बजे **मदीना चौक** (साढ़े नव बजे) **बग़दादी चौक** में वग़ैरा । छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर चौक दर्स का एहतियाम कीजिये । (मगर हुकूके आम्मा तलफ़ न हों मषलन आप की वजह से मुसलमानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)

﴿9﴾.... दर्स के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें ।

﴿10﴾.... दर्स वाली नमाज उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत अदा फ़रमाइये ।

﴿11﴾.... मेहराब से हट कर (सहन वगैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्पूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो ।

﴿12﴾.... जैली मुशावरत के निगरान को चाहिये कि अपनी मस्जिद में दो ख़ैर ख़्वाह मुकरर करे जो दर्स (बयान) के मौक़अ पर जाने वालों को नर्मी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं ।

﴿13﴾.... पर्दे में पर्दा किये दो जानू बैठ कर दर्स दीजिये । अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े हो कर या माईक पर देने में भी हरज नहीं जब कि किसी एक भी नमाज़ी या तिलावत करने वाले वगैरा को तशवीश न हो ।

﴿14﴾..... आवाज़ न तो ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिल्कुल आहिस्ता, हत्तल इमकान इतनी आवाज़ से दर्स दीजिये कि सिर्फ़ हाज़िरीन सुन सकें । इस बात की हमेशा एह्तियात् फ़रमाइये कि दर्स व बयान की आवाज़ से किसी सोए हुए या किसी नमाज़ी या मशगूले तिलावत वगैरा को तक्लीफ़ न हो ।

﴿15﴾.... दर्स हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये ।

﴿16﴾.... जो कुछ दर्स देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुतालअ कर लीजिये ताकि ग़लतियां न हों ।

﴿17﴾.... फ़ैजाने सुन्नत के मुअर्रब अल्फ़ाज़ ए'राब के मुताबिक़ ही अदा कीजिये इस तरह إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ तलफ़ुज की दुरुस्त अदाएगी की आदत बनेगी ।

﴿18﴾.... हम्दो सलात, दुरूदो सलाम के दोनों सीगे, आयते दुरूद और इख़ितामी आयात वगैरा किसी सुन्नी आलिम या कारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी तरह अरबी दुआएं वगैरा जब तक उलमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में भी न पढ़ा करें।

﴿19﴾.... फ़ैज़ाने सुन्नत के इलावा दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना से शाएअ होने वाले मदनी रसाइल से भी दर्स दे सकते हैं।⁽¹⁾

﴿20﴾.... दर्स मअ इख़ितामी दुआ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

﴿21﴾..... हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह दर्स का तरीका, बा'द की तरगीब और इख़ितामी दुआ ज़बानी याद कर ले।

﴿22﴾.... दर्स के तरीके में इस्लामी बहनें हस्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।



तकब्बुर से बचने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

“जो शख्स तकब्बुर, ख़ियानत और दैन (या'नी कर्ज वगैरा)

से बरी हो कर मरेगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।”

(सनन الترمذی، کتاب السیر، باب ماجاء فی الغلول، الحدیث: ۸۷۵۱، ج ۳، ص ۸۰۲)

(1) अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ الْعَالِيَه के रसाइल के इलावा किसी और किताब से दर्स की इजाज़त नहीं। **मर्कज़ी मजलिसे शूरा**

तपशीली फेहरिस्त

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
किताब को पढ़ने की 11 निच्यतें	5	इस्लामी बहनों के लिये सीरते सालिहाते उम्मत	35
इजमाली फेहरिस्त	6	सीरते सालिहात	35
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआरुफ	7	घरेलू काम-काज करने के 11 फ़वाइद	37
पहले इसे पढ़िये	9	इबादत हो तो ऐसी !	39
(1) खातूने जन्त की शानो अजमत	13	बीबी फ़ातिमा के जनाजे का भी पर्दा	41
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	13	70 दिन पुरानी लाश	41
फ़िरिश्ते की बिशारत बराए खातूने जन्त	13	खातूने जन्त का विसाले बा कमाल	43
सय्यिदा फ़ातिमा का मुख़रर तआरुफ़	17	मन्क़बते खातूने जन्त	43
अलक़ाबात	18	(2) खातूने जन्त की करामात	47
फ़ातिमा की वजहे तसमिया	19	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	47
2 अलक़ाबात की वजहे तसमिया	21	शाही दा 'वत	47
(1) ज़हरा (या 'नी जन्त की कली)	21	करामत इक़है	52
(2) ताहि़रा व जाकिया	21	करामत की ता 'रीफ़	53
फ़ज़ाइले बतूल व ज़बाने रसूल	22	कुरआन से करामात का षुबूत	53
(1) जो कुछ़ तेरी खुशी है खुदा को वोही अज़ीज़	23	अफ़ज़लुल औलिया	57
(2) हम को है वोह पसन्द जिसे आए तू पसन्द	23	"फ़ातिमा" के 5 हुरूफ़ की निस्बत से खाना	59
(3) जिगर गोशए रसूल	23	खिलाने के फ़ज़ाइल पर मन्नी 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा	
तस्वीरे मुस्तफ़ा	26	सायए अर्श	61
सय्यिदा फ़ातिमा रोई फिर हंस पड़ीं	27	शिकमे मादर से निदा	61
10 फ़ज़ाइले फ़ातिमा	29	खातूने जन्त की करामत	63
तस्वीहे फ़ातिमा की फ़ज़ीलत	33	गौघे जली मादरज़ाद बा करामत वली	63

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
ब वक्ते विलादत फ़जा मुनव्वर	64	खाना पकाते वक्त भी तिलावत	92
निस्वानी अवारिज़ से मुबर्रा	65	खातूने जन्त की दुआएं	93
बरकत वाली सीनी	66	दुआ के 3 फ़वाइद	95
अपने दिल की निगरानी करते रहो	68	दुआ में 4 सआदतें	95
जब दरियाए दिजला इस्तिक़बाल के लिये बढ़ा दिल का सूराख़	69	“या ह्यूय” के चार हुरूफ़ की निस्बत से	96
	71	4 मदनी फूल	
(3) खातूने जन्त का जौके इबादत	75	न जाने कौन सा गुनाह हो गया है ?	97
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	75	नमाज़ न पढ़ना तो गोया कोई ख़ता ही नहीं !!!	97
सय्यिदा फ़ातिमा का जौके नमाज़	76	क़बूलिय्यते दुआ में जल्दी न करे !	98
नमाज़ की बरकतें	77	पड़ोसियों की खैर ख़्वाही	101
बे नमाज़ी का दर्दनाक अन्जाम	79	पड़ोसियों के हक़ूक	102
“मुस्तफ़ा” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से तर्के	80	10 चीज़ें जुल्म से हैं	103
नमाज़ की वईदों पर मुशतमिल 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा		पड़ोसी का हक़ क्या है ?	104
शदीद ज़ख़्मी हालत में नमाज़	82	कितने घर पड़ोस में दाख़िल हैं ?	105
बीमारी व कुल्फ़त के बा वुजूद मशगूले इबादत	82	(4) खातूने जन्त का इश्के रसूल	113
मसरूफ़िय्यत में भी ज़िक़रे रबूबिय्यत	83	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	113
शिक़मे मादर में ही 18 पारे याद कर लिये	84	हम शक्ले मुस्तफ़ा	114
कुरआने पाक पढ़ने का षवाब	84	कुदरती मुशाबहत	116
बेहतरीन शख़्म	86	बहरूपिया बच गया !	117
कुरआन शफ़ाअत कर के जन्त में ले जाएगा	86	औरतों को मर्दानी वज़अ बनाना हराम है	117
अल्लाह तआला कियामत तक अज़्र बढ़ाता रहेगा	87	कफ़न फाड़ कर उठ बैठौ	119
दा' वते इस्लामी के जाभिआत व मदरिस की ता' दाद	88	सय्यिदा फ़ातिमा के चलने का अन्दाज़	121
नई दुल्हन इबादत में मगन	89	औरत का मेक-अप करना कैसा ?	122

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
लिबास के बा वुजूद नंगी	123	आका शहजादी को नमाज़ के लिये बेदार करते	150
सख्यिदा फ़ातिमा का अन्दाज़े गुफ्तगू	124	सदाए मदीना	151
आवाज़ का पर्दा	125	मैं नमाज़ नहीं पढ़ती थी	151
औरत पीर से बात चीत करे या न ?	126	(5) ब्यातूने जन्नत का ईषार व सख्यावत	157
पीर और मुरीदनी की फ़ोन पर बात चीत	126	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	157
इस्लामी बहनें ना 'तें पढ़े या नहीं ?	127	साइलीन की हाजत रवाई	159
इस्लामी बहनें माईक इस्ति 'माल न करें	128	"हुसैन" के चार हुरूफ़ की निस्बत से ज़िक्र	160
औरत के राग की आवाज़	129	कदा हिकायत के 4 मदनी फूल	
बरामदे से एक दूसरी को पुकारना कैसा ?	130	पहला मदनी फूल नज़ :	161
बच्चों को डांटने की आवाज़	130	नज़ किसे कहते हैं ?	161
सदाकते सख्यिदा ज़हरा	131	नज़ के बारे में अहम मा 'लूमात	161
सच की बरकतें	132	मन्नत के बारे में फरमाने रब्बुल इज़्ज़त	163
झूट की नुहूसते	134	मन्नत पूरी करने वालों की मदह सराई	164
बाबा जान की मशक्कत को देख कर रोना	137	सहाबए किराम का मन्नत मानना	165
औरत का तन्हा सफ़र करना कैसा ?	142	कौन सी मन्नत मानी जाए ?	166
खातूने जन्नत की हुज़ूर से महब्बत	143	हुज़रते ज़ैनब बन्ते ज़ह्रा की नज़	167
कंटनी का बच्चादान	143	नज़ के तीन हुरूफ़ की निस्बत से नज़ के	169
बारगाहे मुस्तफ़ा में महबूबिय्यत	145	मुतअल्लिक 3 अहादीषे मुबारका	
जिगर गोशए रसूल	147	बहारे शरीअत का मुतालआ कीजिये !	173
सफ़रे मुस्तफ़ा की इब्तिदा व इन्तिहा	147	दूसरा मदनी फूल..... सख्यावत :	173
आमदे मुस्तफ़ा पर अन्दाज़े इस्तिक्वाल	148	दीने इस्लाम की इस्लाह किस पर मुन्हसिर है	174
अमीरे अहले सुन्नत और इत्तिबाए सुन्नत	148	सख्यावत किसे कहते हैं ?	175
"बेटी" के चार हुरूफ़ की निस्बत से	149		
4 अहादीषे मुबारका			

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
थेलियां भर भर कर तक्सीम फ़रमा दीं	175	ईषार करने वाली मां	204
बेहतरनी सखावत	176	अपना खाना कुत्ते पर ईषार कर दिया !	205
जूदो करम ईमान का हिस्सा	176	ईषार का घवाब मुफ्त लूटने के नुस्खे	206
अनोखा अन्दाज़े सखावत	177	खिलाने पिलाने का अज़ीमुशान घवाब	207
सखावत ईमान के लिये बाड़धे तक्विय्यत	178	रहमते इलाही को वाजिब करने वाला अमल !	208
इब्राहीम बिन अदहम की सखावत	179	ज़रा गौर कीजिये !	208
सखी का खाना दवा है !	180	बेटी की इस्लाह का राज़	211
मेरे आका की सखावत	181	(6) ख्यातूने जन्मत का निकाह व जहेज़	217
यारे गार का माली ईषार	184	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	218
कन्ज़ूसी बातिन का रोग	186	बरकाते दुरूदो सलाम	217
तीसरा और चौथा मदनी फूल : ईषार और खाना खिलाना	187	सय्यिदा फ़ातिमा का निकाह	219
ईषार की ता'रीफ़	187	अबू बक्र व उमर की सय्यिदुना अली को तरगीब	220
ईषार का घवाब बे हिसाब जन्मत	187	अस्लाफ़े किराम का मुबारक शिअर	222
ईषार व सखावते फ़ातिमा	189	सय्यिदुना अली की बारगाहे रिसालत में हाज़िरी	223
साइल की अर्ज़ और सय्यिदुना फ़ातिमा का सखावत भरा जवाब	192	शाने मुस्तफ़ा व अज़मते मुर्तज़ा	225
उमर बिन ख़त्ताब का ईषार	194	आस्मान पर निकाह और फ़िरिश्तों की बारात	226
सलमान फ़ारसी का ईषार	195	खुत्बए निकाह	230
अबू अली दक्काक़ का जज़्बए ईषार	196	सय्यिदए काएनात का जहेज़	232
ईषार की आ'ला मिघाल	197	ख्यातूने जन्मत की जहेज़ की मन्ज़ूम तफ़सील	233
ईषार की मदनी बहार	199	जहेज़ कैसा और कितना हो ?	235
आयते मुबारक की तफ़्सीर	201	बिन्ते अत्तार का जहेज़	236
अस्लाफ़े उम्मत आईनए कुरआनो सुन्नत थे	202	सय्यिदा फ़ातिमा की रुख़सती	238
राबिअ़ा अदबिय्या का ईषार	203	दा'वते त़आम	240

मज़ामीन	सफ़ह नम्बर	मज़ामीन	सफ़ह नम्बर
शादी बियाह की इस्लामी रस्में	244	सय्यिदतुना उम्मे कुलधूम की अवलाद	263
शहज़ादए अत्तार مَدَطَّلَةُ الْعَالِي की शादी	247	सय्यिदतुना उम्मे कुलधूम का इन्तिक़ाले पुर मलाल	263
तक़रीबे निकाह	247	अली व फ़ातिमा कभी नाराज़ न हुए	264
मकान पर सजावट	248	मैं ने मदनी बुर्क़अ कैसे अपनाया ?	266
पुर तकल्लुफ़ जहेज़ लेने से इन्कार	249	(7) ख़ातूने जन्नत और उम्मे ख़ानादादी	271
इजतिमाए जिक्रो ना 'त	249	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	271
रस्मे रुख़्मती	250	इज़्दिवाजी जिन्दगी	272
धूम धाम से वलीमा करने का मुतालबा	250	घरेलू कामों की तक्सीम	272
दा 'वते वलीमा	252	घर के काम काज करने के फ़वाइद	274
शादी की पहली रात भी इबादत	253	घर में काम वाली रख सकते हैं या नहीं ?	275
इबादत हो तो ऐसी हो !	254	ख़ालिफ़ की ना फ़रमानी में किसी की इताअत जाइज़ नहीं	277
ख़ातूने जन्नत की अवलादे पाक	255	जहन्नम में औरतों की कषरत	279
﴿1﴾ सय्यिदुना इमामे हुसैन की विलादते बा सआदत	255	घर खुशियों का गहवारा कैसे बने ?	281
सय्यिदुना इमामे हुसैन की अज़वाज व अवलाद	257	या रब्बे करीम ! हमें मुत्तक़ी बना के उनीस	281
सय्यिदुना इमामे हुसैन की शहादत	258	हुरूफ़ की निस्बत से घर में मदनी माहोल	
﴿2﴾ सय्यिदुना इमामे हुसैन की विलादते बा सआदत	259	बनाने के 19 मदनी फूल	
सय्यिदुना इमामे हुसैन की अज़वाज व अवलाद	259	ख़ादिम के लिये दरख़्वास्त	285
सय्यिदुना इमामे हुसैन की शहादत	260	तरबियत व ता 'लीम का ख़ुज़ाना	290
﴿3,4﴾ सय्यिदुना मोहम्मिन व सय्यिदतुना रुक़य्या	261	ख़ातूने जन्नत और घरेलू काम काज	291
﴿5﴾ सय्यिदतुना ज़ैनब का जिक्रे ख़ैर	261	घर को खुशियों का गहवारा बनाने और	292
सय्यिदा ज़ैनब का निकाह	261	आखिरत संवारने के लिये "अत्तार" की तरफ़	
सय्यिदा ज़ैनब की अवलाद	262	से "बिन्ते अत्तार" के लिये 12 मदनी फूल	
﴿6﴾ सय्यिदा उम्मे कुलधूम	262	हुकूके जौज़ैन	294
सय्यिदतुना उम्मे कुलधूम का निकाह	262		

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
“हुक्के शोहर” के आठ हुक्क की निस्बत से	294	गैरत मन्द शोहर	333
शोहर के हुक्क से मुतअल्लिक 8 फ़रामीने मुस्तफ़ा		पर्दा इज़ज़त है बे इज़ज़ती नहीं	335
बीबी के हुक्क से मुतअल्लिक चन्द अहदीषे मुबारका	298	किस किस से पर्दा है ?	337
बीबी के जिम्मे शोहर के हुक्क	299	औरत के लिये फ़ोन वुसूल करने का तरीका	338
दुन्यवी मुशिकलात पर सब्र की तलक़ीन	301	घर से निकलते वक़्त की एह्तियात्	340
तशरीहात व फ़वाइद	303	बे पर्दगी सबबे ग़ज़बे इलाही	341
सब्र की हकीकत	307	पर्दे की अहम्मियत	342
अन्दाज़े अमीरे अहले सुन्नत	307	मैं फ़ेशनेबल थी !	346
छोटे भाई की इनफ़िरादी कोशिश	309	(9) खातूने जन्त के फ़ाके	349
(8) खातूने जन्त का पर्दे का एह्तियात्	313	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	349
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	313	खातूने जन्त का आलमे गुर्बत	350
मुनादी की निदा बराए सय्यिदा फ़ातिमा	314	“फ़ातिमा” के 5 हुक्क की निस्बत से इस	353
बा हया से हया	316	वाक़िए से हासिल होने वाले 5 मदर्नी फूल	
हयाए उषमानी	317	काशानए फ़ातिमा में फ़ाका कशी का आलम	356
जन्त में भी पर्दा	320	जन्त पाने में सब्कत	358
बीबी फ़ातिमा के कफ़न का भी पर्दा	321	गुर्बत पर सब्र	359
उम्मेते मुस्लिमा की तनज़्जुली का एक सबब	323	अहले बैत के तीन रोज़े	360
बे पर्दगी की होलनाक सज़ा	325	फ़ाका कशिये फ़ातिमा और दुआए मुस्तफ़ा	363
कंधी के बाल भी छुपाइये !	325	एक वस्वसा और इस का जवाब	365
ना जाइज़ फ़ैशन करने वालियों के अज़ाब का मुशाहदा	326	तीन दिन का फ़ाका	367
औरतों के ना जाइज़ फ़ैशन	328	भूक के 10 फ़वाइद	368
बे ग़ैरती की इन्तिहा	330	भूक का सिला	368
बहारे शरीअत का मुतालआ फ़रमाइये	332	जन्त व दोज़ख़ के दरवाज़े	369

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
बदन की इस्लाह	370	हुकूकुल इबाद की मुआफ़ी का तरीका	420
मेरे मसाइल हल हो गए	372	मुफ़िलस कौन ?	420
इस्लामी बहनों में मदनी इन्क़िलाब	373	हुकूकुल इबाद के हवाले से "फ़िक्रे मदीना"	422
(10) खातूने जन्नत का जोहद	379	ज़रा सा काग़ज़ फटने पर मा 'ज़िरत	424
हुज़ूर حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ का मुश्किल कुशाई	379	फ़िराके रसूल पर बे चैनी व इज़तिराब	425
फ़रमाना		विसाले रसूल पर खातूने जन्नत का ग़म व अलम	428
اَللّٰهُ मोअती है हुज़ूर कासिम हैं !	382	नौहा और बे सबी में फ़र्क़	428
जोहद की ता 'रीफ़	384	विसाले रसूल पर खातूने जन्नत की क़ल्बी कैफ़ियत	429
जोहद व फ़क्र की फ़ज़ीलत	384	मथ्यित पर रोना कैसा ?	431
اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ के महबूब बन्दे	385	नौहा की ता 'रीफ़	431
रुहुल्लाह का पसन्दीदा नाम	385	नौहा करने का अज़ाब	432
हुज़ूर की खातूने जन्नत को जोहद की ता 'लीम	386	बच्चे की मौत पर सब्र करना	434
मुज़य्यन घर में दाख़िल होना नबी के शायाने शान नहीं	389	जन्नत में घर	434
कंगन सदका कर दिये	391	बे पर्दगी से तौबा	435
सीधा रास्ता मिल गया	396	(12) खातूने जन्नत का विसाले मुबारक	441
(11) विसाले रसूल पर खातूने जन्नत की कैफ़ियत	401	मोतियों का ताज	441
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	401	वफ़ाते सय्यिदा की ख़बर	442
नबी की ग़ैबी ख़बर	402	ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब	443
बेटी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 2 फ़रामैने मुस्तफ़ा	403	ग़मे मुस्तफ़ा का ग़लबा	446
राज़ छुपाने के मुतअल्लिक 2 अहादीषे मुबारका	405	खातूने जन्नत की वसिय्यते	451
महबूबे रब्बे जुल जलाल का ज़ाहिरी विसाल	407	वसिय्यत किसे कहते हैं ?	452
		वसिय्यत की अक्साम	452

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
वसियत बाइषे मग़फ़िरत	453	“मुल्क” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सूरे	465
खातूने जन्त को किस ने गुस्ल दिया ?	454	मुल्क के 3 फ़जाइल	
सय्यिदा ज़हरा का जनाज़ा	457	बेदारी तक हिफ़ाज़त	466
“यासीन शरीफ़ पढ़ो” के बारह हुरूफ़ की	459	नजात दिलाने वाली	467
निस्बत से सूरे यासीन के 12 फ़जाइल		मा 'मूले रसूल	467
कुरआन का दिल	459	दुआए अत्तार	469
10 कुरआन का षवाब	459	“वाहिद” के चार हुरूफ़ की निस्बत से कलिमए	469
दुन्या व आख़िरत की भलाई	460	तय्यिबा के 4 फ़जाइल	
शहीद की मौत	460	(1) खुश नसीब कौन ?	469
तमाम हाजात पूरी हों	461	(2) अफ़ज़ल ज़िक्रो दुआ	470
साबिका गुनाह मुआफ़	461	(3) आस्मानों के दरवाज़े खुल जाते हैं	470
नज़्द में आसानी	462	(4) तजदीदे ईमान	471
मग़फ़िरत का इन्आम	462	जेहनी मरीज़ तन्दुरुस्त हो गया!	471
दिल नर्म होगा !	463	दर्से फ़ैज़ाने सुन्त के 22 मदनी फूल	475
हर हर्फ़ के बदले मग़फ़िरत	463	तफ्सीली फ़ेहरिस्त	479
अज़ीम सआदत	464	मआख़िज़ो मराजेअ	487
बरकाते यासीन	464	अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुब की फ़ेहरिस्त	493

सरकारे दो अ़ालम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे मुअज़्ज़म है : जब क्रियामत का दिन होगा तो एक मुनादी निदा करेगा : ऐ अहले मज्मअ ! अपनी आंखें बन्द कर लो ताकि हज़रते फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद मुस्तफ़ा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) पुल सिरात से गुज़रें । (الجامع الصغير مع فيض القدير، حرف الهمزة، ج ١، ص ٥٣٩، الحديث: ٨٢٢)

ماخذ و مراجع

نام کتاب	مؤلف / مصنف	مطبوعات
قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۳۲ھ
ترجمہ کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۳۰ھ	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۳۲ھ
تفسیر رُوح البیان	امام اسماعیل حقی بروسی متوفی ۱۱۳۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۳۰ھ
تفسیر خازن	امام علامہ علی بن محمد خازن متوفی ۷۴۱ھ	المکتبہ الشاملہ
الکدر المنثور	امام جلال الدین سیوطی شافعی متوفی ۹۱۱ھ	دارال فکر بیروت
تفسیر بغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی متوفی ۵۱۶ھ	پشاور ۱۳۳۱ھ
تفسیر نعیمی	مولانا مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ مرکز الاولیاء لاہور
تفسیر خزائن القرآن	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۳۲ھ
تفسیر نور العرفان	مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
صحيح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۳۲۸ھ
صحيح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری متوفی ۲۶۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۹ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۹ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجہ متوفی ۲۷۳ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۳۳۰ھ
سنن ابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث متوفی ۲۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۸ھ
صحيح ابن جبان	امام حافظ محمد بن جبان متوفی ۳۵۳ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۳۲۵ھ
المصنف لابن ابی شیبہ	حافظ عبداللہ محمد بن ابی شیبہ یحییٰ متوفی ۲۳۵ھ	مدینۃ الاولیاء بلتان شریف
سنن الدارمی	امام عبداللہ بن عبدالرحمن متوفی ۲۵۵ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۳۲۱ھ
مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی متوفی ۸۰۷ھ	المکتبہ الشاملہ
مسند احمد	امام احمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۹ھ
المستدرک للحاکم	امام محمد بن عبداللہ حاکم متوفی ۴۰۵ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۳۲۷ھ

دارالقریروت	الإجماع شیروبیہ بن شہر داروبلی متوفی ۵۰۹ھ	فِرْدَوْسُ الْأَخْبَارِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۳ھ	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی متوفی ۹۷۵ھ	کَنْزُ الْعَمَالِ
دارالکتب العلمیہ بیروت	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	مَکَارِمُ الْأَخْلَاقِ
المکتبۃ الثاملۃ	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی متوفی ۹۱۱ھ	جَامِعُ الْأَحَادِيثِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۲ھ	شیخ اسماعیل بن محمد عجلی متوفی ۱۱۶۲ھ	کَشْفُ الْخِيفَاءِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۸ھ	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ
دارالفرکرمان ۱۳۲۰ھ	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ
دارالمعرفۃ بیروت ۱۳۲۹ھ	امام زکی الدین منذری متوفی ۶۵۶ھ	الْتَرْغِيبُ وَالتَّوْهِيْبُ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۹ھ	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی متوفی ۳۵۸ھ	شُعَبُ الْإِيْمَانِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۳ھ	امام ابو محمد حسین بن مسعود بخوی متوفی ۵۱۶ھ	شَرْحُ السُّنَنِ
المکتبۃ الثاملۃ	حافظ محمد بن قنوح الحمیدی متوفی ۳۸۸ھ	الْجَمْعُ بَيْنَ الصَّحِيْحَيْنِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۱۰ھ	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	الْأَدَبُ الْمَقْرَدُ
دارالفرکر بیروت ۱۳۲۲ھ	امام ابو یعلیٰ احمد بن علی مصلی متوفی ۳۰۷ھ	مُسْنَدُ أَبِي يَعْلَى
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۸ھ	علامہ ولی الدین تبریزی متوفی ۷۲۲ھ	مِشْكُوٰةُ الْمَصَابِيْحِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۱ھ	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی متوفی ۹۱۱ھ	جَمْعُ الْحَوَامِيْعِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۹ھ	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی متوفی ۳۵۸ھ	ذَكَوِيْلُ النَّبُوَّةِ
دارالکتب العلمیہ بیروت	امام ابو احمد عبداللہ بن عدی جرجانی متوفی ۳۶۵ھ	الْكَاوِيْلُ فِي صُفَعَاءِ الرِّجَالِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۷ھ	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی متوفی ۹۱۱ھ	الْجَامِعُ الصَّغِيْرُ
مکتبۃ الامام شافعی الریاض ۱۳۰۸ھ	حافظ زین الدین عبدالرؤف مناوی متوفی ۱۰۳۱ھ	تَبْسِيْرُ شَرْحِ جَمِيْعِ صَغِيْرٍ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۷ھ	حافظ زین الدین عبدالرؤف مناوی متوفی ۱۰۳۱ھ	قَبِيْضُ الْقَدِيْرِ
فرید بک شال مرکز الاولیاء لہور ۱۳۲۸ھ	فقیر اعظم ہند مفتی محمد شریف الحق امجدی متوفی ۱۳۲۰ھ	نُزْمَةُ فَهْرِيْ شَرْحِ صَحِيْحِ الْبُخَارِيْ

شرح المسلم للنوی	ام حافظہ فی الدین الیز کریم کی بن شرف نودی ۶۸۶ھ	باب المدینہ کراچی
برقۃ المفاتیح مشکاة لمصابیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری متوفی ۱۰۱۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۸ھ
أشعة الممعات	شیخ عبدالحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	فرید بک شال مرکز الا ولیاء لاہور ۱۳۲۳ھ
مرآة المناجیح	مولانا مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
أسد الغابۃ فی معرفۃ الصحابة	علی بن محمد ابن الاثیر متوفی ۶۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۹ھ
الاصابة فی تمییز الصحابة	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	المکتبۃ التوفیقیہ مصر
لمنہ رابع فی ثواب لعل الصالح	شرف الدین عبدالکرم دہلوی متوفی ۷۰۵ھ	دار خضر بیروت ۱۳۲۲ھ
أکبر سآلة القشیریۃ	امام ابوالقاسم عبدالکرم ہوازن قشیری متوفی ۳۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۶ھ
القول البلیغ	امام محمد بن عبدالرحمن سخاوی شافعی متوفی ۹۰۲ھ	دارالکتب العربیہ بیروت ۱۳۹۵ھ
جذب القلوب	شیخ عبدالحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	شیر برادرزلاہور ۱۳۱۹ھ
الزواجر عن اقتراف الکبائر	شہاب الدین احمد بن محمد بن حجر متوفی ۹۷۳ھ	دارالحدیث القاہرہ ۱۳۲۳ھ
مکاشفة القلوب	ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	کونینہ
انساب الاشراف	حافظ احمد بن یحییٰ بلاذری متوفی ۲۷۹ھ	دارالمعارف مصر
تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی متوفی ۳۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
مدارج النبوت	شیخ عبدالحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الا ولیاء لاہور ۱۳۲۹ھ
الوقایا بحوال المصطفیٰ	امام عبدالرحمن بن علی جوزی متوفی ۵۹۷ھ	حامد اینڈ کمپنی مرکز الا ولیاء لاہور
جامع المعجزات	شیخ محمد واعظ اصفہانی	مصر
بریقۃ محمودیہ	ابوسعید محمد بن مصطفیٰ مفتی القادی متوفی ۱۱۷۶ھ	المکتبۃ الشاملیہ
سبیل الہدای والرشاد	محمد بن یوسف صالحی شامی متوفی ۹۳۴ھ	المکتبۃ الشاملیہ
منہاج العابدین	ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	دارالبعث الاسلامیہ بیروت
الطبقات الکبریٰ	امام عبدالوہاب شہرانی متوفی ۹۷۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۳۲۷ھ
تمہید القرش	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی متوفی ۹۱۱ھ	مکتبۃ مشکاة الاسلامیہ

دارالغزالی دمشق ۱۴۱۷ھ	شیخ اسعد محمد سعید الصاغری	الزهد وقصر الامل
دارالاحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ	امام ابوالیث نصر بن محمد سمرقندی متوفی ۹۷۵ھ	نُورُ النُّورِ وَنُورُ الْقَلْبِ الْمَسْخُورِ
دارالاحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ	مبلغ اسلام شیخ شعیب بن یحییٰ متوفی ۸۱۰ھ	الْكَوْصُ الْفَاتِقُ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ	شیخ ابوطالب محمد بن علی بن ابی متوفی ۳۸۶ھ	قُوْتُ الْقُلُوبِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۹ھ	ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	احیاء علوم الدین
دارالنبیوتی دمشق ۱۴۲۳ھ	امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	لباب الاحیاء
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ	علامہ سعید محمد بن محمد حسینی زبیدی متوفی ۱۲۰۵ھ	اتحاف السادة المتقين
شعبہ برادر زمر مرکز الاولیاء لاہور	مفتی جلال الدین احمد امجدی متوفی ۱۳۲۲ھ	خطباتِ مَحْرَمِ
ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور ۱۳۲۹ھ	سید محمد احمد قادری متوفی ۱۳۸۰ھ	أوراقِ غم
شعبہ برادر زمر مرکز الاولیاء لاہور ۱۳۲۹ھ	ابوالحسن نورالدین علی بطون متوفی ۷۱۳ھ	بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ
کتب خانہ حاجی نیاز احمد مدینہ الاولیاء ملتان	فرید الدین عطار متوفی ۶۱۶/۶۰۶ھ	قَدْحَةُ الْأَوْلِيَاءِ
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	علیحضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۳۰ھ	مَنْعَةُ الْإِسْرَافِ فِي شَفْوَى الْأَوْلَادِ
باب المدینہ کراچی	علامہ ابوبکر بن علی حدادی متوفی ۸۰۰ھ	الْجَوْهَرَةُ النَّبِيَّةُ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۳ھ	علامہ علاء الدین ہسکتی متوفی ۱۰۸۸ھ	دُرٌّ مُخْتَارٌ
دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ	محمد امین ابن عابدین شامی متوفی ۱۱۵۲ھ	رَدُّ الْمُحْتَارِ
دارالکتب العلمیہ بیروت	امام فخر الدین عثمان بن علی زبیدی متوفی ۷۴۷ھ	تَبْسِيْنُ الْمُحَقَّقِ
دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ	علامہ امام مولانا شیخ ظہار متوفی ۱۱۱ھ و جہانگیر بن علامہ ابند	الْفَتَاوَى الْمُهَنْدِيَّةُ
رضاقاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۶ھ	علیحضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۳۰ھ	فتاویٰ رضویہ
احمد رضا بریلوی کتب خانہ کراچی ۱۳۳۰ھ	علیحضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۳۰ھ	احکام شریعت
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۳۲ھ	صدر الشریعہ مفتی امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۲ھ	بہارِ شریعت
خدیجہ پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور ۱۳۳۰ھ	مولانا جلال الدین رومی متوفی ۶۷۲ھ	مَنْتَوِي مَوْلَانَا رُومِ
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۳۳۰ھ	ربیع المصطفیٰ بن مولانا تقی علی خان متوفی ۱۲۹۷ھ	أَحْسَنُ الْوَعَاءِ

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया की तरफ से पेश कर्दा क़ाबिले मुतालाआ कुतुब

﴿شَوْ بَعْدُ كُتُبُهُ آءَالَا هَجْرَتِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ﴾

- (1) करन्सी नोट के शर्ई अहकामात :
(अल किफ़लुल फ़कीहिल फ़हिम फ़ी क़िरतासिद्दाहिम) (कुल सफ़हात : 199)
- (2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)
(अल याकूतितुल वासितह) (कुल सफ़हात : 60)
- (3) ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़हात : 74)
- (4) मआशी तरक्की का राज़
(हाशिया व तशरीह तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह) (कुल सफ़हात : 41)
- (5) शरीअत व तरीक़त
(मक़ालुल उ-रफ़ाअ बि इ'जाज़ि शर-इ व उ-लमाअ) (कुल सफ़हात : 57)
- (6) षुबूते हिलाल के तरीके (तुरुकि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़हात : 63)
- (7) आ'ला हज़रत से सुवाल जवाब
(इज़हारिल हक्किल जली) (कुल सफ़हात : 100)
- (8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?
(विशाहुल जीद फ़ी तहलीलि मुआनि-क़तिल ईद) (कुल सफ़हात : 55)
- (9) राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में खर्च करने के फ़ज़ाइल
(रदिल क़ह्ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़हात : 40)
- (10) वालिदैन, जौजैन और असातिजा के हुकूक
(अल हुकूक लि तर्हिल उकूक) (कुल सफ़हात : 125)
- (11) दुआ के फ़ज़ाइल (अहूसनुल विआअ लि आदाबिदुआअ मअहू जैलुल मुद्आ लि अहूसनिल विआअ)
(कुल सफ़हात : 326)

﴿शाएडू होने वाली डू-रबी कुतूब﴾

अजु : इमामे अहले सुन्नत मुजहिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अहमद रजा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ

- (12) किफ़लुल फ़कीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़हात : 74)
 (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़हात : 77)
 (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62)
 (15) इका-मतुल कियामह (कुल सफ़हात : 60)
 (16) अल फ़ज़लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46)
 (17) अज़ल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70)
 (18) अज़म-ज़-मतुल क-मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93)
 (19,20,21) जदिल मुम्तार अला रदिल मुह्तार
 (अल मुजल्लद अल अब्वल वष्षानी)(कुल सफ़हात : 713,677,570)

﴿शो'बए इस्लाही कुतूब﴾

- (22) खौफ़े खुदा عَزَّ وَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)
 (23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
 (24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
 (25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
 (26) इमतिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
 (27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
 (28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
 (29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
 (30) निसाबे मदनी काफ़िला (कुल सफ़हात : 196)
 (31) काम्याब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़ीबन 63)
 (32) फ़ैज़ाने एह्याउल इलूम (कुल सफ़हात : 325)

- (33) मुफ़ितये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
- (34) हक व बातिल का फ़र्क (कुल सफ़हात : 50)
- (35) तहक़ीकात (कुल सफ़हात : 142)
- (36) अर-बर्इने ह-नफ़िय्यह (कुल सफ़हात : 112)
- (37) अत्तारी जिन्न का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
- (38) तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
- (39) तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 124)
- (40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
- (41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
- (42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
- (43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
- (50) क़ब्रिस्तान की चुडैल (कुल सफ़हात : 24)
- (51) गौषे पाक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के हालात (कुल सफ़हात : 106)
- (52) तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
- (53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी काफ़िला (कुल सफ़हात : 255)
- (54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
- (55) म-दनी कामों की तक्सीम (कुल सफ़हात : 68)
- (56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारे (कुल सफ़हात : 220)
- (57) तरबियते अवलाद (कुल सफ़हात : 187)
- (58) आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
- (59) अहादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
- (60) फ़ैजाने चहल अहादीष (कुल सफ़हात : 120)
- (61) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)

﴿शो'बए तशजिमे कुतुब﴾

- (62) जन्त में ले जाने वाले आ'माल
(अल मुत्जरुराबिह फ़ी षवाबिल अ-मलिस्सालेह) (कुल सफ़हात : 743)
- (63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल अरिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)
- (64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल सफ़हात : 74)
- (65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअल्लिम तरीकुत्तअल्लुम) (कुल सफ़हात : 102)
- (66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद) (कुल सफ़हात : 64)
- (67) अद्वा'वति इलल फ़िक़ (कुल सफ़हात : 148)
- (68) आंसूओं का दरिया (बहूरुहुमूअ) (कुल सफ़हात : 300)
- (69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुरतुल उयून) (कुल सफ़हात : 136)
- (70) उयूनुल हिकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़हात : 412)

﴿शो'बए दर्सी कुतुब﴾

- (71) ता'रीफ़ाते नहूविय्यह (कुल सफ़हात : 45)
- (72) किताबुल अक़ाइद (कुल सफ़हात : 64)
- (73) नुह्तुनज़र शर्हे नख़्तुल फ़िक़ (कुल सफ़हात : 175)
- (74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़हात : 121)
- (75) निसाबुत्तज्जीद (कुल सफ़हात : 79)
- (76) गुलदस्तए अक़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180)
- (77) वका-यतिन्नहूव फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नहूव
- (78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ हाशिया सर्फ़ बनाई

﴿शो'बए तख़रीज﴾

- (79) अज़ाइबुल कुर्आन मअ ग़ाइबुल कुर्आन (कुल सफ़हात : 422)
- (80) जन्ती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
- (81) बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 से 6)
- (82) बहारे शरीअत, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)

- (83) बहारे शरीअत, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 से 20)
 (84) इस्लामी जिन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
 (85) आईनए कियामत (कुल सफ़हात : 108)
 (86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)
 (87) सहाबए किराम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इश्के रसूल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का इश्के रसूल (कुल सफ़हात : 274)

﴿शो'बए अमीरे अहले सुन्नत﴾

- (88) सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पैग़ाम अतार के नाम (कुल सफ़हात : 49)
 (89) मुक़द्दस तहरीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)
 (90) इस्लाह का राज़ (म-दनी चैनल की बहारें हिस्सए दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)
 (91) 25 क्रिस्चेन कैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)
 (92) दा'वते इस्लामी की जैलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
 (93) वुजू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)
 (94) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त सिवुम (सुन्नते निकाह) (कुल सफ़हात : 86)
 (95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
 (96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़हात : 48)
 (97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
 (98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)
 (99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)
 (100) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
 (101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)
 (102) मैं ने म-दनी बुर्क़अ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)
 (103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)
 (104) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त दुवुम (कुल सफ़हात : 48)
 (105) गाफ़िल दर्जी (कुल सफ़हात : 36)

- (106) मुख़ालिफ़त महबूबत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)
- (107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)
- (108) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त अब्वल (कुल सफ़हात : 49)
- (109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)
- (110) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त चहारुम (कुल सफ़हात : 49)
- (111) चल मदीना की सआदत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)
- (112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)
- (113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिगा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)
- (114) बे कुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)
- (115) अत्तारी जिन्न का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
- (116) नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
- (117) आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)
- (118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़हात : 32)
- (119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
- (120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
- (121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (124) खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
- (125) नाकाम आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (126) नादान आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
- (129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)
- (130) ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
- (131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

- (132) सास बहू में सुल्ह का राज (कुल सफ़हात : 32)
 (133) कब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)
 (134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
 (135) हैरत अंगेज़ हादिषा (कुल सफ़हात : 32)
 (136) मोडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
 (137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
 (138) सलातो सलाम की आशिका (कुल सफ़हात : 33)
 (139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
 (140) चमकती आंखों वाले बुजुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
 (141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)
 (142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

﴿मजलिसे तराजुमे कुतुब की तरफ़ से पेश कर्दा कुतुब﴾

बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी مَدَّظَلُّهُ الْعَالِي के इन रसाइल के अ-रबी तराजुम शाएअ हो चुके हैं :

- (1) बादशाहों की हड्डियां (इज़ामुल मलूक)
- (2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)
- (3) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम)
- (4) श-ज-रए आलिया कादिय्यह र-ज़विय्यह अत्तारिय्यह

﴿इन रसाइल के सिन्धी तराजुम श्री शाएअ हो चुके हैं﴾

- (1) ज़ियाए दुरूदो सलाम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी مَدَّظَلُّهُ الْعَالِي)
- (2) ग़फ़लत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी مَدَّظَلُّهُ الْعَالِي)
- (3) अबू जहल की मौत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी مَدَّظَلُّهُ الْعَالِي)

(4) एहूतिरामे मुस्लिम (मुअल्लिफ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना

अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी (مَدَّظَلُّهُ الْعَالِي)

(5) दा'वते इस्लामी का तआरुफ़ ।

﴿इस के इलावा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कई

रशाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ हो चुके हैं﴾

- (1) अहकामे नमाज़
- (2) फ़ैज़ाने रमज़ान
- (3) फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह
- (4) पेट जो कुफ़्ले मदीना
- (5) आदाबे तआम
- (6) बयानाते अत्तारिय्या
- (7) जिन्नात जो बादशाह
- (8) सुब्हे बहारां
- (9) ज़ल्ज़लो इन इनजा अस्बाब
- (10) आका जो महीनो
- (11) अब्लक घोड़े सुवार
- (12) पुल सिरात जी दहशत
- (13) ज़ख़मी नांग
- (14) कफ़न जी वापसी
- (15) बरेली कान मदीना
- (16) मुलाज़िमीन जा लाइ 21 म-दनी गुल
- (17) शजरए अत्तारिय्या
- (18) 40 रूहानी इलाज

अल मदीनतुल इल्मिया के इन एसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएउअ हो चुके हैं

- (1) मूवी इन टीवी
- (2) उशर जा अहकाम (हारीन जा लाइ)
- (3) मुफितये दा'वते इस्लामी
- (4) आदाबे मुर्शिदे कामिल
- (5) इन्फिरादी कोशिश
- (6) खौफे खुदा عَزَّوَجَلَّ
- (7) तंगदस्ती इन इनजा अस्बाब
- (8) निसाबे म-दनी काफिला

दिखावे के लिये जेवरात पहनना कैसा ?

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “पर्दे के बारे में सुवाल जवाब” सफ़हा 270 पर शैखे त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ फ़रमाते हैं : औरत को बतौरे फ़ख़ व तकब्बुर दिखावा करने के लिये ज़ेवर पहनना बाइषे अज़ाब है। हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम, दाफ़ेए रंजो अलम, साहिबे जूदो करम, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : तुम में से जो औरत सोने के ज़ेवर पहने जिसे ज़ाहिर करे उसे इस के सबब अज़ाब दिया जाएगा।

(سنن ابى داود، ج ٤، ص ٦٢١، الحديث: ٧٣٢٤)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَعَابَدُ مَا عُوذُ بِأَنْدِيهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِشَرِّهِ أَلَمْ يَخْلُقْنَا مِنْ تَرَابٍ وَرَبُّهُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

सुन्नत की बहारे

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिजाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी नियतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिकाने रसूल के म-दनी काफ़िलों में ब नियतये सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **“मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**”** अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **“म-दनी इन्आमात”** पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **“म-दनी काफ़िलों”** में सफ़र करना है। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

मक्तबतुल मदीना की शाखें

देहली : उदू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़्लाहें दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

مكتبة
الدينه
(موسسات)
MC 1286

मक्तबतुल मदीना

मिलेक्ट्रेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अहमदाबाद-1, गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

مكتبة
الدينه